

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● **ज्ञानेन्दु**

१. **देशाचार**— क. देशी इलाज, ख. देश की भलाई, ग. देश के रीति-रिवाज, घ. अंध-परंपरा।

२. **तास्कार्य**— क. ऐसा कार्य, ख. छिपा काम, ग. अंधकार, घ. चोरी।

३. **दैवागत**— क. देवता का आगमन, ख. भाग्यवशात, ग. देवता की कृपा, घ. शनैः-शनैः आनेवाला।

४. **परिजन**— क. दूसरे लोग, ख. पड़ोसी, ग. कुटुंबीजन, घ. चारों ओर के लोग।

५. **कृताकृत**— क. शुभ-अशुभ, ख. किया हुआ और न किया हुआ काम, ग. भलाई-बुराई, घ. कर्म तथा भाग्य।

६. **उत्तराभास**— क. बाद में दिखायी देनेवाला, ख. मिथ्या उत्तर, ग. उत्तर की ओर दृष्टिगोचर, घ. भ्रमात्मक दिशा।

७. **क्षत-विक्षत**— क. मरा हुआ तथा घायल, ख. अत्यंत दुःखी, ग. बुरी तरह घायल, घ. बिखरा हुआ।

८. **दौरात्म्य**— क. दूरी, ख. दुष्टता, ग. चोरी, घ. धोखेबाजी।

९. **अपशब्द**— क. गाली, ख. गंवारू बोली, ग. किसी शब्द से निकला शब्द, घ. लघु शब्द।

१०. **तदर्थ**— क. वैसा ही, ख. उसके लिए, ग. जैसा अर्थ हो, घ. उसका भाव।

११. **कृतार्थ**— क. कार्य का अर्थ, ख. लक्ष्य, ग. धन्य, घ. मुक्त।

१२. **अनुवर्ती**— क. पीछे चलनेवाला, ख. उलटा चलनेवाला, ग. साथ-साथ चलनेवाला, घ. शिष्य।

१३. **उत्तरोत्तर**— क. जवाब का जवाब, ख. क्रमशः, ग. सबसे आगे, घ. बिलकुल उत्तर की ओर।

उत्तर

१. ग. देश के रीति-रिवाज। **देशाचार** की नितांत उपेक्षा प्रगति का लक्षण नहीं है। (देश+आचार)

२. घ. चोरी, तस्करी। **तास्कार्य** घृणित धंधा है।

३. ख. भाग्यवशात, अकस्मात। इस **दैवागत** आपदा को झेलना ही पड़ेगा। (दैव+आगत)

४. ग. कुटुंबीजन, स्वजन। वह **परिजनों** के प्यार से वंचित रहा है। (परि+जन)

५. ख. किया हुआ और न किया हुआ काम। किसी व्यक्ति के यथार्थ के मूल्यांकन में उसके **कृताकृत** को ध्यान में रखना जरूरी है। (कृत+अकृत)

६. ख. मिथ्या उत्तर। यह कोरा **उत्तराभास**

है, जो भ्रामक है। (उत्तर+आभास)

७. ग. बुरी तरह घायल। लड़ाई में दोनों **क्षत-विक्षत** हो गये।

८. ख. दुष्टता, परपीड़न। **दौरात्म्य** को सहन करना कायरता है। (**दुरात्मा**=दुष्ट)

९. क. गाली, कुभाषा। बातचीत में **अपशब्दों** का प्रयोग न करें। (अप+शब्द)

१०. ख. उसके लिए। आदर्श को सामने रख **तदर्थ** क्रियान्वयन भी करना चाहिए। (तद्+अर्थ)

११. ग. धन्य। जनसेवा में तत्पर रहकर अपना जीवन **कृतार्थ** करें।

१२. क. पीछे चलनेवाला, अनुसरण करनेवाला। सच्चे नेता का **अनुवर्ती** होना गौरव की बात है। (अनुवर्तन=अनुसरण)

१३. ख. क्रमशः, लगातार, आगे ही आगे। इस क्षेत्र में **उत्तरोत्तर** विकास हुआ है। (उत्तर+उत्तर)

पारिभाषिक शब्द

Activity =	क्रिया कलाप
Cessation =	समाप्ति, विराम
Bonafide =	वास्तविक
Disbursement =	संवितरण
Hard currency =	दुर्लभ मुद्रा
Fiscal =	राजस्व संबंधी
Ex-gratis =	अनुग्रही
Governance =	शासन
Man days =	श्रम दिन

समस्या पूर्ति- १३७



अभिनंदन

प्रथम पुरस्कार

सोच व्यर्थ है मृत अतीत का
व्यर्थ है आग का चिंतन
जीवन तो बस वर्तमान है,
श्रेष्ठ इसी का अभिनंदन

—भारत भूषण पुरोहित

मनीरामजी की हवेली, मोदी मोहल्ला, पुराना शहर, किशनगढ़ (राजस्थान)

द्वितीय पुरस्कार

नयनों में किसी अनवरत के चरणों का कंपन
अधरों पर है विकल प्रणय की घड़ियों का मधु अंकन
अलकों में घिर रहा किसी के चपल करों का चंदन
यह सौरभ का देश सुंदरी तेरा नव-अभिनंदन

—डॉ. शैलजा पालीवाल

छोटा परिवार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ.प्र.)



प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'कादम्बिनी' के दिसम्बर अंक के संपादकीय अग्रलेख 'समय के हस्ताक्षर' को पढ़कर बड़ा संतोष हुआ, जिसमें आपने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—'ग्यारह महीनों में इस देश में जो कुछ हुआ है, इतिहास की लकीरें उसे माफ नहीं करेंगी । जाति भेद, सांप्रदायिकता, हिंसा का भीषण दौर और मासूम बच्चों की मृत्यु, दिल दहला देने वाली घटनाएं, आजादी के बाद जितने भी प्रधानमंत्री हुए, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की भूमिका उन सबमें निकृष्ट सिद्ध हुई ।'

आपके संपादकीय के एक-एक शब्द सार्थक, संतुलित और प्रामाणिक हैं ।

कुरसी से हटने के बाद, जिसे आपने ठीक ही लिखा है, 'उनसे कुरसी छुड़वायी गयी', बिहार में आकर उन्होंने जाति-उन्माद फैलाया । अभी भी मुंगेर और सहरसा से गांव इससे त्रस्त हैं । सहरसा के सटे मधेपुरा में गत अक्तूबर में आरक्षण समर्थकों ने भीषण नंगा नाच किया । सहरसा जाकर भी वहां से मात्र १५ किलो मीटर पर हुए इस शर्मनाक कांड के मुक्तभोगियों के परिवारों को वे सांत्वना देने नहीं गये । बल्कि सहरसा में उन्होंने जो भाषण दिया, उससे लगा कि इन्होंने उस भीषण जुल्म का समर्थन किया । इनके साथ भी इस जुल्म के सरगना सभामंच और अन्य स्थानों पर साथ थे ।

एक अच्छे कवि और संवेदनशील व्यक्ति का सत्ता और बुरे सोहबत में आकर इतना मदांध हो जाना सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण है। 'तंत्र विशेषांक' में आपके द्वारा की गयी घोषणा सच निकली । धन्यवाद ।

'तंत्र विशेषांक' के 'काल चिंतन' में भी आपने इस मदांध व्यक्ति का बड़ा ही मोहक और भावात्मक चित्र उभारा था—'सत्ता में मद है, यह सत्यता है, सत्ताधारी मदांध हो जाता है तो समय चक्र उसे पीसना शुरू कर देता है ।' इसी समय चक्र ने वी.पी. सिंह को पीस दिया और इस मनःस्थिति में, कुरसी से चिपके रहने की लालसा से वे 'अंतरात्मा' की पुकार दूरदर्शन और संसद में करने लगे, जो हम सबों के साथ-साथ अन्य अनेक संवेदनशील व्यक्तियों को हास्यास्पद और अरण्यरोदन लगता था—शायद एक व्यंग्य भी—उनके इस विलाप पर मैंने कुछ पंक्तियां जोड़ी थीं—

''अंतरात्मा की आवाज ?''
मैं उस घाटी में
अंतरात्मा की दुहाई देता रहा
पर किसी ने अपनी अंतरात्मा की
आवाज नहीं सुनी !
मैं चिल्लाता रहा,
गुहार करता रहा,
पर किसी ने अंतरात्मा की आवाज नहीं सुनी !
दूसरे दिन घाटी से बाहर आकर
मैंने अपने आप से पूछा ?

मुझे उत्तर मिला—
कभी तुम भी
अपनी अंतरात्मा की आवाज नहीं सुन पाये थे ?
जब युवा आत्मदाह कर रहे थे !
—जब युवा गोलियां खा रहे थे !!
जब निहत्थे लोगों को कुचला जा रहा था !!!
इसलिए अगर,
आज कोई तुम्हारी गुहार नहीं सुन पाये
तो आश्चर्य क्या ?
तब मुझे एहसास हुआ
कि
शायद मेरी पुकार में झंकार नहीं थी
आत्मा नहीं थी ।
क्योंकि मैंने उस समय अपनी आत्मा की पुकार नहीं सुनी !
इसीलिए मेरी पुकार का असर नहीं हुआ !
मैं निरुपाय,
अब मेरी आत्मा का क्या होगा ?
क्या होगा ?

— डॉ. बेचन
(पूर्व प्रति कुलपति भागलपुर विश्वविद्यालय)
भगवान पुस्तकालय, भागलपुर

दिसम्बर अंक में प्रकाशित 'समय के हस्ताक्षर' में व्यक्त विचारों से सहमति जताते हुए हमें लगभग सौ पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं । तीन पत्र ऐसे भी मिले, जिनमें इन विचारों की आलोचना की गयी । हरेन्द्र सिंह मुजफ्फर नगर, विजयकुमार खूंटिया, चितौड़गढ़ ने अपने पत्रों में 'समय के हस्ताक्षर' से असहमति व्यक्त की है । तीसरा पत्र यहां प्रकाशित किया जा रहा है ।

वाह अवस्थीजी !
आ गया न ब्राह्मणत्व आपके 'समय के हसताक्षर' में भी । खूब कोसा न आपने वी. पी. सिंह को जातिभेद, सांप्रदायिकता, हिंसा के भीषण दौर और मासूम बच्चों की मृत्यु के लिए । बताइए, आजादी के बाद से किस प्रधानमंत्री के दौर में यह सब नहीं हुआ । इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, चरण सिंह और राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में ? फिल्मों में काम करनेवाले लोगों को किस आधार पर मात्र कठपुतली ठहरा दिय ?

—प्रेमसिंह, लखनऊ

(फिल्मी लेखकों को ‌ड़कर फिल्मों में काम करनेवाले कब से बुद्धिजीवी हो गये ?)

दिसम्बर अंक संग्रहणीय बन पड़ा है । इस अंक में तीन लेख क्रमशः 'वेदांत से प्रभावित : ईसा मसीह' 'क्या सोमरस ही अमृत था' तथा 'दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया था' नवर्धक और भारतीय संस्कृति की मूलभा से ओतप्रोत लगे ।

ईसा मसीह के त से प्रभावित होने के अनेक प्रमाण मिले किंतु उन्हें पूर्णतः प्रामाणिक नहीं मान जा सकता । यहां तक कि ईसा की आज्ञाओं भी वेदों की झलक स्पष्टतः परिलक्षित होती है पका अर्थ यह नहीं कि ईसा भारतीय दर्श ढ़ने के लिए भारत आये थे, परंतु वे उससे ावित थे, यह अवश्य कहा जा सकता है ।

जहां तक सोमर का प्रश्न है । इसे सामान्यतः वैदिक रा कहा जाता है । वस्तुतः सोमरस न तो म और न ही अमृत । यह वास्तव में भांग क एक रूप है । महापंडित राहुल सांस्कृत्याय अपनी प्रसिद्ध कृति, 'ऋग्वैदिक आर्य' े भांग ही सिद्ध किया है । इसकी पुष्टि के ए उन्होंने इसके निर्माण की प्रक्रिया का भी लेख किया है । वैसे भी यदि किसी पेय अ रस पदार्थ में जीवन

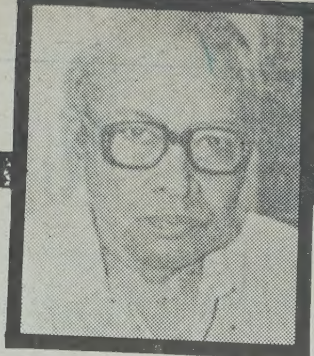

सुगम ज्योतिष
वैवाहिक विलम्ब
के विविध आयाम
एवं मंत्र
ज्योतिष रत्नाकर
देवकीनन्दन सिंह

शक्ति का गुण है तो वह अमृत तुल्य तो हो ही जाती है । अतः यदि सोमरस को अमृत भी कहा जाता है तो अत्युक्ति नहीं है ।

मुगल शासकों में दारा शिकोह ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति हुआ, जिसने भारतीय धर्म और संस्कृति को एक जिज्ञासु, चिंतक और पिपासु के रूप में समझा। यहां तक कि उसने उन उपनिषदों का अनुवाद कराया, जिन्हें समझना और उनका अर्थ करना विद्वजनों के लिए भी कठिन रहा था । दारा का यह अनुवाद कार्य विश्व में हमेशा याद किया जाएगा । एक शासक के रूप में उसका नाम इतना चर्चित नहीं होता, जितना अनुवाद के गुरुतर कार्य में हुआ है । भारतीय संस्कृति की आत्मा ऐसे ही महान व्यक्तियों से अमर है ।

—रमेशचन्द्र

गुना (म.प्र.)-४७३००१



श्रद्धांजलि

श्री रघुवीर सहाय नहीं रहे

सुपरिचित कवि एवं पत्रकार श्री रघुवीर सहाय अब हमारे बीच नहीं रहे । श्री रघुवीर सहाय साहित्य में समाजवादी विचारधारा के पक्षधर थे एवं जन आंदोलनों से सदैव सक्रिय रूप से जुड़े रहे । उनके संपादकत्व में निकलनेवाली पत्र-पत्रिकाओं ने एक विशिष्ट पहचान बनायी थी । श्री रघुवीर सहाय का निधन साहित्य एवं पत्रकारिता दोनों के लिए अपूरणीय क्षति है । 'कादम्बिनी'-परिवार की उनकी स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि ।

—संपादक

दिसम्बर अंक में दारा शिकोह संबंधी लेख पढ़ा । दारा शिकोह को विद्वता एवं विद्वत्जनों के सम्मान की परंपरा विरासत में मिली थी ।

उस समय में संस्कृत भाषा को पर्याप्त प्रश्रय एवं पोषण मिला था । स्वयं अकबर ने संस्कृत साहित्य का फारसी अनुवाद करवाया था । उसी समय 'फारसी प्रकाश' नामक प्रथम फारसी-संस्कृत-शब्दकोष संकलित हुआ । अबुलफजल, अकबर तक संस्कृत-विद्वानों की सूची पहुंचाता था, ताकि उन्हें पर्याप्त संरक्षण एवं पोषण मिल सके ।

दरभंगा के महेश ठाकुर ने उसी समय संस्कृत में अकबर के शासन काल का इतिहास लिखा था; जिसकी हस्तलिखित प्रति इंडिया-ऑफिस, लंदन में आज भी सुरक्षित है ।

दारा स्वयं अरबी, फारसी और संस्कृत का अच्छा ज्ञाता था । उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण रचना 'मजूम-उल-बहेरिन' (सागर-सम्मिलन) थी, जिसमें उसने यह दशनि का प्रयास किया था कि हिंदू धर्म और इस्लाम एक ही लक्ष्य के दो मार्ग हैं और वे दोनों मिलकर एक हो सकते हैं ।

दारा सूफी मत से प्रभावित था । वह हिंदू धर्म का अत्यधिक आदर करता था । उसकी इच्छा हिंदू धर्म और इस्लाम को निकट लाने की थी । उसने 'अल्लाह' के स्थान पर 'प्रभु' शब्द का प्रयोग किया और उसे अपनी अंगूठियो पर हिंदी अक्षरों में खुदवाया ।

—जगदीश ज्वलंत, उज्जैन

कादम्बिनी

वर्ष ३१, अंक ४ फरवरी, १९९१

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

स्थायी स्तंभ

आवरण : सुलक्षणा खत्री

कार्यकारी अध्यक्ष

नरेश मोहन

संपादक

राजेन्द्र अवस्थी

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

सार-संक्षेप

कविताएं

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह**
प्रूफ रीडर : **प्रदीप कुमार**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**
चित्रकार : **पार्थ सेनगुप्त**

मूल्य : वार्षिक : ७५ रुपये; द्विवार्षिक : १४५ रुपये; विदेशों में; वायुसेवा से २९० रुपये वार्षिक समुद्री जहाज से : १३५ रुपये वार्षिक
पता : **संपादक 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१**

काल-चिंतन

— बस्ती के लोग परेशान हैं; दरवाजे बंद, खिड़कियां आधी खुली हुईं; गलियां सूनसान, भोंकते हुए कुत्ते सियार-जैसे उठते उनके स्वर; चरमराती सड़क; सड़कों पर बेरोकटोक— हा हाहाकार मचाती मशीनें; खुली हुई बंदूकें; नंगी तलवारें; सीधे खड़े डंडे !

— शीत की लहर पराजित है, वह भी इतना नहीं कंपा सकती, कांप रहे हैं जैसे लोग !

— कौन हैं ये जो कांप रहे हैं ?

— इनका धर्म क्या है ? इनकी जाति क्या है ? ये धरती-पुत्र हैं या आसमान के फरिश्ते ?

— बांट दिया है आदमी को आदमी से, आदमी ने !

— कहां का धर्म-सिद्धांत है यह ? कौन-सा नियम, विनियम, विधान और संविधान स्वीकृत होगा यहां ! किसी ने स्वीकृति दी है ? कोई देगा ?

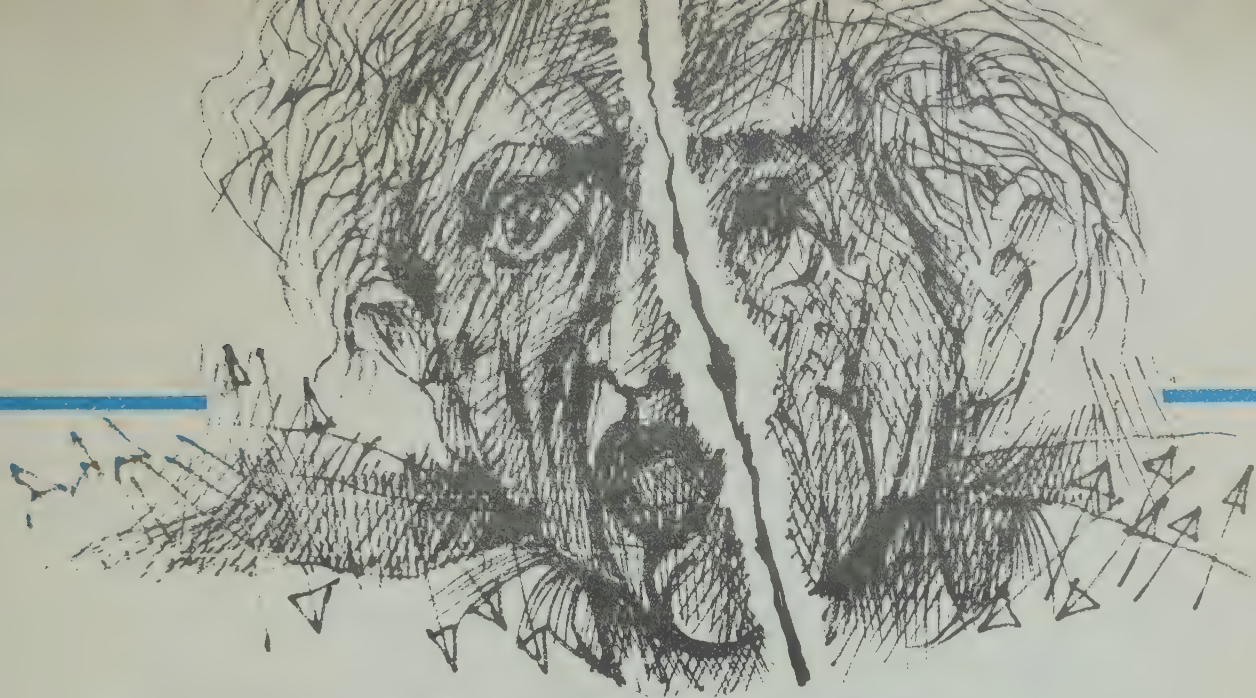
— अंगारों पर अंगुलियों से हस्ताक्षर करेगा कोई ?

— पावन, पवित्र देहधारी विषपान करेगा, कभी... कौन...क्यों ?

— मर्यादाएं भ्रष्ट हैं, टूटी हैं या सारी व्यवस्थाएं ज्वालामुखी के हवाले हो गयी हैं !

— क्या हुआ है ? क्यों हुआ है ? किसने किया है ? क्यों किया है ? एक साथ
सारे प्रश्न उठ रहे हैं क्यों ? क्यों अभी, क्यों नहीं उठे थे पहले कभी ?

— किसी ने तोड़ी होंगी मर्यादाएं,



— किसी के पाप का 'पिंडारा बाक्स' अचानक खुल गया होगा ।

— धरती ने करवट ली होगी; आसमान चूनरी-सा लहराया होगा, समंदर की लहरें ठहर गयी होंगी— सब विधर्म के द्वार पर दस्तक देने लगे हैं क्या ?

— द्वार कमजोर होगा तो टूट जाएगा, मर्यादाएं भीख मांगती नजर आएंगी, जैसे अक्सर सड़कों पर अधनंगे लड़के, घिसटते हुए अपंग या जवान औरतें !

— कमजोर होने देंगे हम उस द्वार को जिस पर न हमारा अधिकार है न आपका; जिसका न समय-साक्षी है, और जो मौसमों की मार से आज तक क्षतिग्रस्त नहीं हुआ !

□

— द्वार कमजोर नहीं हुआ और न मोमबत्ती का गुणक बना, द्वार की संज्ञा उस क्षमताशील व्यक्ति पर गाज-सी टूटी है जो काल, चक्र और समय के हाथों अटूट रहा है !

— अटूट रहा है तो क्या सृष्टिबोध बदल जाएगा; काल इतना विकराल कालजयी होगा कि भस्मासुर की तरह निगल लेगा !

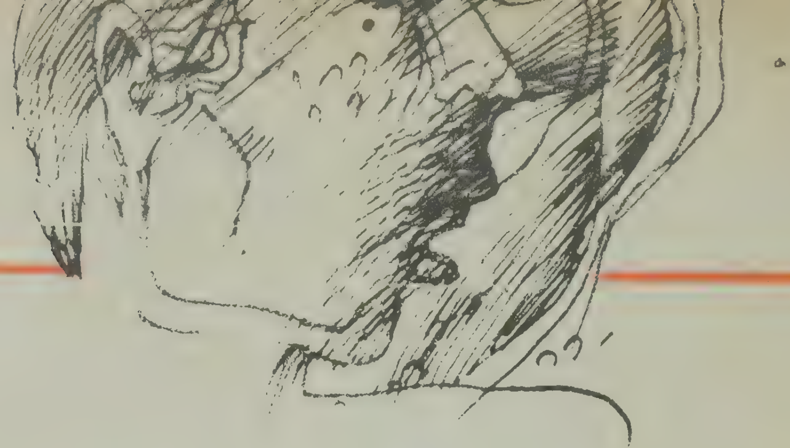
□

— प्रश्न यहीं उठता है आस्था और अनास्था का !

— प्रश्न यहीं उठता है क्षमता और सहनशीलता का !

— समय के थपेड़े आदमी की हथेली नहीं है, इसलिए उन्हें झेलने के लिए उद्दात्त संयम, शक्ति, और निष्ठा चाहिए ।

— पहचानिए क्षणों को— वह आकर कभी इस तरह कमजोर बना देता है



कि हम अपनी अस्मिता गिरवी भी नहीं रख पाते, उसके हाथ पड़कर पत्थर से बदलती हुई रेत की तरह चकनाचूर हो जाते हैं !

— वे क्षण, काल-क्षण हैं; काल-क्षण हैं तो क्या इतने अपराजेय, विजित और संहारक हैं कि हम अपनी समस्त आस्थाओं, जिज्ञासाओं और विश्वास के सहारे अपनी मुट्ठी में कैदकर इतना नहीं पीस सकते कि वे अपनी आस्था खोकर हमारी हथेलियों के बलवती प्रहार से रक्त बन जाएं और सड़ी-गली नाली में कीड़ों के भक्षण का उपहार बनें।

— काल विजित हो सकता है !

— काल जयी हो सकता है !

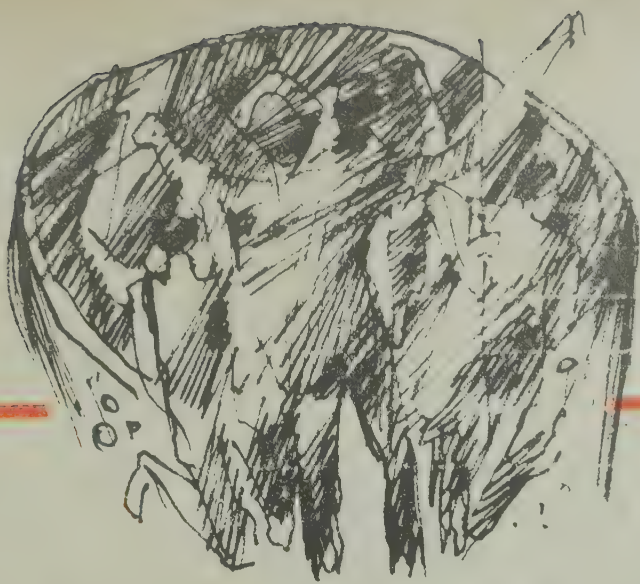
— काल समय-साक्षी हो सकता है !

— काल समय का हस्ताक्षर है !

— काल नियति का टूटा हुआ वह तारा है जो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति में आकर चकनाचूर हुआ है !

— काल की क्षमता को हम नकारना नहीं चाहते लेकिन अपनी क्षमता को भी हम काल के हवाले नहीं कर सकते ! जिस दिन ऐसा करेंगे हम, आत्महत्या का क्षण होगा वह !

— आत्महत्या कायरों का प्रलाप है ! श्रमजीवी आत्महत्या नहीं करते, अवसर आने पर हत्या करते हैं ! हत्या के पक्षधर हम नहीं, लेकिन जीवन के अनेक क्षणों में प्रसंगों के महासागर बाध्य करते हैं हमें हत्या करने के लिए— वे जो निरर्थक हैं, वे जो हमारी स्वच्छ दीवारों पर अपने काले कारनामों के धब्बे छोड़ जाते हैं, वे जो हमारे श्वेत-वस्त्रों की धवल-कीर्ति सहने में असमर्थ हैं, वे जो हमारी पहचान से परेशान हैं और उसे मिटाना चाहते हैं; वे जो मदांध हैं, वे जो सत्ता-लोलुप हैं, वे जो समाज-शोषक हैं, वे जो कीड़ों की तरह जन्म तो नहीं लेते परंतु अपना अंत वैसा ही चाहते हैं, वे जो पर-दुःख और पर-सुख के सहभागी नहीं हो सकते, वे जो मनुष्य की



संज्ञा के साथ जीते हुए भी पशुता के बाड़े में बंद होने के लिए बाध्य हैं और वे जो अपनी सीमाओं को तोड़कर पर सीमा पर बैठकर अपना कफन बिछाने की कल्पना भी नहीं कर पाते ।

□

— मनुष्य-जाति कुछ मुट्ठीभर हाथों के कारण भयग्रस्त हैं !

— उसी भय ने बस्ती के लोगों को परेशान कर रखा है !

— कर सकते हैं क्या वे अनवरत, निरंतर और अनंत !

— नहीं, नहीं, नहीं; यह क्षमता उनमें नहीं हैं । वे कायर हैं, वे आत्म सम्मान खो चुके मनुष्य देह में पशु हैं । कब तक पशु मनुष्य की तेज धार और ग्राह्य से बचेगा ?

□

— समय है !

— समय ग्रहण-ग्रस्त है !

— ग्रहण क्षण-ग्रस्त है !

— शाश्वत-बोध हमारा साक्षी है !

— हमारा साक्षी है इसलिए कि हम शाश्वत हैं !

— हम कभी नष्ट नहीं होंगे । बस, अपने को बदलते रहेंगे । हमारी इंद्रियां क्षीण होंगी तो उनके पुनर्जीवन के लिए हम रूप-परिवर्तन करेंगे ! यही न, बस; तो भय इन क्षणिक अवसादों से क्यों ?

— भ्रम समय से क्यों ?

— उठें, जागृत हों, संयमी बनें, सहने की क्षमता रखें, सृष्टि के नियंता हम हैं, हमारे बिना सृष्टि अर्थहीन है ।

राम और अयोध्या विवाद : बोट की राजनीति का आधार न बने

देश की जो समकालीन परिस्थिति है, यदि उस पर हम कुछ न लिखें तो शायद पाठकों के साथ धोखा होगा। देश का वातावरण जितना दूषित अब हुआ है, कभी नहीं हुआ। स्वाधीनता के इतना बृहत् कैनवास जातीय एकता और देश-प्रेम का उदाहरण रहा है। स्वाधीन होते ही संप्रदायवाद और जातिवाद ने जिस तरह सिर उठाया है, लज्जास्पद है।

समदृष्टि से देखें तो भारत-जैसा लोकतंत्र दुनियाभर में कहीं नहीं है। लोकतंत्र का सर्वोच्च सिद्धांतकारी देश अमरीका भी हमसे पीछे है। आज भी वहां काले और गोरों की समस्या है और गोरे शासक काले लोगों को भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे।

इससे एकदम भिन्न हमारे देश की स्थिति है। पाकिस्तान बन जाने के बावजूद सबसे अधिक मुसलमानों की संख्या हमारे देश में है। उन्हें अपने आचार-विचार, धर्म और बोट के पूरे अधिकार हैं। बराबरी की नागरिकता के वे भागीदार हैं और यहां की शासन व्यवस्था पर उन्हें उच्चतम पद मिले हैं। राष्ट्रपति-जैसा सर्वोच्च पद किसी मुसलमान को भारत में ही मिल सकता है। सेना के सर्वोच्च पद पर ईसाई, पारसी, मुसलमान और अन्य धर्मों के लोग रहे हैं। यहां की बहुमत जनसंख्या के मन में हिंदू-मुसलमान अथवा किसी और जाति का भेद नहीं रहा। इसी का परिणाम है कि अनेक अल्पमत मुसलमान क्षेत्रों से भी मुसलमानों को ही बोट मिले हैं और वे संसद और विधानसभाओं के लिए चुने जाते हैं।

यह सब कहकर हम यह नहीं बताना चाहते कि भारत का बहुसंख्यक वर्ग कितना उदार है। हम केवल इतिहास की सत्यता को प्रस्तुत कर रहे हैं और वर्तमान संदर्भों में वास्तविक स्थिति की समझ पैदा हो, यह चाहते हैं।
यह भी छिपा नहीं है कि भारत में हिंदू और मुसलमान एक अच्छे दोस्त और भाईचारे के साथ रहते हैं। एक-दूसरे की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने का काम कभी किसी



'समझदार' व्यक्ति ने नहीं किया । करनेवाले दूसरे तत्व हैं और बदनाम दूसरे लोग होते हैं ।

ऐसी स्थिति में पहली बात यह स्वीकारनी होगी कि भारत सभी धर्मों का आदर करता है । इसलिए मुसलमानों को भारत की धरती का मजबूत नागरिक समझना चाहिए । वे यहीं जन्मे, पले और बड़े हुए हैं । तब इस धरती को छोड़कर यदि कोई मुसलमान बाहर झांककर देखता है तो उसे स्वयं अपनी आत्मा से पूछना चाहिए कि वह कितना ईमानदार है । हजरत पैगंबर ने मनुष्यता की समता की बात कही है । हिंसा के वे विरोधी थे इसलिए हजरत साहब को खुदा या ईश्वर का स्थान मिला । उनकी महानता ने अन्य धर्मों पर चोट नहीं की । यही बात ईसा के साथ है । जो व्यक्ति जितना उदार और विशाल हृदय होगा, वह उतना ही पूजनीय होगा ।

पूजा की स्थिति में आकर हम राम की बात भी करना चाहेंगे । राम जन्मभूमि को लेकर जो भी विवाद हो रहा है, ठेठ बोट की राजनीति है । हमारे राजनेता, वे चाहे किसी दल के हों, भ्रमित हैं । उनकी सोचने-समझने की शक्ति केवल 'वोट बटोरने' के झमेले में उलझ गयी है । इससे ऊपर उठकर उन्होंने कभी कुछ देखा ही नहीं ।

राजनेता ऊपर उठकर देखते तो पहले वे समझते, फिर जनता को समझाते कि राम



अकेले हिंदुओं के देवता नहीं हैं । राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और मर्यादा की सीमा कौन लांघना चाहेगा । सचाई से देखें तो अनेक मुसलमान सबसे बड़े राम-भक्त हैं । उन्होंने राम नाम को ही सार्थक नहीं माना, राम चर्चा में अपने को विलीन किया है । इंडोनेशिया ठेठ मुसलिम देश है, लेकिन वहां सर्वाधिक पूजित राम हैं । कम्बोडिया में धनुर्धारी राम की प्रस्तर प्रतिमा चौराहे पर लगी है । जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि देशों में रामलीलाएं खेली जाती हैं । राम पर बैले हैं । नृत्य मंडलियां हैं और प्रेम के साथ वे राम का स्मरण करते हैं । इससे यह मान लेना चाहिए कि राम एक जाति विशेष के लिए आदरणीय नहीं हैं; वे विश्वभर में व्याप्त हैं ।

राम-जैसे कल्याणकारी व्यक्ति को लेकर फिर सांप्रदायिक उन्माद क्यों ? कुछ समय पहले कुछ लेखकों और कलाकारों के साथ हम अयोध्या गये थे । वहां के मुसलमानों ने हमसे भेंट की और कहा, बाबरी मसजिद और राम जन्मभूमि का झगड़ा केवल दिल्ली में है, यहां कभी हिंदू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक विक्षोभ नहीं रहा । उन्होंने बार-बार दोहराया कि सरयू के किनारे राम पैदा हुए और यहीं उन्होंने जल-समाधि ली, ऐसी पावन भूमि में हम रह रहे हैं, इससे बड़ा सौभाग्य क्या है ? अनेक मुसलमानों ने कहा, 'साहब, नेताओं और दलों को हटा दीजिए हम अपने हाथों राम का मंदिर बना

देंगे । मसजिद यहां है कहां ?

मसजिद जागृत हो तो वह पावन-स्थल है; एक प्रतीक के रूप में खड़ी हो तो वह पुरातत्व विभाग की संपत्ति है । कभी बाबर वहां गये थे और एक स्मारक बनवा दिया, इससे वह बाबरी मसजिद नहीं हो गयी । बाबर के शासनकाल पर कालिख पोतने की जरूरत नहीं है । राम और बाबर की तुलना वहां के मुसलमान नहीं करना चाहते । 'राम मिथक हैं' ऐसा कहनेवाले इतिहास को नहीं समझते । जवाहरलाल नेहरू ने भी यदि ऐसा कहा है (हमें संदेह है) तो कहीं-न-कहीं राजनीति का भूत उनपर भी सवार रहा है । जवाहरलाल नेहरू ने आजादी का पाठ पढ़ाया, वह भी महात्मा गांधी से सीखकर दूसरों को सिखाया । वे हर मसले में अंतिम शब्द नहीं है । हर व्यक्ति अच्छाई और बुराई एक साथ लेकर चलता है । इसी से वह बड़ा भी बनता है ।

हमारा आग्रह है कि इस देश की जनता समझदारी से काम ले । हमें जो इतिहास विरासत में मिला है, वह अंगरेजों का दिया हुआ है । हम सब जानते हैं अंगरेज फूट और भेद की नीति पर विश्वास करते रहे हैं और उसी के बल पर व्यापारी बनकर आनेवाले यहां के शासक बन गये । हमारा असल इतिहास ओझल हो गया ।

आजादी के बाद जब हमें विकास की अनेक मंजिलें मार करनी हैं तब हम सांप्रदायिक उन्माद और जातिभेद में लग गये । ये उन्माद और भेद जिन क्षेत्रों में भी हों, इनसे ऊपर उठना जरूरी है ।

मुसलमान भाइयों को यह सचाई स्वीकार करना चाहिए कि यह देश उनका है, वे इस देश के मतदाता हैं, इस देश के शासन में उनका बराबरी का रिश्ता है । अब समय आ गया है, छोटी-छोटी बातों से वे ऊपर उठें, देश के बाहर देखना छोड़ दें और राजनेताओं के बहकावे में न आएं । एक राम मंदिर का निर्माण कर वे सबसे बड़े श्रेय के भागीदार होंगे, मसजिदें तो और बन जाएंगी और उन्हें हिंदू बनाकर देंगे । असल में राम को लेकर जाति का प्रश्न सामने नहीं आना चाहिए । हिंदू-मुसलमान मिलकर रहेंगे तो यह देश आगे बढ़ेगा और उसका सुफल दोनों को मिलेगा, दोनों बांटकर खाएंगे ।

हम आशा करेंगे कि राजनेता इस विवाद से हट जाएंगे और मुसलमान भाई झूठे इतिहास को भूलकर कम से कम बाबर के साथ राम की तुलना नहीं करेंगे । वे राम मंदिर बनाकर अपने हिंदू भाईयों का प्यार पाएंगे और उस व्यक्ति के लिए अपना त्याग देंगे जो मर्यादा पुरुषोत्तम था, सब धर्मों से परे था और जिसके बल पर आज भी भारत नहीं, दुनिया के अनेक देश अपना दर्द भूलकर उत्थान में लगे हैं । मारीशस का शासकीय वाक्य देखिए ।

रामा सब सुख देहु
रामा सब दुख हर लेहु

विक्टोरिया-पुत्र

युवराज चार्ल्स इक्कीसवें प्रिंस ऑव वेल्स हैं, पहले थे एडवर्ड ऑव कैनावन, जो बाद में एडवर्ड द्वितीय (१२८४-१३२७) कहलायेगा इस उपाधि को एडवर्ड द्वितीय के पिता, एडवर्ड प्रथम, द्वारा हथियाए जाने के पूर्व यह पूर्णतया वेल्श लोगों की ही थी जिसका उपयोग नवीं शताब्दी में रोडरी मॉर के छह पुत्रों के लिए जातिगत शब्द के रूप में किया जाता था। रोडरी मॉर एक वीर योद्धा था जिसने वेल्श को उसी कालावधि में एकीकृत किया था जिसमें राजा ऐल्फ्रेड ने ईसाई अंग्रेजों को विधर्मी डेंस के विरुद्ध एक सूत्र में पिरोया था।

एडवर्ड प्रथम ने अनेक बड़े-बड़े दुर्ग बनाकर उत्तरी वेल्स की अपनी विजय को सुदृढ़ कर लिया था। ऐसे ही निर्माणाधीन दुर्ग के चारों ओर फैले मजदूरों के शिविर में उसकी पत्नी, रानी इलियनर, ने १२८४ में एडवर्ड को जन्म दिया।

एडवर्ड उस समय ४५ वर्ष का था। उसके दो पुत्र पहले मर चुके थे, और एडवर्ड के पैदा होने के चार माह बाद दस वर्ष का युवराज अल्फांसो भी मर गया। कैनावन में भावी एडवर्ड द्वितीय का नामकरण संस्कार बड़ी धूमधाम से मनाया गया था। एडवर्ड के जन्म के बाद राजा ने अपने पुत्र को वेल्श लार्डों के समक्ष नंगा ही पेश करके उसे यह आपका ही है' कहकर उनका बना दिया था। इसके सोलह वर्ष बाद युवा एडवर्ड को प्रथम ब्रिटिश प्रिंस ऑव वेल्श का उपाधिधारी बना दिया गया था। यह घटना १३०१ की सर्दियों की है जब इसके पिता स्काटिश युद्ध में व्यस्त थे।

एक 'ब्लैक प्रिंस' भी

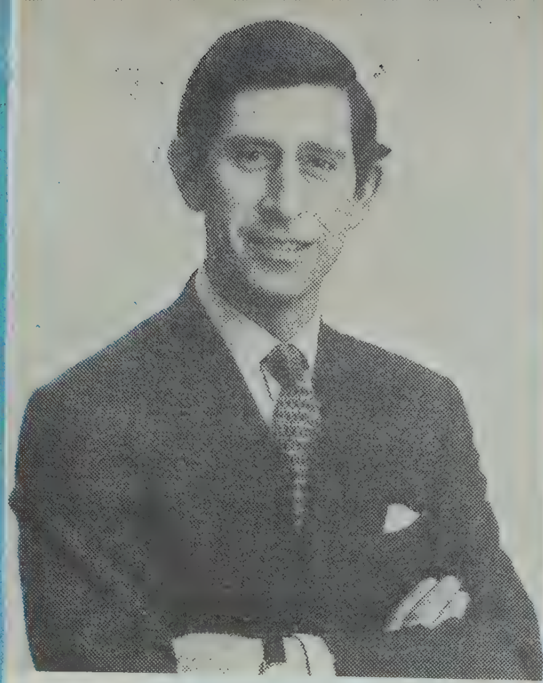
प्रिंस ऑव वेल्स की उपाधि प्राप्त इन २१ युवराजों में से अंततः बारह आगे चलकर राजा बने थे। दूसरा प्रिंस ऑव वेल्स, एडवर्ड ऑव वुडस्टॉक, एडवर्ड तृतीय का पुत्र, उनमें शामिल नहीं था जो राजा बन सके थे। यह 'ब्लैक प्रिंस' कहलाता था और वीर होने के साथ ही बलिष्ठ और सुंदर भी था। उसने अवस्था में दो वर्ष

मेरी जीवित दुल्हन को

ब्रिटेन के युवराज चार्ल्स, प्रिंस ऑव वेल्स, तीसरी बार भारत की यात्रा पर आये हैं। अपनी पहली यात्रा, जो नेपाल नरेश के राज्याभिषेक में काठमांडू जाते हुए की गई थी, में युवराज से भारतीय जनता का उस समय मन मोह लिया था जब महात्मा गांधी की समाधि पर उन्होंने नंगे पैर ही जाना बेहतर समझा था जबकि उनके अन्य साथियों ने अपने मोजों पर कपड़े के खोल चढ़ा लिये थे। उनकी दूसरी यात्रा १९८० में हुई थी जब भारत सरकार के नियंत्रण पर इन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया था। यह इनकी तीसरी भारत यात्रा है।

बड़ी एक विधवा, काउंटेस ऑव केंट से विवाह किया । इससे दो पुत्र हुए जिसमें से एडमंड उसके सामने ही मर गया, और रिचर्ड तीसरा प्रिंस ऑव वेल्स बना तथा अपने दादा, रिचर्ड तृतीय, की मृत्यु के बाद राजा बना । चौथा प्रिंस ऑव वेल्स, हेनरी ऑव मॉनमथ, वेल्स में पैदा होनेवाला दूसरा और अंतिम था ।

आठवां प्रिंस ऑव वेल्स, युवराज ऑर्थर (१४८६-१५०२) शायद शिक्षा प्राप्त करते-करते ही मर गया । उसके पिता ने स्पेन के राजा की छोटी पुत्री, राजकुमारी कैथरीन ऑव ऐरजन, से विवाह की बात चलायी । स्पेनी राजदूतों ने युवराज का विवस्त्र अवस्था में निरीक्षण किया । हेनरी सप्तम ने अपने पुत्र के लिए २ लाख क्राउन की एक भारी राशि दहेज में मांगी, और यह शर्त भी लगायी कि कैथरीन को वाइन पीना सिखाया जाए 'क्योंकि इंग्लैंड का पानी पीने योग्य नहीं है' । कैथरीन ने चार माह की कठिन समुद्री यात्रा के बाद अपने से दस माह छोटे राजकुमार से १५०१ में विवाह किया जो लगभग पांच माह के बाद ही मर गया ।



प्रिंस ऑव वेल्स चार्ल्स

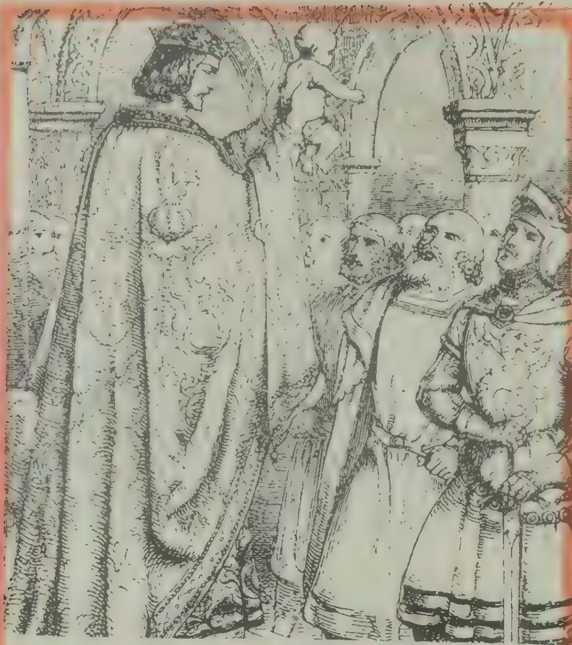
अर्थी पर लाया जाए

● अनन्त राम गौड़

युवा विधवा को कोई आठ वर्ष बाद नवें प्रिंस ऑव वेल्स की पत्नी बना दिया गया, जो उससे उम्र में छह साल बड़ा था और अब हेनरी अष्टम के नाम से देश का राजा था । इसने अपने एक मात्र पुत्र एडवर्ड, जो १५४७ में गद्दी पर बैठा, को प्रिंस ऑव वेल्स' नहीं बनाया ।

ज्येष्ठ पुत्र ही प्रिंस ऑव वेल्स

जेम्स प्रथम ने इस प्रथा को पुनः शुरू करके अपने ज्येष्ठ पुत्र, हेनरी ऑव स्टर्लिंग, को १६१० में दसवां प्रिंस ऑव वेल्स नियुक्त किया । हेनरी समस्त राजकुमारों में एक आदर्श था । वह लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच और स्पेनिश भाषाएं भलीभांति बोल और लिख सकता था, संगीत और कला, तीरंदाजी तथा बर्छीबाजी में निष्णात था । इसके अतिरिक्त एक योग्य धर्मविज्ञानी तथा इतिहासवेत्ता था । जेम्स प्रथम, जिसका नैतिक स्तर बहुत ऊंचा नहीं था, उन्होंने अपने पुत्र के लिए कुछ आदर्श निर्धारित किये थे । 'याद रखो, विवाह किसी भी मनुष्य के लिए इस भौतिक जगत का सबसे बड़ा सौभाग्य



सन १२८४ में वेल्स के सामंतों के समक्ष भावी प्रिंस ऑव वेल्स को प्रस्तुत करते हुए एडवर्ड प्रथम

या विपदा है । अपने शरीर को स्वच्छ और प्रदूषणरहित रखना तथा अपनी पत्नी के लिए सुरक्षित रखना क्योंकि इस पर केवल उसी का स्वामित्व है, क्योंकि यदि तुम्हारा शरीर दूषित होगा तो एक सच्चरित और पवित्र अक्षतयोनि की कामना तुम कैसे कर सकते हो ?'

लेकिन इन आदर्शों पर अमल करने से पहले ही वह १९ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गया । अब उसका दूसरा पुत्र ग्यारहवां प्रिंस आव वेल्स बना जो चार्ल्स प्रथम के रूप में इंगलैंड का राजा बना ।

पुत्र एक भी नहीं, अवैध पुत्र अनेक

आगे चलकर चार्ल्स प्रथम का ज्येष्ठ पुत्र अपने जन्म के तुरंत बाद बारहवां प्रिंस ऑव वेल्स उपाधिधारी हुआ । गृह युद्ध और देश-निष्कासन के बाद किसी प्रकार से यह सिंहासन प्राप्त करने में सफल हो गया । चार्ल्स द्वितीय के नाम से यह इंगलैंड का यद्यपि बड़ा योग्य राजा बना था, लेकिन इसकी रानी एक भी पुत्र को जन्म नहीं दे सकी, यद्यपि इसके अवैध पुत्रों की गिनती लगभग एक दर्जन में की जाती है ।

तेरहवां प्रिंस ऑव वेल्स, जेम्स फ्रैंसिस एडवर्ड, अपनी इस उपाधि के प्राप्त करने के छह माह के पश्चात ही सिंहासन से वंचित कर दिया गया । इसने अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए तीन प्रयास किये लेकिन १६८८ में अंतिम रूप से असफल रहा ।

हनोवर (जर्मनी का राजकुमार, जॉर्ज लुई, १७१४ में निस्संतान महारानी ऐन का उत्तराधिकारी बनकर इंगलैंड आया । इसके साथ इसका पुत्र, जॉर्ज आगस्टस (१६८३-१७६०) भी आया था जो चौदहवा प्रिंस ऑव वेल्स घोषित किया गया । इसके विरुद्ध उसके शिक्षकों की यह शिकायत थी कि 'वह पीने-पिलाने में जर्मन सामंतों की बराबरी नहीं कर पाता !'

यह १७२८ में जॉर्ज द्वितीय के रूप में राजा बना तथा, अभी तक जर्मनी में ही रहता आया, इसका पुत्र फ्रेड्रिक जनवरी १७२९ में पंद्रहवा प्रिंस ऑव वेल्स घोषित किया गया, यद्यपि पिता-पुत्र में सदा अनबन रहती थी । फ्रेड्रिक बड़ा संयमी और पारिवारिक राजकुमार था । अपने बच्चों को बहुत चाहता था और उसके साथ क्रिकेट खेलता था । एक दिन क्रिकेटगेंद के लगने से ही वह मर गया । यह दुःखद समाचार सुनकर उसके पिता ने ताश खेलते हुए अपनी सहेली से मात्र इतना कहा : 'फ्रिट्ज



प्रिंस ऑव वेल्स चार्ल्स अपनी डायना स्पेंसर के साथ

रानी विक्टोरिया की इच्छा थी कि राजकुमार के विवाह पर सेंट जॉर्ज गिरजाघर को काले कपड़े से सजाया जाए। इस पर वर ने कहा, ''तो फिर दुल्हन को लाश ढोनेवाली गाड़ी में अरथी पर लाया जाए।'

चल बसा' और फिर अगली बाजी की तैयारी करने लगा।

इसका पुत्र जॉर्ज विलियम सोलहवां प्रिंस ऑव वेल्स हुआ। जो जॉर्ज तृतीय के नाम से अपने दादा के मरने पर इंग्लैंड का राजा बना। इसके १५ बच्चे हुए जिनमें जॉर्ज आगस्टस फ्रेड्रिक सबसे बड़ा था जिसे १२ अगस्त १७६२ को उसके जन्म के पांच दिन बाद ही प्रिंस ऑव वेल्स की उपाधि दे दी गयी। यह इस क्रम में सत्रहवां था।

उसे जॉर्ज चतुर्थ की हैसियत से राजा बनने के लिए लगभग ई. वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह बाद में दस वर्ष राजा रहा। महारानी विक्टोयिा १८३७ में सिंहासनारुढ़ हुई और इन्होंने १८४० में ऐलबर्ट से विवाह किया। इन दोनों का प्रथम पुत्र राजकुमार ऐलबर्ट एडवर्ड अपने जन्म (१८४१) के एक माह के भीतर ही अट्ठारहवां प्रिंस ऑव वेल्स बना दिया गया।

अपनी मृत्यु (१८६१) से पूर्व प्रिंस ऐलबर्ट ने अपने पुत्र से यह आशा व्यक्त की थी कि वह डेनमार्क की राजकुमारी एलेक्जेंड्रा से विवाह करें। अतएव सितम्बर १८६२ में महारानी विक्टोरिया और २१ वर्षीय प्रिंस ऑव वेल्स ने ब्रसल्स के निकट लाइकेन में बेल्जियम के राजा

लिओपौल्ड का आतिथ्य स्वीकार किया। यहां सत्रह वर्षीया राजकुमारी एलेक्झेंड्रा को समझा दिया गया था कि वह सादे लिबास में रहें, और मुसकराएं नहीं, क्योंकि महारानी अब भी अपने पति की मृत्यु के कारण शोक संतप्त हैं। वह किसी को प्रसन्न नहीं देख पातीं हैं। महारानी ने राजकुमारी को पसंद कर लिया, यद्यपि उनकी आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होती रही।

प्रिंस ऑव वेल्स और राजकुमारी एलेक्झेंड्रा की सगाई की घोषणा के बीच के छह माह राजकुमारी को महारानी विक्टोरिया के सान्निध्य में व्यतीत करने पड़े जहां उसे यह बताया जाता था कि ब्रिटेन में एक प्रिंसेज ऑव वेल्स से क्या अपेक्षायें की जाती हैं तथा उसे किस तरह का व्यवहार करना होगा। उसे किस प्रकार उठना-बैठना होगा यह भी उसकी भावी सास सिखाती रहती थी। यह समय उसने बड़ी अच्छी तरह काटा यद्यपि उसे इस बात का दुःख था कि उसके पिता को एक होटल में ठहरना पड़ा है और उसकी मां को तो इंग्लैंड में निमंत्रित तक नहीं किया गया।

रानी विक्टोरिया का हठ

अपने पति की मृत्यु के बाद के लगभग ४० वर्ष विक्टोरिया ने शोक में ही व्यतीत किये। वह काली पोशाक ही धारणा करती रही, जनता के बीच भी आने में उनको संकोच होता रहा। एडवर्ड का विवाह लंदन के बजाये विंजर में हुआ महारानी की इच्छा थी कि सेंट जॉर्ज गिरजे को काले कपड़ों से सजाया जाये। इस पर राजकुमार ने कहा 'तो फिर मेरी दुल्हन को लाश ढोनेवाली गाड़ी में अरथी पर लाया जाय!' तथापि, दूल्हे की मां ने तो काले वस्त्र ही पहने, किंतु ९०० अतिथियों को अपने सुंदरतम परिधान पहनने की अनुमति दे दी गयी। विवाह के समय दुल्हन के साथ रहनेवाली कन्याओं का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया था किं वह अत्यधिक असुंदर हों! विवाहोपरांत भोज में विक्टोरिया अनुपस्थित रहीं और विंजर कासिल की खिड़की से नवदंपत्ती को मधुयामिनी के लिए जाते हुए अश्रुपूरित आंखों से देखती रहीं।

प्रिंस ऑव वेल्स इस तरह ५९ वर्ष रहे क्योंकि उनकी मां का राज किसी भी ब्रिटिश राजा या रानी से दीर्घावधि तक रहा। जनवरी १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु तक राजकुमार एडवर्ड का ज्येष्ठ पुत्र भी मर चुका था। अतएव इनका दूसरा पुत्र उन्नीसवां प्रिंस ऑव वेल्स घोषित किया गया। यही बाद में जॉर्ज पंचम के नाम से सिंहासनारुढ़ हुए, यद्यपि इनके पुत्र लगभग २५ वर्ष बीसवें प्रिंस ऑव वेल्स बने, किंतु इनका राज्याभिषेक नहीं हो सका। हां, दस महीनों से कुछ अधिक समय तक एडवर्ड अष्टम के रूप में वह राजा जरुर रहे फिर अपने विवाह संबंधी विवाद के कारण गद्दी छोड़ बैठे।

अब चार्ल्स इक्कीसवें प्रिंस ऑव वेल्स हैं, जो सैनिक, नौ-सैनिक, वायु-सैनिक, राजनयिक, व्यापारी, राजदूत, इतिहास स्नातक, भाषाविद, पुरातत्वविज्ञानी, घुड़सवार, गोताखोर, संगीतज्ञ, अभिनेता, कमेडियन और लेखक होने के कारण अपने सभी पूर्ववर्तियों की तुलना में सबसे अधिक लोकप्रिय और विशिष्ट हैं।

सी.२बी./११२ सी. जनकपुरी
नयी दिल्ली-११००५८

लीजिए होली के अवसर पर प्रस्तुत है

विचित्र विशेषांक

विचित्र विशेषांक के विशिष्ट आकर्षण

• शेर के जबड़े तोड़नेवाला खूंख्वार घोड़ा

लखनऊ के एक ऐसे घोड़े की दास्तान जिसने अकेले तीन-तीन शेरों और अरने भैंसों को पछाड़ दिया ।

• अवध के बंकैत जो छल्ले बंधे रूमाल से तलवारों का मुकाबला करते थे ।

और यह कला केवल ब्राह्मण ही जानते थे । पास रखते थे न कोई हथियार और न कोई लाठी । बस, रूमाल में बंधा छल्ला ही उनका खतरनाक सहारा था ।

• देह किसी की और आत्मा किसी की

परकाया प्रवेश के कुछ सच्चे प्रसंग, जिनका रहस्य आज तक कोई नहीं जान पाया

• शरीर से निकलती रहस्यमय नीली लपटें

राह चलते एक व्यक्ति के शरीर से अचानक नीली-नीली लपटें निकलीं और देखते-देखते वह भस्मसात हो गया । ऐसा किसी एक व्यक्ति के साथ नहीं हुआ । कई व्यक्ति इन नीली लपटों के शिकार हुए ! क्या कोई इन नीली लपटों का रहस्य जान पाया ?

• स्वामीजी की स्वर्ग से वापसी

नदी में आयी बाढ़ अमरसिंह को बहा ले गयी । ग्वालों ने किसी तरह उन्हें बचाया । चौबीस घंटों बाद अमरसिंह को होश आया । इन चौबीस घंटों में अमरसिंह ने दूसरी दुनिया के चमत्कार देखे और वे स्वामी अमरानंद बन गये । एक बेहद रोमांचक सत्य घटना

इस विशेषांक की कुछ अन्य दिलचस्प रचनाएं

- बंगलोर : शैतान की पूजा होती है
- किस्सा एक झगड़ालू औरत का
- जिन्न : शहजादे से कैसे मुक्ति मिली
- इलोजी : होली के आदर्श प्रेमी
- कुछ रंगीले किस्से—भांग-भवानी के !
- कुछ बीमारियां भी बड़े काम की होती हैं !
- सफरनामा जूतों का
- दस हजार का एक रूमाल
- इशारों पर इकट्ठा होनेवाली मछलियां
- जब जहांपनाह बनते थे जोगी और बेगमें गोपियां !
- पत्रकार जो जासूस था !
- लोहे की सिलेंडर में कैद लाश ।
- जब दहेज में भूत मिला

हिमालय और उसके वनों को बचाना राष्ट्रीय कर्त्तव्य

• शांताकुमार

(मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश)

"हिमालय हमारी राष्ट्रीय धरोहर और समृद्ध संस्कृति का भंडार ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समृद्धि का वाहक भी है। इसके वनों का निरंतर ह्रास राष्ट्रीय चिंता का विषय है, जिसके लिए हिमाचल प्रदेश सभी राष्ट्रीय मंचों पर अपनी आवाज उठाता, रहा है और हिमालय के संरक्षण के लिए एक राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता पर बल देता रहा है क्योंकि विभिन्न राज्य अपने तौर पर इस पर आने वाले भारी खर्च को वहन नहीं कर सकते। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत सरकार एक राष्ट्रीय हिमालय नीति बनाये। हिमालय को, उसके वनों को बचाना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। मैंने तो यह भी कहा है कि योजना आयोग में हिमालय का चिंतन करने के लिए एक पृथक 'सेल' बनाया जाए।

जहां तक हिमाचल प्रदेश का संबंध है, उसने पौधारोपण को लोगों का कार्यक्रम बनाने तथा साथ ही साथ इसे रोजगार से जोड़ने के लिए 'वन लगाओ-रोजी कमाओ' नाम का एक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम तैयार किया है। इस कार्यक्रम ने पूरे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया है और इसी १० फरवरी को प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर द्वारा प्रदेश में इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया जाएगा। इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :

चालू वित्त वर्ष के दौरान १,००० गरीबी रेखा से नीचे रह रहे परिवारों, अन्त्योदय परिवारों का चयन किया जाएगा। इन परिवारों में से ८० प्रतिशत को पौध रोपण कार्यक्रम में और २० प्रतिशत को 'किसान पौधशालाएं' लगाने के काम में लगाया जाएगा।

इस कार्यक्रम का प्रथम चरण वर्ष १९९१-९२ में आरंभ किया जाएगा और १०,००० गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे परिवारों, अन्त्योदय परिवारों, शिक्षा संस्थानों



तथा महिला मंडलों का चयन किया जाएगा और लगभग १६,००० हेक्टेयर भूमि पर वन लगाने के लिए तैनात किया जाएगा ।

चुने हुए प्रत्येक परिवार या व्यक्ति या संस्था को पौधरोपण के लिए कांटेदार तार की बाड़ लगा हुआ दो हैक्टेयर भूमि का टुकड़ा दिया जाएगा । लाभार्थी इस क्षेत्र से झाड़ियां साफ करके, खड्डे खोदकर पौधे लगाएगा, जिसके लिए उसे दो हैक्टेयर के लिए ४,८०० रुपये का भुगतान किया जाएगा ।

लाभार्थी इन पौधों की देखभाल के लिए जिम्मेवार होगा । उसे मृत पौधों के स्थान पर लगाने के लिए नये पौधे दिये जाएंगे और बाड़ की मरम्मत के लिए लकड़ी के खंबे और कीलें भी दी जाएंगी । इस कार्य पर पहले ८०० रुपये, दूसरे वर्ष ४०० रुपये और तीसरे वर्ष ३०० रुपये का खर्च आएगा और लाभार्थी को इस दो हैक्टेयर पौधरोपण के रख-रखाव के लिए दिये जाएंगे ।

काम और मजदूरी में संपर्क बनाये रखने के लिए पेड़ों के संरक्षण हेतु किये जाने वाले भुगतान को पौधों की अस्तित्व दर से जोड़ा गया है । त्रिशंक प्रजाति के पौधों के लिए यदि अस्तित्व दर ८० प्रतिशत और चौड़ी पल्ली प्रजाति के लिए ७५ प्रतिशत रहती है तो लाभार्थी को ३०० रुपये प्रतिमाह, यदि अस्तित्व दर ६० से ८० प्रतिशत के बीच है तो २५० रुपये प्रतिमाह और यदि अस्तित्व दर ५० से ६० प्रतिशत है तो २०० रुपये प्रतिमाह दिये जाएंगे । यदि अस्तित्व दर ५० प्रतिशत से कम है तो लाभार्थी को कोई राशि नहीं दी जाएगी और वन विभाग पौधों को अपने अधिकार में ले

हिमालय भारत की संपूर्ण समृद्धि का वाहक भी है । इसके वनों का निरंतर ह्रास राष्ट्रीय चिंता का विषय है । आज आवश्यकता इस बात की है कि योजना आयोग में हिमालय के चिंतन के लिए एक पृथक सेल गठित किया जाए ।


मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश
शांता कुमार

लेगा ।

लाभार्थी को पेड़ लगाये गये क्षेत्र में उगनेवाले घास का २० प्रतिशत देय होगा । इस घास की सहायता से लाभार्थी अपनी आय बढ़ाने के लिए पशुपालन शुरू कर सकता है । मधु-मक्खी पालन तथा अन्य सहायक व्यवसायों को भी प्रोत्साहन दिया जाएगा ।

पेड़ों की बिक्री से होने वाली आय का २५ प्रतिशत लाभार्थी को तथा २५ प्रतिशत बरतनदारान को दिया जाएगा । शिक्षा संस्थाओं तथा महिला मंडलों को मिलने वाली राशि इन संस्थाओं तथा संगठनों के विकास पर खर्च की जाएगी । अगले दस वर्षों में वनों के तहत क्षेत्रफल १०० प्रतिशत वृद्धि हो जाएगी ।

हिमाचल में पर्यटन की विशाल क्षमताएं हैं । इन क्षमताओं के दोहन राज्य की आय बढ़ने के अतिरिक्त बेरोजगार युवकों के लिए रोजगार के हजारों अवसर उपलब्ध हो सकते हैं ।

पर्यटन को प्रदेश के मुख्य उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है । मार्च, १९९१ तक बनकर तैयार हो जाएगा ।

विदेशी पर्यटकों को हिमाचल की जानकारी देने के लिए लंदन, हम्बर्ग तथा फेक्फर्ट में एक सप्ताह का 'हिमाचल उत्सव' आयोजित किया गया था । स्वदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इसी प्रकार के उत्सव अहमदाबाद, बंगलौर तथा कलकत्ता में भी आयोजित किए जाएंगे । पर्यटन के विकास में स्थानीय लोगों, विशेषकर युवकों को भागीदार बनाने के लिए भी योजना बनायी गयी है । इससे उन्हें अपने घरों के निकट ही रोजी कमाने में सहायता मिलेगी । सरकार ने शिमला जिले में केगनेनों, कांगड़ा जिले में पालमपुर तथा कुल्लू जिले में मनाली के स्थान पर तीन मनोरंजन पार्क स्थापित करने का निर्णय लिया है । १.२५ करोड़ रुपये की लागत वाले केगनेनों पार्क का कार्य एक महीने में आरंम्भ हो जाएगा ।

पर्यटन को और बढ़ावा देने तथा आकर्षणों में वृद्धि करने के उद्देश्य से ६ रज्जुमार्ग परियोजनाएं हाथ में ली गयी हैं ।

मुख्यमंत्री निवास, शिमला

ताईवान के मंगेतरों की किस्मत में ४० साल लंबी जुदाई लिखी थी । इतनी लंबी जुदाई के बाद आखिरकार दोनों परिणय-सूत्र में बंध गये ।

ताईवान मे रहनेवाले ६० वर्षीय लियोग याओजु की मंगनी १९४८ में सिसिआंग से हुई थी । देश में राजनीतिक उथल-पुथल की वजह से दोनों के रास्ते बदल गये थे । याओजु को गिरफ़ार कर लिया गया था । सिसिआंग को पिछले साल पता चला कि याओजु रिहोई के बाद किसी जगह रह रहा है । वह वहां पहुंच गयी । याओजु १९४० में इलेक्ट्रिकल इंजीनियर था जब सिसिआंग से उसकी मुलाकात हुई थी ।

दर्पण पर दागों का ताला

● रामनिवास जाजू

आदर्शों ने सत्ता के घर
आत्म-समर्पण कर ही डाला ।
कहां संवारेंगे चेहरे जब
दर्पण पर दागों का ताला ।।

* * *

दोष नहीं सत्ता का इसमें
उसको तो शासन करना है,
दोष नहीं जनता का इसमें
उसको भी जीवन जीना है ।
दोषी नहीं प्रशासन इसमें
उसका तो आंचल झीना है,
दोष उन्हीं का जो नित अपना
रूप बदलते दांव बदलते ।
दलित कौन, पद-दलित कौन जब
खून बह रहा घाव निकलते !
कैसे हो निरपेक्ष धर्म जब
वोटों के षड्यंत्र चले हैं,
कूटनीति के ओलों से कब
लोकनीति के चमन फले हैं ।
सत्ता की ज्वाला पीनी तो
मिटो स्वयं फिर पीना ज्वाला,
कहां संवारेंगे चेहरे जब
दर्पण पर दागों का ताला ।

* * *

आग लगानेवालो पहले
सीखो घर की आग बुझाना,
वरना भस्म करोगे सबको
जपकर केवल मंत्र पुराना ।
अलख जगाना बात और है
बीन बजाने से क्या होना,
पर्वत के प्रहरी बनना तो
चट्टानों पर करो बिछौना ।
जो नाचेंगे साथ समय के
वे तो केवल कठपुतली हैं,
मोड़ समय को, जो नकेल दें
वे समाज के बल असली हैं ।
धुंआ न छोड़ो अंधकार में
सांस घुटेगी दमा उठेगा—
अगर हिलाना है सिंहासन
संकल्पों की पहनो माला,
कहां संवारेंगे चेहरे जब
दर्पण पर दागों का ताला ।

* * *

भारतीयता स्थापित करने
धर्म-धर्म के जब सेनानी,
आगे बढ़कर त्याग करेंगे
तभी बनेगी नयी कहानी ।
हाथ जलाकर हवन करो अब
हो जाओ प्रहरी बलिदानी,
वरना विष बननेवाला है
अपनी ही गंगा का पानी ।
शायद सूरज ऐसा डूबे
हमें छोड़कर अंधकार में,
हाथ-हाथ को ढूंढ न पाए
बिछुड़ जाएं हम खड़े द्वार में ।
घूंट हलाहल का लो पहले
सिंधु तभी अमृत उगलेगा—
शपथ पांव में पहनो, पथ पर
क्योंकि जमा है भीषण पाला,
कहां संवारेंगे चेहरे जब
दर्पण पर दागों का ताला ।

* * *

आदर्शों से सत्ता के घर
आत्म-समर्पण कर ही डाला ।
कहां संवारेंगे चेहरे जब
दर्पण पर दागों का ताला ।

७, श्रीराम मार्ग दिल्ली-११००५४

बौराये वसंत का पागलपन

● डॉ. श्रीराम परिहार

अब इस वसंत का क्या करोगे ? यह फिर आ गया है । हालांकि पिछले तीन-चार साल से वनस्पति और जंगलों की जड़ों की बात तो दूर है, ठीक-ठीक उनके शरीर पर भी पानी नहीं बरसा है, फिर भी यह आ गया है । हर साल की अपेक्षा इसके ठाठ कुछ कम हैं, शायद सूखे की शरम के कारण ऐसा हो, लेकिन इसका मिजाज वहीं है । "मस्त रहो मस्ती में, आग लगे—बस्ती में" वाला मिजाज । वसंत अपने लिबास में खूब ही परिवर्तन कर सादगी लाएगा, तो भी वह कंगाल तो नहीं होगा । और फिर यह कैसे हो सकता है कि पानी न गिरे या बाढ़ आ जाए तो वसंत जंगलों, पहाड़ों, मैदानों में निकलना ही बंद कर दे । इस धरती पर तो आये दिन यह सब होता ही रहता है, आखिर कब तक बापड़ा वसंत लिहाज पालेगा ? जंगली झाड़ों और गावड़ी पौधों की बदौलत वसंत अपनी आचरण संहिता में बदलाव नहीं ला सकता ।

मनमौजी वसंत

वैसे वसंत बड़ा मनमौजी होता है । यह सबके पास नहीं आता । सब पर नहीं आता । मैंने कई पेड़ों को तो वसंत में फूलों के झबरों से लदाफदा देखा है और कई टुकुर-टुकुर ताकते रह जाते हैं । वसंत सर्र से आता है, फर्र से चला जाता है । कई पेड़ तो आने की खबर पाकर ही इतराने लगते हैं । गली, घाट, गड़वाट, चौरस्तों पर पत्ते उतारकर नंगे हो जाते हैं । उनकी शाखें और टहनियां लचरदार हो जाती हैं । वसंत उन्हें देखकर उनके नंगेपन पर गर्व करता हुआ, उन्हें शाबाशी देता है तथा उनकी ओर एक-एक मुट्ठी फूल फेंक देता है । हां कुछ आम सरीखे वृक्ष अवश्य हैं, जो पत्तों सहित अपने स्वाभिमान पूर्वक अमराई में डटे रहते हैं । वे अपनी हरीतिमा में और सघन हो उठते हैं । वसंत उनकी फुनगियों से फूटकर स्वयं गौरव पाता है । अधिकांश पेड़ों की तरफ वसंत ढूंकता भी नहीं । इतना अवश्य है वसंत आने के पूर्व पतझड़ इनके पीले पत्तों को तोड़ डालता है ।

सबका चहेता वसंत

कौन अपने जीवन में वसंत का आगमन

नहीं चाहता है ? सारी वनस्पति सहज भाव से मुसकराना चाहती है । फूलों की कलगी धरकर पेड़-पौधे नाचना चाहते हैं । चीथड़ों को उतार वासंती-वसन पहनना चाहते हैं । आंखों में कलियों का जागरण चाहते हैं । सांसों में सुमनों की महक चाहते हैं । शिशिर की जकड़न से निजात पाकर, अंग-अंग में वसंत-डूबी ताजगी चाहते हैं । गति में ठुमक और वाणी में खनक चाहते हैं । दूसरे मौसमों की सूद-दर-सूद चली आती मार से छुटकारा चाहते हैं । पत्थरों की संधियों में फंसी अपनी जड़ों में गीलापन चाहते हैं । लाल मिट्टीवाली धरती पर सदानीरा पहाड़ी नदी चाहते हैं । अपनी वानस्पतिक गंध से वसंत को मौलिक सहजता देना चाहते हैं ।

परंतु दुनिया में सबको मनचाही स्थिति नहीं मिलती । कोई चांदी का चम्मच लेकर पैदा होता है । कोई दोनों हाथ खोले खड़ा रहता है, रात-दिन हाड़ तोड़ता है फिर भी मुट्ठीभर वसंत नहीं मिल पाता । कुछ पौधे खास जरूर होते हैं, जो क्यारी के गुलाब बनकर फूलते-फलते रहते हैं । बाकी तो सब पलाश हैं । यह बात दूसरी है कि उन गुलाबों कीं 'कुकुरमुत्ता' जबरदस्त लथाड़ देता है । ज्यादातर वृक्षों को तो सख्त पत्थर, सूखी मिट्टी, नुकीले कंकड़ और रेतीले ढलानवाली जमीन ही मिली है । वर्षा उन्हें नहला जाती है और गरमी सुखा जाती है । कुछ पेड़ वसंत के पहले ही कट जाते हैं । लोहे के कल-पुर्जों पर लदे-लदे गायब हो जाते हैं । कुछ लोगों के अलावों में जलकर उनकी जकड़न दूर करते हैं । उनका जाड़ा भगाते हैं । कुछ अलाव की आंच में आंखों की कोर के टूटते तटों को देखते हैं । देखते हैं और धूं-धूंकर जलते हैं । कुछ खुद जलकर लोगों के भीतर की आग को सोख लेते हैं । कुछ अपनी आग से दूसरों के भीतर भी आग पैदा कर देते हैं । कुछ को जीवन में वसंत आने के पहले ही दूसरी जगह बसाने, रोपण करने के आश्वासन के साथ उजाड़ दिया जाता है । कभी बांध का बहाना लेकर कभी उद्योग लगाने का तर्क देकर आदिम वनों की बस्तियों के भूगोल में से

वसंत की एक खासियत और है । यह कभी-कभी सहयोगी नायक बनकर प्रकृति के रंग मंच पर आता है । यह उसकी बड़ी खतरनाक किस्म की भूमिका होती है । कामदेव इसे सखा के रूप में पाकर धन्य-धन्य हो जाता है । वसंत कामदेव को कुसुम बाण 'सप्लाई' करता है और मदन है कि उनका दुरुपयोग करता रहता है ।

निकाल दिया जाता है । ये पुरातन अरण्य वसंत को बिना देखे, बिना छुए चुपचाप मिट जाते हैं । कभी-कभी तेज आंधियां चलती हैं । आंधियां ही आंधियां । बेमानी आंधियां । छोटे-छोटे, नये-नये, किशोर विटप उखड़ जाते हैं । डालियां टूट जाती हैं । टूटे तने ठूंठ हो जाते हैं । कोयल, मोर, पपीहा, तोता कटे-पंख, घायल शरीर लिये सकते में आ जाते हैं । कोस-कोस, मील-मील पर बूढ़े झांड़-झंखाड़ अस्थिशेष बचे रहते हैं । तब फिर मौसम में वसंत मुआयना करने निकलता है । वृद्ध तरू हाथ जोड़ कहते हैं—"जिनके सिर पर फूल और शरीर पर कोपलें होनी थी, वे तो भलुंठित हो गये । तुम्हारी दया को हम कहां और किसके लिए सहेजें ?" वसंत उन अनुभवी बूढ़े वृक्षों को आस बंधाता है—"हम तुम्हारी नयी फसल उगाएंगे ।" नयी फसल उगाने और ठठरी बने शेष पेड़ों की देखरेख का जिम्मा 'ग्रीष्म' को सौंपकर वसंत ओझल हो जाता है । विवश किंतु पानीदार आंखें उड़ती धूल देखती रह जाती हैं ।

प्रकृति का सहनायक

वसंत की एक खासियत और है । यह कभी-कभी सहयोगी नायक बनकर प्रकृति के रंग मंच पर आता है । यह उसकी बड़ी खतरनाक किस्म की भूमिका होती है । कामदेव इसे सखा के रूप में पाकर धन्य-धन्य हो जाता है । वसंत कामदेव को कुसुम बाण 'सप्लाई' करता है और मदन है कि उनका दुरुपयोग करता रहता है । आम्र, अशोक, अरविंद, नीलोत्पल और नवमल्लिका के पंचबाणों से लैस होकर मन्मथ ऐंठा-ऐंठा घूमता रहता है । डाल-डाल, पात-पात की वसंत-व्यवस्था पर बैठकर यह मौज करता है । विवश, परित्यक्त और विरही जनों को व्यग्र करने में ही अपनी क्षमताओं की इतिश्री समझता है । 'कुमार संभव' में इंद्र से कामदेव बड़े गुमान के साथ कहता है :—

तव प्रसादात् कुसुमायुधो पि, सहायमेकं मधुमेव लब्ध्या
कुर्यौ हरस्यापि पिनाकपाणेः धैर्यच्युतिं के ममः धन्विनो न्ये ।

आपकी कृपा से कुसुमायुछ होने पर भी एकमात्र वसंत को सहायक पाकर पिनाक पाणि शिव के भी धैर्य को च्युत कर दूं । दूसरे धनुर्धर मेरे सामने कहां ठहरते हैं । बेचारे भोले बाबा समाधिस्थ हैं । ध्यानावस्था के समय महेश के पास जाने में ब्रह्मा-विष्णु भी हिचकिचाते हैं । उन्हीं त्रिपुरांतक शिव की छेड़खानी वसंत को साथ लेकर कामदेव कर रहा है । परिणाम में काम को भस्म होना पड़ा और वसंत की सारी पोल खुल गयी । पोल इस रूप में कि कैलाश पर्वत पर उस समय वसंत मौलिक और सहज रूप में नहीं आया था । वह अल्पकाल के लिए था । कृत्रिम रूप में था । अपने साध्य रूप में भी वह खोटा था । वह कामदेव के हाथों मोहरा बन गया । कामदेव के अंत के साथ ही वसंत की छवि धूमिल हो गयी । कैलाश शिखर की बर्फ फिर चिलकने लगी । चाहे वसंत शिव की समाधि भंग करने के साधन के रूप में आया हो, चाहे गंधमादन पर्वत पर पुरुरवा और उर्वशी के मिलन-क्षणों की पृष्ठभूमि बना हो, या नागमति के विरह को चरम पर ले जाने के लिए फागुन-चैत में धमार मचायी हो, या सूर की गोपियों सहित अन्य नायिकाओं को विरह में

जला-जलाकर उनका दुःख दूना किया हो, प्रत्येक जगह वसंत की भूमिका आड़ी-टेढ़ी ही रही है ।

ऋतुओं का उपहार

मकर संक्रांति से सूर्य की यात्रा उत्तरापथ की ओर शुरू होती है । वर्ष का चक्र उर्ध्व तथा शुचितर पथ पर बढ़ता है । सृष्टि के अणु-परमाणु के लिए लोकोत्तर द्वार खुलते हैं । छह ऋतुओं का गौरव विश्व में केवल भारतवर्ष को मिला है । अन्य देशों में तो कहीं एक, कहीं दो, बहुत हुआ तो कहीं-कहीं तीन-चार ऋतुएं ही होती हैं । बारह राशियों में प्रवेश करता हुआ सूर्य इस देश की धरती को ही षट् ऋतुओं का उपहार देता है । मकर संक्रांति के बाद वसंत पंचमी पहला त्योहार है । इस पर्व में सम्मिलित होने के लिए धरती का हर छोटा-बड़ा पेड़-पौधा लालायित रहता है । दस मासों में दूसरी ऋतुओं का बखेड़ा और सारी झंझटें जंगल इसलिए सहते हैं कि वसंत के आने पर कुछ दिन तो फूल खिलेंगे । सांसों की गंध, सुगंध बनेगी । मौन टूटेगा । आंखों के तट सूखेंगे । ऊषा अंगड़ाई लेगी । सांझ लजाएगी । बच्चे फूलों के झुनझुने लेकर गलियों में किलबिल मचाएंगे और 'निराला' की चिर-परिचित आकाश में ऊंची उठी 'रूखी री यह डाल, वसन वासंती लेगी ।' लेकिन भला यह भी कोई बात हुई कि वसंत आते-आते नहीं आता । वसंत ऊपर से चलता तो है पर वह दर्रों, खाइयों, पहाड़ियों, जंगलों और बियाबानों तक नहीं पहुंच पाता है । हां क्यारियों के गुलाबों पर बड़े वत्सल भाव से आता है । उपवन के पौधों तक वह ठीक-ठीक पहुंचता है । मैदानों, समतलों, कछारों में बगरता हुआ वह राष्ट्रीय उद्यानों में पूरी तरह बंट जाता है । परंतु उसे जहां तक पहुंचना चाहिए, वहां नहीं पहुंच पाता । क्या करोगे ऐसे वसंत का ? जब यह वसंत दूर-दूर होता है । जिनके पास होना चाहिए वहां नहीं होता । दूर-दूर रहकर यह ललचाता है । ऐसी स्थिति में 'धूमिल' के 'मोचीराम' को वसंत दिन को तांत की तरह तानता हुआ दिखायी देता है ।और पेड़ों पर लाल-लाल पत्तों के हजारों सुखतल्ले धूप में सुखाता है ।

बूढ़ा फागुन और नवागंतुक चैत छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे खेतों में फूली सरसों तक सीमित वसंत को देखकर कब तक सब्र करेंगे ? चुप सहनशीलता जाहिर करती है और चीख विद्रोह तथा क्रांति । जो किसी भी मौसम के भविष्य को गढ़ने के लिए आवश्यक है । यह चुप भी भविष्य रचने की प्रक्रिया का एक अंग हो सकता है, बशर्ते कि मौन को शब्द मिल चुके हों । इन मौन किंतु शब्दधारी आरण्यकों तक वसंत आएगा । उसे आना ही होगा । वसंत मस्तीभरा होता है, बौराये वसंत के पागलपन की अपनी शान है । यह शान और किसी को नहीं मिली । फिर वह आये बिना कैसे रहेगा ।

—ज्योति नगर, खंडवा-४५०००१

मधुमेह की एक और चिकित्सा

ड्यूक विश्वविद्यालय के चिकित्सकों ने मधुमेह की बीमारी दूर करने का एक और उपाय खोजा है । उनका कहना है कि कार्बोहाइड्रेटवाला भोजन करें, साथ ही मांसपेशियों को विश्राम देने के कम से कम पंद्रह मिनट तक पूर्ण विश्राम करें । इससे रक्त में शक्कर की मात्रा कम हो जाएगी ।

ओड़िया कहानी

चरित्र

● जगन्नाथ प्रसाद दास



दिनभर का काम खतम करके उस रोज प्रमोद शाम सात बजे अपने होटल लौटा। वह दिन उसके लिये सफल रहा। उसने बहुत से दफ़्तरों से अपनी कंपनी के लिए काफी संख्या में मशीनों का ऑर्डर प्राप्त किया था। इसके लिये उसे कई उपायों का सहारा लेना पड़ा था—जैसे रिश्वत, झूठ, खुशामद आदि। कई वर्षों के अनुभव से अब वह जान गया था कि व्यापार में सबसे उत्तम उपाय है रिश्वत; क्योंकि रुपये दे देने के बाद रिश्वत देने और लेनेवाले के बीच एक अनलिखा करारनामा तैयार हो जाता है और उसके बाद काम आसानी से हो जाता है। दूसरी तरह के प्रयासों में काफी वक्त बरबाद करना पड़ता है और काम पूरा होने की निश्चितता भी नहीं रहती।

कुरसी पर बैठकर उसने अपने दिनभर का हिसाब-किताब किया। उसने जितना पैसा खर्च करना तय किया था, उससे काफी कम पैसों में काम हो गया था। उसने यह भी तय कर लिया था कि बकाया पैसा वह अपनी कंपनी को नहीं लौटाएगा और वह पैसे खुद रख लेगा। इस व्यतिक्रम से वह जरा भी चिंतित नहीं था। उसे जो बात विचलित कर रही थी, वह यह थी कि वह अपनी एक विरोधी कंपनी के साथ भी बातचीत कर रहा था और उन्हें भी मदद करने का एक अप्रत्यक्ष वायदा कर चुका था। यह बात इस वक्त उसके विवेक में जरा खटक रही थी।

उसने चाय पीते हुए तय किया कि इस बारे में अब वह और नहीं सोचेगा। उसका दिन अच्छा बीता था और उसने चाहा कि इस शहर की अपनी आखिरी शाम अच्छी तरह बिताएगा। कल सुबह-सुबह उसे बाजार जाकर बीवी बच्चों के लिए उनकी कही हुई चीजें खरीदने के बाद दोपहर की ट्रेन पकड़नी है। यह तय करके उसने अपनी टेलीफोन की छोटी-सी डायरी निकाली। उसमें मंत्री, आफीसर, प्रभावशाली लोगों के नंबरों के साथ ही एक अलग पृष्ठ पर और भी कई रहस्यमय नंबर थे जोकि उसके मित्रों ने उसे समय-समय पर दिये थे। प्रमोद ने इस सूची का पहला नंबर



मिलाया । उस ओर से किसी सज्जन की आवाज आयी, "किससे बात करनी है ?" प्रमोद ने कहा, "कमला देवी से" । उस व्यक्ति ने पूछा, "आपका नाम ?" प्रमोद बोला, " विनोद शर्मा ।" "अच्छी बात है, जरा रुकिए ।"

प्रमोद ने इंतजार किया; लेकिन दो मिनट तक किसी की आवाज न आने पर वह लाइन काटने ही वाला था कि उस सज्जन की आवाज आयी, "नहीं, यहां कमला देवी नाम की कोई नहीं है ।" वह और कुछ कहना चाह रहा था कि उधर से उस सज्जन ने लाइन काट दी । प्रमोद ने मन ही मन उस आदमी को गंदी गाली निकाली और फिर दूसरे नंबर पर फोन किया । उस नंबर से कोई जवाब नहीं मिला । यह नंबर उसे किसने दिया था यह याद करके उसने उसके सात पुस्तों की ऐसी-तैसी करने की सोची; लेकिन काफी कोशिश करने पर भी वह उस आदमी का नाम याद नहीं कर सका । अब उसने बीच के सारे नंबर सूची का छोड़कर



आखिरी नंबर मिलाया । किसी महिला ने रिसीवर उठाकर अपना नंबर दोहराया और पूछा, ''किससे बात करनी है ?'' ''विमला देवी से'' प्रमोद बोला । उधर से जवाब मिला, ''विमला आजकल यहां नहीं रहती ।'' प्रमोद ने सोचा शायद वह महिला टेलीफोन काट देगी; लेकिन टेलीफोन न कटने पर बोला, ''मुझे आपका नंबर मेरे एक दोस्त ने दिया था ।''
''किसने ?''—उस महिला ने पूछा । ''शंकर, कानपुर के शंकर गुप्ता ने ।'' एक झूठा नाम और पता बनाकर प्रमोद ने कहा । उस महिला ने हुंकारी भरी । प्रमोद समझ गया कि सब ठीक है और बोला, ''मैं शाम को आपकी ओर आना चाहता था ।'' वह महिला बोली, ''क्या कहा; कानपुर वाले शंकर गुप्ता ना ? ठीक है ।'' प्रमोद ने उस महिला से उस जगह का पता लिया और कहा कि वह साढ़े आठ बजे पहुंच जाएगा ।

नहा-धोकर कपड़े पहनने के बाद प्रमोद ने देखा कि अभी उसके पास काफी समय है । यह समय बिताने के लिये उसने सोडा मंगवाया और बोतल निकालकर टेबल पर रखा । सोडा आने में देर होने लगी तो उसने सोचा कि विरोधी कंपनी के सज्जन से बातचीत की जा सकती है । उसने उनको टेलीफोन मिलाया, लेकिन नंबर मिलाने के दौरान ही उसकी इच्छा हुई कि वह रात में फिर उनके साथ बातचीत न करके सुबह ही करेगा । किंतु दूसरी ओर घंटी बजने लगी और प्रमोद ने सोचा, काश वे सज्जन घर पर न हों ! बदकिस्मती से उस सज्जन ने ही रिसीवर उठाया ।

''मैं सोच रहा था कि लौटने से पहले आपसे एक मुलाकात हो जाती तो बेहतर होता ।'' प्रमोद बोला ।

''मैं भी यही चाहता था । हमें आपसे बहुत-सा काम है ।''

इतने में उसका सोडा आ गया । बिना कुछ सोचे-समझे प्रमोद ने कहा, ''यदि आप मेरे साथ एक ड्रिंक के लिए आ जाते तो अच्छा होता ।'' यह बात कहने के बाद प्रमोद को अपनी लापरवाही के लिए अफसोस हुआ और आशा की कि वे सज्जन आने से इनकार कर देंगे । लेकिन वे तत्काल राजी हो गये ।

अब स्थिति अपने हाथ में लेते हुए प्रमोद ने कहा, ''ठीक है । मैं जरा काम से बाहर जा रहा हूं, नौ साढ़े नौ तक लौट आऊंगा । आप तभी आइए ।'' इतना कहने के बाद प्रमोद को लगा कि वे सज्जन इस पर भी राजी हो जाएंगे । इसलिए वह उन्हें बात कहने का मौका न देते हुए बोला, ''आपको देर हो जाएगी, ना ? तो फिर ऐसा करते हैं, अगले सप्ताह मैं फिर आ रहा हूं । तब जरूर मुलाकात होगी । पूरी शाम का प्रोग्राम बनाएंगे ।''

वे सज्जन बोले, "अच्छी बात है । आज सुबह आपसे जो बातचीत हुई थी, उस पर ध्यान दीजिएगा । आपकी जो भी शर्तें होंगी, हमें सब मंजूर हैं ।"

प्रमोद बोला, "जरूर जरूर" फिर टेलीफोन काट दिया । मन ही मन निश्चय किया कि भविष्य में फिर कभी जल्दबाजी में इस तरह की बातें करते हुए किसी को निमंत्रण नहीं देगा । उस सज्जन से उसे काम था । और यद्यपि वह अपनी कंपनी से विश्वासघात कर रहा था, वह जानता था कि यह सौदा उसके लिए अति लाभदायक होगा ।

खैर, उसने तय किया कि ये सारी चिंताएं छोड़कर वह पीने में ध्यान देगा । लेकिन उस सज्जन ने उस दिन सुबह उसके समक्ष जो लोभनीय और छलपूर्ण प्रस्ताव रखा था, उसे मन से निकाल नहीं सका । इस प्रस्ताव से उसे मासिक कितना धन प्राप्त होगा और वह उसे किस तरह अपने परिवार पर खर्च करेगा, उस बारे में मन ही मन हिसाब लगाने लगा । पेय और आर्थिक लाभ की संभावनाओं ने उसके मन में एक अद्‌भुत स्फूर्ति भर दी और वह शाम के पते पर जाने की तैयारी करने लगा ।

उसके ब्रीफ-केस में काफी पैसे थे और वह उसे होटल के कमरे में छोड़कर जाना नहीं चाहता था । उसे यह भी पता नहीं था कि जिस जगह वह जा रहा है, वह सुरक्षित भी है या नहीं । अंत में उसने सोचा, सारे रुपये भीतर की जेब में रख लेगा, लेकिन इतने सारे रुपयों के लिये जेब में जगह नहीं थी । इसलिए आखिर में उसने ब्रीफ-केस साथ ले जाने का निश्चय किया और उसमें आधा बची बोतल भी रख



लिया । ब्रीफ-केस का ताला बंद कर उसने बाहर आकर टैक्सी ली और वहां का पता बता दिया । वह वहां ठीक साढ़े आठ बजे उतरा और इतनी कार्यव्यस्तता में भी वह समय की पाबंदी के प्रति सतर्क रहने की वजह से खुद की प्रशंसा करने से भी नहीं चूका ।

जहां वह पहुंचा, वहां अंधेरा था और प्रमोद को कुछ अटपटा-सा लगा । चबूतरे पर बैठा एक दुबला-पतला आदमी घर की उदासी को और बढ़ा रहा था । उसे आते देख उस आदमी ने कुरसी से उठकर उसे नमस्कार किया और बैठने के लिये दूसरी कुरसी की ओर इशारा किया । प्रमोद के बैठ जाने पर उस आदमी ने कहा, "आपको जरा इंतजार करना होगा, भीतर लोग हैं ।" यह सुनकर प्रमोद को गुस्सा आ गया और अपने चेहरे का गुस्सा छिपाने की कोई कोशिश न करते हुए उस आदमी की ओर ओछी निगाह से देखा । वह आदमी अति शांत स्वभाव का था । उसने प्रमोद के गुस्से को नजरंदाज करते हुए कहा, "बस, वे लोग निकले ही समझिए । क्या आपके लिए चाय मंगवाऊं ?" प्रमोद ने कहा "नहीं ।" उस



आदमी ने पुनः उसकी ओर दोस्ती भरा हाथ बढ़ाते हुए सवाल किया, ''आप यहां पहले कभी आये हैं ?''

''हां, लेकिन काफी पहले ।'' प्रमोद ने कहा ।

''यदि सालभर पहले आये होंगे, तब मैं यहां नहीं रहा होऊंगा । मैं पिछली मार्च में आया था । इस शहर में मेरी तबीयत भी ठीक नहीं रहती ।''

प्रमोद उसे और अधिक आत्मीयता बढ़ाने का मौका न देकर झुंझलायी हुई आवाज में बोला, ''क्या बात है, और कितनी देर इंतजार करना होगा ?''

''बस, निकलने ही वाले हैं । क्या आप यहां की किसी लड़की को जानते हैं ?''

''काफी पहले आया था ना ! मुझे नाम याद नहीं आ रहा । रुपये पैसे कितने क्या . . . .''

''आप अंदर जाकर लड़की को दे दीजिएगा । आप राधा के पास जाइए । बड़े अच्छे स्वभाव की है । आपको अच्छी लगेगी ।''

इतने में दो सज्जन अंदर से निकले और इधर-उधर देखे बगैर सरपट बाहर चले गये । वह रोगहा आदमी जोर-जोर से खांसने लगा और प्रमोद को इंतजार करने को कहकर अंदर चला गया । प्रमोद ने मन ही मन उस आदमी को गाली दी और निश्चय किया कि फिर कभी यहां नहीं आएगा । वह उस आदमी को सबक सिखाना चाहता था; लेकिन वह आदमी था ही इतना शांत स्वभाव का कि यह संभव नहीं हो सका । वह कुछ ही देर बाद बाहर आया और प्रमोद को अंदर ले जाकर एक कमरे का दरवाजा दिखा दिया ।

प्रमोद खुश हुआ कि कमरे में खूब रोशनी है और अंदर की सारी चीजें साफ-सुथरी हैं । पलंग से टिककर खड़ी लड़की भी उसे सुंदर और शिक्षित लगी । पहले के अनुभवों की मदद से उसने पास के टेबल पर अपना ब्रीफ-केस रख दिया, खुद जाकर पलंग पर बैठ गया और पैरों से जूते उतार लिये । वह लड़की, जो अब तक कुछ कहे बिना सिर्फ उसकी ओर देखकर मंद-मंद मुसकरा रही थी, अब वह उसके पास गयी और उसके जूते खिसकाकर एक ओर रख दिये । फिर उसके पास जाकर बैठ गयी । प्रमोद ने पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है ?''

''राधा''—लड़की ने जवाब दिया ।

''राधा क्या तुम्हारा सही नाम है ?''

''नहीं, मेरा नाम क्षणप्रभा था, लेकिन इतना बड़ा नाम लेकर कोई बुला नहीं पाएगा, इसलिए यहां आकर मैंने राधा रख लिया ।''

''तुम कब से हो यहां ?''

''छह महीने हो गये ।''

सब झूठे हैं, मन ही मन सोचा प्रमोद ने राधा

होटल पहुंचकर प्रमोद ने ब्रीफकेस खोलकर अपने रुपये गिने। रुपये ठीक थे। अब उसकी नींद टूट चुकी थी। उसने तय किया कि वह अपनी कंपनी के लिये उस दिन के काम की रिपोर्ट तैयार करेगा। दूसरी कंपनी के लिए वह किन शर्तों पर काम करेगा, उसने इसकी भी एक मोटी-सी रूपरेखा तैयार कर ली।

झूठी है, क्षणप्रभा झूठी है, छह महीने भी झूठे हैं। उसने सोचा कि अब पैसों की बात तय कर लें। जब उस लड़की ने उसकी उम्मीद से भी कम पैसे मांगे, प्रमोद ने सोचा इसमें जरूर कोई चक्कर है। अपनी बात साफ कर लेने के उद्देश्य से पूछा, क्या इसके अलावा भी किसी को कुछ और देना पड़ेगा ?"

"वह तुम्हारी इच्छा है—देना चाहो तो देना, न देना चाहो मत देना।"

"पैसे पहले दे दूं, या बाद में ?"

"जब भी दो, चलेगा।"

प्रमोद को याद आया कि उसके सारे पैसे ब्रीफकेस में ही हैं। उनमें से कुछ पैसे पहले से निकालकर उसने जेब में रख लिया होता तो ठीक था। उसने कलाई से घड़ी खोलकर टेबल पर रखने के बहाने ब्रीफकेस का ताला ठीक से बंद है या नहीं देखा। ताला बंद था। जरा-सा मौका पाते ही वह उसमें से कुछ रुपये निकाल लेगा।

अब पलंग पर बैठकर राधा को बाहों में भरकर उससे प्यार करते हुए पूछा, "यहां पीने को कुछ मिलेगा ?"

"मंगवाना पड़ेगा। कहो तुम्हें क्या चाहिए।"

प्रमोद ने उससे कई चीजों की कीमत पूछी और बोला, "यह तो बहुत ज्यादा है।"

"हां, सो तो है। इस वक्त सारी दुकानें बंद हो चुकी हैं। चोरी-छिपे लानी होगी इसलिए इतनी कीमत है।"

प्रमोद सोच रहा था यदि राधा कुछ देर के लिए कमरे से बाहर चली जाए तो वह अपनी आधी बोतल के साथ आवश्यक रुपये भी निकाल लेता। उस लड़की को भी पिलाना पड़ेगा। वह लड़की जितना पीएगी, उसकी कीमत, आने-जाने का टैक्सी किराया आदि मिलाकर कुल कितना खर्च हो जाएगा, प्रमोद ने उसका हिसाब किया। कोई खास नहीं। और फिर, यदि दूसरी कंपनी से उसका समझौता हो गया, तो ऐसे खर्चे से उसे कोई फर्क भी नहीं पड़नेवाला।

प्रमोद बोला, "इसलिए मैं बोतल साथ लेकर आया हूं।"

"क्या सोडा मंगवा दूं ?" राधा ने पूछा।

हालांकि उसे सोडा की जरूरत थी पर राधा को उस कमरे से किसी तरह बाहर भेजने के मतलब से बोला, "नहीं, थोड़ा गरम पानी चाहिए था।"

"जरा रुको। मैं अभी इंतजाम कर देती हूं।"

राधा के बाहर जाते ही प्रमोद ने अपना

ब्रीफकेस खोलकर उसमें से बोतल निकाला और यथासंभव सावधानी से नोटों की गड्डी से रातभर के लिए आवश्यक रुपये अलग निकालकर जेब में रख लिये । फिर ब्रीफकेस को बंद करके उसकी चाबी पैंट के चोर पॉकेट में रखकर राहतभरी सांस ली । ऐसी जगह किस वक्त क्या होगा, कौन जानता है ?

जब राधा गरम पानी लेकर अंदर आयी, परीक्षा लेने के उद्देश्य से प्रमोद ने उसे 'क्षणप्रभा' कहकर बुलाया । गरम पानी का गिलास टेबल पर रखकर चौंककर उसकी ओर देखते हुए राधा खड़ी रही । मानों उसके चेहरे पर सहसा उदासी छा गयी । रुंधी हुई आवाज में बोली, "देखो, इतने दिनों बाद मुझे किसी ने मेरे पुराने नाम से पुकारा ? मुझे बहुत अच्छा लगा । एक तरह का दुःख भी हुआ । तुम मुझे हमेशा इसी नाम से पुकारना ।" प्रमोद ने मन ही मन कहा, चलो छोड़ो अपना यह दिखावटी प्यार । जैसे कि मैं रोज ही आऊंगा तुम्हारे पास, बस आज की रातभर बीत जाए । उसने मुंह पर कहा, "मुझे तुम अच्छी लग रही हो ।"

राधा के हाथ से बोतल लेकर गिलास में डालते समय प्रमोद ने सोचा, आज यह लड़की उसकी पूरी बोतल पी जाएगी । लेकिन जब राधा ने एक ही गिलास में डाला, प्रमोद ने उससे पूछा, उसका गिलास कहां है । राधा बोली कि वह नहीं पीती । इस पर प्रमोद ने कहा, "तुम्हें मेरे साथ पीना ही होगा ।" राधा बोली, "एक बार चखा था मैंने, बिलकुल अच्छी नहीं लगी ।" प्रमोद उसे मनाते हुए बोला, "तुम नहीं पीओगी तो मैं भी नहीं पीऊंगा ।" राधा बोली, "अच्छा चलो, मेरे गिलास में बूंदभर डाल दो ।" प्रमोद ने उसके लिए एक दूसरे गिलास में डाली । और राधा के गिलास हाथ में लेते ही प्रमोद ने मन ही मन कहा, पीने की तो इच्छा है, इतने नखरे क्यों कर रही हो । लेकिन राधा ने एक ही बार होंठों से गिलास छुआकर रख दिया और प्रमोद का गिलास खाली हो जाने पर अपना पूरा गिलास प्रमोद के खाली गिलास में उड़ेल दिया ।

प्रमोद बोला, "रुपये अभी दिये देता हूं ।" राधा बोली, "उसके लिये इतना परेशान क्यों हो ? जरा आराम से बैठो । पहले तुम्हारा गिलास तो खत्म हो जाए । क्या तुम्हारे लिये कुछ खाने को मंगवा दूं ?" प्रमोद ने समझा यह भी कुछ रुपये ऐंठने का धंधा है । उसने कहा, "नहीं, मुझे नहीं चाहिए ।"

राधा बोली, "तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं ?" ऐसी लड़की को अपना पता नहीं देना चाहिए । वह विनोद शर्मा कहने ही वाला था कि उसे अपने हाथ पर नाम का पहला अक्षर गुदा होने की याद आ गयी । हालांकि राधा के लिए वह देख पाना संभव नहीं था, प्रमोद ने कहा, "मेरा नाम प्रकाश है ।" "क्या तुम इसी शहर में रहते हो ?" "नहीं, मैं बाहर से आया हूं । कभी-कभी यहां आता हूं ।"

अब प्रमोद ने अपनी कमीज उतारी और जेब से रुपये निकालकर दो बार अच्छी तरह गिनकर राधा की ओर बढ़ा दिये । राधा रुपये लेकर उसी तरह टेबल पर रखते हुए बोली, "अब लाइट बुझा देती हूं ?" प्रमोद बोला, "ठीक है ।"

प्रमोद ने कमरे के अंधेरे में आंखें खोली । घड़ी देखी, साढ़े ग्यारह बजे थे । एक तरह के

अज्ञात भय ने उसके मन को छुआ । उसे लगा, उसका ब्रीफकेस अब वहां नहीं है । लेकिन आंखें अंधेरे में अभ्यस्त हो जाने पर उसने देखा कि ब्रीफकेस पहले की ही तरह टेबल पर रखा हुआ है । राधा उसके पास सो रही थी । उसे उठते देख राधा ने लाइट जला दी । प्रमोद ने कपड़े पहन लिये, ब्रीफकेस खोलकर देखा, उसके सारे रुपये ठीक-ठाक हैं या नहीं, अंदाज लगाया और फिर उसमें बाकी बची बोतल रख दी । कमरे से बाहर निकलते समय राधा ने नींदभरी आंखों से उसकी ओर देखकर कहा, "फिर आना ।" प्रमोद ने उसका कंधा दबाकर कहा, "आऊंगा, क्षणप्रभा !"

बाहर वही रोगहा आदमी कुरसी पर बैठा ऊंघ रहा था । प्रमोद को देखते ही तुरंत उठकर खड़ा हो गया और बोला, "क्यों, सब ठीक था न ? मैंने कहा था ना, राधा अच्छी लड़की है ?" प्रमोद समझ गया कि यह आदमी कुछ पैसे ऐंठना चाहता है । उसे और कुछ कहने का मौका दिये बगैर प्रमोद ने कहा, "जाओ, एक टैक्सी बुला लाओ ।"

होटल पहुंचकर सबसे पहले प्रमोद ने ब्रीफकेस खोलकर अपने रुपये गिने । रुपये ठीक थे । अब उसकी नींद टूट चुकी थी । उसने तय किया कि वह अपनी कंपनी के लिए उस दिन के काम की रिपोर्ट तैयार करेगा । रिपोर्ट बनाने के बाद वह दूसरी कंपनी के लिये किन शर्तों पर काम करेगा, उसकी भी एक मोटी-सी रूपरेखा तैयार कर ली । इतने में उसे राधा की याद आयी और उसने सोचा कि लड़की अच्छे स्वभाव की थी । लेकिन फिर उसने अपनी बात में सुधार किया— जिसका चरित्र ही ठीक नहीं, उसका स्वभाव अच्छा कैसे होगा ?

—३०५, एस. एफ. एस., हौज-खास, नयी दिल्ली

अनुवाद : डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र



आज चीन में मेढ़क और सांपों की संख्या तेजी से घटती जा रही है । वहां लोग इन्हें खूब तल-तलकर खा रहे हैं । एक चीनी समाचारपत्र के अनुसार दोनों जीवों के अस्तित्व की रक्षा नहीं की गयी तो देश की परिस्थिति का संतुलन बिगड़ सकता है ।

दक्षिणी और पूर्वी चीन में तो इनके बहुत प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं । इतने बड़े पैमाने पर इनके उपभोग के कारण आज इनका अस्तित्व भी संकट में पड़ता जा रहा है ।

मेढ़क और सर्प दोनों ही मनुष्य के लिए उपयोगी हैं । एक पौधों और फसलों को नुकसान पहुंचानेवाले कीड़े-मकोड़े को खाता है तो दूसरा चूहों को हजम कर हर वर्ष भारी मात्रा में अनाज व अन्य खाद्य सामग्री नष्ट होने से रोकता है ।

मादक द्रव्यों की तस्करी एक विश्व-व्यापी समस्या बन गयी है । 'हेरोइन', 'स्मैक' और 'ब्राउन सुगर' के कारण अनेक देशों की तरुण पीढ़ी असमय बूढ़ी और लाचार बन रही है । क्या मादक द्रव्यों की तस्करी के पीछे मात्र धन कमाना ही एक उद्देश्य है ?

मादक पदार्थों से घिरी है पाकिस्तानी सरकार

● भगवती प्रसाद डोभाल

मादक द्रव्यों की भूख कितनी जानलेवा हो सकती है, इसका अनुभव आप तभी कर सकते हैं, जब आसपास के नशेड़ियों से परिचित हों । मैंने अपने निकट के एक सहयोगी को इसी भूख के कारण असामायिक मौत के मुंह में जाते हुए देखा है । इस नशे के आदी को आप जहां भी पाएंगे, वहां सगे संबंधियों से दूर ही पाएंगे ।

इतिहास साक्षी है, जो भी नशे का शिकार हुआ, उसने गंवाया ही है । जहांगीर ने सारी सल्तनत नूरजहां के हाथों 'गिरवी' रख दी थी । जहांगीर कहता था—

एक सेर कबाब मुझको
आध सेर शराब
सारी सल्तनत नूरजहां की
खूब हो चाहे खराब

सुरा और सुंदरी ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के समीकरणों तक को बदला है । यह तो सिर्फ सुरा का प्रभाव है, पर इससे भी खतरनाक नशा है—हेरोइन का, जो आदमी को एकदम पंगु बना देती है । आज से दस वर्ष पूर्व अंतरराष्ट्रीय मादक द्रव्यों की गिरफ़्त में भारत नहीं था, लेकिन जब से पश्चिम एशिया की तरफ से शासकों के परिवर्तन का अभियान चला, तब से मादक द्रव्यों की तस्करी का समीकरण बदला है ।

पहले यह तस्करी थाइलैंड, बर्मा और लाओस के माध्यम से होती थी । इसे 'गोल्डन ट्रायंगल' के नाम से जाना जाता था । लेकिन १९७९ में ईरान में शाह का तख्ता पलटने पर वहां से भागे ईरानी पाकिस्तान पहुंचे । इन्हीं दिनों अफगानिस्तान में हुए विद्रोह ने अफगानी शरणार्थियों को भी पाकिस्तान खदेड़ा । ईरान और अफगानिस्तान के शरणार्थी अंतरराष्ट्रीय तस्करी के बाजार से वाकिफ थे । वे पाकिस्तान में आते ही सक्रिय हो गये । उधर 'गोल्डन ट्रायंगल' में कानूनी सख्ती से बाजार ठप्प हो गया । साथ ही वहां अकाल पड़ने से उत्पादन



पाकिस्तानी व्यापारी मादक द्रव्यों की तस्करी में लिप्त

घट गया। इस मौके का फायदा पाकिस्तान ने उठाया। सन १९७८ में ५००-६०० टन मादक द्रव्यों का उत्पादन 'ट्रायंगल' में था, जो सन १९७९-८० में घटकर मात्र २०० टन रह गया था।

सन १९७९-८० में 'गोल्डन क्रीसेंट' का निर्माण हुआ, इसमें पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान हैं। इन देशों की सीमाएं आपस में मिली हुई हैं। इसलिए तस्करों के लिए नये रास्ते खुले। इसी दौरान मादक द्रव्यों की अंतरराष्ट्रीय खपत लगभग ७०० टन थी।

उधर 'गोल्डन क्रीसेंट' में उत्पादन ३०० से बढ़कर १६५० टन हो गया। पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम सीमांत में तीस लाख अफगान शरणार्थी थे। यहां मादक द्रव्य कानून में ढील होने की वजह से प्रयोगशालाएं दनादन खुलीं। ७० के लगभग हेरोइन बनाने की प्रयोगशालाएं खुलने से सन १९८१ में 'गोल्डन क्रीसेंट' ने ७० से ९० प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय बाजार की खपत की पूर्ति की। पहले रावलपिंडी, लाहौर और कराची मुख्य निकास केंद्र थे। लाहौर से जमीन के रास्ते भारत में व कराची से बंबई, कोचीन व सीलोन को रास्ते खुलते थे।

दूसरा रास्ता पेशावर से क्वेटा, फिर ईरान और वहां से समुद्र के रास्ते तुर्की से होते हुए इटली और ग्रीक को जाता था।

बंबई और सीलोन से भी विश्व-बाजार के कई मार्ग खुले। बंबई से यूरोप और अमरीका। सीलोन से आस्ट्रेलिया एक और रास्ता चीन पहुंचने का भी निकला। नेपाल से वाराणसी होते हुए बंबई को माल निकालने का रास्ता भी खुला। इस प्रकार सन १९८० के आते-आते भारत अंतरराष्ट्रीय मादक द्रव्यों की तस्करी की गिरफ्त में आ गया। परिणामस्वरूप दिल्ली और बंबई मादक द्रव्यों के अवैध केंद्र बने। वैसे भारत में भी अफीम की खेती होती है। इसके मुख्य उत्पादक प्रदेश हैं, राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश। भारत में सन १९८० में १६५० टन अफीम पैदा हुई। इसमें से उपज के ५० प्रतिशत का निर्यात किया

गया । मादक द्रव्यों के तस्कर किसान के पास जाकर बाजार भाव से कई गुना अधिक दामों पर अफीम खरीदते हैं, फिर प्रयोगशालाओं में स्वयं इसको छानते हैं ।

हेरोइन क्या है ?

पोस्त की खेती कर अफीम निकाली जाती है । अफीम निकालने की वह अवस्था है, जब पोस्त के ठुड्डे हरे होते हैं । उस समय ठुड्डों पर चीरा देकर उससे गोंद-जैसा पदार्थ एकत्र किया जाता है । इसी गोंद को अफीम कहते हैं । अफीम के आसवन से मारफीन 'क्षारोद' (एल्कलाइड) निकाला जाता है । मारफीन की एसिटिक एनहाइड्राइड नामक रसायन के साथ प्रतिक्रिया करवायी जाती है । इस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हेरोइन बनती है । हेरोइन मारफीन से तीन गुना और शुद्ध अफीम से दो सौ गुना अधिक असरदार होती है ।

हेरोइन को शुद्धता के आधार पर चार भागों में बांटा जाता है । आमतौर पर बाजार में मिलनेवाली हेरोइन तीसरी श्रेणी की होती है । इसमें शुद्धता का प्रतिशत ६० से ७० होता है । इसे 'ब्राउन सुगर' या 'स्मैक' कहा जाता है । जो नशे के कड़े आदी होते हैं, वे दूधिया पाउडर को पसंद करते हैं ।

मादक द्रव्यों के प्रकार

कोकीन : यह प्रकृति से लिया गया पदार्थ होता है । इसका निष्कर्षण दक्षिणी अमरीका में पायी जानेवाली रिर्थोजाइलीन कोक की पत्तियों से किया जाता है । सन १८६० में जरमनी के एलबर्ट नेइमन ने कोक की पत्तियों से इसे पहली बार प्राप्त किया ।

हेरोइन : इसका रासायनिक नाम डाइएसिटिल मारफीन है । दवा के रूप में १८९८ में इसका प्रयोग हुआ ।

केनिबस उत्पाद : मरिजुआना ग्रास, पॉट, डागा हशीश, गांजा, मेरीजेन आदि भाग के पौधे—(केनिबस सेतिवा) से प्राप्त किये जाते हैं । इसमें मुख्य रूप से डेल्टा जी-ट्रेटा हाइड्रोकेनेबिनॉल नामक चिप-चिपा पदार्थ होता है ।

एल. एस. डी. : सन १९३८ में स्विटजरलैंड के दो रसायन शास्त्रियों ने एल. एस. डी. की खोज की ।

सिलोसाइबिन : मैक्सिको व मध्य अमरीका के कुकरमुत्ते—'सिलांसाइब मैक्सिकाना' का तत्व है । यह ईसा से १८०० वर्ष पूर्व ज्ञात हुआ था ।

तस्करी के साथ जासूसी भी

अमरीका की ड्रग इन्फोर्समेंट एजेंसी के दिल्ली स्थित अधिकारी जॉन किंम ने एक बार कहा था, "विश्व में शायद ही कोई उग्रवादी संगठन होगा, जो मादक द्रव्यों की तस्करी से अपने लिए धन न जुटाता हो ।"

मादक द्रव्यों का सेवन कराकर भी सूचनाएं

तस्कर उग्रवादी बन गये हैं और उग्रवादी तस्कर ! फल यह हुआ है कि अनेक देशों की स्वतंत्रता और अखंडता खतरे में पड़ गयी है ।

बड़ी आसानी से एकत्रित की जाती हैं । इसमें ऐसे षड्यंत्र भी किये जाते हैं, जो व्यक्ति कहीं महत्त्वपूर्ण विभाग व पद पर कार्य कर रहा है, उसको नशे की लत लगायी जाए । उस लत की पूर्ति करने के बदले विभिन्न विभागों से सूचनाएं लेना आसान रास्ता होता है । इन्हीं माध्यमों को आधार बनाकर विकासशील राष्ट्रों की विकास गति मंद की जा सकती है । यह विकसित राष्ट्रों के लिए अपने माल को बेचने के लिए आवश्यक भी है । कहीं अखंड राष्ट्र को खंडित करने की साजिश, तो कहीं उनके विकास में बाधक बनकर विश्व अर्थ व्यवस्था को अपने हाथ में रखना बड़े राष्ट्रों का खेल है । इसी से उनकी 'चौधराहट' बनी रहती है ।

भारत पर मादक द्रव्यों का प्रभाव

सन १९८० के बाद से भारत में नशा करने वालों का प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है । इस 'हेरोइन' नशे के शिकार सबसे ज्यादा दिल्ली और बंबई हैं । दिल्ली में सन १९८० में नशे के आदी व्यक्ति १९३ थे । इस वर्ष हेरोइन का आदी कोई नहीं था । सन १९८१ में १३० में से ४हेरोइन के आदी थे । सन १९८२ में १९६ में से १२, १९८३ में ३८२ में से १२५ और सन १९८४ में ८२१ में से ५९२ लोग हेरोइन के शिकार अस्पतालों में आये ।

इसी प्रकार आयु के अनुसार सन १९८१ में २१ से ३० वर्ष के ४, सन १९८२ में ८, सन १९८३ में ९० और सन १९८४ में ४०१ थे । सबसे ज्यादा प्रतिशत २१ से ३० वर्ष के लोगों का था । वर्तमान समय में यह प्रतिशत बढ़ ही रहा है । अब तो १० से १४ वर्ष के भीतर के बच्चे भी इसके आदी होते जा रहे हैं ।



अनूप

इस भयानक नशे को रोकने के लिए सभी लोगों को अपने-अपने स्तर पर कार्य करना होगा । सबसे अधिक जिम्मेदारी सरकार की है क्योंकि बाहर से आनेवाले गिरोहों को पकड़ना सरकार का काम है । भारत की सीमाओं की कड़ी चौकसी की आवश्यकता है । पाकिस्तान से पंजाब के गुरदासपुर जिले के डेराबाबा नामक गांव से आसानी से यह धंधा चलता है । फिर कानून का सख्ती से पालन सरकार के हाथ में है । देश के भीतर सामाजिक संस्थाओं को इसमें सक्रिय कार्य करने की आवश्यकता है ।

पाकिस्तानी सरकार घिरी

दिन-पर-दिन मादक पदार्थों से सरकारें भी घिर रही हैं । इसका ताजा उदाहरण है पाकिस्तान । कुछ सप्ताह पहले पाकिस्तानी सेना की गश्त बलूचिस्तान के रेगिस्तानी हिस्से में लग रही थी कि अचानक तीन दर्जन बलूची आदिवासियों ने तोपों व बमों से फौज पर हमला कर दिया । यह भिड़ंत लगभग ४ घंटे चली । जब सेना ने गांव की तलाशी ली, तब दूसरे दिन



अफीम की खेती

१,७४१ किलो हेरोइन, २५५ किलो अफीम बरामद की गयी । साथ में ४ टन हशीश के साथ औजार भी मिले ।

जब पाकिस्तान के 'नारकोटिक्स नियंत्रण परिषद' ने अपने क्वेटा ऑफिस को आदेश दिया कि इसकी छानबीन की विस्तृत रिपोर्ट दी जाए । तब पता लगा कि संदिग्ध नशे के व्यापार में लिप्त व्यापारी बलूचिस्तान में 'नोटेजाई' कबीले के शक्तिशाली सदस्य हैं । इनका सीधा संबंध इस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के विश्वसनीय साथियों के साथ है ।

यह भी एक चिंतनीय विषय है, जब अक्तूबर में पाकिस्तान के राष्ट्रीय एसेंबली के चुनाव में कोलंबिया के नशा माफिया ग्रुप से संबंध रखनेवाले हाजी अयूब अफरीदी चुन लिये गये ।

हाजी अयूब के लिए समय-समय पर गिरफ़ारी के वारंट भी जारी किये जाते रहे, लेकिन वह इन सबसे बचता रहा । सन १९८३ में बलूचिस्तान में १७ टन हशीश मिलने के आरोप में वारंट जारी किया गया । इस पर कोर्ट में अपने आरोपों की सफाई में न आने के लिए एक वर्ष की कैद की सजा भी सुनायी गयी । अभी तीन वर्ष पहले दूसरा वारंट भी अयूब को गिरफ़ार करने के लिए निकला । पिछले वर्ष पुनः वारंट जारी किया गया, लेकिन अयूब गिरफ़ार नहीं हुआ । अब राष्ट्रीय एसेंबली की २१७ सीटों में एक नाम अयूब का भी है, इससे आभास होता है कि पाकिस्तान की सरकार मादक पदार्थों के चंगुल में जकड़ रही है ।

वैसे अयूब ने अपने कैरियर की शुरुआत ट्रक ड्राइवरी से की, लेकिन उन दिनों वह खैबर पास में ऐसी सुरक्षित चार दीवारी में रहता था, जहां पहरे पर हवाई हमले को भी झेलनेवाली बंदूकें लगी थीं । जब पिछले वर्ष केंद्र सरकार ने अयूब को गिरफ़ार करने की धमकी दी, तब उसने ५ हजार सशस्त्र आदिवासियों को अपनी

सुरक्षा में लगा दिया । अक्तूबर के चुनाव में अयूब के विरुद्ध हारनेवाले व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा अयूब से अच्छी होते हुए भी पराजित हो गया ।

पाकिस्तानी पुलिस व सेना के पास यह कानूनी अधिकार नहीं है कि वह आदिवासी क्षेत्रों में जाकर नशे में लगे बड़े-बड़े माफिया समूहों को पकड़ सके, इसलिए वे आजादी से इसका फायदा उठा रहे हैं ।

पाकिस्तान की कोई भी सरकार मादक पदार्थों के अवैध रूप से लगे धंधे को रोकने में असमर्थ है । 'न्यूज वीक' को बताते हुए एक 'पाकिस्तानी मादक पदार्थों के नियंत्रण परिषद' के सदस्य ने बताया कि ५ हजार डॉलर में यह माफिया ग्रुप किसी की भी हत्या कर सकता है । आज पाकिस्तान की कुल जनसंख्या की १ प्रतिशत मादक पदार्थों की आदी हो चुकी है । पाकिस्तान में पिछले वर्ष १३५ से १६० मीट्रिक टन अफीम पैदा हुई और १९९० में लगभग ६०० टन पैदा हुई । अनुमान है कि अफगानिस्तान में पाकिस्तान की सीमा के आस-पास अफीम की खेती करनेवालों ने १२०० टन अफीम का उत्पादन किया ।

पाकिस्तान में मादक पदार्थों के उत्पादन से पुराना दोस्त अमरीका ६० करोड़ डॉलर की सैनिक व आर्थिक सहायता रोक रहा है । अमरीकी कांग्रेस ने भी पाकिस्तान के लिए एक मार्च तक की सीमारेखा खींची है । मादक पदार्थों पर नियंत्रण इस दिन तक हो जाना चाहिए । इसी स्थिति को मद्देनजर रखते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने मादक पदार्थों का एक मंत्रालय अलग से बनाया है । इसके मंत्री का दर्जा कैबिनेट का है । लेकिन कुछ समीक्षकों का मानना है कि इस मंत्रालय को एक हिंदू मंत्री के हवाले कर मुसलिम संप्रदाय के इस व्यापार को रोक पाना मुश्किल होगा । क्योंकि गोला-बारूद के साथ ये मुसलिम कबीले मादक पदार्थों के उत्पादन में लगे हैं ।

दूसरी तरफ विश्व के सामने कोलम्बिया का उदाहरण भी है । जहां सरकार व मादक पदार्थों के माफिया के बीच अंतर कर पाना मुश्किल हो गया था । ऐसी ही स्थिति से इस समय पाकिस्तान गुजर रहा है ।

यद्यपि भारत की स्थिति ज्यादा सुखद नहीं है, मादक पदार्थों के एशिया के स्वर्ग बर्मा के द्वारा आज इसका अवैध धंधा काफी तेजी से पनप रहा है ।

आज विश्व के उद्योगों में मादक पदार्थ उद्योग तीसरे नंबर पर रक्षा व पैट्रोलियम के बाद है । गोल्डन ट्रांइगल भी पुनः इन मादक पदार्थों की उत्पादकता को बढ़ाने में सहयोग कर रहा है । दक्षिण-पूर्व एशिया में बंगलादेश का चिट्टगांव बंदरगाह इसके व्यापार का प्रमुख अड्डा बन गया है । उत्तरी बर्मा में सालाना अफीम का उत्पादन ५०० टन हो गया है ।

बंगलादेश में भी हशीश का वार्षिक उत्पादन २० हजार किलो है ।

इन भयानक उत्पादन वृद्धि के आंकड़ों से लगता है कि संपूर्ण एशिया अफीम की चपेट से बुरी तरह ग्रस्त हो चुका है । इससे उभरने के लिए सरकारों की इच्छाशक्ति आवश्यक है ।

इसलिए निरोध के उपाय शीघ्र ढूंढ़ने आवश्यक हैं ।

तमस के विरुद्ध ज्योति का वरदान

● इंदिरा मोहन

सांप्रदायिक उत्पात के भयानक दिनों में, अपने प्राणों को संकट में डाल, वे मुसलमानों के मुहल्ले में कई बार खाना लेकर गये । धार्मिकता और सांप्रदायिकता एक चीज नहीं । सच्चा धार्मिक व्यक्ति सांप्रदायिक हो नहीं सकता, वह ईमानदार जो होता है । उनका कहना था, 'मुझे अपने धर्म में बड़ी प्रबल आस्था है किंतु जब मैं किसी गिरजाघर या मसजिद के सामने से निकलता हूं मेरा सिर स्वयं श्रद्धा से झुक जाता है ।'

शुभ्र वसन— शुभ्र बदन, सरल-सात्विक महामना जहां भी जाते, शुभ्रता का सहज प्रकाश बिखेर देते । मंच हो या मंदिर, कचहरी हो या छापाखाना, भीड़भरी गलियां हों या लंदन की गोल मेज कांफ्रेंस, उनके पहुंचते ही सनातनी शुभ्रता विराट रूप धारणकर सबको नत मस्तक कर देती । यूं तो भारत में जन्मे अनेक महापुरुषों में से वे एक थे, पर उनके रूप-तेवर अनेक थे— उनमें कभी टैगोर का कवि-हृदय झलकता तो कभी सुभाष की दृढ़ता, गांधी की मानवता मुस्कराती, तो कभी तिलक की कर्मठता— सबका मिला-जुला, स्वस्थ, समन्वयवादी व्यक्तित्व जिसमें कठोरता भी थी और कोमलता भी, व्यावहारिकता भी थी और अध्यात्मिकता भी— महान पुरोहित, शिक्षा के प्रसारक, राजनीति के पुजारी ।

बहुत-से नेता समय के प्रवाह में जहां बह गये, दलबंदी में फंसकर फिसल गये, वहां मालवीयजी ऐसे दृढ़ स्तंभ सिद्ध हुए, जो आदि से अंत तक एक ही आस्था से देश-सेवा में डटे रहे । मतभेद हुए, दल बने, टूटे पर महामना के प्रति जनता का आदर पहले की भांति

अविरल-अनंत बना रहा । ८५ वर्ष के लंबे जीवन में मालवीयजी ने ७० वर्ष देश की सेवा में लगा दिये । उसके प्रत्येक क्षेत्र को अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, किंतु अपने लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी भी नहीं बनायी ।

इलाहाबाद के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में जन्मे, मदन मोहन मालवीय ने हाई स्कूल परीक्षा पास की, तो माता-पिता को लगा कि अब उनके दुर्दिन समाप्त हो जाएंगे । बालक ने उच्च-शिक्षा के लिए आग्रह किया— सरकारी नौकरी पाने नहीं, बल्कि अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण करने । वे वकालत करते हुए ही आजादी की लड़ाई से जुड़ चले । सन १८८५ में बंबई, १८८६ में कलकत्ते के कांग्रेस महाधिवेशन के मध्य राजनीतिक क्षितिज पर ज्योति-पुंज से अवतरित हुए । उनके भाषणों का एक-एक शब्द हिंदी में हो या अंगरेजी में बड़ी तन्मयता से सुना जाने लगा । केंद्रीय एसेंबली में सबसे अधिक लंबा समय बितानेवालों में महामनाजी की गणना विशेष रूप से की जा सकती है । मालवीयजी के लिए राजनीति का अर्थ 'अपना उदय और शत्रु का विनाश न था', वे राजनीति में भी अपने साथ-साथ दूसरों का अभ्युदय चाहते थे, क्योंकि मैं और सामनेवाला अलग नहीं, एक ही राष्ट्र-रूपी वस्त्र के ताने-बाने हैं, अतः राजनीति में शुद्धता जरूरी मानते थे । उनमें धर्म का वह ओज समाहित था जिसके कारण महात्मा गांधी के बाद उन्हें सर्वाधिक लोकप्रियता मिली । एक बार गांधीजी ने कहा था, "मैं तो मालवीयजी महाराज का पुजारी हूं ।"



मालवीय जी

असली सत्ता : लोक सत्ता

जब-जब कांग्रेस दिक्कत में पड़ी मालवीयजी पुराने और नयों के बीच सेतु बन आगे आये— अनेक बातों में कांग्रेस के साथ उनका मतभेद था, पर उन्होंने उसे कभी छोड़ा नहीं । अपने तरीके से चलते रहे, लेकिन कांग्रेस को कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया । स्वयं तो आगे देखते ही थे, लोगों को भी आगे ले जाते थे । उनके काम का ढंग था अपने को पीछे रखना— परिश्रम स्वयं करना पर जहां कीर्ति मिलने की बात है औरों को आगे कर देना । राजनीति में सबसे पहले आये थे, परंतु पं. मोतीलाल नेहरू, पं. सुंदर लाल को वे अपने से बड़ों का सम्मान देते रहे । उनकी दृष्टि में राजनीतिक सत्ता असली सत्ता नहीं— असली सत्ता तो लोक सत्ता है, जो नागरिकों की श्रद्धा और समर्पण से त्याग और बलिदान से प्राप्त होती है । वे

गांधीजी के साथ लंदन में गोल मेज कांफ्रेंस में सम्मिलित हुए और स्वतंत्रता की लड़ाई को अपना संपूर्ण समर्थन दिया, किंतु भारत, भारतीय और भारतीयता का वे जो स्वप्न देख रहे थे, राजनीति उसे साकार करने में असमर्थ है— इस सत्य को वह भली-भांति जान गये थे। वास्तव में, उनके गंगा-जैसे पवित्र-जीवन को राजनीति से कहीं उच्चतर जीवन की तलाश थी।

जिस बात को वह ठीक समझते उसका स्वतंत्रता तथा दृढ़तापूर्वक प्रतिपादन करते, चाहे वैसा करने में उन्हें साथियों का कोप भाजन क्यों न होना पड़े। औरों का मुंह देखना अपना मत स्थिर करना उनका स्वभाव न था। वे सनातन धर्म के मूर्त रूप और उच्चतर-जीवन के प्रणेता थे। जिस सनातन धर्म का उपदेश देते, वह किसी प्रकार से संकुचित नहीं, अपितु आकाश-सा व्यापक, समुद्र-सा गंभीर और विश्वात्मा की भांति उदार 'सर्वे भवंतु सुखिनः' के मूल-मंत्र पर आधारित था। 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'— सारा संसार हमें अपना मित्र माने— उसका शंखनाद था। महामना को विश्वास था कि संसार का कोई धर्म इतना उदार नहीं, जहां सारे धर्मों और मत-मतांतरों के प्रति श्रद्धा भाव हो, संकीर्णता से परे यही एक धर्मनिरपेक्ष धर्म है। अतः विश्व धर्म बनने की क्षमता रखता है।

सच्चे धार्मिक थे

उनका हिंदुत्व वास्तव में देशभक्ति का पर्याय था जिसके अंतर्गत भारतवर्ष में उत्पन्न होनेवाले, पोषित होनेवाले सब मत संप्रदाय, भारत की प्रत्येक वस्तु समाविष्ट थी। सांप्रदायिक उत्पात के भयानक दिनों में, अपने प्राणों को संकट में डाल, वे मुसलमानों के मुहल्ले में कई बार खाना लेकर गये। धार्मिकता और सांप्रदायिकता एक चीज नहीं। सच्चा धार्मिक व्यक्ति सांप्रदायिक हो नहीं सकता, वह ईमानदार जो होता है। उनका कहना था, 'मुझे अपने धर्म में बड़ी प्रबल आस्था है किंतु जब मैं किसी गिरजाघर या मसजिद के सामने से निकलता हूं मेरा सिर स्वयं श्रद्धा से झुक जाता है।'

भारतीय संस्कृति की गंभीरता एवं उदारता को न समझनेवाले अकसर उन पर दलबंदी का आरोप लगाते थे। सुधारक उनको सनातनी कहते और कट्टर सनातनी, सुधारक मानकर उनकी निंदा करते थे। संकुचित मानसिकता के खंडन में एक बार मालवीयजी ने कहा, "मैंने अपने जीवन में दल तो केवल एक हो जाना है। वह दल ही मेरा जीवन-प्राण है, जीवन रहते उस दल को मैं कभी छोड़ नहीं सकता"— यह कहकर अपनी जेब से तुलसी दल निकाला। उसे जनता को दिखलाते हुए कहा, "और वह दल है यह तुलसीदल।"

कर्म में आसक्ति थी

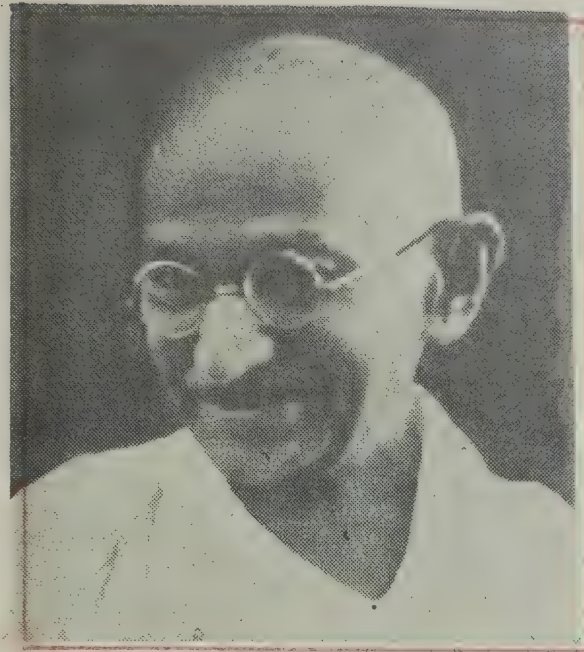
वे जो कहते थे उसमें विश्वास रखते, जो उपदेश देते, उसे स्वयं अपने जीवन में क्रियान्वित करते। धर्म पर बोलते हुए आपने कहा था, "घर में हमारा ब्राह्मण धर्म है, परिवार में सनातन धर्म, समाज में हिंदू धर्म, देश में स्वराज्य (कांग्रेस) धर्म—और विश्व में—मानव धर्म है।" धर्म की ऐसी स्पष्ट व्याख्या जिसमें न कोई संशय न द्वंद्व, व्यष्टि से समष्टि में समाहित होने की आकुल निष्ठा कहां मिलती है ?

उनका अंतर और बाह्य विशुद्ध भारतीय था । देश की आजादी जीवन का व्रत था, किंतु उनकी कल्पना में आजादी की नींव भारतीय संस्कृति पर आधारित थी, जिसमें आध्यात्मिकता का विशेष स्थान था । राष्ट्र-निर्माण पर आधारित थी, जिसमें आध्यात्मिकता का विशेष स्थान था । राष्ट्र-निर्माण के इस दौर में वे समाज के हर वर्ग का योगदान चाहते थे । सैकड़ों हरिजन नवयुवकों को आर्थिक सहायता देकर उच्च-शिक्षा दिलायी, ताकि उनमें आत्म-सम्मान जागे और वे समर्थ नागरिक बन, दलित सेवा के व्रत को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं ।

उन्हें आसक्ति थी तो केवल कर्म से, विजय से, सफलता से । उनके अंतर में न शंकाओं का जाल था, न असमंजस का कुहासा । तभी तो पत्रकार के रूप में उनकी निर्भीक प्रभावशाली, तीखी, मार्मिक संपादकीय टिप्पणियों ने जनता पर जादू का असर किया । शुद्ध हृदय की क्षमता कौन झेल सकता है ? उनकी बहुमुखी प्रतिभा चमत्कारी थी, जिसे समर्पण और परिश्रम ने निखारा था ।

शुद्ध आचार और व्यवहार

राजनीति उनके जीवन का लक्ष्य न था । समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान राजनीति नहीं हो सकती । वर्तमान हो या भविष्य राष्ट्र के बहुमुखी विकास को जीवन-मूल्यों की आधारशिला चाहिए । उन्होंने भारत की युवा-शक्ति को आत्म-संपन्न बनाने हेतु विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षा संस्थान का स्वप्न देखा । सरकार के विरोध एवं आर्थिक संकट की विषम चुनौती को महामना ने सहर्ष



स्वीकार किया । उनके जीवन का अधिकांश श्रेष्ठ समय इसी संस्था के निर्माण में बीता । इसमें राजा-महाराजाओं, संपन्न लोगों ने हृदय खोलकर दान दिया— निर्धन सामान्य जनता भी सहयोग देने में पीछे नहीं रही । काशी हिंदू विश्वविद्यालय की कल्पना करते समय उनके सामने विश्वविख्यात कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड का आदर्श नहीं था, वरन तक्षशिला और नालंदा का उदाहरण था । अपनी योजना समझाते हुए उन्होंने काशी नरेश महाराजा प्रभु नारायण से कहा था कि "इस विश्वविद्यालय से अब अंगरेजों की जी-हजूरी करनेवाले क्लर्क नहीं मिलेंगे । इसमें तो मुझे ऋषि दयानंद और विवेकानंद-सरीखे धर्मदूत तैयार करने हैं ।"

आजकल के जमाने में जो लोग उन्हें दकियानूसी कट्टर अथवा रुढ़िवादी कह सकते हैं । किंतु आजादी से पूर्व मालवीयजी की दूरदर्शिता को निश्चय था कि किसी एक वर्ग, एक शहर अथवा एक प्रांत की खुशहाली पूरे राष्ट्र की समृद्धि नहीं— राष्ट्र के चहुंमुखी

ज्ञान-गंगा

अभ्यासशीलाः सुतरां जना ये,
भवन्ति ते मन्दधियोऽपि विज्ञाः ।
केनेह रज्ज्वा हि गमगमाभ्यां
शिलापि घृष्टा भुवने न दृष्टा ?

—अभ्यास-शील लोग, मंद-बुद्धि होने पर भी, विद्वान हो जाते हैं । कुएं की मन (जगत) में लगी हुई शिला भी रस्सी के जाने-आने से घिस जाती है, यह किसने नहीं देखा है ?

(अमृत-मंथन २७/७)

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च विनयेत निवार्यताम् ।
आशावादेन नैराश्यमात्मसंमाननेनच ॥

(रश्मि-माला ३२/१)

—बुद्धिमान मनुष्य को दंभ, दर्प और अभिमान का कारण विनय से, और नैराश्य का कारण आशावाद से तथा आत्मसम्मान की भावना से करना चाहिए ।

हता नीरसथनाथा स्त्री हताऽसंस्कारिणी च धीः ।

(योगवाशिष्ठ ६५/५)

—जिसका पति नीरस (स्नेहशून्य) हो, उस स्त्री को विनष्ट ही समझना चाहिए । और जो बुद्धि संस्कारयुक्त न हो, वह भी नष्ट ही समझनी चाहिए ।

नि तद् दधिषेऽवरे परे च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।

(अथर्ववेद ५/२।६)

—जिस घर में छोटे और बड़े सब मिलकर रहते हैं, वह घर अपने बल पर सदा सुरक्षित रहता है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय)

विकास में जन-सामान्य की भागीदारी जरूरी है, जो अपनी माटी से जुड़े बिना संभव नहीं । उन्हें पूर्ण विश्वास था कि भारत जैसे विशाल राष्ट्र की विविधता सनातन परंपरा द्वारा एक सूत्र में बंध सकती है । यह तो ऊर्जा स्रोत है, जिसका उपयोग राष्ट्र भक्ति और राष्ट्र सेवा हित करना उचित है ।

समाज की समग्रता व्यक्ति, समुदाय, संप्रदाय अथवा राष्ट्र का विनाश नहीं चाहती । वह तो स्वार्थ का परिष्कार कर उचित दिशा में परिवर्तन चाहती है, विकास चाहती है । इसीलिए वे शुद्ध आचार और व्यवहार के पक्षधर थे । उनके विचार में नैतिक-मूल्यों को अत्याचार, आक्रमण तथा अन्याय का सबसे प्रबल शत्रु होना चाहिए । यदि वह शक्ति के साथ समझौता या अन्याय के साथ संधि करता है, तब उसे कमजोर दिशाहीन, शक्तिहीन होने से कोई नहीं रोक सकता । जीवन-मूल्यों के अभाव में समाज सभ्यता के आदिकाल में रह सकता है, उसके आगे कदापि नहीं ।

मन जब जीवन संबंधी ऊंचे तत्त्वों पर विचार न कर सके, समझना चाहिए, मस्तिष्क दुर्बल हो गया है, मन की मौलिकता नष्ट हो गयी है । मूल्यों के अनुरूप जीवन संयमित किये बिना आत्म-शक्ति नहीं आती । साथ ही शांतिमय परिवर्तन एवं चहुंमुखी विकास का लक्ष्य भी अधूरा रह जाता है । ऐसी स्थिति में आस्था के नेह में डूबा, महामानव मंहामना का चरित्र आज भी तमस के विरुद्ध ज्योति का वरदान सिद्ध हो सकता है ।

— १२ लखनऊ रोड दिल्ली-७

मराठी की संत कवयित्रियां

● आशारानी व्होरा

संत कवयित्रियां उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, भारत के किसी भी क्षेत्र की हों, उनकी रचनाओं और जीवन-गाथाओं में एक अद्‌भुत साम्य मिलता है । जैसे : ये सभी बचपन से ही अपने आराध्य को समर्पित हो गयीं अथवा उनके दुःखी पारिवारिक जीवन ने उन्हें घर से विरक्त कर दिया और उन्होंने सबसे नाता तोड़कर भगवान से लौ लगा ली । बचपन से समर्पित बालिकाएं किशोरावस्था में आते-आते अपने इष्ट से अपनी तल्लीनता से आगे बढ़, आत्मलीनता की स्थिति तक पहुंच गयीं । फिर उन्होंने या तो विवाह करने से इंकार कर दिया, या जबरन करने पर उनका विवाह असफल हो गया । पर अपने गुरु, इष्ट या भगवान से उनका लगाव किसी भी उम्र में हुआ हो, उन्हें भक्ति-भावना और सृजनशीलता की गहराई में ले जाकर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को सफल-सार्थक ही नहीं, अमर कर गया ।

संत करैक्काल [illegible] भगवान शिव के प्रति अनन्य भक्ति थी । संत आंडाल ने नारायण को अपना पति माना, अक्क महादेवी ने चैन्न मल्लिकार्जुन को, मीरा ने कृष्ण को । मराठी संत कवयित्रियों : बहिणाबाई, मुक्ता बाई, जना बाई, कान्होपात्रा, वेणू बाई, बया बाई की कहानियां भी इनसे मिलती-जुलती हैं :

संत बहिणाबाई

देवगांव के आऊजी कुलकर्णी के घर जन्मी बहिणाबाई की जन्मकुंडली देखकर ही पंडितों ने कह दिया था, "लड़की बहुत भाग्यवान है, अपनी भक्ति से भगवान को जीतेगी और अपना नाम अमर करेगी ।" पर उस समय के रिवाज के अनुसार, पिता ने फिर भी बहुत छोटी उम्र में उनका विवाह गंगाधर पाठक नाम के व्यक्ति से कर दिया था । बहिणा के पिता आऊजी संपत्ति के झगड़े में सब कुछ गंवाकर गरीब हो गये, तो गांव छोड़, जगह-जगह भटकने लगे थे । इसी सिलसिले में उन्हें तीर्थाटन का भी अवसर मिला । बहिणा उनके साथ तीर्थयात्रियों का सुख और गरीबी का दुःख झेलती बड़ी हो रही थीं । जब यह परिवार पांच दिन के लिए पंढरपुर तीर्थ पर टिका, तो वहां भगवान पांडुरंग की मूर्ति देखकर बहिणा को जैसे अपने जीवन की दिशा मिल गयी । उसके बाद भजन-पूजन ही उनकी मुख्य दिनचर्या बन गयी थी ।

पंढरपुर से रहमतपुर आने पर बहिणा का पति गंगाधर भी साथ आकर रहने लगा । उसे वहां पुजारी का काम मिल गया, तो यह परिवार वहीं बस गया । पर पुराने पुजारी के लौट आने पर आय का यह साधन भी छिन गया । तब परिवार कोल्हापुर आ बसा । वहां ब्रह्म भट्ट नाम

के एक ब्राह्मण ने उन्हें रहने की जगह देने के साथ, दान में मिली एक गाय भी दे दी कि उनका भरण-पोषण हो सके । इस गाय के बछड़े को बहिणा ने अपना प्यारा साथी बना लिया । वह उससे बतियाती, उसे अपने साथ नदी-किनारे पानी भरने ले जाती, कथा-कीर्तन सुनने मंदिर भी साथ ले जाने लगी । उसे लगा, दोनों को एक-दूसरे का साथ व मार्ग भा गया है और बछड़ा भी कीर्तन में रस ग्रहण करने लगा है । पर यह बात गंगाधर को खल गयी । एक दिन वह बहिणा को बालों से पकड़कर कीर्तन से उठा, घसीटता हुआ घर ले आया और उसे बहुत पीटा । बारह वर्षीय किशोरी बहिणा को यह बात समझ में नहीं आयी कि बछड़े के कारण उसे पति ने इतना क्यों पीटा ? उसे पिटता देख, गाय व बछड़ा, दोनों जोर से रंभाने लगे थे । पिता ब्रह्म भट्ट ने बहिणा को अपने साथ ज्ञान-चर्चा में बैठने के लिए कहा, पर उसका मन तो भक्ति-कीर्तन में ही लगता था ।

फिर एक दिन बहिणा का प्यारा बछ़डा चल बसा और बहिणा तीन दिन अर्धमूर्छित-सी बिना खाये-पिये पड़ी रही । इसी बीच उन्होंने सपने में संत तुकाराम का संदेश सुना कि बछड़े का ध्यान छोड़, भगवान में ध्यान लगाओ । और बहिणा ने मन ही मन संत तुकाराम को गुरु मान लिया । वह न केवल भक्ति में लीन रहने लगीं, कविताएं लिख-लिखकर भी भगवान को समर्पित करने लगीं । इस बीच उन्होंने दो संतानों को भी जन्म दिया, एक बेटा, एक बेटी, पर लगातार अपने प्रभु से प्रार्थना करती रहीं कि इन सांसारिक बंधनों में पड़कर वह उन्हें भूल न जाएं और इस कर्तव्य से मुक्त होते ही जीवन-मुक्त हो जाएं । इस जीवन-मुक्ति की साधना के लिए वह तीन-तीन दिन की समाधि भी लगाने लगी थीं । वह पति से पिटती रहीं पर न प्रतिकार किया, न अपना मार्ग छोड़ा । माता-पिता चले गये, उन्हें कोई दुःख नहीं व्यापा । संत तुकाराम के देह-त्याग पर भी उन्होंने केवल मौन रहकर १८ दिन का उपवास किया ।

बच्चों के बड़े होते ही उन्होंने अपने गुरु संत तुकाराम से काव्य-शिक्षा ग्रहण करके अपने काव्य का परिमार्जन कर लिया था और इतनी स्थितप्रज्ञ हो गयी थीं कि तब से उन्हें कोई भी सांसारिक दुःख नहीं सताता था ।

७२ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई । कहते हैं, मृत्यु से पूर्व उन्हें अपने पिछले १२ जन्मों का स्मरण हो आया था, जो उन्होंने अपने पुत्र विठोबा को सुनाया और अपने मृत्यु-समय की सूचना भी दी । फिर नियत समय वेद-मंत्रों

७२ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई । कहते हैं, मृत्यु से पूर्व उन्हें अपने पिछले १२ जन्मों का स्मरण हो आया था, जो उन्होंने अपने पुत्र विठोबा को सुनाया और अपने मृत्यु-समय की सूचना भी दी । फिर नियत समय वेद-मंत्रों के पाठ के बीच देह-त्याग किया ।

के पाठ के बीच देह-त्याग किया । ईश्वर-भक्ति के अलावा उनकी घरेलू नीति व चरित्र निर्माण की कविताएं भी प्रसिद्ध हैं । ये आज भी लोगों की जुबान पर हैं । उन्होंने कहीं तो कबीर से भी आगे बढ़कर कहा है— 'स्त्री-जन्म मुक्तिमार्ग में बाधक नहीं ।' महाराष्ट्रीय महिलाओं की प्रगतिशीलता में बहिणाबाई—जैसी संत महिलाओं की वाणी का भी महत्त्वपूर्ण हाथ है ।

मुक्ताबाई

मराठी संत कवयित्रियों में मुक्ताबाई को आद्य-कवयित्री माना जाता है । प्रगतिशील वरिष्ठ कवयित्री भी । शक संवत १२०१ के कारण आद्य-कवयित्री (अन्य संत कवयित्रियों का कार्यकाल इसके बाद का है) और अग्रगण्य इसलिए कि उस दासता काल में भी मुक्ताबाई का काव्य दास्य-भाव से मुक्त है, जबकि अन्य सभी में दास्य-भक्ति के दर्शन होते हैं । अध्यात्म पर असाधारण अधिकार और सृजन-सामर्थ्य ऊंचाइयों को छूता हुआ— 'चींटी आसमान में उड़ी और उसने सूरज को निगल लिया ।'... 'बांझ औरत के पुत्र हुआ । ये थीं उनकी साधना की सिद्धियां ! यहां तक कि संत नामदेव को भी उन्होंने अपने अहं पर विजय न पा सकने के प्रति सावधान किया ।

संत ज्ञानेश्वर की बहन मुक्ताबाई का जन्म 'आपे' गांव में हुआ था । बाद में ये लोग पैठण गए, फिर नेवासे और अंत में आलंदी आकर यहीं बस गये । यहीं वटेश चांगदेव को उन्होंने अहं-त्याग के लिए उपदेश दिया था । मुक्ताबाई ने 'ज्ञानेश्वरीताटी', 'कल्याण पत्रिका', 'नमन' और 'हरिपाठ' जैसे ग्रंथों की रचना की । यद्यपि उनका पूरा साहित्य नहीं मिलता, न ही जीवन-गाथा के अधिक विवरण, पर उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है कि उनके अभंग आज भी गाये जाते हैं, मीराबाई के भजनों की तरह ही ।

भाई संत ज्ञानेश्वर और सोपान के समाधि लेने के पश्चात (१२१८-१२१९) मुक्ताबाई ने भी १२१९ में एदलाबाद के पास माणगांव में जल-समाधि ले ली थी । केवल १८ वर्ष की अल्पायु (शक संवत १२०१-१२१९) में ही इतने ग्रंथों की रचना ! यदि अधिक जीतीं तो ? पर उस काल में 'चींटी आसमान में उड़ी' वाली बात समाज के गले कम ही उतरी होगी ! कई बार परिवार में किसी ऊंचे व्यक्तित्व के कारण भी उससे ऊंचे जा सकनेवाला व्यक्तित्व उभर नहीं पाता, और उसे अपनी संभावनाओं को समेट लेना पड़ता है । पर संत ज्ञानेश्वर के जाने के बाद तो यह संभावना मुक्त थी, अपने पंख फैलाने के लिए ? तब उनके शीघ्र बाद स्वैच्छिक जल-समाधि क्यों ली मुक्ताबाई ने ? और क्यों तत्कालीन समाज को अपनी असाधारण देन से वंचित किया ? इसका उत्तर तो कोई शोधकर्ता ही दे सकता है । जन-धारणा है कि मुक्ताबाई ने इतनी छोटी आयु में ही अपना काम पूरा कर लिया था और इससे आगे जाने की उनकी रचनाकार की महत्त्वाकांक्षा पर उनके संत रूप ने विजय पा ली थी ।

जना बाई

यह शुद्र जाति की स्त्री संत नामदेव को चंद्रभागा नदी के किनारे मिली थी । संत नामदेव से मिलने से पहले यह गरीब स्त्री अनाज कूटने-पीसने का काम करती थी । जनाबाई की कल्पानुसार भगवान उसके हर काम में मदद करते थे । उसके साथ कूटने-पीसने का काम भी करते थे । खाना

पकाते थे । उसके साथ बैठकर खाना खाते थे । जना को अतिरिक्त श्रम से बचाने के लिए ही भगवान इस भक्तिन के वश में हो गये थे । संत नामदेव ने जना बाई की भक्ति-भावना और सेवा-भावना देखकर उन्हें अपने यहां आश्रय दे दिया था । वह वहां रहकर चौदह सदस्यीय परिवार की सेवा भी करतीं, भक्ति-मार्ग की साधना भी । इसी से कुछ समय बाद अभंग-रचना भी करने लगीं ।

संत तुकाराम के अनुसार, ''जनाबाई ने साढ़े बारह कोटि अभंगों की रचना की थी । इनमें 'द्रोपदी वस्त्र-हरण' रचना बहुत प्रसिद्ध है ।'' जना बाई की प्रमुख विशेषता थी, अपनी अभंग-रचना में अपने भगवान से सीधा वार्तालाप, जैसे रवींद्रनाथ ठाकुर ने गीतांजलि में किया । केवल कहने के ढंग में अंतर है, क्योंकि जनाबाई तो पढ़ी-लिखी न थी । उनके कहने का ढंग सहज ग्रामीण ही हो सकता था । पर चौदहवें शतक की कोई अपढ़ शूद्र स्त्री जब अपने अभंगों में वेद-वेदांत की बातें कहती हैं तो यह बात सहज ही मन में उठती है कि शिक्षा का साहित्य-रचना से कोई सीधा संबंध नहीं । कबीर भी तो अनपढ़ ही थे ! मीरा ने भी लिखा कहां ! सहज भाव से गाया और वह लोगों द्वारा कंठस्थ कर लिया गया । इतने गहरे रूप में कि आज भी वे पद और ये अभंग जीवित हैं । जन-जन की जुबान पर हैं ।

फिर इन संत नारियों की रचनाओं को क्या प्रगतिशीलता से अलग किया जा सकता है ? इनमें केवल वात्सल्य, कारुण्य, दीन भाव, भक्तिभाव की विह्वलता ही नहीं, जाति-प्रथा, वर्ग-भेद, छूआछूत पर प्रहार भी है । स्त्री का तात्कालीन स्थितियों से विद्रोह भी है । इन्होंने

बहिणाबाई, मुक्ताबाई, जनाबाई, कान्होपात्रा, वेणुबाई, बयाबाई ये सभी मराठी कवयित्रियां हुई हैं । इन्होंने घर में कुछ न कुछ दुख झेलकर भगवान में लीन होने का निश्चय किया ।

बार-बार कहा, गाया कि जाति जन्म से नहीं, आचार-विचार से निर्धारित होती है, होनी चाहिए । इनमें से अधिकांश स्त्रियां निम्न जाति की थीं, या समाज से, परिवार से उपेक्षित, पीड़ित, बहिष्कृत । पर अपनी ऊंची साधना और रचनाधर्मिता के कारण इन्होंने जनमानस पर इतना व्यापक प्रभाव डाला कि अपनी उपेक्षित स्थिति के कलंक को धो डाला और संत पुरुषों के समान ही, कहीं-कहीं उनसे अधिक पूज्य हुईं ।

कान्होपात्रा

कान्होपात्रा तो निम्न जाति की ही नहीं, वेश्या की पुत्री थीं । मंगलवेढा गांव निवासी श्यामा वेश्या की बेटी कान्होपात्रा को जब श्यामा ने कुछ धन-प्राप्ति के लिए बिदर के बादशाह के सामने पेश करना चाहा तो वह घबराकर विठ्ठल के सामने भजन करने लगीं कि उनकी दर्दभरी पुकार पंढरपुर के विठ्ठल भगवान सुन लें । बादशाह का दूत उनके सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर उनके गांव आया । वहां से पता चला कि कान्होपात्रा पंढरपुर में है तो वह वहीं पहुंच गया । पर दूत को यह कहकर कि वह भगवान के दर्शन करके अभी आती है, मंदिर के भीतर गयी और वहीं मूर्ति के सामने अपने प्राण त्याग दिये । बादशाह का दूत ठगा-सा देखता रह गया, फिर उनकी शान में सिर झुकाये लौट

गया ।

कान्होपात्रा ने भी इस प्रकार छोटी आयु में प्राण त्याग दिये, पर 'भक्ति-विजय' के ३९वें अध्याय में कान्होपात्रा के अभंग मिलते हैं । विठ्ठल द्वारा उनकी सतीत्व-रक्षा के लिए उन्हें अपने पास बुला लेने की यह मार्मिक कहानी भी है जिसका आज तक जनमानस पर गहरा प्रभाव अंकित है ।

वेणू बाई

वेणूबाई समर्थ रामदास की शिष्या थीं । इन्होंने भी मीराबाई की तरह ही जहर पचाकर स्वामी रामदास का शिष्यत्व प्राप्त किया था । इनकी जीवनशैली और इनका कृतित्व एक धरातल पर चले, इसलिए कालजयी रचनाएं दे सकीं । मुक्ताबाई के अलावा, अन्य लगभग सभी संत कवयित्रियों की रचनाओं में सहज सरल अभिव्यक्ति है । पर वेणूबाई की रचनाएं अधिक प्रौढ़ और परिपक्व हैं । ब्रह्म, माया, जीव-जगत, भक्ति, मोक्ष, आध्यात्मिक गूढ़ता, ये सारी विशेषताएं इनकी रचनाओं में मिलती हैं । फिर भी गये और सहज प्रवाही होने से जनमानस में उनकी पैठ हो गयी । पीढ़ी-दर-पीढ़ी वे कंठस्थ कर ली गयीं । प्रसाद-गुण, मधुरता, कोमलता, सघन भाव-पक्ष और लोक-जीवन के बिंब के कारण इनकी रचनाओं को अधिक साहित्यिक मान्यता भी मिली । अभंग के अलावा, आरती, ओवी, पालणे, विडे, घावे रूपों में भी इनकी रचनाएं लोकप्रिय हुईं और जन-जन के बीच पैठीं ।

इनका जन्म, शक संवत् १५४८ में मिरज के श्री देशपांडे के घर में हुआ । शादी, उस समय की परंपरानुसार दस साल की उम्र में ही हो गयी । दुर्भाग्य से, या संत महिलाओं की धारणानुसार सौभाग्य से, शादी के दिन ही विधवा हो जाने से इन्होंने समर्थ रामदास की शिष्या बन, अपना जीवन भगवद् भजन में लगाने का निर्णय लिया । इसलिए समाज-निंदा सहनी पड़ी । निंदा-भय से परिवार वालों ने वेणू बाई पर विष-प्रयोग किया । विषय के प्रभाव से उनका रंग काला पड़ गया, तो सांप काटने का बहाना बनाया । पर बेणू बच गयीं । स्वामी रामदास ने सुना, तो आकर साथ ही ले गये । इसके बाद वेणू बाई का सारा जीवन भजन-कीर्तन, आध्यात्म-ज्ञान और जन-सेवा को समर्पित हो गया ।

१५७७ में वेणू बाई ने मिरज में एक मठ की स्थापना की और स्वतंत्र रूप से वहीं रहकर साहित्य-साधना और भक्ति-साधना करती रहीं । 'निवृत्तिराम', 'सीता स्वयंवर', 'राम-गुह संवाद', 'कौल' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं ।

बया बाई, राजाई

बया बाई रामदासी भी समर्थ रामदास की शिष्या थीं । महाराष्ट्र सारस्वतकार कहते हैं कि शिवाजी काल में महाराष्ट्र में 'आर्या' रचना करने का प्रचलन था । बया बाई ने छंद 'आर्या' में ही अपनी रचनाएं कीं !... संत राजाई ने अपने अभंगों द्वारा अपने पति को उपदेश दिया । मराठी में संत साहित्य से पूर्व की 'महानुभाव पंथ' की कवयित्रियों ने विशिष्ट जन के लिए साहित्य रचा । 'वारकरी संप्रदाय' की कवयित्रियों ने रहस्यवादी सांकेतिक साहित्य देकर उसे जन से दूर कर दिया । इन भक्त कवयित्रियों ने ही उसे जनोन्मुख बनाया ।

—जी-३०२, सेक्टर २२, नोंएडा-२०१३०१

जाति की बात है आत्मघात

● प्रो. राम सेवक सिंह

'जाति की बात है, आत्मघात'— यह कथन अटपटा-सा लग सकता है । कारण, साधारणतः तो लोग यही समझते हैं कि जाति की बात से हो जाती है बड़ी-बड़ी करामात । जातीयता, व्यक्ति और जातीय-समूह में नया जोश पैदा करती है । उन्हें संगठित करती है । पर जातीयता को आत्मघाती कैसे कहा जा सकता है ?

हम चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो यही देखने को मिलता है कि जाति की बात वे ही करते हैं जिन्हें जाति से लाभ होता है परंतु उनकी जाति को उनसे कोई लाभ नहीं होता । जाति की बात पर जाति के साधारण और सीधे लोगों का समूह उमड़ पड़ता है पर उसका प्रतिफल उस जाति के जनसाधारण को नहीं मिलता है । इसका ज्वलंत प्रमाण यह है कि प्रत्येक जाति में कुछ बड़े लोग, बड़े राजनीतिज्ञ होते हैं । यदि इन बड़े राजनीतिज्ञों और मंत्रियों में से प्रत्येक अपनी जाति के लोगों की ही भलाई करता तो आजादी के ४२ वर्षों के बाद भी जन-साधारण की दीन-हीन अवस्था नहीं रहती । जाति की बात को आत्मघाती इसलिए कहा जा रहा है कि इसकी प्रक्रिया एकांगी है । अपनी जाति के गरीब लोगों से उस जाति के बड़े लोग तो लाभ ले लेते हैं पर बदले में उन्हें कुछ नहीं देते । जनसाधारण का अहित होता रहता है । यह उसके लिए आत्मघात के समान है ।

जाति के आधार पर प्रतिनिधित्व

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में लोकतंत्रीय व्यवस्था स्वीकार की गयी । उद्देश्य था कि जन-सामान्य का कल्याण हो । वह अपने अधिकार का उपयोग करे । अपने विकास का पथ प्रशस्त करे । लोकतंत्र में मंत्रि-मंडलीय व्यवस्था रहती है । उसमें जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधि लिये जाते हैं । मंत्री जनता और राज्य के विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं । उन्हीं के निर्देशन में जनहितकारी योजनाओं का संचालन होता है । मंत्रिमंडल के गठन में प्रायः प्रत्येक प्रमुख जाति, उपजाति और वर्गों से मंत्रियों को लिया जाता है । उसके मूल में यही भाव होता

है कि वह मंत्री अपनी जाति का प्रतिनिधित्व करेगा । उनकी सुख-सुविधाओं पर आंच नहीं आने देगा । वास्तव में यदि प्रत्येक जाति का मंत्री अपने जाति के लोगों का ही कल्याण ईमानदारी से करता तो अब तक भारत की प्रत्येक जाति के लोगों का कल्याण हो गया होता । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । मंत्री से उसकी बिरादरी के लोगों का हित नहीं सधता है । मंत्री तो भाई-भतीजावाद और पैसावाद में आकंठ लीन हो जाते हैं । उन्हें अपनी जाति के साधारण और गरीब लोगों से बात करने की फुरसत नहीं रहती । वे चाटुकारों, धनी-मानी लोगों और मध्यस्थों से घिरे रहते हैं । यदि गरीब ग्रामीण अपनी समस्या मंत्री महोदय के समक्ष रखता है तो उसे कोप का शिकार होना पड़ता है । मंत्री जी के लिए जाति के नाम पर चुनाव के समय उसने कितनी परेशानी उठायी थी, यह सोचकर उसका मन कचोट उठता है । वह अपमान का घूंट पीकर सोचता है कि ऐसी जातीयता किस काम की । जाति के नाम पर सचमुच मैंने आत्मघात किया है । ऐसी अभिव्यक्ति केवल उसकी नहीं बल्कि उस तरह के सैकड़ों हजारों लोगों की है और जो दुर्भाग्य से उसी मंत्रीजी की जाति के हैं ।

मंत्रियों की भूमिका

जातीयता आत्मघाती है, इसे सिद्ध करने के लिए दूसरे प्रकार के प्रमाण भी मिलते रहते हैं । दूसरी जाति के व्यक्ति भी यदि सच्चरित्र, दयालु, मृदुभाषी और ईमानदार है तो वह सब जाति के लोगों से समता के भाव से मिलता है उन्हें आदर देता है । उनकी उचित मांगों को पूरा करने में मदद करता है । दूसरी जाति का

जातीयता की प्रवृत्ति आत्मघातक है । उससे किसी का हित नहीं होता । लेखक दर्शन शास्त्र के विद्वान हैं । उनका कहना है कि जातीयता विकास के मार्ग में अवरोध-स्वरूप है । जातीयता पर विश्वास करनेवालों की आंखें खुल जानी चाहिए ।

ईमानदार मंत्री और विधायक हमेशा दिल खोलकर काम करता है और जाति का विधायक और मंत्री केवल पैसेवालों का काम करता है तो जातीयता की बात आत्मघाती कहने में अतिशयोक्ति नहीं है । फिर भी हम इन अनुभवों से कुछ सीख नहीं पाये हैं । हम जातीयता की आंधी में बहते रहते हैं । यह आंधी भारतीय जनता के लिए आत्मघाती सिद्ध हो रही है ।

जातीयता की गहरी जड़ें

जातीयता हमारे दिलों में गहरी जड़ें जमा चुकी है । हम उससे मुक्ति नहीं पा रहे हैं । इस नारे ने हमारी मानसिकता को दूषित और कलुषित करने के साथ-साथ आत्मघाती भी बना दिया है । अकसर देखा गया है कि यदि किसी जाति के बहुत बड़े राजनीतिज्ञ या तथाकथित जातीय नेता को मंत्री नहीं बनाया जाता है तो उसकी जाति के गरीब अभावग्रस्त, अशिक्षित जनसमुदाय में आक्रोश फैल जाता है । जिस आदमी के तन पर वस्त्र नहीं है, वह भी इस बात से चिंतित है कि उसकी जाति के उस तथाकथित बड़े व्यक्ति को मंत्री नहीं बनाया गया । वह बड़ा व्यक्ति करोड़पति है । परंतु उसकी चिंता से परेशान हैं उस जाति के सारे गरीब लोग । बड़ी विचित्र बात है यह । चिंता

होनी चाहिए थी उस करोड़पति को अपनी जाति के गरीब लोगों के लिए पर विडंबना यह है कि गरीब ही उसके लिए चिंतित हैं । उल्टी दिशा में हवा बह रही है । यह तो ऐसी स्थिति है जब मरणासन्न रोगी डॉक्टर के लिए ही चिंतित हो जाए । यदि डॉक्टर को अपना पैकेट भरने से मतलब है और वह रोगी के प्रति उदासीन है तो रोगी की मृत्यु निश्चित प्रायः है । आज देश में यही स्थिति है । प्रत्येक जाति के बड़े-चढ़े लोगों के लिए ही उस जाति का साधारण तबका परेशान है । उस पर जान देने के लिए तैयार है । दूसरी ओर तथाकथित जातीय नेता अपनी जाति के गरीब आदमी की सुधि लेने को भी नहीं सोचते । प्रत्येक जाति का गरीब अपनी गरीबी में ही संतुष्ट है बशर्ते उसका कथित नेता सुखी हो ।

जातीय नेता के प्रति प्रेम क्यों ?

प्रश्न उठता है कि जातीय नेता के प्रति हममें जो प्रेम है वह क्या अकारण है ? उत्तर होगा— नहीं । आजादी की लड़ाई में जिस कठिन संघर्ष का परिचय जनता ने अपने नेताओं की अगुआई में दिया था, वह अद्वितीय था । आजादी मिल जाने पर जन-साधारण को विश्वास हो गया कि हमारे नेता देश का कार्यभार अच्छी तरह संभालेंगे । परिणामतः देश का भी उत्थान होगा । इस महान कार्य में यदि जातीय नेता को नेतृत्व करने का मौका मिला तो उससे संबंधित जाति के लोग और पुलकित हुए । उन्होंने सोचा, 'अच्छा हुआ अपने ही आदमी को मंत्री बनाने का मौका मिला । हमारे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ । अब सभी काम आसानी से हो जाएगा ।' इस सुखद भाव से उस जाति का साधारण व्यक्ति बड़ा प्रसन्न हुआ । अपने नेता से बड़ी आशाएं और अपेक्षाएं थीं । परंतु शीघ्र ही उसकी सारी आशाओं पर तुषारापात हो गया । उसने देखा कि अपनी जाति का मंत्री उनकी बात सुनना तो दूर उनसे डांट-डपट की भाषा में बात करता है । वह केवल उन्हीं का काम करता है, जो उसे तरह-तरह से तुष्ट करते हैं और लाभ पहुंचाते हैं ।

अतः गरीब का हित इसी में निहित है कि वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़े । अपनी जाति के बड़े लोगों पर भरोसा करना छोड़ दें । जब तक गरीब की लड़ाई अमीर लोग लड़ते रहेंगे तब तक गरीब गरीब बना रहेगा । इसीलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि जाति की बात करना जाति के बड़े लोगों के लिए मर मिटना सचमुच आत्मघात है ।

विरोधाभास

जातीयता की बात करते समय हम विरोधाभास से ग्रसित रहते हैं । इसलिए भी जातीयता की बात आत्मघात है । हम चाहे जातीयता के पक्षधर हों अथवा विरोधी, दोनों परिस्थितियों में हमारा दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण होता है । जातीयता की बात करते समय हम अपनी जाति के उस नेता विधायक और मंत्री की आलोचना करते हैं जो अपने जातिवालों का काम नहीं करता है । हम अपनी जाति के नेता और मंत्री को खराब मानते हैं, जो हमारा काम जाति का होते हुए भी नहीं करता है । हमारा जाति का वह नेता हमारी दृष्टि में खराब है चूंकि वह जातीयता नहीं करता है । दूसरी ओर दूसरी जाति का वह नेता भी हमारे लिए खराब है जो

खुलकर जातीयता करता है । अपनी जाति के लोगों के काम में ही ज्यादा ध्यान और समय लगाता है । यदि जातीयता अच्छी चीज है तब तो हमें दूसरी जाति के उस नेता या मंत्री का गुणगान करना चाहिए क्योंकि वह अपनी जाति के लोगों का काम करता है । परंतु हमारी प्रतिक्रिया वैसी नहीं होती है । हमारी जाति का नेता इसलिए खराब है, निंदा का पात्र है कि वह जातिवालों का काम नहीं करता । दूसरी जाति का नेता भी खराब है क्योंकि वह अपनी जातिवालों का ही काम करता है । ऐसी हालत में क्या उचित होगा ? जातीयता करना अथवा नहीं करना । शायद दोनों उचित हैं और दोनों अनुचित भी । उचित तब है जब हमारे अनुकूल है । दूसरे के अनुकूल होने पर वह हमारे लिए अनुचित बन जाता है । इस विरोधाभासपूर्ण स्थिति में जातीयता को आत्मविरोधी और आत्मघाती कहना सर्वथा संगत है ।

जातीयता से संघर्ष और रक्तपात

इस आत्मघाती प्रवृत्ति का परिणाम हम भुगत रहे हैं । हमारी जाति का नेता कभी हमारा सही कार्य करने को आगे आता है तो दूसरी जाति का नेता उसमें बाधक बन जाता है । इसी प्रकार जब दूसरी जाति का नेता अपनी जातिवालों का उचित काम करता है तो हमारी जाति का नेता उसका विरोधी बन जाता है । फलतः जनता के जायज और आवश्यक काम भी लटके रह जाते हैं । फिर जाति के नेता को काम में सफलता नहीं पाने का पर्याप्त बहाना भी मिल जाता है । ऐसे में भ्रष्टाचार और लेन-देन का बाजार गरम हो जाता है । हर जाति का साधारण आदमी परेशान हो जाता है । परेशानी का एक दूसरा पहलू भी है । जाति की बात लेकर दो या अधिक जाति या व्यक्तियों में 'तू-तू मैं-मैं' की तनावपूर्ण स्थिति बन जाती है । कभी-कभी खून-खराबा भी हो जाता है । फिर बदले के भाव से ये जातियां एक दूसरे की दुश्मन बन जाती हैं । जान-माल की हानि का लंबा सिलसिला प्रारंभ हो जाता है । इस जाति युद्ध में संबंधित जाति के नेताओं से जाति के लोगों को कोई मदद नहीं मिलती । उल्टे उपदेश और डांट-फटकार मिलती हैं । ऐसी डांट-फटकार और उपदेश से जनता की आंखें अवश्य खुल जानी चाहिए । जातीयता का नारा और जाति की बात उनके लिए लाभदायक नहीं वरन हानिकारक है । उनके विकास के मार्ग में अवरोधस्वरूप है ।

**— ई.-६७, पीपुल्स को-आपरेटिव कॉलोनी,
कंकड़बाग, पटना-२० (बिहार)**

क्षणिक जीवन

महात्मा नूह को दीर्घायु मिली थी । पूरे एक हजार वर्ष तक वे जीवित रहे, अंत में उनका शरीर छूटा और वे स्वर्ग गये ।

वहां देवताओं ने पूछा, ''संसार में इतनी बड़ी आयु तुम्हें कैसी प्रतीत हुई ?''

हजरत नूह बोले, इतनी आयु तक जीवित रहना मुझे तो ऐसा ही लगा जैसे कोई सराय के एक द्वार से प्रवेश करके वहां रुके बिना दूसरे द्वार से बाहर आ जाए ।''



हिमाचल की झीलें

● गुरमीत बेदी

हिम के अंचल में बसा हिमाचल प्रकृति के सौंदर्य का अनमोल खजाना है । इस प्रदेश को देव-भूमि कहलवाने का भी गौरव प्राप्त है । यहां कई स्थल ऐसे हैं जो श्रद्धालुओं व प्रकृति प्रेमियों के लिए समान रूप से आकर्षण के केंद्र हैं । इन स्थलों को हम सौंदर्य व श्रद्धा का संगम भी कह सकते हैं । हिमाचल प्रदेश की झीलें भी ऐसे ही संगम स्थल हैं । कई पर्यटक तो हिमाचल को झीलों का प्रदेश भी कहते हैं । वैसे तो हिमाचल प्रदेश में छोटी-बड़ी कई झीलें हैं लेकिन यहां कुछ प्रमुख झीलों का ही उल्लेख किया जा रहा है, जिन्होंने न केवल भारत से अपितु विदेशों से भी पर्यटकों को आकर्षित किया है ।

खजियार झील

चंबा की पांच रमणीय झीलों में से खजियार की खूबसूरती बेमिसाल है । समुद्र तल से करीब सवा छह हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित खजियार देवदार के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों से घिरा करीब डेढ़ किलोमीटर लंबा और एक किलोमीटर चौड़ा मैदान है और इसी मैदान के बीचोंबीच पांच हजार वर्ग गज में फैली खूबसूरत झील है । बीस से पच्चीस फुट तक गहरी यह झील चंबा नगर के पश्चिम में बीस किलोमीटर की दूरी पर है । आजादी से पहले अंगरेज अधिकारी इस मैदान में गोल्फ खेलने आया करते थे । लार्ड कर्जन को भी यह स्थल

बहुत पसंद आया था । चंबा में ही डलहौजी व सुल्तानपुर की झीलें भी देखने योग्य हैं ।

कमरूनाग झील

मंडी नगर से ५१ किलोमीटर दूर करसोग घाटी में स्थित यह झील समुद्र तल से नौ हजार फुट की ऊंचाई पर है । देवदार के घने जंगलों से घिरी यह झील प्रकृति प्रेमियों को अभिभूत कर देती है । इस झील तक पहुंचने का रास्ता भी बहुत सुरम्य है और यहां के लुभावने दृश्यों को देख पर्यटक अपनी सारी थकान भूल जाता है । झील के किनारे पहाड़ी शैली में निर्मित कमरुनाग देवता का प्राचीन मंदिर भी है जहां पत्थर की प्रतिमा स्थापित है । जून महीने में यहां भव्य मेला लगता है ।

डल व करेरी झील

जिला कांगड़ा के ऐतिहासिक नगर धर्मशाला से करीब दस किलोमीटर दूर तीन हजार फुट की ऊंचाई पर प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण डल झील है । देवदार के घने पेड़ों के बीच स्थित यह झील अंडाकार है । एक किंवदंती के अनुसार इस झील के किनारे कभी भगवान शिव ने केवल मात्र घास खाकर घोर तपस्या की थी । झील के निकट ही द्रूवेश्वर महादेव का मंदिर भी है । उल्लेखनीय है कि घास को हिंदी में द्रूव भी कहा जाता है । जन्माष्टमी के पंद्रह दिन बाद राधाष्टमी को यहां बहुत बड़ा मेला लगता है । डल झील के आगे करेरी नामक एक और झील स्थित है जो यहां के गद्दी समुदाय की आस्था की प्रतीक है । धर्मशाला व मैकलॉडगंज आनेवाले पर्यटक इन झीलों को देखना नहीं भूलते ।

पराशर झील

मंडी नगर से चालीस किलोमीटर दूर उत्तर-पूर्व में नौ हजार फुट की ऊंचाई पर यह झील स्थित है । इस झील के चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां देखने में ऐसी प्रतीत होती हैं, मानों प्रकृति ने इस झील की सुरक्षा के लिए इन पहाड़ियों की गोलाकार दीवार खड़ी कर दी हो । जन-बस्तियों से काफी दूर एकांत में स्थित इस झील के किनारे 'पैगोड़ा शैली' में निर्मित महर्षि पराशर का तीन मंजिला मंदिर है । एक अनुमान के अनुसार इस झील का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में तत्कालीन मंडी नरेश वाणसेन द्वारा करवाया गया था । कहा जाता है कि यहीं बैठकर महर्षि पराशर ने तपस्या की थी । इस मंदिर में की गयी काष्ठकला इतनी उत्कृष्ट है कि कलाप्रेमी पर्यटक वाह-वाह किये बिना नहीं रहता । झील का सौंदर्यावलोकन करने आये पर्यटक स्वयंमेव ही इस मंदिर में आकर नतमस्तक हो जाते हैं । इस झील के किनारे वर्षभर कई मेले लगते हैं ।

पोंग बांध झील

हिमाचल और पंजाब की सीमाओं पर बनी पोंग बांध झील हिमाचल की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है । तीन सौ मीटर ऊंचे और अढ़ाई किलोमीटर चौड़े पौंग बांध के बनने से इसके पीछे यह झील स्वतः ही खड़ी हो गयी है । इस झील की लंबाई २६ और चौड़ाई ग्यारह किलोमीटर के करीब है । हिमाच्छादित धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी यह झील सैलानियों के लिए एक बहुत ही लुभावना व मनोरम स्थल बन गयी है । वाटर स्पोर्टस और मछली के शिकार शौकीनों के लिए भारत में इससे बढ़िया कोई दूसरा स्थान नहीं है । यही

नहीं, यहां नौकाचालन, पानी पर स्कीइंग और कैनोइंग सिखाने का भी पर्यटन विभाग ने पूरा प्रबंध कर रखा है ।

रेणुका झील

जिला सिरमौर के ऐतिहासिक शहर नाहन से ३८ किलोमीटर दूर यह झील करीब अढ़ाई हजार फुट की ऊंचाई पर है । हरी-भरी पहाड़ियों की गोद में स्थित यह झील तीन किलोमीटर लंबे क्षेत्र में फैली है । इस झील की धार्मिक महत्ता के बारे में कई किंवदंतियां प्रचलित हैं । एक मान्यता के अनुसार यह क्षेत्र महर्षि जमदग्नि की तपस्थली रहा है जिनकी पत्नी रेणुका के नाम पर इस झील का नाम रेणुका पड़ा । झील के निकट ही पर्यटन विभाग का एक खूबसूरत पर्यटक लॉज है । इसके अलावा रेणुका विकास बोर्ड के विश्राम गृह में भी पर्यटकों के ठहरने की सुविधा है । नौका विहार के शौकीनों के लिए पर्यटन विभाग की मोटर वोटों की भी व्यवस्था है । यहां का 'सिंह विहार' भी पर्यटकों को आकर्षित करता है ।

मणिमहेश झील

चंबा की भरमौर तहसील में १८ हजार फुट की ऊंचाई पर कैलाश पर्वत के अंचल में स्थित मणिमहेश झील भी प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है । इस झील की परिधि डेढ़ सौ मीटर है । चंबा से यह स्थल अस्सी किलोमीटर दूर है । इस स्थल के बारे में धारणा है कि जो व्यक्ति जीते-जी मणिमहेश की यात्रा कर लेता है, उसकी आत्मा के लिए अंतिम प्रयास सरल हो जाता है । इस झील के किनारे प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में कृष्णाष्टमी तथा राधाष्टमी को भव्य मेला लगता है तथा भारतभर से हज़ारों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं । अप्रैल से अक्तूबर तक यहां पहुंचने का रास्ता खुला रहता है । मणिमहेश पहुंचने से पूर्व 'गौरी कुंड' व 'शिव करोत्तरी' नामक दो जल-स्रोतों में भी श्रद्धालु स्नान करते हैं । चंबा से भरमौर तक बस यात्रा की सुविधा उपलब्ध है । भरमौर से हड़सर तक जीप मार्ग है, जबकि हडसर से मणिमहेश तक घोड़ा खच्चर सड़क है । वैसे अधिकांश श्रद्धालु पैदल सफर को ही तरजीह देते हैं ।

रिवाल्सर झील

मंडी से पच्चीस किलोमीटर दूर १३५० मीटर की ऊंचाई पर स्थित रिवाल्सर झील तीन धर्मों का संगम स्थल है । इस झील के किनारे लोमष ऋषि व भगवान शिव के प्राचीन मंदिरों के अलावा बौद्ध गुरु पद्मसंभव का एक प्राचीन गोंपा और गुरु गोबिंद सिंह जी का गुरुद्वारा भी है । इस झील का सबसे बड़ा आकर्षण इसमें तैरते भूखंड है । कहा जाता है कि रिवाल्सर के किनारे कभी महर्षि लोमष ने भगवान शिव की घोर तपस्या की थी । इस पर प्रसन्न होकर जब शिव ने उन्हें कोई वरदान मांगने को कहा तो उन्होंने बजाए स्वयं के लिए कुछ मांगने के, अपनी तपोभूमि के लिए ही वरदान मांगा । बस तब से ही यहां झील में भूखंड तैरने लगे । इन भूखंडों को जहां श्रद्धालु बड़ी श्रद्धा से पूजते हैं, वहीं पर्यटकों के लिए ये भूखंड प्रकृति के किसी अजूबे से कम नहीं ।

— सहायक लोक संपर्क अधिकारी,
पालमपुर-१७६०६१, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) ।

रिवाल्सर झील



पराशर झील







शरद का जादू धूप के सिर चढ़कर बोलने लगा, और हवा की धार में पैनापन आना शुरू हुआ। जल्द ही हजारों-हजार छोटे-बड़े परदेसी परिंदों के हुजूम भरतपुर के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के तीस किलोमीटर में फैले जंगल में फैल जाएंगे और उनके निनाद और कलरव से भरा हुआ वन, अबूझ लेकिन मनभावन बोलियों में जीवन की नयी व्याख्याएं करने लगेगा।

आगरा, मथुरा, फतेहपुर सीकरी, और

आदि तक में तत्संबंधी प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। सन १५२७ में राणा सांगा की फौजों का जमाव इस वन-क्षेत्र—घना में हुआ था। उसी मार्च के महीने में बाबर की फौजें भी इस वन प्रांत को रौंदती हुई १७ मार्च को खानुआ नामक स्थान पर लड़ीं। मुगल सम्राट अकबर ने इस वन-क्षेत्र को अपनी शिकारगाह बनाया। शाहजादा सलीम का आखेट क्षेत्र भी यही था और बताते हैं कि उसकी प्रेमिका अनारकली का गांव भी इसी जंगल में बसा हुआ था।

विलायती परिंदों की अद्भुत बस्ती

● दीप

डींग-जैसे ऐतिहासिक सांस्कृतिक नगरों से घिरा हुआ है भरतपुर। जब सरदियां आती हैं, तो भरतपुर के २९ किलोमीटर के घेरे में फैले केवलादेव घना नेशनल पार्क में जीवन और जवानी लौट आती है। सितंबर-अक्तूबर से जो वक्त इस दलदली पार्क में शुरू होता है, वह दरअसल, जीवन का वक्त है, जब ३५३ प्रजातियों की दस हजार चिड़ियायें यहां अपने घोंसले बुनती हैं, और पच्चीस हजार अंडों से नयी जिंदगियां निकालकर फरवरी-मार्च में लौट जाती हैं।

घना के अस्तित्व और विस्तार के सर्वाधिक प्रमाण मुगलकाल के प्रारंभ से मिलते हैं। अनेक तत्कालीन पुस्तकों, दस्तावेजों से लेकर शिलालेखों और अंगरेज राज्यकालीन रिपोर्टों

सन १५५० से १७०० तक यह वन-क्षेत्र मुगल फौजों के पड़ाव-स्थल के रूप में प्रयुक्त होता रहा। औरंगजेब के शासनकाल में मथुरा और आसपास के जाट किसानों ने मुगल सत्ता के विरुद्ध बगावत का झंडा खड़ा कर दिया तो सन १७०० से १७२२ तक घना जाट टुकड़ियों का शरणस्थल बना रहा।

स्वतंत्रता के बाद यह जंगल भरतपुर के महाराजा बृजेन्द्र सिंह के स्वामित्व से हट गया। सरदार पटेल ने उनका एक प्रस्ताव जरूर मान लिया था कि महाराजा स्वयं इस क्षेत्र में परिंदों का शिकार करते रह सकेंगे। वन्य-जीव विशेषज्ञ डॉ. सालिम अली को जब इसकी आहट लगी, तो उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से कहकर इस प्रस्ताव को

रद्द कर दिया । नतीजा यह हुआ कि घना बच गया और आज तक बचा हुआ है ।

राष्ट्रीय उद्यान

राजस्थान वन्य-प्राणी एवं पक्षी संरक्षण अधिनियम-१९४९ के नियम-५ के अंतर्गत १३ मार्च, १९५६ को घना, केवलादेव भरतपुर को पक्षी अभ्यारण्य के लिए आरक्षित घोषित किया गया, और वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम १९७२ की धारा ३५ के उपबंधों के अंतर्गत २८ अगस्त, १९८१ को इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर 'केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर' का नाम दिया गया ।

वैसे तो घना बारहों महीने पक्षियों से आबाद रहता है फिर भी मानसून की पहली फुहार यहां एक नवजीवन का संचार कर देती है और



रिमझिम के साथ ही मानसूनी प्रजनन पक्षियों का गृहस्थाश्रम प्रारंभ हो जाता है । अपने घर-गृहस्थी के निर्माण के लिए करीब १७ प्रजातियों के हजारों पक्षी सामूहिक रूप से यहां की झील में डूबे बबूल के जंगलों पर अपने नीड़ के निर्माण में जुट जाते हैं । तिनका-तिनका लाकर अपना घोंसला बनाते हैं ।

कदम, जामुन, बेर और अमलतास से सुरभित मधुर गंधी वातावरण में इन मानसूनी प्रजनन पक्षियों के प्रणय-किलोल, कलरव और नवजात शिशुओं की चहचहाट से गूंजता यह वन-प्रदेश हर आगन्तुक का बरबस मन मोह लेता है । मानसूनी प्रजनन पक्षियों में लोहासासां, चमचा और पनडुब्बी मुख्य हैं । स्थानीय प्रजनन पक्षियों में चिलचिली, बहना, सात बहिने, मच्छरगां, हुदहुद, गुरगुर्रा और छादल आदि हैं ।

शीतकाल की बहार

शीत ऋतु में घना पक्षी विहार अपने चरमोत्कर्ष पर होता है । शीतकाल के प्रारंभ होते ही हजारों प्रवासी पक्षियों के काफिले यहां आना शुरू हो जाते हैं । चीन से काले कूट, यूरोप से 'टील' व गेडवाल और साइबेरिया से गीज, सफेद सारस आदि प्रजातियों के पक्षी यहां आते हैं । इसके अतिरिक्त गद्यम, झीलरी, कुरजंग, खांग, धूमरा, डुबडुबी, गिरगटमार , चिरचिरी, छोटा बटन और चाचा महाबक, पीलक्का जैसे पक्षी भी यहां आना नहीं भूलते । मछली-भक्षी हवासिल तो पश्चिमी एवं मध्य एशिया से हजारों मील दूरी तय करके भरपेट मछली खाने के लिए यहां सैकड़ों की संख्या में आते हैं । साइबेरियन सारस, जो विश्व में २००



से भी कम है, के लिए भारत में शीत बिहार का यही एकमात्र स्थान है । फरवरी के अंतिम सप्ताह से इन प्रवासी पक्षियों की वापसी शुरू हो जाती है । अप्रैल-मई में झीलों के सूखने का क्रम भी जारी हो जाता है ।

मूलतः यह पक्षी शरण स्थली हैं, परंतु सूखे हिस्सों में चीतल, काला हिरण आदि वन्य-प्राणी विचरण करते मिल जाते हैं । स्तनधारी जीव-जंतुओं में यहां नील गाय, चीता बिल्ली, जलमानुष, सहेली आदि विचरण करते हैं । ऊसर भूमि एवं ऊंचे भागों में सर्पीय प्राणी जैसे-काला नाग, दुमुही, करचाट, चातल और पाटागोह आदि भी देखने को मिलते हैं । झीलों में तैरती बिल्ली, लांची, मगूंर और सिंधी आदि प्रजाति भी प्रमुख हैं ।

वनस्पति से भी संपन्न

राष्ट्रीय उद्यान के २० किलोमीटर क्षेत्र में तो बेहद घना जंगल फैला है । झाड़ियों के झुरमुटे, सुनहरी घास के मैदान, लताएं, ऊसर भूमि की हरी-भरी झाड़ियों और जल वनस्पति आदि भूमि की विविधता प्रदर्शित करती हैं । यहां पर बोली, कुमठा, हल्दू चीचोला, आकोला, हीगोट, आंबल, मिर्रा, काकान, चुरेल, बारगा, गुरजन, लोडिया, बकायन, सेंजना, खेजड़ा, बीजासाल और फरास तथा घोंट आदि जैसे विचित्र नामों वाले पेड़ तो हैं ही, साथ ही यहां हिरण अडूसां, करील, सत्यनाशी, औछा, अश्वगंध, लेंटाना, झारू, आधाशीशी और जवासा नाम की झाड़ियां भी हैं ।

यहां पर पायी जानेवाली लताओं में अमरबेल, पीलवानी, नीम गिलाई, कांटबारती, गुलकाकड़, दूधी, सुतावर, लाजवंती, कैच और मकई मुख्य हैं । कुर, जगरा, जोडली, गंथेल, खोदरा और चिरचिटा, कांति, वज्रदती, ब्रह्मबूटी

भारत का सर्वोत्तम पक्षी अभयारण्य होने के कारण घना में पर्यटकों की लगभग एक लाख प्रति वर्ष तक पहुंच गयी है । आजादी से पूर्व पर्यटक केवल शिकार करने आते थे, और अब उनके संरक्षण को समर्थन देने एवं पक्षी निहारण हेतु । यदि यहां का प्राकृतिक संतुलन बना रहे, तो इससे पक्षी तो आएंगे ही पर्यटकों का भी आकर्षण केंद्र बना रहेगा ।

और सद्देवी नामक जड़ी-बूटी भी यहां पायी जाती हैं ।

जलीय वनस्पति में परेरा, कुमुदनी छोटी, जलरानी, खजा, जल जंजाल जल कुम्भी और नारी मुख्य हैं ।

तो सरदियां फिर आ चुकी हैं और घना में बहार फिर से चहलकदमी करने लगी है ।

समस्या : पानी और आग

यूं तो समस्याएं हर जगह होती हैं लेकिन घना के साथ दो समस्याएं खास हैं—पहली है, पानी का अभाव, जो कुछ साल पहले इस पर काफी कुप्रभाव डाल चुकी है और दूसरी है, आग । यहां पर बार-बार आग लगने का सिलसिला सन १९८५ से शुरू हुआ है । आग भी हमेशा उस हिस्से में लगती है, जहां खस घास बहुतायत से पैदा होती है । सन १९८० में सरकार द्वारा इस खस घास की कटाई पर रोक लगा दी है ।

कटाई पर लगाये प्रतिबंधों के कारण यह घास तेजी के साथ बढ़ने व फैलने लगी । सूखी हालत में यह घास आग के प्रति इतनी संवेदनशील हो जाती है कि एक चिंगारी को आग का शोला बनाने में कोई देर नहीं लगती । जनवरी १९८५ में ऐसा हादसा पहली बार घटित हो गया और करीब ५ वर्ग किलोमीटर का जंगल पूरी तरह स्वाहा हो गया । इसके एक माह बाद ही फरवरी में दोबारा घना आग की लपटों में घिर गया । इस प्रकार ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति होने लगी । सन ८५ में ही घना को तीन बार ऐसे हादसों से गुजरना पड़ा ।

बार-बार के अग्निकांड को रोकने के लिए घास के मैदान को 'फायर लाइनों' के जरिए छोटे-छोटे भागों में बांट दिया गया । इस कार्य पर करीब ६ लाख रुपये खर्च भी कर दिये गये, परंतु यह फायर लाइनें भी कोई स्थायी समाधान नजर नहीं आती क्योंकि इन लाइनों में खस घास हरी होकर पुनः बढ़ने लगती है ।

पार्क की समस्याओं को हल करने के लिए उठाये गये कई नये उपाय हैं जैसे सूखी झीलों में से गाद निकालना, कुए खुदवाना, घास उखाड़ना और सैलानियों की भीड़ को नियंत्रित करना सैलानियों के लिए ही शांति कुटीर के



नाके के जरा आगे ही एक नयी नहर खोदी गयी है, जिसमें नावें चलायी जाएंगी । पार्क में कुछ नये 'वाच टावर' भी कायम की जाएंगी, जहां बैठने पर दर्शक पक्षियों को भलीभांति देख सकेंगे ।

दुर्लभ पक्षियों के रहने, खाने, प्रजनन जैसे कार्य कलापों के अवलोकन के लिए भी कई संगठनात्मक प्रयास किये जा रहे हैं । ऐसे अवलोकन कई नयी जानकारियां प्रदान करते हैं । पिछले दिनों शार्ट टो ईगल का घोंसला देखा गया । इससे ज्ञात हुआ है कि यह ईगल यहां प्रजनन करने लगी है । इसी प्रकार लैसर ईगल के अंडों तथा बच्चों के पैदायश के प्रमाण पहली बार देखे गये ।

भारत का सर्वोत्तम पक्षी अभयारण्य होने के कारण घना में पर्यटकों की लगभग एक लाख प्रति वर्ष तक पहुंच गयी है । आजादी से पूर्व पर्यटक केवल शिकार करने आते थे, और अब उनके संरक्षण को समर्थन देने एवं पक्षी निहारण हेतु । यदि यहां का प्राकृतिक संतुलन बना रहे, तो इससे पक्षी तो आएंगे ही पर्यटकों का भी आकर्षण केंद्र बना रहेगा ।

—३५ एफ/९ए, रामपुर बाग,
सिविल लाइंस, बरेली-२४३००१

"यदि कोई मेरे बारे में पूछने आये तो कहना कि मैं व्यापार करने गया हूं ।" कर्जदार पिता ने बेटे से कहा और कमरे में छिपकर बैठ गया ।

बेटे ने दुहरा दिया ।

"वाह तुम तो बहुत समझदार हो बेटे, व्यापार करने का मतलब जानते हो ?" आगंतुक ने पूछा ।

"हां हां, क्यों नहीं, मतलब है कमरे में छिपकर बैठ जाना ।"

कहानी

कब आओगे प्रिय !

● उर्मिला कौल

स्टेशन पर अजीब हवा थी ।

उदास-उदास । पुल ने आह भरी— 'पगली मर गयी... पगली मर गयी...' पास वाले वृद्ध पीपल का निःश्वास निकला— 'हा ऽ.:. पगली मर गयी.. खोमचेवाले ने कहा— चलो, जून छूटी...'

चायवाले ने शिकवा किया— 'जिंदगीभर, मेरी एक चुक्का चाय नहीं पी...' ठेलेवाले ने गिला किया— 'एक पूड़ी की कर्जदार नहीं हुई...' पल-की-पल में गिले-शिकवे उभर आये ।

आंख मुंदते ही पगली का यह पक्ष चर्चित हो उठा ।

— "यकीनन, वह कोई विरली शख्सियत थी"— हबीब मियां के कहने पर एक आवाज उभरी— "तो क्या कयामत आ गयी... पगली ही तो मरी है... ऐसी सैकड़ों पगलियां प्लेट फॉर्मों पर जन्मती हैं । डोलती-फिरती हैं । और, एक दिन मर जाती हैं । उठाओ इसे, लाईन पार फेंको, किरासन डालो और काम खत्म करो..."

यही है प्लेटफॉर्मी संस्कृति !

जन्म भी खुले आकाश-तले... जीवन... जून भोगना... और मरना तो एकदम निकृष्ट... कि भिखारी को भी खुशी होती है— एक भागीदार कम हुआ...

चार दशक !

दो पीढ़ियों का उभरना !!

आज कोई नहीं जानता, इस पगली का इस प्लेट-फॉर्म पर अवतरण कब और कैसे हुआ । मात्र दो चश्मदीद गवाह हैं— अवकाश प्राप्त स्टेशन मास्टर जो बाबा कहलाते हैं और दूसरा है खलासी हबीब मियां ।

बाबा ने कहा— "इसकी अंत्येष्टि होगी ।"



खोमचेवाले ने व्यंग्य से पूछा— "बाबा, दान-पुण्य भी करेंगे ?"

— "अपनी औकात के मुताबिक ।"

भीड़ में से फिकरा उछला— "बाबा, आपकी लगती क्या थी ?"

हबीब मियां ने जवाब दिया— "इनसानी हमदर्दी के लिए कोई रिश्ते की जरूरत नहीं होती मेरे भाई..."

बाबा ने कहा— "इसी पुल के पास चिता बनेगी ।"

— "क्यों ?"

— "क्योंकि इसी पुल ने उसे पनाह दी थी । यही उसकी अंतर्वेदना का मूक श्रोता था । दर्शक था । इसी पुल के साये में उसने बेशुमार पतझड़ झेले । यौवन सूखे पत्ते-सा झड़ गया । आकर्षण विकर्षण में बदल गया ।"

रेलवे पुलिस का सिपाही डंडा घुमाते हुए कड़का— "क्या भीड़ लगा रखी है ? अरे, भिखारिन मर गयी तो क्या हुआ— डालो तेल, खत्म करो ।"

हबीब ने कहा— "सिपाहीजी, दुनियावालों ने उसके हाथ में कभी-कटोरा नहीं देखा... किसी के सामने उसकी हथेली नहीं पसरी... भूख का उसने कभी नाटक नहीं किया ।"

— "भिखारिन न सही, पगली तो थी ना ।"

— "पगली नहीं थी"— बाबा ने कहा, "अरे, नाम ही देना था तो साध्वी कहते, तापसी कहते ।"

सिपाहीजी से बाबा ने कहा— "आप उसकी अटैची देख लें । कोई दौलत तो नहीं छोड़ गयी ।"



सिपाही ने उपेक्षा से अटैची के ढक्कन पर डंडा जमा दिया। बूढ़ी जर्जर अटैची का ढक्कन दूर जा गिरा— कीमती रेशमी चीथड़े। मुसे-बुझे। मुड़े-तुड़े कागज...

बाबा और हबीब मियां की आंखों में चलचित्र तैर आया— चमकते रेशम में लिपटी गठरी की याद ताजा हो आयी। मासूम कली-सी। दुनिया से अनजान। विश्वास की प्रतिमूर्ति, जिसे वक्त भी खंडित नहीं कर सका। तब कौन जानता था— उस पल के बाद वह मुरझाना शुरू हो जाएगी। इसी प्लेट-फॉर्म पर जालिम जाड़ा, बेदर्द बरसात और लू के थपेड़े खाती फिरेगी।

उपेक्षा भाव से सिपाही जा चुका था।

प्लेटफॉर्मी परिवार ने गिले-शिकवे छोड़ बाबा और हबीब मियां का साथ दिया। अंत्येष्टि-क्रिया हुई। दान-पुण्य हुआ।

ठेलेवाले ने कहा— "बाबा, आपने तो उसकी मिट्टी को कर्जदार बना ही दिया।"

बाबा आह भरकर बोले— "नहीं भाई। जीते-जी उसने किसी की कृपा स्वीकार नहीं की। ऐसी त्यागमयी को सम्मान देना फर्ज है। कर्ज नहीं।"

सूर्य-सा नियमित क्रम ! अनथक !

हर गाड़ी से उतरनेवालों में से वह किसी को ढूंढ़ती फिरती। यही था उसका जीवन लक्ष्य !

वह इंद्रियजित नारी थी। अपने आप में सिमटी हुई। रेलगाड़ियां और उसकी सम्मोहित आंखें... आस-पास के जीवन से बेलाग। एक गाड़ी के चले जाने पर आंखों में अगली गाड़ी की प्रतीक्षा भर जाती— प्रतीक्षा के अक्षय घट !

गाड़ी और प्रतीक्षा... एकमय... एकात्म... एकाकार...

उस दिन पंजाब मेल लेट थी। चार घंटे का विलंब चौदह हो गया था। यथासुविधा यात्री अपने-अपने घर लौट गये। जो नहीं जा सके, बक्से पर सुस्ताने लगे। भूमि-शयन करने लगे।

मेरे पास भी विकल्प नहीं था। सीमेंटी बेंच पर मैंने अपनी अटैची टिकायी और उठंग हो गयी।

प्लेटफॉर्म देखते-देखते खाली हो गया था।

वह मेरे पास आ बैठी। चाही-अनचाही अनुभूति ! पहले-पहल जब मैंने सुना— 'पगली आ गयी... पगली आ गयी'... मेरे जान-प्राण सूख गये थे। रात के इस सन्नाटे में वही मेरे इतने करीब आ बैठी— गमछानुमा साड़ी का कोना खींच उसने अपने सूखे झुर्राये अंगों को ढकने का असफल प्रयास कर रखा था। सरदी-गरमी में वह इसी पोशाक में होती। नल के नीचे नहा भी लेती। धूप-हवा में घूम-फिरकर सुखा भी लेती। मगर उसके आचार-व्यवहार में कभी बदलाव नहीं देखा मैंने।

— "दीदी जी, सो जाओ।"

पापी मन ने कहा— "सोऊं और खोऊं !"

वह पुनः बोली— "गाड़ी सुबह आएगी। बैठे-बैठे रात कैसे काटोगी ? सोहल देह। बीमार पड़ जाओगी।"

मन-ही-मन तर्क जग गया— "पगली... और यह भाव विचार... भाषा की शुद्धता... सरल सुहृद् विचार..."

निश्चय ही यह घटना-चक्र की शिकार कोई

बाबा और हबीब मियां की आंखों में चलचित्र तैर आया— चमकते रेशम में लिपटी गठरी की याद ताजा हो आयी । मासूम कली-सी । दुनिया से अनजान । विश्वास की प्रतिमूर्ति, जिसे वक्त भी खंडित नहीं कर सका । तब कौन जानता था— उस पल के बाद वह मुरझाना शुरू हो जाएगी ।

सुसंस्कृत नारी है पगली कदाचित नहीं...

गाड़ी की घंटी बजी । वह लपककर दूसरे प्लेटफॉर्म की ओर भाग गयी । युवा यात्रियों में से किसी को ढूंढ़ती रही । टिकट क्लेक्टर ने कहा— "खुद बूढ़ी हो गयी है । भला इसका प्रेमी युवा रहा होगा... पगली कहीं की !"

मेरा जी भारी हो गया था । संभव है, सदियों से इसने आईना ही नहीं देखा होगा । गाड़ियां देखने के अलावा इसकी कोई चाह ही नहीं बची ।

प्रतीक्षा-चक्र कितना क्रूर है ! बरसों से उसे रौंद रहा है । मगर इस नादान को अहसास ही नहीं कि यह कितना क्रूर है ! गीता का साक्षात दर्शन है । प्रतीक्षा धर्म है, प्रतीक्षा कर्म है । फल का इसे ज्ञान नहीं । असफलता इसे निराश नहीं कर पायी । एक गाड़ी जाने के बाद दूसरी गाड़ी की उसी शिद्दत से इंतजार...

एक दिन मैं गाड़ी से उतरी ही थी कि बाबा दिखायी दिये । मुझे एक झोला थमाते हुए वह बोले— "देख लेंगी ?"

— "किसका है ?"

— "भानु का ।"

— "कौन भानु ?"

— "जिसे दुनिया ने पगली कहा ।"

झोले के प्रति मोह जग गया— "आपकी मदद की भी जरूरत पड़ेगी ।"

— "आ जाऊंगा किसी दिन..."

बाबा चालीस सीढ़ियां उतर गये थे— "तब मैं असिस्टेंट स्टेशन मास्टर था । हबीब मियां ने आकर बताया था— 'सर, रेशम में लिपटी कोई कमसिन बहुत देर से प्लेटफॉर्म पर बैठी है । न हिलती है, न डुलती है । रात घिरनेवाली है । इस तरह उस पर कोई मुसीबत न आ बने ।'

मैं हबीब मियां के साथ गया ।

— 'कहां से आयी हो ?'

— '!'

— 'कौन हो तुम !?'

— '!!'

— 'कौन है तुम्हारे साथ ?'

— '!!!'

— 'कब तक बैठी रहोगी इस तरह ?'

— '!!!!'

हर प्रश्न का उत्तर एक लंबी चुप्पी था । हारकर मैंने हबीब मियां से कहा— 'इसकी अटैची घर पर ले चलो । अभी और इंतजार कर लेते हैं । आ जाएगा तो इसे सौंपकर ही घर जा पाऊंगा ।'

वह नहीं आया । आखिर मुंह से निकल गया— 'बदमाश कहीं का... बरगलाकर ले

सूर्य-सा नियमित क्रम ! अनथक ! हर गाड़ी से उतरनेवालों में से वह किसी को ढूंढ़ती फिरती । यही था उसका जीवन-लक्ष्य !

आया मूर्ख लड़की को... सरेराह छोड़ गया... लफंगा... '

'आप इन्हें गाली क्यों देते हैं ? वे आएंगे । इंतजाम करने गये हैं । समय तो लगेगा ही... आप घर जाइए... बेकार परेशान न हों...'

'तुम घर चलो । यहां किसी और मुसीबत में पड़ जाओगी । घर में मेरी पत्नी है । तुम्हें बहन का दर्जा देता हूं । चलो ।'

'मैं चली गयी तो वे मुझे यहां न पाकर कितना परेशान होंगे ? मुझे यहीं रहने दीजिए । यह चाबी रख लीजिए ।'

'इतनी जल्दी मुझ पर विश्वास कर लिया तुमने ?'

— 'मेरा विश्वास मुझे कभी धोखा नहीं देता ।'

मेरा अंतस हाहाकार कर उठा था ।

हबीब ने कहा— 'हुजूर आप जाइए । जब तक मैं यहां हूं, मैं अपनी ईमान-बहन का ध्यान रखूंगा ।'

बाबा बता रहे थे— ''भानु ने एक दिन अपनी बालियां और अंगूठी भी उतारकर दे दी— 'इन्हें बेच देंगे । थोड़ा-बहुत पैसा मांग लूंगी ।' एकाध रुपया लेने के बाद हफ़्ताभर की छुट्टी हो जाती । सिद्ध योगी को भी मात देनेवाली थी भानु । कभी उसे खाते नहीं देखा । दिनभर नल के पास जाती । चुल्लुओं से पेट भर लेती । हबीब मियां ने एक बार पूछ ही तो लिया— 'बहन, तुमने भूख को जीत रखा है क्या ? पीर पैगंबर भी यकीनन पेट की आग तो बुझाते ही होंगे ।'

— 'भइया, जिंदा रहने के लिए बहुत कम भोजन चाहिए । जीने के लिए खाना और खाने के लिए जीने में अंतर है ।'

बाबा ने कहा था, 'साक्षात, गीता दर्शन की प्रतिमूरत थी वह । इसी दर्शन की दिव्य शक्ति से पुल के नीचे बस गयी थी । प्लेटफॉर्म उसकी दुनिया बन गया ।

बूंद-बूंद रिसने से कुएं भी रीत जाते हैं, भानुमति के अटैची की भला क्या बिसात ?

शुरू-शुरू में चाय के चुक्के उसकी ओर बढ़े... पूड़ी की पतल बढ़ी... मूंगफली की पुड़ियां बढ़ीं... सभी हार कर लौट गयीं ।

रेशमी पोशाकें आहिस्ता-आहिस्ता बेआब होने लगीं । आखिर मौसमों ने उन्हें फाड़ भी दिया ।

बाबा बता रहे थे— मेरी पत्नी ने भी कोशिश की । भानु टस-से-मस नहीं हुई । वह रेशम में लिपटी कली उघड़ने लगी । देह अपनी आब खोने लगी । मगर भानु ने अपनी ताब नहीं खोयी ।'

बाबा बता रहे थे— 'मेरा तबादला हो गया था । भानु को बताया ।'

— 'अच्छा—' फिर वह गाड़ी की तरफ भाग गयी ।

सैकड़ों गाड़ियां निकल गयीं । मगर इंतजार नहीं मुरझाया । अगली-गाड़ी की प्रतीक्षा...

मेरी पत्नी ने काफी समझाया— 'चलो, हमारे साथ ।'

— "कैसे जाऊं ? वे मुझे यहीं बैठाकर गये हैं । चली गयी तो वे मुझे न पाकर दुःखी होंगे ।"

मेरी पत्नी की आंखें भर आयी थीं— 'हाय रे मासूम इंतजार...'

— 'आप चिंता न करो । मुझे कोई डर नहीं लगता ।'

हबीब ने जमाने की ऊंच-नीच समझानी चाही— 'तुम्हारे घर का पता क्या है ?'

— 'कौन-सा घर ?'

— 'मां का ।'

— 'जिस गांव जाना नहीं उसका पता क्यों पूछना ? मैका छूटा-सो-छूटा । तुम क्यों घबराते हो भाई ? इंतजाम करने गये हैं । होने पर ही तो आएंगे...'

हबीब ने माथे पर हाथ मारकर कहा— "हाय रे मुकद्दर ! कमबख्त !! इंतजार का एक पल बरस लगता है और इसे..."

सत की अपनी आग होती है । उस आग के घेरे में उसका अर्द्धनग्न यौवन भी अस्पृश्य हो गया । बेखटक !

बाबा बता रहे थे— 'वक्त की गर्दिश मुझे पुनः यहीं पर लौटा लायी । स्टेशन मास्टर की कुरसी पर । अति व्यस्त था । लगा— टेबल के पास कोई छाया आयी है— 'क्या चाहिए ?'

नकारात्मक सिर हिला

— 'तो ?'

— 'कुछ नहीं'— स्वर ने मुझे कहीं छू लिया ।

असिस्टेंट ने डपटकर कहा— 'चलो-चलो, निकलो... सर यह पगली है ।'

— 'पगली !'

— 'जी हां । बरसों से प्लेटफॉर्म पर भाग-भाग गाड़ियां देखती रहती है ।'

एक गहरा झटका लगा बिजली का । बरसों की गर्द उड़ गयी ।

— 'वह पगली नहीं है । बुलाओ उसे ।'

वह आ गयी । धंसी हुई गहरी खाइयों में प्रतीक्षा के अथाह भंडार भरे पड़े थे । आड़ी-तिरछी रेखाओं ने चेहरे को कैद कर रखा था । कपाल पर समूल पतझड़ हो चुकी थी ।

— 'नहीं आया वह ?'

— 'आएगा ।'

हबीब भी उम्र के बोझ से ज्यादा ही झुक गया है ।

— 'हुजूर, मैंने बहुत कोशिश की । इसे इसके घर पहुंचा सकूं... कोई दूल्हा दे सकूं...



धरम की बहन माना, तो इसका घर बसा सकूं...मगर बहन ने कभी कोई मदद स्वीकार नहीं की । जी खौल-खौल जाता— वह नामुराद सामने आये तो बोटी-बोटी कर दूं ।'

हबीब ने बताया था— 'बहन ने डपट दिया था— 'खबरदार हबीब भाई, उनका अपमान नहीं सह पाऊंगी ।'

बाबा की कमेंट्री चल रही थी और मेरी आंखों में हिमवान की पुत्री का सती रूप उभर रहा था ।

माहौल उदास हो उठा था । बाबा हलके हो चुके थे बरसाती बादल की तरह । मेरे भीतर भावनाओं का प्लावन उमड़ रहा था । उद्रेक बेकाबू !'

बाबा ने उठते हुए कहा— ''भानु की अमानत का लेखा-जोखा आप ही करें ।'

मेरे गिर्द मौसमों की मार खायी हुई पुर्जियों का ढेर लगा था । अखबार के हाशिये, [illegible] पुड़ियां... फटी चीटी । खाली [illegible] लिखावट । बुझी-बुझी । छोटे-छोटे वाक्य ग्रंथों को समेटे हुए...

'हे पुल... तेरा लाख-लाख धन्यवाद... तुम्हारी छत-तले मुझे सहारा मिला... बरसातों की बौछारें तुम्हारी ओट में झेल पायी... हे पीपल देवता... तुम्हें नमस्कार... तुम्हारी शीतल छाया में जेठ भी शीतल लगा... मैं ऋणी हूं... हे प्रिय... तुम्हारे इंतजार की... उम्र काट ली... उसके बल पर... अब तो भूल ही चुकी हूं... तुम्हारा वह रूप... जब हम दोनों इस अनजान भूमि पर उतरे थे... तुम इंतजाम करने गये... कितना कठिन है जिंदगी का इंतजाम ... उम्रें लग गयीं... मेरी भी ... तेरी भी...

... अब इंतजाम किये बिना ही चले आओ ना ! कब आओगे... कब आओगे प्रिय...'

अंधे प्रेम के इन शिलालेखों को मैंने संजोकर रख लिया ।

शब्द-स्मारक बनाऊंगी । इन शिलालेखों से दीवारें चुनूंगी ।

— अजंतास, रमना रोड
आरा बिहार-८०२३०१

आत्मा उस ऊंचाई तक

प्रसिद्ध [illegible] देकार्त से एक बार किसी ने दुर्व्यवहार किया । मगर देकार्त ने उसे कुछ न कहा । [illegible] लगे, ''तुम्हें उससे बदला लेना चाहिए था । उसका सुलूक बहुत बुरा था ।''

देकार्त [illegible] कोई मुझसे बुरा [illegible] करता है, तब मैं अपनी आत्मा को इस ऊंचाई पर ले जाता हूं, जहां कोई दुर्व्यवहार उसे छू नहीं [illegible] ।

एक [illegible] ने राह चलते कुत्ते की ओर संकेत करके परमभक्त हुसैन से पूछा, ''आप दोनों [illegible] में से कौन श्रेष्ठ हैं ?''

हुसैन का उत्तर था, ''जब तक मैं अपने जीवन को पुण्य कार्यों में लगा हूं तब तक शायद मैं इस कुत्ते से श्रेष्ठ हूं । परंतु जब पापमय जीवन बिताने लगूं तो निसंदेह यह कुत्ता मेरे जैसे सौ [illegible] से श्रेष्ठ होगा ।

गोष्ठी

रत्ना राजदान, जम्मू

प्र. भारतीय सभ्यता में राजतंत्र की जड़ें प्राचीनकाल से मिलती हैं फिर जनतंत्रवादी होने का हमारा दावा कैसे उचित माना जाएगा ?

☐ राजतंत्र में भी भावना जनतंत्र की ही मिलती है । वेदों में भी जहां-तहां इस भावना को समर्थन मिलता है । राजा से यही अपेक्षा की जाती थी कि वह जनता की इच्छानुसार ही शासन चलाए । उदाहरणतया, यजुर्वेद (२०/९) में कहा गया है 'विशि राजा प्रतिष्ठितः' अर्थात राजा की स्थिति प्रजा पर ही निर्भर होती है । इसी प्रकार अथर्व वेद (३/४/२) कहता है 'त्वां विशो वृण तां राज्याय', जिसका अर्थ है, हे राजन ! प्रजा द्वारा तुम राज्य के लिए चुने जाओ । 'विश्वस्त्वा सर्वा वांछन्तु' (अथर्व—४/८/४), अर्थात, हे राजन ! समस्त प्रजा का तुम में विश्वास होना आवश्यक है । 'राष्ट्र् ाणि वैविशः' (ऐतरेय-ब्राह्मण ८/२६), प्रजा ही राष्ट्र बनाती है ।

रौनक सिंह विर्दी, फरीदाबाद

प्र. शारदा एक्ट क्या है ?

☐ बाल विवाह को रोकने के लिए सन १९२९ में बने कानून को शारदा एक्ट कहते हैं ।

न्याज मोहम्मद खां, डीडवाना (राजस्थान)

प्र. कामराज कौन थे, और उनके नाम से चलायी गयी कामराज योजना क्या थी ?

☐ जवाहरलाल नेहरू के जीवन के अंतिम काल में कामराज को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था । इसके पूर्व वह तमिलनाडु के मुख्यमंत्री थे । कांग्रेस अध्यक्ष पद से उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि पार्टी के शीर्ष नेता मंत्रिपद त्यागकर संगठन का कार्य संभालें और उसे मजबूत बनाएं । इसी को कामराज योजना कहते हैं । इसके अंतर्गत केंद्रीय मंत्रिमंडल के अनेक वरिष्ठ मंत्रियों तथा कुछ मुख्यमंत्रियों ने अपने पदत्याग दिये थे ।

गंगाकुमार सिंह, पूर्णिया

प्र. रीठा कब और कहां पैदा होता है, इसकी क्या उपयोगिता है ?

☐ पश्चिमी हिमालय की घाटियों में ६०० से १२०० मीटर तक की ऊंचाई पर इसके जंगल हैं । वैसे उत्तर भारत के सभी स्थानों में यह पैदा होता है । इसका फल नवंबर में पकना शुरू होता है । रीठे का छिलका या गूदा साबुन की तरह झाग देता है, जिससे ऊनी और रेशमी कपड़े साफ किये जाते हैं । यह दवा के भी काम आता है । वमन कराने के लिए इसका उपयोग होता है । यह कृमिनाशक भी है ।

यज्ञेश्वर राव, तिरुपति (आंध्र प्रदेश)

प्र. नवजात शूद्र और ब्राह्मण शिशुओं में अंतर कैसे करेंगे ?

☐ वेद कहता है : जन्म से सब शूद्र हैं । यज्ञोपवीत होने से द्विज बनते हैं, जो वेदपाठी हैं, अर्थात वेद के अनुसार अनुसरण करते हैं, वे विप्र हैं, जो ब्रह्म को जानता है वह ब्राह्मण है ।



ब्रिटेन का राष्ट्रीय पक्षी : रॉबिन

डायना राबिंसन, रांची

प्र. रॉबिन पक्षी कहां पाया जाता है और इसका प्राणि-वैज्ञानिक नाम क्या है ?

☐ मधुर वाणीवाला यूरेशियाई पक्षी रॉबिन लगभग १३ सेंटीमीटर लंबा होता है तथा इसके पंख जैतूनी-भूरे और छाती नारंगी-लाल रंग की होती है गला और माथा भी इसी रंग का होता है । इसकी चोंच महीन होती है,जो इसे कीड़े-मकोड़े और फल खाने में सहायक है । यह ब्रिटेन का राष्ट्रीय पक्षी है । इसका प्राणि-वैज्ञानिक नाम 'इस्थिकस रुबेकुला' है ।

जितेन्द्र कुमार, दमतल (हिमाचल प्रदेश)

प्र. मंदिरों में श्री कृष्ण के साथ राधा की मूर्ति क्यों होती है, उनकी पत्नी रुक्मिणी की क्यों नहीं ?

☐ राधा भगवान श्रीकृष्ण की भक्त हैं(प्रेमिका रूप में) अतएव भगवान ने उनको सम्मान दिया है । कहा भी गया है कि 'राम ते अधिक राम कर दासा', और श्रीमद्भागवत में भगवान को कहा गया है 'एवं स्वभक्तयो राजन् भगवान् भक्तभक्तिमान्', जैसे, भक्त भगवान की भक्ति करते हैं, वैसे ही भगवान भी भक्तों की भक्ति करते हैं ।

आलोक कुमार वाजपेयी, कानपुर

प्र. क्या पाकिस्तान में कभी किसी हिंदू को मंत्रिपद मिला है ?

☐ पाकिस्तान में नवनिर्मित नवाज शरीफ मंत्रिमंडल में राणा चंदर सिंह को मंत्री बनाया गया है । वह पाकिस्तान हिंदू पार्टी के संस्थापक हैं । पाकिस्तान के प्रथम मंत्रिमंडल में लियाकत अली खां ने जोगेन्द्र नाथ मंडल (पूर्व बंगाल) को कानून मंत्री बनाया था । किंतु ५० के दशक में वह पाकिस्तान से पलायन करके भारत आ गये थे ।

दीपक कुमार दीक्षित, पटना

प्र. प्रेस को लोकतंत्र का चौथा पाया कहते हैं, पांचवां पाया कौन है ?

☐ लोकतंत्र के चार ही पाये हैं । कृपया, कादम्बिनी का दिसंबर १९८८ अंक देखें ।

शैलेश गुप्ता, गुना

प्र. क्या भारत की तरह ही हर देश में संध्या के समय राष्ट्रीय ध्वज उतार लिया जाता है ?

☐ राष्ट्रीय ध्वज को सम्मान देने के लिए लगभग सभी देशों में इसी नियम का पालन किया जाता है । सूर्यास्त के साथ ही उसे उतार कर रख देते हैं ।

प्रवीण कुमार अग्रवाल, रुड़की

प्र. रुद्राक्ष क्या है ? कृपया विस्तृत जानकारी दें ।

☐ कादम्बिनी के पिछले अंक देखें, विस्तृत जानकारी दी जा चुकी है ।

अमर कुमार मिश्र, बर्नपुर (प. बंगाल)

प्र. सेना में दो स्टार वाले अधिकारी कौन होते हैं ?

☐ यदि आपका तात्पर्य वाहनों के पीछे लगे स्टार से है, तो वे मेजर-जनरल होते हैं ।



सड़कों के लिए आधुनिक सफाई यंत्र : रोड स्वीपर

अशफाक हुसैन मस्ती, भागलपुर

प्र. मशीनीकरण के इस युग में संपन्न यूरोपीय देशों में सड़कों की झाड़ू-बुहारी की क्या व्यवस्था है ?

☐ यह चित्र देखिए एक 'रोड स्वीपर' का जिसके ब्रश दो मीटर तक चौड़े रास्ते को एक बार में साफ कर देते हैं । गर्द और कूड़ा अंदर खींच लेने के बाद यह गाड़ी आवश्यकता होने पर पानी भी डाल सकती है ।

शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फीरोजाबाद
संजीव कुमार सज्जन, पटना

प्र. बरमूडा त्रिकोण क्या है और यह कहां स्थित है ?

☐ अनेक भौगोलिक क्षेत्रों में यह अत्यधिक कुख्यात है तथा अक्षांश के ३० और ४० अंशों के बीच ये सभी स्थित हैं । इसमें अनेक जलयान और वायुयान विलीन हो चुके हैं, जिनका अब तक कोई पता नहीं लग सका है । यह त्रिकोण बरमूडा, फ्लोरिडा और प्युरिटो रिको के बीच कोई ३९ लाख वर्ग किलोमीटर के बीच छाया हुआ है । इन गुमशुदगियों के लिए कोई संतोषजनक कारण नहीं मिल सके हैं, लेकिन शायद समुद्र की अत्यधिक गहराई और शक्तिशाली लहरें इसके लिए जिम्मेदार हैं ।

चलते-चलते

प्र. हाथ की सफाई किसे कहते हैं ?

☐ दक्षिणी इंगलैंड में डारकिंग के निकट स्थित बारफर्ड ब्रिज होटल में मारिया अंसवर्थ चार वर्षों से काम करती थी । उसका काम कमरों की सफाई करना था । इस बीच उसने होटल से पांच क्रिस्टल के फानूस, २३६ चादरें, तकिये के १८० खोल, ४२६ तौलिये, २७ किलो मक्खन, ६० ऐशट्रे, टायलेट पेपर के २८३ रोल, ३५० छुरी-कांटे और चम्मच, १३ कॉफी परकोलेटर, १० केतलियां, एक फोल्डिंग पलंग, और एक कमोड की सीट धीरे-धीरे होटल से साफ कर दीं । इतनी बड़ी और छोटी चीजें होटल से साफ कर देना हाथ की सफाई ही तो है ।

—सूत्रधार

अंडमान निकोबार में हिंदी

जहां द्रविड़ मुनेत्र कड़गम हिंदी के विकास के लिए प्रयत्नशील है

● डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी

भारत में सर्वाधिक विवाद हिंदी को लेकर हुआ है और अब भी हो रहा है । अहिंदी भाषी क्षेत्रों में जब कभी राजनीतिक गतिविधियों को तीव्र करना होता है, उस समय हिंदी एक मुख्य मुद्दा बनती है । खासकर तमिलनाडु की राजनीति में सक्रियता लाने के लिए हिंदी को ही उछाला जाता है । अभी कुछ महीने पूर्व हिंदी के विरोध में द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम के नेताओं ने संविधान के पन्ने जलाये और हिंदी से संबंधित क्षेत्रों को क्षति पहुंचाने की चेष्टा की । लेकिन हम इस बात को क्यों भूल जाते हैं कि हिंदी के पक्ष में तमिलभाषी स्वर्गीय गोपाल स्वामी आयंगार या सी. राजगोपालाचारी—जैसे लोगों ने संविधान सभा में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रस्तावित किया या उस पर स्वीकृति की मुहर लगायी । हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और अगर हम राष्ट्रभाषा का विरोध करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम राष्ट्रीय एकता के स्थिरीकरण में सहयोग नहीं देते । आइए, हम, आपको ऐसी पवित्र भूमि में ले चलते हैं, जहां भाषा की तकरार व भाषा की दीवार नहीं है, बल्कि भारत के विभिन्न भागों के निवासी अपनी समन्वयात्मिक दृष्टि के कारण इंद्रधनुषी छटा का आभास देते हैं । राष्ट्रीय एकता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं तथा हिंदी को हर तरह से समादृत करने के लिए सचेष्ट रहते हैं । वह है—'कालापानी' के नाम से कुख्यात अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह । यहां द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम हिंदी का समर्थन ही नहीं करती, बल्कि उसके विकास के लिए प्रयास भी करती है । एक बार प्रदेश परिषद (विधानसभा, किंतु विधायी शक्तियां प्राप्त नहीं) के अधिवेशन में सरकार की ओर से अंगरेजी में वक्तव्य आने पर कोट्या नरूला शेट्टी ने कहा—"क्या कहा साहब, बिलकुल समझ नहीं आया, मेहरबानी करके हिंदी में बतायें ।" काश ! हिंदी को यही श्रद्धा और स्नेह अगर अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हर जगह प्राप्त होता, तो भाषा के नाम पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई खतरा पैदा नहीं होता ।

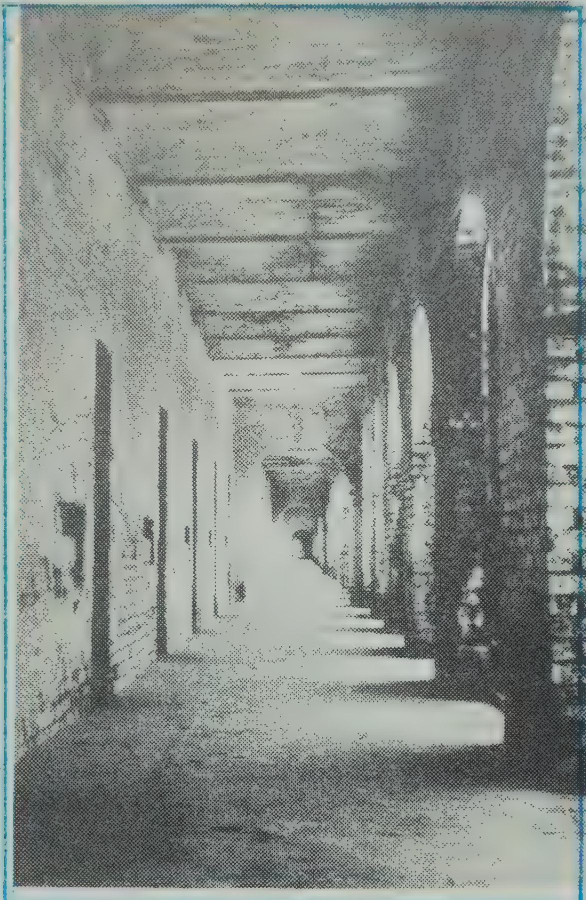
> अंडमान-निकोबार में हिंदी के प्रति स्नेह और श्रद्धा है । हिंदी को यही श्रद्धा और स्नेह अगर अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हर जगह प्राप्त होता तो भाषा के नाम पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई खतरा नहीं पैदा होता ।

संपर्क भाषा—हिंदी अपनी सुगमता के कारण थोड़ी बहुत सभी भाषा-क्षेत्रों में समझ ली जाती है, किंतु अंडमान-निकोबार की मिट्टी में इसकी विशिष्टता कुछ और ही है । यहां शुरू-शुरू में भारत के विभिन्न भागों में आनेवाले, विभिन्न संस्कृतियों के प्रतिनिधि और हिंदी-हिंदुस्तानी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, बंगला आदि बोलनेवाले लोग थे । गुजरात में गुजराती, बंगाल में बंगला, महाराष्ट्र में मराठी और तमिलनाडु में तमिल आदि की तरह इन द्वीपों की अपनी कोई भाषा नहीं थी । ऐसी स्थिति में विभिन्न प्रांतवासियों के बीच संपर्क भाषा का होना एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी । जैसा कि कानपुर के तेरहवें साहित्य-सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के सभापति की हैसियत से महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने भाषण में कहा था—"एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है और बहुत बड़ी आवश्यकता है, जिसकी सहायता से सभी प्रांतों के वासी अपने विचार अन्य प्रांतवासियों पर प्रकट कर सकें" (महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण —डॉ. राम विलास शर्मा, पृ. १८३) अंडमान निकोबार द्वीप समूह में इसका मूर्तरूप प्रस्तुत किया—इतिहास प्रसिद्ध सेल्यूलर जेल ने । जहां अपनी सुगमता एवं सरलता के कारण हिंदी विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच संपर्क भाषा का रूप ग्रहण करने में सफल हो सकी । इस दिशा में वीर विनायक दामोदर सावरकर की भूमिका सराहनीय है ।

यहां की बस्ती में भारतीय लोगों के



पोर्ट-ब्लेयर के अंदरूनी जंगल में एक आदिवासी से हिंदी में वार्तालाप



सेलुजर जेल का बरामदा

अतिरिक्त वे अंगरेज अधिकारी भी थे, जो अंगरेजी के साथ-साथ या तो उर्दू अथवा उर्दू अंगरेजी मिली हिंदी यानी हिंदुस्तानी बोलते थे । १९०८ ई. के पूर्व इसकी चर्चा किसी पुस्तक में प्राप्त नहीं होती, किंतु धीरे-धीरे यहां की बदलती हुई परिस्थिति और आवश्यकता के कारण संपर्क भाषा के रूप में हिंदुस्तानी ने ऐसा रूप धारण कर लिया, जिसका उल्लेख 'लोकल गजेटियर' (स्थानीय भौगोलिकी, १९०८ ई.) में आवश्यक रूप में हुआ है । इस बोली के विकास में अंगरेजों की रुचि का पता इस बात से चलता है कि उन्होंने समय-समय पर इसका शब्द संग्रह तैयार कराया, जो 'इंडियन एंटीक्वेरी' में प्रकाशित होती थीं । भाषा और बोली में जो अंतर है वही अंतर यहां की लिखी जानेवाली भाषा और बोली में है । उच्चारण की प्रकृति में एकरूपता न होने से शब्दों का स्वरूप परिवर्तित-सा लगता है, किंतु इसका एकमात्र कारण विभिन्न भाषा-भाषियों की अपनी उच्चारण प्रकृति है । विशिष्ट रूप में उभरी इस बोली को हिंदुस्तानी, कामचलाऊ हिंदी, उर्दू की एक बोली तथा हिंदी की एक बोली आदि नामों से अभिहित किया गया है ।

भाषा बहता नीर—किसी भाषा की जीवंतता उसके सतत प्रवाहमान होने में है । इसके साथ ही अगर वह विभिन्न छोटी-बड़ी नदियों (बोली भाषा) को अपने में समाहित कर प्रवाहित हो, तो यह उसकी समृद्धि का प्रतीक है । अंडमान निकोबार में हिंदी का स्वरूप ऐसा ही है । इसने विभिन्न भाषा के शब्दों को अपने में पचाया है । चाहे वह दक्षिण भारत की भाषा के शब्द हों या यहां की आदिवासी बोली के । ये इस बोली में इस तरह घुल-मिल गये हैं कि उन्हें सहजतया बिलगाना एक दुष्कर कार्य होगा । संख्याओं का स्वरूप कुछ भिन्न प्रकार है—बीस तक की गिनती तो वैसी ही बोली जाती है जैसे—परिष्कृत हिंदी में । किंतु उसके बाद की गिनती गिनने का तरीका अंगरेजी या तमिल प्रभाव को व्यक्त करता है । उदाहरणार्थ—आम जनता, छत्तीस रुपये पैंतालिस पैसे को तीस छै रुपया चालीस पांच पैसा बोलती है ।

नयी शिक्षा नीति में त्रिभाषा के पठन-पाठन की व्यवस्था है । इसमें हिंदी भाषी प्रदेश के लोगों को दक्षिण भारत की एक भाषा पढ़नी आवश्यक है । अंडमान की विशिष्ट भूमि में यह

कार्य सहजतया हो जाता है । बहुत से हिंदी भाषी दक्षिण की भाषाएं बोलते और समझते हैं ।

अहिंदी भाषियों की हिंदी सीखने की ललक भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । बहुत सारे ऐसे लोग हैं, जो चार-चार, पांच-पांच भाषाएं बोलते और समझते हैं । यही कारण है कि यहां की हिंदी में थोड़ी विकृति आ गयी है, किंतु इसे अशुद्ध बेढंगी या खिचड़ी कहना सरासर अन्याय है । इस बोली में कितने ही ऐसे शब्द हैं, जिनको स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यहां की परिस्थितियों ने निर्मित किया है । काम का अर्थ देनेवाला 'कमान' शब्द अंगरेजी 'कमांड' का विकृत रूप है, जिसके विकास का अपना इतिहास है । यहां कैदियों की टोली जब काम पर जाती थी, तो उसका संबंध किसी न किसी कमान से होता था, जैसे—सफाई कमान । इसलिए लोग आज भी कमान को काम के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं । जैसे—"वह कमान में आएगा करके बोलता है ।" स्थानीय निवासी जो हिंदी बोलते हैं वह विशिष्ट किस्म की टकसाली भाषा है । मलयालम भाषा में लिखित 'कत्रिमण्ण' पुस्तक में श्री आर. नरेन्द्रनाथ ने इसे 'भाव प्रकाशन' के लिए 'सहायक भाषा' की संज्ञा दी है । व्याकरणिक दृष्टि से इस भाषा में अशुद्धियों की भरमार होगी जैसे—"हमको तुमको नहीं जानता । कल आना सकता है या नहीं सकता । करके बोलना नहीं सकता । गाई लोग पूरा बगीचा नुकसान करता है । तुम बड़ा अच्छा औरत है ।" लेकिन भाषा का यही दर्जा समझने की भूल न करें । यह भाषा 'बहता नीर है ।'

भाषा की जीवंतता उसके सतत प्रवद्रमान होने में है । अंडमान-निकोबार की हिंदी का स्वरूप ऐसा ही है ।

भाषा-विज्ञान की सजीव प्रयोगशाला— द्वीपों में हिंदी की विशिष्ट सेवा करनेवाले श्री पुरुषोत्तम लाल वाशिष्ठ ने इन द्वीपों को ध्वनि-विज्ञान की सजीव प्रयोगशाला माना है । श्री वाशिष्ठ ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए साहस एवं चुनौतीपूर्ण कार्य किया है । 'धर्मयुग' एवं 'कादम्बिनी' आदि स्तरीय प्रत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित हुए हैं । इनकी लेखनी की जादुई-क्षमता ने जनमानस को काफी प्रभावित किया है । इनका यह कथन सर्वथा सत्य है 'इन द्वीपों में भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा उन तत्वों का विकास किया जा सकता है, जो संपूर्ण देश की संपर्क भाषा का आवश्यक अंग बनेंगे ।' जिस भाषा के अधिग्रहण में अपनापन और प्रेमभाव होता है, वह भाषा निश्चित ही सहज, सरल और आत्मीय होती है । यहां के लोगों ने इस बोली को बड़ी ही आत्मीयता के साथ पाला-पोसा है । यह साहित्यिक हिंदी से थोड़ी भिन्न जरूर है, किंतु माधुर्य भंगिमा में ब्रज, अवधी और भोजपुरी की-सी सरसता लिये हुए है । यही कारण है कि शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगाकर बोलने का प्रचलन है । जैसे—गाय को गाई, भैंस को भैंसी, आंख को आंखी आदि । मुहावरेदार प्रयोगों में भी इनकी प्रकृति इसी तरह की है । "तुम कहां जाता रे में 'रे' का प्रयोग स्नेह और माधुर्य बरसानेवाला है, जबकि भोजपुरी का 'रे' कई

संदर्भों में हीन भाव प्रदर्शित करनेवाला ।

अंडमान में तमिल संगम, कन्नड़ संगम, आंध्र एशोसियेशन, महाराष्ट्र मंडल, बंगाली-क्लब जैसी कई संस्थाएं हैं, जो अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने एवं उनके प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं । ऐसा नहीं कि केवल अहिंदी भाषी ही इन संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, बल्कि हिंदी भाषी भी इनके क्रिया कलापों में पूरे मनोयोग से सहभागी बनते हैं । इन विभिन्न संस्थाओं से हिंदी के विकास में कोई बाधा नहीं पहुंचती बल्कि आपसी स्नेह से उसका विकास ही होता है । यही कारण है कि अभी हाल ही में भारत सरकार ने इस द्वीप समूह को 'क' श्रेणी में शामिल कर लिया है ।'क' श्रेणी के अंतर्गत वे प्रदेश (उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि) जिनकी मातृभाषा हिंदी है, आते हैं ।

यहां की हिंदी विकासोन्मुख है । इसके विकास में लोकल बोर्न एसोसिएशन तथा हिंदी साहित्य कला-परिषद की भूमिका महत्त्वपूर्ण है । यहां से हिंदी का पहला अखबार १५ अगस्त सन १९७९ ई. को निकलना आरंभ हुआ । द्वीप समूह में हिंदी की विशिष्ट सेवा करनेवालों में श्री पुरुषोत्तम लाल वाशिष्ठ (हिंदी अधिकारी), डॉ. आर.के.एस. राठौर, डॉ. ब्रह्मस्वरूप शर्मा तथा श्री रामकृपाल तिवारी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । यह हिंदी अगर इसी तरह विकसित होती रही, तो निश्चित ही सारे देश के लिए संपर्क भाषा की समस्या हल करने में सुगमता होगी ।

— हिंदी प्राध्यापक
राजभाषा, सचिवालय, पोर्ट ब्लेयर

कबूतर संदेशवाहक

प्रकृति ने कबूतरों को अद्‌भुत गुण-संपन्न बनाया है । वे एक स्थान से उड़कर लंबी दूरी तक पहुंचने के बाद उसी स्थान पर पुनः वापस आ सकते हैं । यही कारण है कि अब से २००० वर्ष प्राचीन रोमनों द्वारा कबूतरों का उपयोग संदेशवाहक के रूप में किया जाता था । कहते हैं कि बारहवीं शताब्दी में बगदाद के सुल्तान द्वारा कबूतरों का उपयोग बसरा तथा अन्य स्थानों तक पत्र ले जाने और लाने के लिए किया जाता था । अभी ५० वर्ष पूर्व, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भी गोपनीय सूचनाएं ले जाने के लिए इन पक्षिओं का इस्तेमाल हुआ था ।

उड़ीसा पुलिस अब भी कबूतरों का उपयोग करती है । ये संदेशवाहक कबूतर जोड़ों में भेजे जाते हैं ताकि यदि एक कबूतर दुर्घटनाग्रस्त हो जाए तो दूसरा पहुंच सके । लेकिन सभी कबूतरों की आदत एक जैसी नहीं होती, कुछ अकेले उड़ना और रहना पसंद करते हैं तो कुछ समूहों में ।

'इंडियन पुलिस जरनल' के अनुसार एक बार दिवंगत प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने संबलपुर से कटक के लिए कबूतरों द्वारा एक संदेश भेजा । उसके बाद वह स्वयं रवाना हुए । उन्होंने १८१ किलोमीटर की यह यात्रा छह घंटे में तय की, किंतु उनसे चालीस मिनट पूर्व कबूतर उनका संदेश लेकर गंतव्य स्थान पर पहले ही पहुंच चुके थे ।

धरती मर रही है

मेरे बच्चो, मेरे पास लौट आओ
यह सारा बोझ मुझ पर से उतार लो
इसे और अधिक सहने की शक्ति नहीं है मुझमें,
मैं मर रही हूं दुःख में

मैं बहुत कष्ट से मर रही हूं
बहुत चोट पहुंची है मुझे,
जला दिया है तुमने मुझे,
पहाड़ लगा दिये हैं मुझ पर कूड़े के

भूल गये तुम
कि मां हूं मैं तुम्हारी
तुम्हें खिलाती हूं
दूध पिलाती हूं
मेरा जल दूध है मेरा

स्वयं भगवान मेरी इस दुर्दशा
पर आंसू बहाता है,
धोता है मुझे अपनी आंसुओं से
किंतु भगवान नहीं कर सकता इलाज मेरा,
दूर नहीं कर सकता वह कष्ट मेरा

काले गुलाब

देखे मैंने स्वप्न में काले गुलाब
रोम लोगों के लिए वाटिका में
विकसित हुए काले गुलाब
रोग लोग उन्हें गर्व से देख रहे थे
वे झूम रहे थे, रो रहे थे
उनके अश्रु झर रहे थे
उनके अश्रुजल से
सिंचित हो रहे थे काले गुलाब

अश्रु सिंचित काले गुलाबों पर
सूर्य की किरणें रहीं थीं बिखर,
दृश्य था यह अति सुंदर
रोम लोगों के काले गुलाब देख कर
द्रवित हो उठे थे दर्शकों के हृदय ।

(काले गुलाब : रोम लोगों के बच्चों के प्रतीक)

अनुवाद : कुसुम बंसल

मार्गिता रेजूनेरोवा

मार्गिता रेजूनेरोवा : जन्म ५ मई, १९४५ को जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति का पहला दिन था । केवल पांचवीं कक्षा तक पढ़ी हैं । चेक भाषा में अच्छी अभिव्यक्ति की क्षमता न होने पर मन में यह भावना थी कि रोमानी भाषा में कविता नहीं लिखी जा सकती । ४२ वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया और पहली कविता 'काले गुलाब' लिखी । निरक्षर निर्धन माता-पिता के नौ बच्चों में से पांच लिखते हैं, यह विशेषता है इनके परिवार की ।





कम्पिल का यज्ञ-कुंड

द्रोणाचार्य की मौत जन्मी थी

● अलका प्रदीप दीक्षित

फर्रूखाबाद जिले के गांव कम्पिल में है वह प्राचीन यज्ञ कुंड,जिससे गुरू द्रोण की मौत जन्मी थी । यह मौत थी—

कम्पिल, जो हजारों साल पहले पांचाल महाजनपद की राजधानी था, आज मात्र एक उजड़ा हुआ और खामोश गांव है, लेकिन यहां पग-पग पर ऐसे चिन्ह मिलते हैं,जो इसके महान अस्तित्व का पता देते हैं । कपिल मुनि के आश्रम की तलहटी में ही कपिल मुनि के आश्रम के पास गंगा के किनारे महाराज द्रुपद ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था । यज्ञवेदी से जन्मे थे—दृष्टद्युम्न और द्रोपदी ।

काल के अलावा कोई भी नहीं जानता था कि यही द्रोपदी आने वाले महासमर का मुख्य कारण और नायिका बनेगी तथा द्रोणाचार्य—जैसे महान युद्धशास्त्री का अंत दृष्टद्युम्न करेगा ।

यह कुंड एक प्रकार से खो ही गया था, लेकिन आज से ५० साल पहले विख्यात पुराविद प्रो. के.डी. बाजपेयी ने अपनी ऐतिहासिक समझ और सूझबूझ का परिचय दे इसे खोज निकाला । और इसका पुनर्निर्माण कराया ।

इस कुंड से जन्मे दृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य की

फर्रुखाबाद जिले का कम्पिल गांव ऐसी पुरातात्विक और ऐतिहासिक थातियां अपने में छिपाये हुए है कि अगर वे उजागर हो जाएं तो दुनिया को चकाचौंध से भर दें

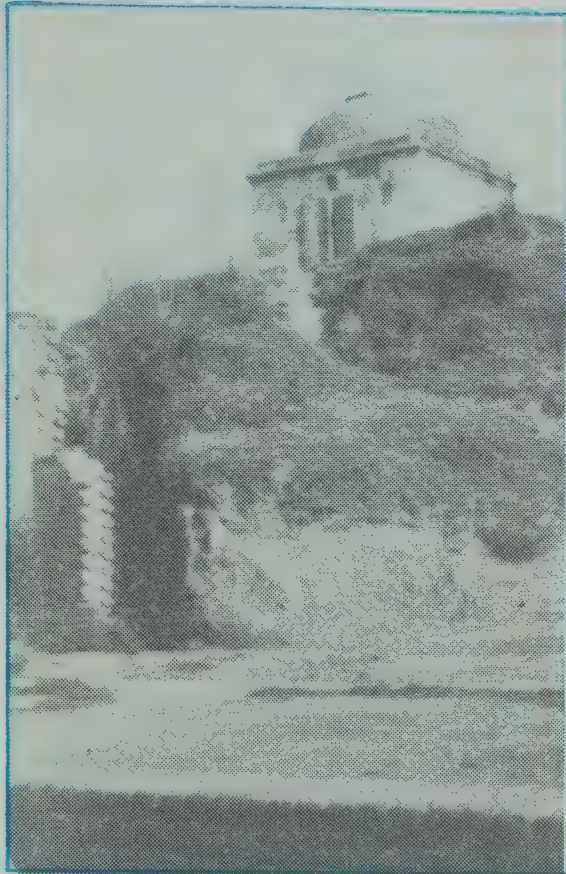
शत्रुता की कथा इस प्रकार है—

शिक्षा समाप्ति के बाद द्रुपद बने पांचाल महाजनपद के राजा, और द्रोणाचार्य बने कुरू राजवंश के शिक्षक । युद्ध-विद्या में पारंगत करने के बाद समावर्तन संस्कार के अवसर ने गुरू से दक्षिणा मांगने का आग्रह किया । द्रोणाचार्य के मन में अपमान का घाव हरा हो गया और उन्होंने बंदी द्रुपद को मांगा दक्षिणा में ।

द्रुपद को बंदी बनाने के कार्य में पांडव सफल हुए । बंदी पराजित द्रुपद को द्रोणाचार्य ने उनके अहंकार की याद दिलायी और कहा, अब तुम भी गरीब हो और मैं भी । अतः हमारी मित्रता हो सकती है । लेकिन गरीबी अभिशाप है अतः मैं तुम्हें आधा राज्य वापस करता हूं । और आधा मैं अपने पास रख लेता हूं । इस प्रकार पांचाल जनपद दो भागों में बंट गया ।

द्रोणाचार्य ने द्रुपद से आधा राज्य छीन पर अपने राज्य की राजधानी अहिछत्रा बनायी और द्रुपद ने कम्पिल से ही शासन किया ।

महाभारत में कथा मिलती है कि अपने पिता के अपमान और राज्य छिन जाने से द्रुपद पुत्र दृष्टद्युम्न को बहुत ही ठेस लगी और उसने द्रोणाचार्य का वध करने की ठान ली । कालचक्र में बंधे नियति के सभी पात्र महाभारत



कुंड के समीप स्थित कपितनी आश्रम

के महासमर में आमने-सामने आ गये और दृष्टद्युम्न ने अपना प्रण पूरा किया ।

पुरातात्विक और ऐतिहासिक दृष्टि से कम्पिल रत्नों की ऐसी बंद मंजूषा है, जो अगर खुल जाए तो अपने अतीत की जगमगाहट से पूरी दुनिया को चकाचौंध से भर देगी । यहां पर गुप्त काल से लेकर प्रतिहार काल तक की सैकड़ों उत्कृष्ट मूर्तियां यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं । इनमें से कुछ तो श्री दिगम्बर जैन मंदिर में सुरक्षित भी हैं । पुराविदों का अनुमान है कि यहां यदि समुचित खुदायी हो, तो सिंधु सभ्यता काल से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री मिल सकती है ।

—२०/१९८, द्वारिकाधीश रोड, कानपुर

विधि विधान

डर डिफाल्टर होने का

रामअवतार सिंह, कलकत्ता : वर्षों पहले हमने एक दुकान किराये पर ली थी। दुकान के मकान-मालिक की मृत्यु के बाद किराया हम मकान-मालकिन को देते रहे। तेतीस वर्ष पहले मकान-मालकिन की भी मृत्यु हो गयी। मकान-मालिक निस्संतान थे। अतः हम किराया किसे देते? लिहाजा किराया देना बंद कर दिया। बाद में मकान-मालिक के संबंधियों के एक पक्ष ने हमें एक नोटिस देकर कहा कि अब वह मकान-मालिक है, लिहाजा किराया उन्हें दिया जाए, अगर किसी और को दिया तो उसके जिम्मेदार आप होंगे। तभी मकान-मालिक के संबंधियों के एक दूसरे पक्ष ने भी हमें ऐसा ही नोटिस दिया। वकील ने राय दी कि जो भी कानूनन मकान-मालिक बन जाएगा, उसे किराया दे देना, कोर्ट को तय करने दो कि कौन कानूनन मकान-मालिक है।

इसके बाद, तीस साल हो गये, हमें कोई जानकारी नहीं कि उनके आपसी मुकदमे का क्या हुआ— क्या नहीं हुआ। किरायेदारी की जगह के कारण पुराने मकान-मालिक के नाम पर ही कारपोरेशन का टैक्स बिल हमारे पास आता है, उसे हम जमा कराते रहे हैं। कलकत्ता लैंड रेवन्यू का एक्यूपायर का हिस्सा टैक्स भी हम बराबर जमा कराते रहे हैं।

अब समस्या यह है कि यदि मुकदमा जीतनेवाली पार्टी हमारी जानकारी में लाये बिना हमें डिफाल्टर करार दे मुकदमा दायर कर दुकान का कब्जा मांगने लगे तो हमारा तो व्यवसाय चौपट हो जाएगा। इससे बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

तीस-तेतीस वर्ष पूर्व नोटिस देने के बाद शांत रहने से ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों ही पक्ष अपना अधिकार प्रमाणित करने में असमर्थ है। अधिकार प्रमाणित किये बिना कोई भी व्यक्ति आपसे किराया नहीं मांग सकता। जो भी पार्टी मुकदमा जीतेगी, उसके लिए यह आवश्यक है कि मुकदमे के निर्णय से आपको अवगत कराये। आप पर कोई मुकदमा किया जाएगा, तो नियमानुसार न्यायालय आपको नोटिस देगा और आप न्यायालय के समक्ष अपनी स्थिति स्पष्ट कर सकते हैं। वकील द्वारा दी गयी राय कि जब जो भी कानूनन मालिक बन जाएगा, तब उसे भाड़ा दिया जाएगा, ठीक है।

बंटवारा जमीन का

कखग : मेरे पिताजी तीन भाई हैं। जमीनों का बंटवारा बहुत पहले से साधारण रूप से हो चुका है, लेकिन मेरे पिताजी के अनुसार उनके बड़े भाई ने अपने पुत्र के नाम कुछ जमीन (खेत) को गैर-कानूनी रूप से अपने कब्जे में कर लिया है, जिसमें मेरे पिताजी की सहमति नहीं है। दूसरे, उनके और हमारे संबंध भी ठीक नहीं है। कृपया, उचित सलाह दें।

आपके पिताजी जमीन का बंटवारा करके अपना हिस्सा पहले ही ले चुके हैं। आपके ताऊजी ने अपने बेटे की कुछ जमीन पर अपना कब्जा कर लिया है। इस जमीन से आपके या

आपके पिताजी का कोई संबंध नहीं है तथा अवैध कब्जे का झगड़ा आपके ताऊ तथा उनके पुत्र के मध्य है । पारिवारिक रूप में आपके पिताजी घरेलू झगड़ा निपटाने के लिए सहयोग कर सकते हैं । झगड़ेवाली जमीन पर आपका कोई अधिकार नहीं है, इसलिए आपकी तरफ से कोई कार्यवाही भी नहीं की जा सकती ।

पट्टे की जमीन का बंटवारा

श्रीराम शर्मा, दिल्ली : हमारी पैतृक संपत्ति-कुछ खेती की जमीन व घर गाजियाबाद के एक गांव में है । लगभग चालीस साल पहले तेरह वर्ष की उम्र में मैं दिल्ली चला आया और यहां नौकरी कर घर की मदद करने लगा । सन १९५४ में भाई को ग्राम पंचायत की तरफ से बीस बीघा जमीन पट्टे पर मिली, जिसका उसने अपने नाम से पट्टा करा लिया । इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं दी । मैंने सन १९६१ में दिल्ली में अपना कारोबार शुरू कर दिया और दिल्ली में एक दुकान किराये पर लेकर काम शुरू किया । सन १९६६ में एक प्लाट खरीदा और उस पर एक कमरा बनवाया, जहां मैं अब रहता हूं । सन १९८२ में माताजी का देहांत हो गया । सन १९८६ में भाई भी गांव छोड़ कर दिल्ली में रहने लगा । सन १९८९ में जब मैंने बंटवारे की बात कही तो उसका कहना है घर और पैतृक जमीन आधी-आधी बांट लीजिए । पट्टे की जमीन के बंटवारे का कोई सवाल ही नहीं है । क्योंकि पट्टे की जमीन तो मेरे नाम है । उसने यह जमीन हिस्सेदारी पर उठा रखी है, जिसकी सारी आय वही लेता है । बताइए, मैं क्या करूं ? उस पट्टे की जमीन पर मेरा हक बनता है या नहीं ?

भाई को ग्राम पंचायत द्वारा दी गयी जमीन पर आप किस अधिकार से हिस्सा मांगते हैं । घर को सहयोग देना आपके परिवार का मामला है । उस आधार पर भाई को मिली जमीन पर आपका अधिकार स्वीकार नहीं किया जा सकता । जहां तक जमीन पर हो रही आय का प्रश्न है, वह भी उक्त जमीन के स्वामी अर्थात आपके भाई को ही है आपका उसमें कोई हक नहीं बनता ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत क़ानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ — रामप्रकाश गुप्त

स्थानांतरण कैसे हो

विलियम निनामा, मंदसौर : मैं पिछले ९ वर्षों से रतलाम डिवीजन के अंतर्गत झाबुआ जिले में दूरभाष-प्रचालक के पद पर कार्यरत था । लेकिन नयी टेक्नॉलाजी के तहत झाबुआ दूरभाष केंद्र को इलेक्ट्रानिक एक्सचेंज में परिवर्तित किया जा चुका है । जिसके कारण वहां से अतिरिक्त स्टॉफ को अन्यत्र उसी डिविजन में स्थानांतरित कर दिया गया है । मेरे साथ जिन तीन और दूरभाष प्रचालकों को स्थानांतरित किया गया । वे सभी सीनियर मोस्ट थे । इस प्रकार हम चार दूरभाष प्रचालकों को जो सीनियर थे,स्थानांतरित कर दिया गया ।

लेकिन जब कुछ ही महीनों के पश्चात रतलाम दूरभाष केंद्र को ऑटो एक्सचेंज में परिवर्तित किया गया, तब वहां से अतिरिक्त दूरभाष प्रचालकों को जिनको स्थानांतरित किया गया है, वे सभी जूनियर मोस्ट थे । ये दोनों दूरभाष केंद्र जिला दूरसंचार अभियंता रतलाम के अंतर्गत कार्यरत हैं । और दोनों में ही ट्रांसफर अथॉरिटी एक ही है । कृपया, बताएं कि किस नियम के तहत अतिरिक्त स्टॉफ को स्थानांतरित किया जाता है । क्या मुझे पुनः अपने पूर्व स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है ? इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए ।

एक स्थान पर आवश्यकता नहीं होने के कारण आपका स्थानांतरण अन्यत्र कर दिया



अनंत का अंत

हिंदुस्तान में
संख्याओं का विस्फोट

चुपचाप
धुएं और धूल के बादलों से
सूरज को ढंक रहा है

सारा का सारा आकाश
अंधेरे में
झिलमिल लैंपों से
सजाकर अपनी दुकान
जंगलों के जंगल
नदियां और झील
और कल के वायुमंडल
बेच रहा है

कल के लगे हुए दरख्तों की
इस सौदेबाजी में
कल के लिए
कोई बीज नहीं लगा रहा है

आज तो अनंत भी
क्षण का मुंह ताक रहा है
हिंदुस्तान का भ्रष्ट व्याकरण
कल को काल में बदल रहा है ।

—विश्वमोहन तिवारी

एयर वाइस मार्शल गुवाहाटी (असम)

गया । इसी प्रकार दूसरे स्थान के कर्मचारियों का भी स्थानांतरण किया गया । स्थानांतरण को दंड की संज्ञा नहीं दी जा सकती । उपयोगिता के आधार पर कर्मचारी को काम पर लगाया जा सकता है । यदि आपके पुराने कार्यालय में स्थान रिक्त है, तब तो आपको अपने अधिकारियों से आपका पुनः उस स्थान पर स्थानांतरण करने के लिए आवेदन उपयोगी हो सकता है । पुराने स्थान पर जाने को आपके अधिकार के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता ।

आरोप अनियमितता का

लोकदत्त, कानपुर : मेरे पिता एक बैंक में अधिकारी के पद पर कार्यरत थे । वह सन १९८६ में सेवानिवृत्त होनेवाले थे लेकिन सेवा-निवृत्त होने से कुछ माह पूर्व उन्हें बैंक ने सस्पेंड कर दिया । ऋण-संबंधी किन्हीं अनियमितता को लेकर उन्हें चार्जशीट दी गयी । पूरे तीन साल इंक्वायरी चली । इंक्वायरी अधिकारी ने ज्यादातर आरोपों में उन्हें बरी कर दिया । इसके बाद भी उन्हें बर्खास्त कर दिया गया । और भविष्य निधि तथा पेंशन भी बंद कर दी गयी है । पिताजी ने बैंक की प्रबंध समिति को क्षमा अपील भेजी है । क्या ऐसी परिस्थिति में हाईकोर्ट में रिट याचिका दायर की जा सकती है ?

आपके पिताजी ने बैंक की प्रबंध समिति में क्षमा अपील करते समय अपना दोष स्वीकार किया होगा । इंक्वायरी अधिकारी के समक्ष किस प्रकार के प्रमाण आये, उन्होंने क्या आधार स्वीकार किया । यह सब विवरण उपलब्ध होने पर ही यह परामर्श दिया जा सकता है कि समादेश याचिका दायर करना उपयोगी रहेगा या नहीं । उचित यह रहेगा कि आप सभी संबंधित रिकार्ड दिखाकर किसी विधि विशेषज्ञ से सलाह ले लें । ●

खलिक सिकस्ता मैं तेरा
दे दीदार उमेदगार बेकरार जीव मेरा
औवल आखिर इल्लह आदिम, मौज फरिस्ता बंदा
जिनकी पनह पीर पैगंबर, मैं गरीब क्या गंदा
तू हाजरां हजूरि जोग येक, अवर नहीं दूजा
जिसके इसक आसिरा नहीं, क्या निजाम क्या पूजा
नालीदोज हनोज बेबखत कमि खिदमतिगार तुम्हारा
दरि मांदा दरि ज्वाब न पावै, कहि रैदास विचारा

हिंदू मुसलमान एक हैं

हे दुनिया के स्वामी, मैं तेरा सेवक हूं । मैं तेरे दर्शन का उम्मीदवार हूं । तेरे दर्शन के लिए मेरा जीव बेचैन है, मुझे दर्शन दे । तू ही पहला है और तू ही अंतिम है । तेरी शरण तो पीर-पैगंबर, ऊंच-नीच सभी आते हैं, तू हो प्रणम्य है । तू हजारों हजार होते हुए भी एक ही है, तेरे सिवा दूसरा कोई नहीं है । जिसका तुझसे प्रेम नहीं है, उसके लिए क्या नमाज और क्या पूजा ? मैं तो नाली का कीड़ा हूं, अभागा हूं किंतु तेरा सेवक हूं, लेकिन तेरी ओर से मुझे कुछ जवाब ही नहीं मिलता ।

कृष्ण करीम राम हरि राघव, जब लगि एक न पेषा
बेद कतेब कुरान पुरातन, सहज एक करि भेषा

भक्ति का तब तक कोई लाभ नहीं है, जब तक राम-रहीम और कृष्ण-करीम एक नहीं हो जाते, वेद-कुरान और पुरान की कहानी एक नहीं बन जाती । मणैंने तो बस इतना ही जाना-समझा है कि जो भी इन नामधारी देवों की उपासना करता है, आपसी भेद और वैमनस्य का शिकार हो जाता है ।

एक ही एक अनेक बिसरिओ
आन रे आन भरपूरि सोऊ

वह अनेक रूपों में भले ही दिखे, लेकिन वास्तव में वह एक ही है ।



'फांसी देने की भी एक तरकीब होती है'

• सुनील मिश्र

बृहस्पतिवार । ८ नवम्बर, १९९० । रात के आठ बजे हैं । पुराने लखनऊ में खंडहर होता जा रहा एक मकान । मकान के भीतर मेरे सामने बैठा है अहमद जल्लाद । ४२ वर्षीय अहमद देखने में जल्लाद बिलकुल नहीं लगता । मगर जल्लाद है वह और वह भी काफी नामी । अहमद की कई पीढ़ियों से फांसी देने का धंधा होता आ रहा है । अब तक अहमद ३५ लोगों को फांसी दे चुका है ।

अहमद के वालिद बब्बू जल्लाद भी जाने-माने जल्लादों में थे । अहमद ने अपने वालिद से ही फांसी देना सीखा है । अपने हुनर में माहिर अहमद फांसी देते वक्त किसी को हाय कहने का भी मौका नहीं देता और उसकी यह कोशिश भी रहती है कि मरनेवाले को तकलीफ न हो ।

१४ साल की उम्र से ही अहमद ने फांसी देने का अभ्यास शुरू कर दिया था । इस अभ्यास में उसकी मदद उसके वालिद करते थे । इसके लिए अहमद चूहे पकड़कर लाता था और उसके वालिद उसे एक खास किस्म की फांसीवाली गांठ बनाकर चूहों को फांसी देना सिखाते थे । अपनी धुन का पक्का अहमद

धीरे-धीरे इस अभ्यास में इतना माहिर हो गया कि चूहे को मारने में उसे सिर्फ १५-२० सेकंड लगते थे ।

कैसे लगती है फांसी

"१६ साल की उम्र में मैं वालिद के साथ काम पर जाने लगा था । उन दिनों बहुत अधिक संख्या में फांसियां दी जाया करती थीं । मेरे वालिद मुझसे मरनेवाले के पैर में रस्सी बंधवाने का काम करवाया करते थे । धीरे-धीरे वालिद की जगह मैं पक्का जल्लाद बनकर जेल की नौकरी अख्तियार कर चुका था । सबसे पहले १९६५ में, जब मैं १८ साल का था, तो कानपुर की जेल में एक आदमी को फांसी लगायी थी । तब से आज तक विभिन्न शहरों की जेलों में जा-जाकर ३५ लोगों को फांसी दे चुका हूं ।" यह कहनेवाला अहमद जल्लाद धार्मिक इंसान है और पांचों वक्त की नमाज पढ़ता है ।

फांसी देने की प्रक्रिया के बारे में अहमद बताता है, "कि जिस दिन फांसी लगनी होती है, उससे २४ घंटे पहले मुझे बुलाया जाता है । मैं वहां पहुंचकर फांसी का तख्ता, लीवर और रस्सी की जांच कर लेता हूं । इससे यह मालूम हो जाता है कि रस्सी कमजोर तो नहीं है । फिर उस १५-१६ मीटर की रस्सी को साबुन, देशी घी, और ग्रीज से चिकना कर दिया जाता है, ताकि फांसी के वक्त गांठ अटके नहीं । फिर यह फंदा गले में डाला जाता है । मेरी कोशिश यही रहती है कि कम से कम तकलीफ में 'काम' हो जाए । मेरे फंदे से तीस सेकंड में आदमी दम तोड़ देता है और अगर मुझे मरनेवाले की लंबाई और उसका सही-सही वजन पहले से मालूम हो जाए, तो क्या मजाल कि उसको तकलीफ हो । बस, फांसी देने की भी एक तरकीब होती है ।"

अहमद आगे बताता है, "जब कैदी हमारे सामने लाया जाता है, तो हम सबसे पहले उसके पैर बांधते हैं और सही माने-में तो उसके पैर छूकर गलती की माफी मांगते हैं क्योंकि, हम दोनों ही इनसान हैं । इसके बाद उसे काले रंग का कनटोप पहना देते हैं । फिर जब हमें हुक्म

'उसकी दाढ़ी भी वैसी ही थी, जैसी मेरे वालिद की । उम्र भी तकरीबन वही थी । जब मैं उसे कनटोपा पहनाने लगा, तो वह बोला, बेटा, आहिस्ता से लगाना । मैं तेरे वालिद की तरह हूं ।'

यह सुनते ही मैं कांप उठा । कदम लड़खडा गये ।

मिलता है, तब हम झटका देते हैं और उसका काम-तमाम हो जाता है ।"

"फिर मरने के बाद क्या होता है ?"

अहमद बोला, 'आधे घंटे बाद डॉक्टर साहब उसे मुरदा करार देते हैं, तब हम उसके शरीर को खोलकर अपना रास्ता नापते हैं ।'

"मरने के बाद क्या जीभ और आंख बाहर निकल आती है ?" मैं पूछता हूं ।



'फांसी देने की भी एक टेक्नीक होती है,

—अहमद जल्लाद

"नहीं साहब ! यह सब बकवास है । हां, मरनेवाले के गले में कुछ सूजन जरूर आ जाती है ।"

उफ ! वो पांच मिनट

जेल की घटनाओं के बारे में अहमद बताता है, 'कि एक बार झांसी में एक कैदी को फांसी लगनी थी । रात को मैंने सारी तैयारी करके रस्सी को जेलर के कमरे में रख दिया था । ठीक चार बजे सुबह 'काम' होना था । साढ़े तीन बजे तक मजिस्ट्रेट, जेलर आदि आ गये थे । कैदी को भी लाकर फांसी के तख्त पर खड़ा कर दिया गया था । जैसे ही मैं उसे कनटोप पहनाने लगा कि जोरों से पानी बरसने लगा । रस्सी गीली हो गयी । घड़ी की सुई के साथ फांसी दी गयी लेकिन रस्सी गीली होने के कारण गांठ सटके से नहीं सरकी, इससे वह आदमी पांच मिनट तक तड़पता रहा । उफ ! उसकी तकलीफ देखकर मैं क्या, सभी वहां से दूर हट गये थे ।"

अहमद आगे बताता है, "एक घटना पर अब तो मुझे हंसी आती है, लेकिन उस वक्त मैं कांप उठा था । हुआ यह कि एक बार एक कैदी जब फांसी के तख्त पर लाया गया, तो अपनी आखिरी ख्वाहिश में उसने जेलर को बताया, 'जो जल्लाद मुझे फांसी दे रहा है, उसे मैं तोहफे के तौर पर सेब देना चाहता हूं ।' जेलर महोदय के आदेश से मैंने सेब ले लिये और खा भी लिये, लेकिन उस वक्त मैं कांप रहा था ।"

आगरा जेल की एक घटना ने तो अहमद को हिलाकर रख दिया था । जिस व्यक्ति को फांसी देनी थी, उसकी शक्ल अहमद के वालिद से मिलती थी । इस घटना के संबंध में अहमद बताता है, "उसकी दाढ़ी भी वैसी ही थी, जैसी मेरे वालिद की । उम्र भी तकरीबन वही थी ।

मेरा प्रश्न सुनकर उसका चेहरा मुरझा जाता है । आंखों में नमी तैरने लगती है । कुछ रुककर बताता है, "साहब ! सरकार की ओर से ५०० रुपये जेल से मिलते हैं और फांसी के वक्त एक आदमी के २०० रुपये अलग से मिलते हैं । सोचने की बात है साहब, आज के जमाने की महंगाई को देखते हुए ये ५०० रुपये नहीं के बराबर है ।"

उसे देखकर मैं भयभीत हो उठा । जब मैं उसे कनटोप पहनाने लगा, तो वह बोला, 'बेटा, आहिस्ता से लगाना । मैं तेरे वालिद की तरह हूं ।' यह सुनते ही मैं कांप उठा । कदम लड़खड़ा गये । अगर जेल के सिपाही पकड़ न लेते, तो मैं वहीं गिर पड़ता । किसी तरह से उसको फांसी पर चढ़ाया और फिर बिना उतारे ही मैं भाग खड़ा हुआ । आज भी यह घटना याद आने पर मैं एकबारगी हिल जाता हूं ।''

''फांसी के बदले में सरकार क्या देती है ?''

मेरा प्रश्न सुनकर उसका चेहरा मुरझा जाता है । आंखों में नमी तैरने लगती है । कुछ रुककर बताता है ''साहब ! सरकार की ओर से ५०० रुपये जेल से मिलते हैं और फांसी के वक्त एक आदमी के २०० रुपये अलग से मिलते हैं । सोचने की बात है साहब, आज के जमाने की महंगाई को देखते हुए ये ५०० रुपये नहीं के बराबर है ।''

''मेरे बीवी और चार बच्चे हैं । सभी बच्चे शिक्षा पा रहे हैं । मेरे बच्चों को बकरी और मुरगी पालने का शौक है । मैंने उनको चूहे मारना नहीं सिखाया । मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे इस काम को करें । मुझे अपने नाम के आगे जल्लाद शब्द सुनकर बड़ा दुःख होता है ।''

अहमद है तो जल्लाद ही, लेकिन उससे मिलकर जल्लाद से जुड़ी तमाम शंकाएं खुद-ब-खुद खत्म हो जाती हैं । भले ही अहमद का पेशा जल्लादी का हो, लेकिन है वह एक नेक दिल इंसान ही, इसमें शक नहीं ।

—१०१, मवैया, लखनऊ-४

बस आज का बोझ किसी प्रकार उठा लें

राबर्ट लुई स्टीवेंशन एक कुशल अंगरेजी निबंधकार हुए । वे आजन्म बीमार रहे थे । मौत की काली छाया सदा उनके सिर पर झूलती रही, पर उन्होंने कभी भी उसकी चिंता नहीं की थी । वे अपने रोगी जीवन से ही आनंद प्राप्त करते रहे ।

एक दिन एक शुभचिंतक ने उनसे पूछा, ''आप क्या बीमारी से नहीं डरते ? मौत की चिंता आपको नहीं सताती ?''

उन्होंने प्रसन्नता बिखेरते हुए पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया, ''अजी साहब, बीमारी अपने ढंग से चलती है । उसे चलने दीजिए । मैं जिंदगी के बचे हुए क्षणों का आनंद, चिंता के बजाय उसका सदुपयोग करने में विश्वास करता हूं ।''

''फिर आपके जीवन का क्या निचोड़ है ?''

''मैं कष्ट और बीमारी में भी आनंदित रहा हूं । चाहे किसी का बोझ कितना भारी क्यों न हो, हरेक व्यक्ति अपना बोझ सायंकाल तक तो ढो ही सकता है । एक दिन हर व्यक्ति अपना कठिन कार्य पूर्ण कर सकता है । प्रत्येक व्यक्ति मधुरता से, सहिष्णुता से, प्रेम से, पवित्रता से शाम तक का जीवन अच्छी तरह निश्चिंत व्यतीत कर सकता है । बस एक-एक दिन यों ही निश्चिंत बीतने से पूरा जीवन आनंदित हो जाता है । निश्चिंत रहने की भी एक आदत है । यह आदत डाल लेने से दीर्घजीवन मिलता है ।''

—कुलदीप कपूर



धूप का टुकड़ा

जाड़े की उस कुहासे भरी सुबह में
जब तुमने मेरे लिए गुनगुनी धूप का
एक टुकड़ा भेजा था
मैं सोच नहीं पा रही थी कि
मेरी रक्षा का इतना ध्यान तुम रखोगे
मैं उस टुकड़े को सहेजना चाहती थी

जिसका प्यारा रंग चटक रक्ताभ लालिमा से युक्त
कुछ-कुछ तुम्हारे तेवर-जैसा था
मैं तमाम हादसों के बीच में
उस धूप के टुकड़े को ओढ़े
बिलकुल सुरक्षित-सी महसूस रही थी
न जाने कितनी बार वह टुकड़ा
मेरी बाहों से जाने के लिए मचला था
न जाने कितनी बार मैंने उसे पुचकारा था
नदी के सुनहले तट पर
मृदंग और झाल की धमक के बीच
वह गुनगुनी धूप शब्दयुक्त होकर
मेरे कानों के निकट कुछ गुनगुना उठी थी
और मैंने उसमें तुम्हारे गीत को सुन लिया ।

—मीनू रानी दुबे
३९, त्रिपोलिया, इलाहाबाद

सरदी की दुकान

बांट उधार-सुधार सब बरसाती सामान
खोली मौसम-सेठ ने सरदी की दूकान

सन्नाटा है हर तरफ, फैला सरदी रोग
या फिर हैं हड़ताल पर बस्ती-भर के लोग

थरथर कांपें द्रुम-लता, खगकुल कलरव मंद
ताल-तड़ागों, कुओं के घाट-बाट निष्पंद

खड़ी अटा पर कामिनी, हुआ दिवस का अंत
मुआ शीत दुःख दे रहा, लौट न आये कंत

समय-अहेरी कर रहा शीत-अस्त्र के वार
प्राण बचा भागें कहां, जगत जीव लाचार

नवल-दलों पर ओस कण फबे कि मुक्ता-थाल
भेंट दे रहे तरु हुलस, आया शीत-भुआल

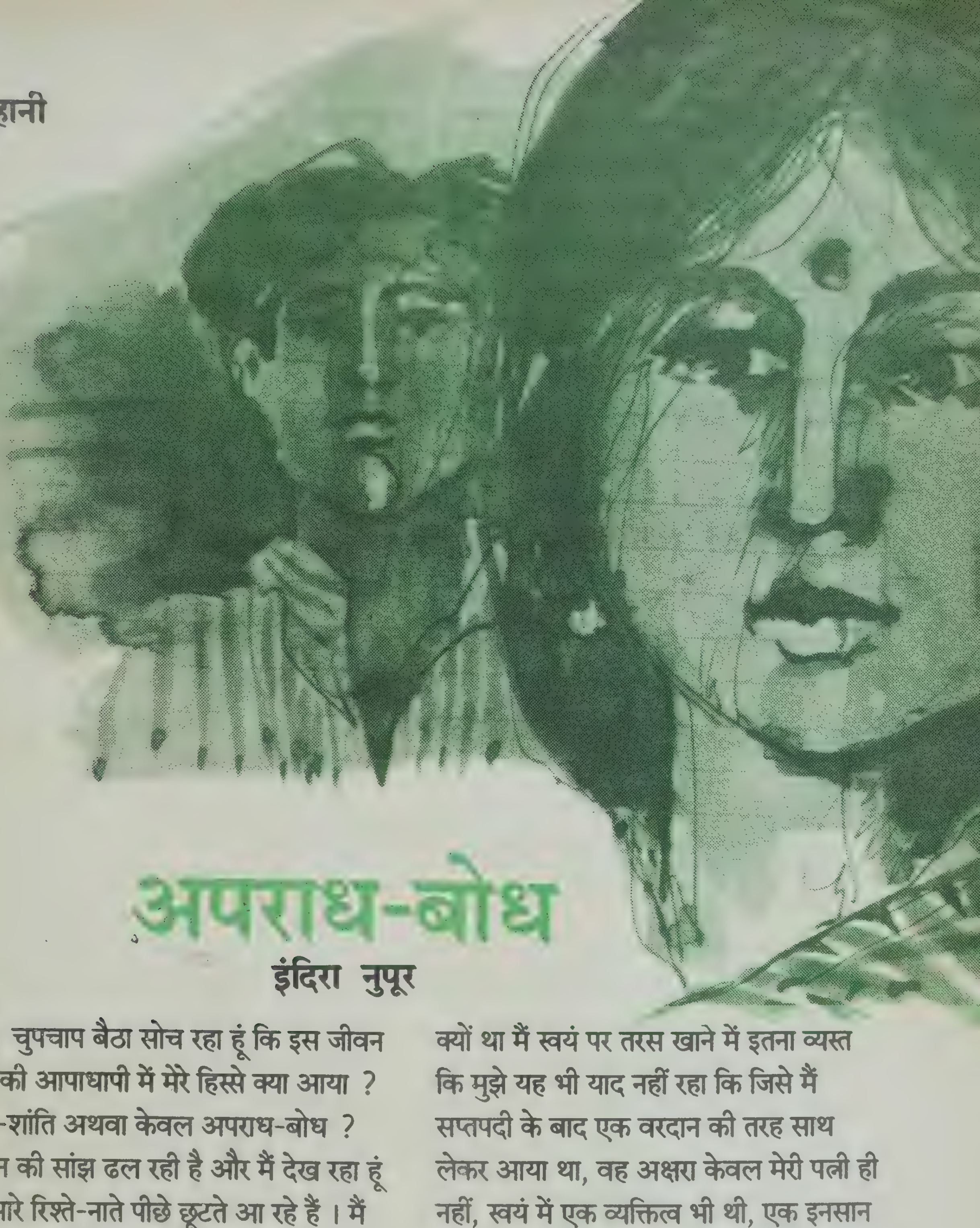
किया निगोड़े शीत ने अंग-अंग नपसेल
बता झोंपड़ी को रही सकुच सेम की बेल

अन्य कौन विचलित न जो खा जाड़े की मार
जुटा खेत-खलिहान में कृषक न माना हार

हारे छप्पर-झोंपड़े, बढ़ा शीत-सैलाव
डगमग-डगमग हो रही फुटपातों की नाव

हवा रुद्र, कोहरा झरे, ढके शैल-चट्टान
सूरज-स्वागत को खड़े पहन श्वेत परिधान

—मनोज तोमर
—घासीराम की चाल, जसवाड़ी रोड, खंडवा (म.प्र.)



अपराध-बोध

इंदिरा नुपूर

मैं चुपचाप बैठा सोच रहा हूं कि इस जीवन की आपाधापी में मेरे हिस्से क्या आया ? सुख-शांति अथवा केवल अपराध-बोध ? जीवन की सांझ ढल रही है और मैं देख रहा हूं कि सारे रिश्ते-नाते पीछे छूटते आ रहे हैं । मैं कितना भी कातर हो जाऊं, कितना भी पछताऊं, कितना भी प्रयास करूं, किंतु उन क्षणों को वापस नहीं ला सकता जो मुझे सहेजने के लिये मिले थे और जो समय से पहले ही मेरे हाथों से फिसल गये थे । क्यों था मैं इतना अभिमानी, क्यों था मैं केवल अपने 'स्वत्व' में लीन और क्यों था मैं स्वयं पर तरस खाने में इतना व्यस्त कि मुझे यह भी याद नहीं रहा कि जिसे मैं सप्तपदी के बाद एक वरदान की तरह साथ लेकर आया था, वह अक्षरा केवल मेरी पत्नी ही नहीं, स्वयं में एक व्यक्तित्व भी थी, एक इनसान भी थी ? आज तो इस धुप अंधेरे में मेरी निगाहें बेचैन होकर ढूंढ़ रही हैं उन सबको— रचना को, अक्षरा को और कृतित्व को ।

वह अभागी रात आज भी मुझे याद है जब मैं रचना की गोरी-गोरी हथेलियां थामे बैठा था और उसने अपनी सूनी, उदास आंखों से मेरी

ओर देखकर कहा था ।

'देखो, अपने कृतित्व को मैं तुम्हें सौंप रही हूं । उसे मेरी कमी खलने मत देना... बहुत प्यार देना उसे...' और यह कहते-कहते उसकी आंखें छलक आयी थीं । मैंने उसके आंसू पोंछ्कर रुंधे गले से कहा था :

'हौसला रखो रचना, तुम ठीक हो जाओगी और अपने बच्चे को स्वयं ही संभालोगी ।'

तब रचना धीरे-से मुसकरायी थी... और उसी रात नन्हे कृतित्व को मेरी बाहों में छोड़कर वह सदा के लिए चली गयी— खो गयी कहीं बादलों के गुबार में जाकर ! मेरे जीवन का तो प्रकाश ही बुझ गया था । सूनापन मुझे काटने को दौड़ता । आफिस जाता तो घर में मन लगा रहता कि मेरा बच्चा जाने कैसा होगा, और घर में रहता तो रचना की याद बेचैन करती । मैं आफिस और बेटे के बीच बंटकर रह गया था ।

और तब एक दिन मां ने कहा कि मैं अक्षरा से ब्याह कर लूं । बच्चा बिन मां के कैसे पलेगा, और मां की बूढ़ी बाहें कब तक यह भार उठा सकेंगी... मैंने नजरें झुकाकर हामी भर दी । मेरे सामने मेरे बच्चे का भविष्य था । और तब अक्षरा ने मेरे जीवन में प्रवेश किया । उसकी बड़ी-बड़ी उदास आंखों ने जैसे मेरे हृदय को झकझोर दिया । बिना बाप की बेटी को मुझसे अधिक अच्छा वर कैसे मिलता ? शायद यही कटु सत्य उसे अंदर ही अंदर खाये जा रहा था ।

अक्षरा का स्वभाव बहुत गंभीर था और संभवतः इसीलिए कृतित्व ने उसे स्वीकार नहीं किया था । बार-बार वह उसके गंभीर चेहरे की ओर देखता और कहता, 'नहीं पापा ये मेरी मम्मी नहीं है । मेरी मम्मी तो वो है तसवीर वाली...'

जब कभी अक्षरा नाश्ता लगाती, कृतित्व हर उस चीज की फरमाइश करता जो मेज पर नहीं होती । यदि आमलेट होता, तो वह आलू के पराठे मांगता, आलू के पराठे देखकर उसे मूली के पराठे याद आ जाते । प्रायः अक्षरा का गोरा चेहरा तमतमा जाता । तब तक मैं कृतित्व को बहला-फुसलाकर दूध का गिलास उसके मुंह से लगा देता । कभी-कभी तो वह एक घूंट पीकर गिलास हटा देता और कहता, 'इसमें बोर्नविटा डालो ।'

बोर्नविटा डाला जाता तो उसे चाकलेट पाउडर की याद आ जाती । मेरी और कृतित्व की इस मान मनुहार के बीच अक्षरा प्रायः वहां से हट जाती ।

मैं उसके पास जाकर कहता, 'अक्षरा, बच्चा मां के प्यार के बिना ही इतना जिद्दी हो गया है । धीरे-धीरे समझ जाएगा...' किंतु अक्षरा की आग्नेय दृष्टि मुझे अंदर तक बेधती चली जाती । तीन प्राणियों के घर में एक त्रिकोण-सा बन गया था । कृतित्व, जो मां के प्यार से वंचित था, अपने होने का एहसास कराने के लिए भरसक प्रयत्नशील रहता, वह रूठता, मचलता, जिद करता और रो-रोकर घर सिर पर उठा लेता । अक्षरा, जिसे मैं पत्नी बनाकर लाया था और जिसे अब तक कृतित्व की मां का स्थान पा लेना चाहिए था, केवल एक आया मात्र बनकर रह गयी थी । कभी-कभी वह प्रयास करती कि जिद्दी कृतित्व को समझा-बुझाकर, बहला-फुसलाकर या डांट-डपट कर सीधे रास्ते पर ले आये, किंतु उसका बेहद गंभीर चेहरा

देखकर मेरे प्राण नहों में समा जाते । मैं किसी न किसी बहाने कृतित्व को वहां से उठाकर ले जाता और कुछ समय के लिए यह भूल जाता था कि उस घर में मेरे और बच्चे के अतिरिक्त एक और प्राणी भी है ।

शायद यह मेरे मन की कमजोरी ही थी कि मैं कभी भी बच्चे को पूरी तरह अक्षरा को सौंप नहीं सका था । कहीं कुछ था, जो मेरे मन को कचोटता था— क्या अक्षरा सचमुच उसे अपने बच्चे की तरह प्यार कर सकेगी ? क्या वह उसके हृदय में वह स्थान पा सकेगी जो रचना का था ? मुझे लगता, शायद उसे यह जिम्मेदारी इतनी सहज न लगे और मैं कृतित्व का हर संभव कार्य स्वयं ही करने का प्रयास करता ।

एक दिन दफ़्तर से लौटा, तो देखा बच्चा जमीन में लोट रहा है और उसके रोने-चिल्लाने से बेखबर अक्षरा कोई किताब पढ़ने में मग्न है । मुझे देखते ही बच्चे ने बिसूर कर कहा, 'पापा' !

'क्या हुआ बेटे ?' कहते हुए मैंने उसे गोद में उठा लिया । अक्षरा के पास जाकर मैंने पूछा, 'क्या बात है ? बच्चा इतना रो रहा था, तुम उसे चुप भी नहीं करा सकती थी ?'

अक्षरा ने आग्नेय दृष्टि से मेरी ओर देखकर कहा, 'नहीं, बच्चे की हर जिद पूरी करना ठीक नहीं होता, इसलिए...'

'क्यों ? यह तुम्हारा अपना बच्चा होता तब भी क्या तुम...' मैं कुछ और कहता, कि अक्षरा ने चीखकर कहा, 'हां, मैं तब भी यही करती । लेकिन तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुमने मुझसे ऐसा प्रश्न किया ? यदि मेरा अपना बच्चा होता तब भी क्या तुम मुझसे इस प्रकार सफाई

'हस्ताक्षर ! तुमने एक दिन पूछा था कि मेरा अपना बेटा होता तो मैं क्या करती ? उसी प्रश्न का उत्तर मैं आज दे रही हूं । यदि कृतित्व मेरा अपना बेटा होता तो सचमुच मैं उसके लिए इतना सब कुछ नहीं कर पाती । मुझे विश्वास है कि अब तुम मेरे उत्तर से अवश्य संतुष्ट होगे ।'...

मांगते ? यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं था तो तुमने मुझसे शादी क्यों की ? अपने बच्चे के लिए एक नौकरानी रख लेते ।'

'अक्षरा, मत भूलो कि मैं एक इनसान हूं । मुझमें भी कमजोरियां हो सकती हैं' मैंने चिढ़कर कहा ।

'और मैं ? मैं इनसान नहीं हूं ?' उसने गुस्से से पूछा ।

'तुम ? एक बिना मां के बच्चे को प्यार नहीं कर सकतीं, और तुम एक इनसान बनने का दावा रखती हो, देखो मैं ऊब गया हूं रोज-रोज की इस किचकिच से । आखिर इस तरह एक छत के नीचे रहने से क्या फायदा ?'... और मैं कृतित्व को लेकर बाहर चला गया । लौटा तो देखा अक्षरा की आंखें सूजी हुई थीं । मैंने कहा, 'देखो अक्षरा, मुझे यह नाटक बिल्कुल पसंद नहीं है ।' और आगे कुछ सुने बिना ही वह अपने कमरे में चली गयी । और उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया । मैं कृतित्व को बाहों में उठाये बंद दरवाजे की ओर देखता रह गया ।

'हस्ताक्षर !' एक दिन अक्षरा ने मेरे पास

आकर कहा ।

'अक्षरा ? आओ, आओ न, बैठो ।' मैं उसे अपने निकट पाकर अप्रतिभ हो उठा था ।

'हस्ताक्षर, मुझे दिल्ली में नौकरी मिल गयी है और मैं कल ही यह घर छोड़कर चली जाऊंगी ।'

'क्या ?' मैं स्तब्ध हो गया था । 'नौकरी ? दिल्ली में ? तुम होश में तो हो न अक्षरा ?'

'हां, मैं पूरे होश में हूं ।' उसने निर्भिप्त भाव से कहा ।

'और मेरा क्या होगा ? बच्चे का क्या होगा ? नहीं अक्षरा तुम हमें छोड़कर कैसे जा सकती हो ? तुम कोई मजाक कर रही हो न ?' मैंने तेज स्वर में कहा ।

'नहीं यह मजाक नहीं है । मैं गंभीरता से ही अपना निश्चय तुम्हें बता रही हूं । बच्चे का ध्यान तो तुम्हीं रखते आये हो, उसे तो तुमने मुझे कभी सौंपा ही नहीं था । खैर, अब बहस करने से कोई फायदा नहीं है । अपनी और बच्चे की देखभाल तुम कर सकते हो । तुम्हें मेरी जरूरत न कभी थी, और न आज है ।' अक्षरा वास्तव में गंभीर थी ।

'तुम्हारी तबीयत खराब है अक्षरा ? चलो थोड़ा आराम कर लो ।' मैंने कहा ।

'जहे किस्मत । तुम्हें मेरी तबीयत का भी ध्यान तो आया । लेकिन हस्ताक्षर, मैं जो कह रही हूं, वह ध्रुव सत्य है ।' अक्षरा ने उत्तर दिया ।

'नहीं अक्षरा ...प्लीज...'

'देखो हस्ताक्षर, अब इन बातों से कोई लाभ नहीं है । तुम जानते हो कि मैं कोई भी निर्णय लेने से पहले खूब अच्छी तरह सोच-विचार कर लेती हूं । तुम्हें यह भी मालूम है हस्ताक्षर कि यह दोहरी जिंदगी मैं अब और नहीं जी सकती । न तो मैं तुम्हारी पत्नी की ही भूमिका निभा जा रही हूं, और न कृतित्व की मां का रोल ही मैं संभाल पा रही हूं । मेरा जीवन निरर्थक बनकर रह गया है । और निरर्थकता का यह बोझ अब मुझसे ढोया नहीं जा रहा है । खैर, अब तो एकमात्र सत्य यही है कि मैं कल सुबह दिल्ली जा रही हूं ।'

मैंने पाया, अक्षरा का स्वर एकदम निर्लिप्त था ।

अचानक मेरी आंखों के आगे अंधेरा-सा छा गया । अक्षरा, जिसे मैं केवल एक निरीह, बेबस स्त्री समझता था, ऐसा अहम निर्णय ले लेगी, मुझे और कृतित्व को इस प्रकार छोड़कर चली जाएगी यह तो मैं कभी सोच भी नहीं सकता था । मैंने देखा, वह अपना सामान सहेजने लगी थी । अब वह चली ही जाएगी, यह सोचकर मेरा मन भर आया । मैंने एक निःश्वास लेकर कहा,

'ठीक है अक्षरा, तुम जाना ही चाहती हो तो अवश्य जाओ । मैं होता ही कौन हूं तुम्हें रोकनेवाला ? और कौन लगता है कृतित्व तुम्हारा ? फिर भी, यदि कभी भी तुम्हें अहसास हो कि तुमने निर्णय लेने में जल्दबाजी की है, तो...'

'रहने दो हस्ताक्षर ।' बात काटकर अक्षरा ने कहा, 'इन नाकामयाब रिश्तों पर अब और मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश न करो । अब तो बहुत देर हो चुकी है । यह लो, सेफ की चाबियां संभालो और यह तुम्हारी अकाउंट बुक है ।' कहते हुए उसने अपना सूटकेस बंद कर

दिया ।

मैं यंत्रचालित-सा हाथ में चाबियां और अकाउंट बुक लेकर मेज की ओर बढ़ गया । अक्षरा ने सूटकेस एक किनारे रख दिया था, और अब बाहर जाने को तैयार थी ।

'मुझसे बहुत नाराज हो अक्षरा ?' मैंने बहुत प्रयास करके पूछा । मैं सचमुच उसे खो दूंगा, ऐसा तो मैंने कभी भी नहीं चाहा था । मेरी एकमात्र इच्छा यही थी कि घर के परिवार के मनके एक साथ गुंथे रहें । अक्षरा ने मेरी ओर देखा । उसकी आंखों में अनेक प्रश्न थे...

'पापा ।' दूसरे कमरे से कृतित्व की आवाज आयी । अक्षरा के अधरों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थिरक उठी । उसने कहा, 'जाओ । उसे शायद पानी चाहिए ।' मैंने निरीह भाव से उसकी ओर देखा और फिर धीरे-धीरे दूसरे कमरे में चला गया । तब तक अक्षरा बाहर वाले कमरे में जाकर सोफे पर लेट गयी थी ।

जब तक अक्षरा घर में थी, हम एक त्रिकोण की भांति जी रहे थे, किंतु धीरे-धीरे कृतित्व मेरे लिए केंद्र बिंदु बन गया और मेरे और अक्षरा के बीच एक खाई-सी खुदती गयी और हम नदी के किनारों की तरह समानांतर रेखाएं बनकर रह गये । मुझे प्रायः लगने लगा था कि वह मेरी पत्नी नहीं, कोई और है जिसके पास जाते ही मुझे एक दूरी-सी अनुभव होने लगती थी ।

किंतु अक्षरा चली गयी और उसके बाद अचानक ही जैसे सब कुछ बदल गया ।
कृतित्व बिलकुल गुमसुम-सा हो गया था । नाश्ते की मेज पर बात-बात में अक्षरा को झिंकानेवाला कृतित्व अब अचानक ही गंभीर हो गया था ।



'रहने दो पापा ! अंडे नहीं हैं तो मैं जैम से ही टोस्ट खा लेता हूं... अच्छा जैम भी नहीं है तो चलो सब्जी से ही पराठा खा लूंगा । पापा आपको याद है न, मम्मी दही-बड़े कितने अच्छे बनाती थी ? खैर पापा । आप मुझे दही में थोड़ी चीनी ही दे दीजिए' और कृतित्व की बातें सुनकर, उसका बात-बात में अक्षरा को याद करना देखकर मेरा कलेजा मुंह को आने लगता था । यह कैसी विडंबना है, कैसी कशमकश है कि न तो मैं रचना को दिया गया अपना वचन निभा पा रहा था, और न अक्षरा को पत्नी का अधिकार ही दे पाया था । कृतित्व तो अंततः बिना मां का ही बच्चा रह गया था । मेरी समझ में नहीं आता कि मुझसे 'भूल' कहां हो गयी थी ? मैं एक बार फिर बच्चे और ऑफिस के बीच बंटकर रह गया था । शायद वही उस अंत का प्रारंभ था । दिन, महीनों और वर्षों के पंख लगाकर उड़ता गया और एक दिन मेरा सपना साकार हुआ— मेरा कृतित्व कंप्यूटर

इंजीनियरिंग करके एक बड़ी फर्म में नाम कमा रहा था। मैं बहुत प्रसन्न था और उसके सुनहरे भविष्य के सपने देख रहा था। एक दिन उसने कहा, 'पापा। मुझे आपको कुछ बताना है।'

उसकी चहकती हुई आवाज से मेरी आंखों में भी चमक आ गयी। मैंने कहा, 'बोलो बेटे।'

'पापा। दिल्ली में एक संस्था है 'जीवन-धारा'। मैं उसका एक छोटा-सा सदस्य हूं। यह संस्था बच्चों, युवकों और महिलाओं के लिए कार्य करती है। इसी संस्था की ओर से मुझे अमरीका जाने का अवसर मिला है—

'क्या ?' कृतित्व की बात सुनकर मेरे पैरों तले से जमीन खिसक गयी।

'हां पापा। इसकी संस्थापिका का पत्र आया है। वे मुझे अपनी अमरीका स्थित ब्रांच के सचिव के पद पर न्यूयार्क भेजना चाहती हैं और...

मेरा तो दिल ही बैठ गया कृतित्व की बात सुनकर। मेरा नन्हा-सा बेटा आज इतना बड़ा हो गया है कि जीवन के सभी निर्णय स्वयं ले रहा है और मुझे असहाय, अकेला छोड़कर अमरीका जाने के लिए तैयार बैठा है।

'पापा। आप खुश तो है न ? मैं वहां रहकर डॉक्टरेट भी कर सकूंगा पापा।'

'हां बेटे, मैं बहुत खुश हूं। तुम्हारी राह में रोड़ा बनने का मेरा कोई इरादा नहीं है बेटा ! तुम खुशी से जाओ।' मैंने भरसक मुसकराने का प्रयास करते हुए कहा।

'ओह पापा। यू आँर ग्रेट। मैं आज ही अपनी स्वीकृति भेज देता हूं और बस पंद्रह दिन में...' कहते हुए कृतित्व चला गया।

...दिल्ली के इंटरनेशनल हवाई अड्डे का दृश्य मेरी आंखों में घूम रहा है— मेरा कृतित्व कितना होनहार, कितना स्मार्ट लग रहा है। और मेरा हृदय गर्व से फूल उठा है। तभी कृतित्व ने मेरा हाथ थामकर कहा, 'पापा ! वो आ गयीं। मैडम आ गयीं।' और आगे बढ़कर उसने एक मेधावी महिला के चरण स्पर्श किये। मैं एकटक उनकी ओर देखता रह गया।

'यशस्वी हो बेटे।' और उन्होंने कृतित्व के बालों पर हाथ फेरा। यह आवाज... मैं चौंक गया और ऐसा निस्सहाय खड़ा रह गया जैसे मुझे सर्पदंश लगा हो।

कृतित्व ने मेरे चरण छुए और मैं जैसे टूट पड़ने को हो आया। आंसू छिपाने के लिए मैंने उसे गले से लगा लिया। धीरे से स्वयं को अलग करके वह 'सिक्योरिटी चेक' के लिए चला गया और मैं हताश, बेसहारा, भरभराई आंखों से वहीं खड़ा रह गया।

'हस्ताक्षर।' अपने बहुत पास किसी की आवाज सुनकर मैं वर्तमान में लौट आया।

''हस्ताक्षर ! तुमने एक दिन पूछा था कि मेरा अपना बेटा होता तो मैं क्या करती ? उसी प्रश्न का उत्तर मैं आज दे रही हूं। यदि कृतित्व मेरा अपना बेटा होता तो सचमुच मैं उसके लिए इतना सब कुछ नहीं कर पाती। मुझे विश्वास है कि अब तुम मेरे उत्तर से अवश्य संतुष्ट होगे।''...

और फिर अक्षरा चली गयी। मैं अपराध बोध की कसक से इतना पीड़ित था कि उसे रोक भी न सका, केवल उसे जाते देखता रह गया।

**—१४४, एस.एफ.एस. अपार्टमेंट्स
हौजखास, नयी दिल्ली-१६**

लाल बत्तियां जलतीं



खड़े रहे हम
रेलगाड़ियां छूट गयीं

खाली-खाली
प्लेटफार्म : मन अपना
धुआं-धुआं आंखें
सपनों का कंपना

सरगम का संसार
सीटियां लूट गयीं

कदम-कदम पर
लाल बत्तियां जलतीं
बिना टिकट उम्मीदें
अक्सर छलतीं,

गाड़ी चलती रही
पटरियां टूट गयीं।

चारों तरफ

एक बोझिल-सी नमी चारों तरफ
स्वयं खुद की ही कमी चारों तरफ

शजर के मानिंद मैं खुद को दिखा
बर्फ-सी गहरी जमी चारों तरफ

ज़हर पीते या सलीबों पर टंगे
कत्लगाहों में हमी चारों तरफ

कर्बला यह समूची दुनियां हुई
हवाएं हैं मातमी चारों तरफ

कहां आदिम जानवर से आज तक
हैवानियत आकर थमी चारों तरफ

हाय रे माहौल, ढूंढ़े भी कहीं
नहीं मिलता आदमी चारों तरफ

राजेंद्र अनुरागी
— ९४/१३, तुलसी नगर, भोपाल

धोखा आकाश

सुगना रे,
धीरे से
बोल !

नीचे से
ताकती
बिलइया

छाती में
बाज अड़ा
भइया,

सुगना रे
पंख वहीं
तोल !

नरभक्षी
हो गयीं
हवाएं

धोखा आकाश
क्या
बताएं,



सुगना रे,
पिंजरा
मत खोल !

दूरों के
ढोल हैं
सुहाने

खेत-नदी
अमराई
गाने,

सुगना रे,
मस्त यहीं
डोल !

— **डॉ. हरीश निगम**
प्रेम बिहार कॉलोनी, प्रेमनगर,
सतना-४८५००१

अतीत की भूलों को न दोहराएं

● युवाचार्य महाप्रज्ञ

संयम को छोड़कर अहिंसा को नहीं समझा जा सकता, असंयम को छोड़कर हिंसा को नहीं समझा जा सकता । हिंसा और अहिंसा— ये निष्पत्तियां हैं, परिणाम हैं । इनकी पृष्ठभूमि में हैं मनुष्य का संयम और असंयम । एक भाषा में कहा जा सकता है— संयम का अर्थ है अहिंसा और असंयम का अर्थ है— हिंसा ।

आज हिंसा को रोकने के बहुत उपाय किये जा रहे हैं । दंड संहिता बढ़ गयी है, पुलिस की संख्या बढ़ गयी है । अपराध और सतर्कता विभाग बन गये हैं । अनेक नगरों में पुलिस का जाल-सा बिछा हुआ रहता है फिर भी अपराध उससे अधिक बढ़ते चले जा रहे हैं । आतंक बढ़ता जा रहा है, उपाय बेअसर हो रहे हैं । इसका कारण है— जिस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए, उस बात पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है । वह है असंयम ।

अहिंसा के लिए संयम अनिवार्य

आज मनुष्य में असंयम बढ़ रहा है । मैं एक युवक से बातचीत कर रहा था । उसने कहा 'ईगो' तो होना ही चाहिए । 'ईगो' नहीं होगा तो विकास कैसे होगा । महत्त्वाकांक्षा के बिना विकास कैसे हो सकता है ? इसलिए 'ईगो' का होना जरूरी है । मैंने कहा— 'ईगो' का होना जरूरी है तो साथ-साथ 'सुपर ईगो' का होना भी जरूरी है । यदि 'सुपर ईगो' नहीं होगा तो कोरा 'ईगो' खतरनाक बन जाएगा । 'ईगो' और 'सुपर ईगो' का संतुलन जरूरी है । अगर 'ईगो' को हम असंयम मानें तो 'सुपर ईगो' को संयम मान लें । 'ईगो' असंयम है तो 'सुपर ईगो' संयम है । अगर 'ईगो' है, 'सुपर ईगो' नहीं है तो हिंसा का होना अनिवार्य है ।

आज असंयम के कारण समस्याएं बढ़ रही हैं । इसी असंयम को ध्यान में रखकर महावीर ने कहा था— 'हिंसा ग्रंथि है । हिंसा मोह है । हिंसा मृत्यु है । हिंसा नरक है ।' हिंसा मृत्यु कैसे है ? इस तथ्य को हम विज्ञान के संदर्भ में समझें । आज पर्यावरण (इकोलॉजी) पर बहुत चर्चा हो रही है । वैज्ञानिकों का मानना है— यदि पर्यावरण का असंतुलन बढ़ता रहा तो एक दिन मनुष्य जाति समाप्त हो जाएगी । केवल मनुष्य ही नहीं, प्राणी-जगत भी समाप्त हो जाएगा ।

भगवती सूत्र की भविष्यवाणी

मैंने एक लेख पढ़ा । उसमें विश्व के भविष्य की स्थिति का चित्रण था । भगवती सूत्र में विश्व के बारे में ऐसी ही भविष्यवाणी की गयी है । जब पांचवां 'अर' (कालखंड) समाप्त होगा.

धर्म का एक सूत्र है— अतीत की भूलों को न दोहराना । प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले— 'मैंने अब तक जो भूलें की हैं, उन्हें पुनः नहीं करूंगा, जो प्रमादवश किया है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी ।' यह संकल्प समस्या के सघन तिमिर में समाधान का दीप बन सकता है ।

छठा 'अर' कालखंड शुरू होगा तब विश्व की क्या स्थिति होगी ? यह एक भविष्यवाणी है । फ्रांस, अमरीका आदि देशों के भविष्यवक्ताओं की अनेक भविष्यवाणियां छपी हैं किंतु भगवती सूत्र की यह भविष्यवाणी अभी तक प्रकाश में नहीं आयी है । वैज्ञानिक जगत द्वारा प्रलय के संदर्भ में की जा रही भविष्यवाणी को भगवती सूत्र के संदर्भ में पढ़ें तो-सहज ही यह प्रश्न उभरेगा— क्या यह लेख भगवती सूत्र को देखकर लिखा गया है ? या यह विकल्प उठेगा— इस लेख में जो लिखा गया है, वह भगवती सूत्र के प्रणेता ने हजारों वर्ष पहले कैसे लिख दिया ? भाव ही नहीं, कहीं-कहीं भाषा भी समान है ।

लेख की भाषा है— आज पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है । इसका एक कारण है— नाभिकीय विस्फोट । वैज्ञानिक बतलाते हैं— यदि नाभिकीय युद्ध हुआ, अणुयुद्ध हुआ तो विश्वस्थिति में भारी परिवर्तन आएगा । सारी धरती और आकाश धूल से भर जाएगा । कहीं तापमान कम हो जाएगा, कहीं तापमान बहुत अधिक बढ़ जाएगा । सारा जल और थल भूभाग विषाक्त बन जाएगा । जीव जगत बिल्कुल नष्ट हो जाएगा । कहीं भयंकर सरदी पड़ेगी कहीं भयंकर गरमी । सारे हिमखंड पिघल जाएंगे । समुद्र का जलस्तर दो-तीन मीटर ऊंचा चला जाएगा । समुद्र तट पर बसे नगर और बस्तियां डूब जाएंगी, उसके आस-पास का स्थल भूभाग जलमय बन जाएगा । एक प्रकार से हिम युग आएगा, केवल पानी ही पानी दिखायी देगा । यह नाभिकीय विस्फोट और अणु युद्ध से बननेवाली स्थिति है ।

दूसरा कारण है— वनों की अंधाधुंध कटाई । सारे संसार में वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है । उसके कारण कार्बन-डाई-आक्साइड की मात्रा पच्चीस प्रतिशत बढ़ गयी है । जितनी कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ती है उतना ही वातावरण भयंकर हो जाता है । तापमान बढ़ जाता है । इतनी गैस जलायी जा रही है जिसके कारण वातावरण कार्बन-डाई-आक्साइड से भर गया है । ओजोन की छतरी, जो एक सुरक्षा कवच है, टूटती चली जा रही है । कुछ देशों के इन करतबों का परिणाम सारे विश्व पर पड़ रहा है ।

प्रलय की स्थिति

यह सारी स्थिति एक प्रलय की स्थिति है ।

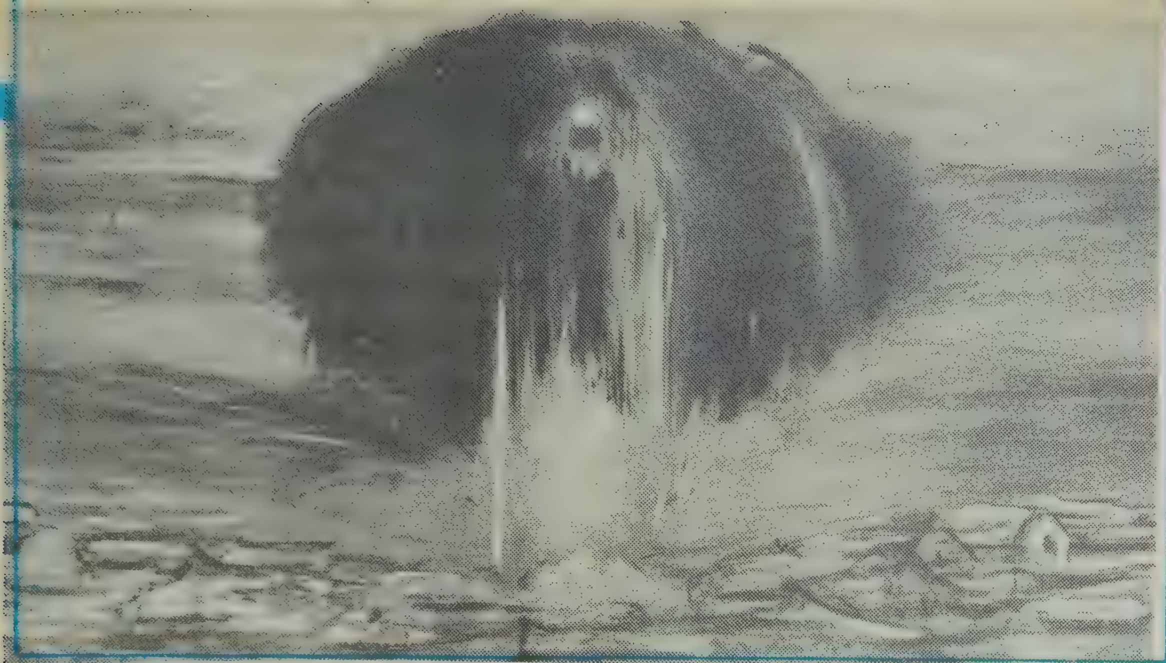
क्या इस संदर्भ में हम यह न कहें— हिंसा मृत्यु है ? क्या यह कहें— हिंसा मृत्यु नहीं है ? जिस स्थिति में एक आदमी का नहीं, दो-तीन-चार का नहीं किंतु पूरे जगत का विनाश छिपा है क्या उसको मृत्यु कहना अतिशयोक्ति है ? 'एस खलु मारे' हिंसा मृत्यु है— इस वाक्य को इस वैज्ञानिक संदर्भ के साथ पढ़ें तो लगेगा— यह कितना व्यापक सूत्र है । बिना संदर्भ यह सूत्र सामान्य लगता है किंतु विज्ञान के संदर्भ में यह सूत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन जाता है । यह पर्यावरण विज्ञान का सूत्र है । पर्यावरण का संतुलन बिगड़ा और संसार के लिए मौत का निमंत्रण आ गया । प्रश्न है— यह संतुलन क्यों बिगड़ रहा है ? इसका कारण है— मनुष्य में असंयम बढ़ गया है । वह इतना धन चाहता है, इतना सुख चाहता है, इतनी सुविधा चाहता है कि उसके लिए सब कुछ करने को तैयार है । वनों की कटाई क्यों हो रही है ? पैसे के लोभ के कारण वन कट रहे हैं । बड़े-बड़े ठेकेदारों और अधिकारियों की मिलीभगत से निषिद्ध वन खुलेआम काटे जा रहे हैं । इसका परिणाम है आक्सीजन की कमी और कार्बन की अधिकता ।

असंयम के कारण ही खनिज का अतिरिक्त दोहन हो रहा है । इस वैज्ञानिक युग में जीनेवाले वैज्ञानिक और भौतिक मनुष्य क्या भविष्य की कल्पना नहीं करते । क्या खनिज का अतिरिक्त दोहन कर वे भावी पीढ़ियों को दरिद्र नहीं बना रहे हैं । जो खनिज संपदा, पृथ्वी की संपदा हजारों वर्ष तक काम आ सके, यदि वह सौ वर्षों में समाप्त हो जाए तो क्या स्थिति होगी । आनेवाली पीढ़ी रोएगी । वह कहेगी— हमारे पूर्वजों ने हमारे साथ क्या किया, हमें बिल्कुल दरिद्र और निकम्मा बना दिया ।

पदार्थ की सीमा : संयम का सूत्र

पर्यावरण विज्ञान का एक सूत्र है— लिमिटेशन । पदार्थ की सीमा है । कोई भी पदार्थ असीम नहीं है । क्या पदार्थ की सीमा का यह सूत्र संयम का सूत्र नहीं है ? पर्यावरण विज्ञान का दूसरा महत्त्वपूर्ण सूत्र है— 'पदार्थ सीमित है इसलिए उपभोग कम करो ।' यह सूत्र धर्म का नहीं, पर्यावरण विज्ञान का है किंतु सच्चाई दोनों में एक है । धर्म का आदमी कहेगा कम खर्च करो, संयम करो । पर्यावरण विज्ञानी की भाषा है— पदार्थ कम है, उपभोक्ता अधिक है, इसलिए भोग की सीमा करो ।

हम भगवती का प्रकरण पढ़ें । जैन काल गणना के अनुसार अभी पांचवां आरा चल रहा है । जब पांचवां आरा (पांचवां काल खंड) पूरा होनेवाला होगा, छठा आरा (छठा काल खंड) प्रारंभ होगा तब इस विश्व में विचित्र स्थितियां बनेंगी । इस समय की स्थिति का वर्णन लोमहर्षक है । सबसे पहले समवर्तक वायु चलेगा । वह इतना प्रलयंकारी होगा कि पहाड़ भी प्रकंपित हो जाएंगे । इस युग में भी कभी-कभी चक्रवात आते हैं, उसमें बैलगाड़ियां, कारें उड़ जाती हैं, वृक्षों से अटक जाती हैं । वह समर्वतक वायु इतना भयंकर होगा कि पहाड़ और गांव नष्ट हो जाएंगे, उनका अस्तित्व ही विलुप्त हो जाएगा । तीव्र आंधियां चलेंगी, जिससे सारा आकाश और धरती धूल से भर जाएंगे । चंद्रमा इतना ठंडा हो जाएगा कि रात को कोई आदमी बाहर नहीं निकल पाएगा । सूर्य इतना गरम होगा, इतना तप्त होगा कि



आदमी झुलस जाएं। भयंकर ठंड और भयंकर गरमी। बारिश भी होगी किंतु पानी की नहीं, अग्नि की वर्षा होगी, अंगारे बरसेंगे। आज कहा जा रहा है— जब परमाणु विस्फोट होगा, नाभिकीय युद्ध होगा तब आकाश अग्नि की लपटों से भर जाएगा, जीव-जगत प्रायः समाप्त हो जाएंगे। जो बचेंगे, वे अंधे, बहरे और रुग्ण रहेंगे। भगवती सूत्र में कहा गया— 'जो मेघ बरसेंगे, वे रोग बढ़ानेवाले होंगे। उसका परिणाम होगा— मनुष्य, पशु, पक्षी, वनस्पति, कीड़े, मकोड़े नष्ट हो जाएंगे। पहाड़ों में केवल एक वैताट्य पर्वत बचेगा, जिसे आज हिमालय कहा जाता है। शेष सारे पहाड़, अरावली और विंध्याचल की घाटियां अपना अस्तित्व खो देंगी। जो कुछ लोग बचेंगे, वे हिमालय की गुफाओं में रह जाएंगे। वे न दिन में बाहर निकल सकेंगे, न रात में बाहर निकल सकेंगे। केवल संधिकाल में थोड़े समय के लिए बाहर आ पाएंगे।

परमाणु युद्ध की स्थिति का वर्णन

'नदियां प्रायः सूख जाएंगी। केवल गंगा का थोड़ा-सा तट अवशेष रहेगा। वे बचे लोग कुछ मछलियां खाकर जैसे-तैसे अपने जीवन का यापन करेंगे। जैसे चूहे बिलों में पड़े रहते हैं वैसे ही मनुष्य पहाड़ की गुफाओं में दुबके रहेंगे। यह भूमि अंगारों के समान तप्त हो जाएगी।'

भगवती सूत्र का यह वर्णन क्या परमाणु युद्ध का वर्णन नहीं है ?

मालिक ने नौकर से कहा— "यह लिफाफा ले जाओ, टिकट लगाकर पोस्ट ऑफिस में पोस्ट कर आओ।" नौकर ने वापस आकर मालिक से कहा— "यह लो टिकट।"

मालिक ने पूछा— "यह टिकट क्यों लाए ? क्या लिफाफा पोस्ट नहीं किया ?"

उसने कहा— "मैंने लिफाफा पोस्ट कर दिया।"

"यह टिकट कैसे लाए ?"

"जब मैं लिफाफा पोस्ट कर रहा था तब पोस्ट मास्टर की नजर दूसरी तरफ थी इसलिए मैंने टिकट नहीं लगाया। बिना टिकट लगा लिफाफा पोस्ट कर टिकट को बचा लिया।"

आत्म-प्रवंचना

आदमी दूसरों को धोखा देना चाहता है पर

वह यह नहीं सोचता है कि वह स्वयं धोखा खा रहा है । बिना टिकट लगा लिफाफा बैरंग माना जाता है । उसे छुड़ाने के लिए टिकट की कीमत से भी अधिक कीमत अदा करनी पड़ती है । प्रश्न है धोखा किसने खाया ? मालिक ने या पोस्टमास्टर ने ? वस्तुतः आदमी स्वयं को ही धोखा देता है, दूसरों को नहीं । उसमें यह प्रवृत्ति बढ़ रही है वह अपने आपको धोखा देता चला जा रहा है । आज सारे वैज्ञानिक चिंतित हैं । विश्व स्वास्थ्य संगठन के लोग अनेक बार यह घोषणा करते हैं— 'वनों की कटाई कम करो, पदार्थ और जल का सीमित प्रयोग करो ।' वैज्ञानिक स्तर पर आने वाली इन चेतावनियों के बावजूद सब कुछ वैसा ही चल रहा है । पर्यावरण प्रदूषण के प्रति बहुत चिंता दर्शायी जा रही है किंतु इसकी क्रियान्विति की चिंता नहीं है । जब तक अहिंसा और संयम का मार्ग समझ में नहीं आएगा तब तक पर्यावरण की बात समझ में नहीं आएगी, पर्यावरण की समस्या सुलझेगी नहीं ।

पांचवें काल खंड की काल अवधि है इक्कीस हजार वर्ष । कहीं काल की उदीरणा न हो जाए, इक्कीस हजार वर्ष बाद आनेवाली स्थिति इक्कीसवीं शताब्दी में ही न आ जाए । क्योंकि वैज्ञानिक उद्घोषणा है— इक्कीसवीं शताब्दी का मध्य दुनिया के लिए भंयकर होगा । उसमें केवल आठ वर्ष बच रहे हैं । जो पीढ़ी आज जन्म ले रही है, वह इस भयंकरता से गुजरेगी । यदि हम नहीं संभले तो सामने दिखनेवाला खतरा भयंकर बन जाएगा । संभव है— काल की उदीरणा हो जाए । काल कर्म की उदीरणा में निमित्त बनता है, तो हो सकता है— शायद कर्म भी कभी-कभी काल की उदीरणा में निमित्त बन जाए ।

समाधान-सूत्र

इस समस्या के जो समाधान सूत्र हैं, वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं । पुराने लोग कहा करते थे— 'जल को घी की तरह बरतो' । यह अवधारणा थी— असंख्य जीव मरते हैं तो जल की एक बूंद काम आती है । जल की एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं । धर्म का तत्व समझाते हुए बच्चों को कहा जाता था— 'देखो । एक गिलास पानी में तुम्हारे कितने मां-बाप हैं ।' इसका मतलब होता था— अनंतकाल से परिभ्रमण करते हुए इस जीव ने कितने मां-बाप बनाये हैं । जिनकी हिंसा की जा रही है, इसमें न जाने कितने पुराने पुरखे अपने हैं । ऐसी बातें कहकर पानी का घी की तरह उपयोग करने का रहस्य समझाया जाता । आज हर बात में असंयम है । बिजली का कितना अनावश्यक उपयोग हो रहा है । बत्ती जला देते हैं और वह सारी रात जलती रहती है । पंखा चलाते हैं और दिन-रात पंखा चलता रहता है । क्या यह असंयम नहीं है ? बिजली जले तो दिन-रात जले और पानी बहे तो दिन-रात बहे । कितना प्रबल है असंयम । इस स्थिति में ओजोन की छतरी कैसे नहीं टूटेगी ? कार्बन की मात्रा कैसे नहीं बढ़ेगी ? आक्सीजन में कमी क्यों नहीं आएगी ? पर्यावरण का संतुलन क्यों नहीं बिगड़ेगा ?

हम इस सच्चाई को समझें । भगवान महावीर ने कहा— इस सच्चाई को जानकर मेधावी पुरुष यह संकल्प ले— 'इयाणिं नो' मैं वह अब नहीं करूंगा । मैं अब अहिंसा और

संयम की साधना करूंगा । जैसे-जैसे यह संकल्प बलवान बनता है, शक्तिशाली बनता है वैसे-वैसे व्यक्ति में परिवर्तन आना शुरू हो जाता है । जैसे-जैसे संयम बढ़ेगा, असंयम कम होगा, कठिनाइयां भी कम होंगी ।

एक अफसर का कद बहुत नाटा था । कार्यालय में एक कर्मचारी से उसका दोस्त मिलने आया । उसने पूछा— 'अफसर कौन है ?' कर्मचारी ने सामने बैठे व्यक्ति की ओर इशारा किया । मित्र ने कहा— 'अरे ! यह तो बहुत छोटा है ।' कर्मचारी बोला— 'मुसीबत जितनी छोटी हो, उतना ही अच्छा है ।'

हम जितना संयम करेंगे, समस्या उतनी ही छोटी होती चली जाएगी, वह लंबी नहीं बनेगी, भयंकर और विकराल नहीं होगी । यदि आज सचमुच विश्व को पर्यावरण संतुलन की चिंता है, उससे होनेवाले परिणामों की चिंता है तो उसके लिए धर्म का पाठ, अहिंसा और संयम का पाठ समझना सबसे ज्यादा जरूरी है । यह संयम की बात केवल मोक्ष के संदर्भ में ही नहीं कही गयी है । धार्मिक लोग भी प्रायः संयम और अहिंसा की बात मोक्ष के संदर्भ में करते हैं । जिसे मोक्ष जाना ही नहीं है, वह क्यों इस बात को मानेगा । मोक्ष के संदर्भ में धर्म की बात करना उसका एक पहलू है । किंतु जीवन के संदर्भ में वह बहुत मूल्यवान है । इस सच्चाई को वर्तमान संदर्भ में समझना बहुत जरूरी है । यदि धर्म की बात को वर्तमान युग की समस्याओं के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाए, अधर्म और हिंसा से उत्पन्न होनेवाली परिस्थितियों और कठिनाईयों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति धर्म का मूल्यांकन करेगा, अहिंसा और संयम का मूल्यांकन करेगा, धर्म की बात बहुत व्यापक बन पाएगी । धर्म का एक सूत्र है— अतीत की भूलों को न दोहराना । प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले— 'मैंने अब तक जो भूलें की हैं, उन्हें पुनः नहीं करूंगा, जो प्रमादवश किया है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी ।' यह संकल्प समस्या के सघन तिमिर में समाधान का दीप बन सकता है । ●

परखनली त्वचा

आजकल मानव त्वचा को भी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में उगा रहे हैं । ब्रिटेन के चर्मरोग विशेषज्ञों ने त्वचा को कोशिकाओं को परखनली में उगाने और पनपाने में एक बड़ी सफलता हासिल कर ली है । यह त्वचा शरीर के बुरी तरह जले हुए हिस्से पर ग्राफ्टिंग करने के काम आ सकेगी । इसके अभाव में अक्सर डॉक्टर रोगी को बचा पाने में असमर्थ हो जाते हैं ।

लंदन अस्पताल के डॉ. आई.एम. लीफ और डॉ. परविस ने ७० रोगियों पर इस नयी कोशिकावाली त्वचा का परीक्षण किया जो काफी सफल रहा है ।

इस त्वचा की कोशिकाओं में गुण-सूत्रों के परीक्षण के आधार पर नर व मादा कोशिकाएं अलग-अलग होती हैं । यह परखनली त्वचा जले रोगियों के लिए वरदान सिद्ध हो सके, इसके लिए वैज्ञानिक अभी और परीक्षणों में लगे हुए हैं ।



कहां चले गये गंवई बाल क्रीड़ा गीत

● साधुशरण सिंह 'सुमन'

संस्कृति-संस्कार, बोली-विचार तथा राष्ट्रीय हित के प्रति सजग भोजपुरी अंचल आज पश्चिमी सभ्यता का बदरंग बयार से व्याकुल और बैचैन है। पंजीरी-पंचमेल को पंख लग गये, पखावज पर पंवरियों की सगुन और सोहर-लहरी बर्ज्य बनी विदाई मांगती दिखायी पड़ रही है। न केवल होली, बिरहा, बारहमासा वरन् क्रियापद और ऋतु संबंधी गीत भी अपनी स्मिता समाप्ति के सोपान पर हैं। पाश्चात्य संगीत का भारतीय सिनेमा द्वारा प्रचार, टू-इन-वन पर कर्णकटु अंदाज में बजता डिस्को गीत, गांव-गंवई की नयी पीढ़ी को न केवल नाकाम वरन् प्रदूषित भी कर रहा है।

गौरवशाली परंपरा

चाहे गांव का गोंयरा हो या चौपाल, खेत हो या खलिहान सब जगह एक विचित्र तनाव व्याप्त है। रोपनी-सोहनी के बीच का स्वर सूख गया है। शहर-नगर की लहर पर आज गांव, लाउड-स्पीकरी साउंड के रिबाउंड में रमित अपने गौहर को गौण करने पर तुला है। गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा पर यह प्रहार हमारे पराभव का सूचक है। बिहार और उत्तर प्रदेश के सघन भोजपुरी अंचल का परिवर्तित वर्तमान सांस्कृतिक परिवेश बालकों पर भी प्रभाव डाल रहा है। कभी यहां के बच्चे खेलते समय जो क्रीड़ा गीत गाते थे, उनमें उत्साह बढ़ाने, अपनी माटी से जुड़े रहने, वीर बनने की प्रेरणा भरी होती थी। ये गीत गांव से, नैतिकता से, अपनी बोली-विचार से बच्चों को परिचित कराते थे। इन गीतों के अज्ञात रचनाकार

अनेक प्रकार के बाल-क्रीड़ा गीत कभी गांवों में प्रचलित थे । आज इनका अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है । सुदूर देहात में कहीं-कहीं ये सुनायी पड़ते हैं । किंतु उनका मौलिक स्वरूप विकृत हो गया है । अब इन गीतों को गाने पर डांट भी पड़ती है । शहर में रहनेवाले तो बच्चों को मातृभाषा हिंदी से भी दूर रखने की कोशिश में संलग्न हैं । मानसिक गुलामी और अनुकरण में अपनत्व तक सुध-बिसार देनेवाली हमारी नयी मानसिकता का भविष्य कितना भयावना एवं भयंकर होगा ? अनुमान लगाना कठिन है ।

अच्छी मनोवैज्ञानिक जानकारी रखनेवाले थे । आज वह सब समाप्त होता जा रहा है ।

नैतिक अधः पतन और अतिआधुनिकता के अंधड़ ने खेत-खलिहान, गांव-जवर (जवार) सब में 'तोड़ों-भागो' का भाव भर दिया है । आज गांव के बच्चे खेलते जरूर हैं, किंतु उनके बीच से अब वो स्वर नहीं निकलता, जो कभी राह चलते राहगीर का मन मोह लेता था । अब खेल के दौरान फिल्मी गीत गाने, डिस्को स्टाइल में ठुमका लगाने, अनावश्यक उत्तेजक बातें बोलने की बीमारी लग गयी है बच्चों को ! फलतः इससे लक्ष्यहीन दिक्‌भ्रमित युवा पीढ़ी पनप रही है, जो खेत में काम करने में तौहिनी, कारखानों में परिश्रम करने में अपमान और अपनी भाषा में बतियाने में झिझक महसूस करती है । कुंठा के इस कैंसर से निस्संदेह हमारी गौरवशाली परंपरा का अंत हो जाएगा ।

भोजपुरी प्रदेश में प्रचलित पुराने बाल-क्रीड़ा गीतों की सही संख्या की जानकारी मिलनी कठिन है । इन्हें खोजने और लिपिबद्ध करने जैसे कार्य काफी कम हुए हैं । आज तो यह और भी मुश्किल हो गया है, क्योंकि पश्चिमी खेल नगर-शहर पर कहर ढाते गांव को गौरवहीन करने पधार चुके हैं । उनके प्रदूषण से बालक बकमौन, युवा मौन और वृद्ध चुप से हो गये हैं । ओका-बोका, गुल्ली-डंडा दोल्हा-पांती, कबड्डी, चीका—जैसे शारीरिक, मानसिक सबलता प्रदान करनेवाले खेल खतम होते जा रहे हैं । इनकी जगह पर समय-सामर्थ्य का सफाया करनेवाले क्रिकेट कीटाणु अंधनंगों के परिवेश को काट खाने पर तुला है ।

भोजपुरी बाल-क्रीड़ा गीतों की झांकी देखने के लिए अतीत की गूंज सुननी होगी—सीधे-सरल बालकों मनोहारी-धूमिल तस्वीर पर दृष्टिपात करनी होगी । छोटा-सा गांव, अस्ताचल की ओर जाती सूर्य की लाल किरणें, बीच गांव में नीम का पुराना पेड़ और वहां बैठा बच्चों का समूह । सारे बच्चे जमीन पर पसरे हैं—ओका-बोका खेल की तैयारी हो रही है । सभी बालक अपनी हथेली को उंगली के सहारे धरती से उठाये गा उठते हैं—

''ओका-बोका तीन तरोका
लउआ लाठी चनन काठी
चनना के नाव का ?

ईजयी विजई ।
पान से फूल ले तीसरी पूचुक !''

यह प्रक्रिया कुछ देर तक चलती रही, फिर एक बालक की हथेली पर सबने अपनी हथेली रख दी और सम्मिलित स्वर मुखरित हुआ—

''अटकन-चटकन दही चटाकन
बर फूले बरइला फूले
सावन में करइला फूले
नउसी गइली चोरी, धन कान मरोड़ी ।''

जैसे ही सम्मिलित स्वर का यह गीत समाप्त हुआ कि एक बच्चा झट अपनी बंधी मुट्ठी जमीन से सटा देता है । उसकी उंगली के ऊपर और बच्चे उंगली रखते हैं और गीत शुरू हो जाता है :—

''तार काटो तरकुल काटो, काटो रे वन खाजा
हाथी पर बइठल तमक गइलें राजा ।''

यह गीत वृक्ष काटने पर राजा के तमक उठने के भय को स्पष्ट करता है । निस्संदेह वृक्ष के प्रति प्रेम जगाने के लिए ही यह प्रचलन में लाया गया था । जैसे ही यह गीत खत्म होता है । सारे बच्चे अपने हाथ एक दूसरे के कान पर ले जाते हैं और रागात्मक स्वर फूट पड़ता है —

''चिउंटा हो चिउटा मामा के गगरिया काहे
फोड़लअ हो चिउंटा ।''

गीत चलता है कि अचानक पिता के पुकारने की आवाज, मां का खोजी स्वर सुनायी पड़ा और सारे बच्चे अपना पैर एक-दूसरे के पैर से लगाये—

''लात्ता-लूत्ती, लात्ता,-लूत्ती''
किये और घर को लौट पड़े ।

थोड़े बड़े बच्चों की टोलियां गांव के सार्वजनिक मैदान, परती या जोते हुए खेत में इकट्ठा हैं । काम-धंधे निपटाकर ग्रामीणों का जत्था दर्शक बना इकट्ठा है । दल का बंटवारा हुआ । धरती पर मिट जानेवाले लकीर डाली गयी और शारीरिक बल-बुद्धि बढ़ानेवाला खेल कबड्डी प्रारंभ हो गया । एक खिलाड़ी तेजी से दौड़ते-गाते दूसरे दिन की सीमा रेखा में प्रवेश किया :—

''आवतानी कबड्डी डेरइह जनि हो
हाथ गोड़ टूटी लड़िक बना छूटी । ... पार''

अब दूसरे दल की बारी है । एक लड़के ने तेजी से लकीर कर पहले दल में प्रवेश किया । हाथ चलाते, आंख नचाते और तेज आवाज में गाते—

'चल कबड्डिया हेता,
भगत मोर बेटा भगत मोर बेटा ।''

घंटों कबड्डी का यह धूमधाम कभी गांव को गुलजार करता था । अब न तो इस खेल का पुराना रूप है और न ये गीत । अंक और नियमावली में बंधकर यह खेल शहर चला गया । गांव सूना हो गया ।

संध्या का कोलाहल खत्म हुआ । आसमान में चांद हंस रहा है, चांदनी छिटक रही है । आंगन में खाट पर छोटे-बड़े बालक समूह एक टक से अपने दूरदराज के मामा को निहार रहे हैं— इसी बीच एक स्वर फूटता है—

''चान मामा, चान मामा हंसुआ दअ ।
ई हंसुआ काहे के ?
खरही कटावे के !
ई खरही काहे के ?
गइया बन्हावे के !
ई गइया काहे के ?
गोबरा करावे के !
ई गोबरा काहे के ?
आंगना लीपावे के !''.....

शाम और रातें आज भी आती हैं, किंतु

दूसरे दरवाजे पर तेज स्वर बजते टेपरिकार्डर या लाउडस्पीकर की ध्वनि में यह गीत गौण हो गया है । शिशिर के अरुणोदय की बेला है । ठंड से ठिठुरते बालक सूर्य नारायण की रोशनी हेतु बेचैन हैं । बच्चे अपने-अपने घरों से निकलकर दरवाजे पर इकठा सस्वर आलाप रहे हैं—

''रामजी रामजी घाम करअ !सूगवा सलमा करअ ।।''

घाम हुआ । हाथ में डंडा लिये बालकों की टोली खेत-पथार की ओर निकल गयी । एक नजर चारों तरफ दौड़ाकर घर लौटना है, बस्ता लेकर विद्यालय जाना है । रूखा-सूखा खाकर बालकों का दल टूटे-ढहे विद्यालय प्रांगण में इकठा हैं । शिक्षक आयें या नहीं—भात और पहाड़ा का खेल शुरू हो गया । दस-बीस की टोली, दो-चार लड़के हंसते हुए गाते हैं, शेष दुहराते हैं :—

''भात एकांई भात ।
भात दूनी दाल ।।
भात तीआं सरकारी ।
भात चउका चटनी ।।
भात पचे पापड़ ।
भात छका छांछ ।।
भात सते सतुआ ।
भात अठे अचार ।।
भात नवाई निमकी ।
दात दहांई दही, तब भोजन सही ।।''

बच्चों का विद्यालय पहुंचना पूर्ववत जारी है, किंतु टिंव्कल-टिंव्कल लिटिल स्टार के पाठ से उन्हें फुर्सत कहां है ?

गरमी का मौसम आ गया । विद्यालय बंद है । गर्म पछुआ हवा और लू के थपेड़े से सभी परेशान हैं । आलस से गांव-घर के लोग सोये हैं । पर बच्चों की आंखों में नींद कहां ? नजरों में अमराई के बड़े होते टिकोले और लाल होते जामुन का रूप बसा है । चोरी-छुपे बालकों का दल घर से निकलकर पगडंडी पर आया और फिर दौड़ते-गाते हुए अमराई की ओर चल पड़ा, साथ ही तोतली बोली में सुंदर-सा गीत हवा में तैर गया—

'चले के लड़िका गाछी में,
गाछी में हुडाड़ बा ।
हुड़डा का संगे संगे बइठल,
सियार बा ।।
हुड़ड़ा चहेटल जाई ।
सियरा पछाइल जाई ।।
आम जामुन बीन के ।
घरे पहुंचावल जाई ।।''

बच्चों के उधम से घरवाले परेशान हैं । आम पकने लग गये हैं । इसी समय नानी के घर से आम खाने का बुलावा आ गया है । घरवाले भेजेंगे ही । इससे बढ़कर दूसरी खुशी क्या होगी । ऐसा सौभाग्य एकाध बालक को मिला है, किंतु संध्या में लुका-छिपी खेलते समय उस सौभाग्यशाली बालक के स्वर में स्वर, ईर्ष्या-द्वेष से मुक्त सभी बच्चे मिला देते हैं—

नानी कीहां जायेब ।
ठेकुआ पकायेब ।।
नानी पूछी बतीया रे ।
आइल हमार नतीआ रे ।।''

गरमी कम होने लगी । आसमान में काली-घुंघराली घटा दौड़ रही है । बाल समाज मैदान में खेल रहा है । अचानक बिजली चमकी, आंधी आयी और छींटे पड़ने लगे । घर की ओर दौड़ते नन्हें-मुन्ने गा उठे—

"आन्ही आइल पानी आइल ।
भुखला के नानी आइल ।।
चले के लड़िका घरे ।
बनरा का डरे ।"

बरसात आ गयी । दिन-रात पानी पड़ रहा है । निकलना कठिन है । बालमन मेघ को अपना दुश्मन मानने लगा है और जरा पानी छूटते इकठा होकर गाने लगता है—

चलनी में आटा ।
फाट गइल घाटा ।।
एक मुट्ठी लाई ।
घाटा छितराई ।।"

बरसात कम हो गयी । गांव-घर ग्राम्य देवी की पुजाई में व्यस्त है । मां-आंगन लीप रही है । बालकों का दल ओसारे में बैठा है । देवी पूजा की बाल परिकल्पना मुखर हो उठती है । सम्मिलित स्वर गूंजता है—

"आई माई पूड़िया पकाई ।
पाकल पूड़िया देवी के चढ़ाई ।।
देविया देयाल होई दी एगो भाई ।
माई के करजा उतारी दूनू भाई ।।

इस प्रकार अनेक बाल-क्रीड़ा गीत कभी गांवों में प्रचलित थे । आज इनका अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है । सुदूर देहात में कहीं-कहीं ये सुनायी पड़ते हैं । किंतु उनका मौलिक स्वरूप विकृत हो गया है । अब इन गीतों को गाने पर डांट भी पड़ती है । शहर में रहनेवाले तो बच्चों को मातृभाषा हिंदी से भी दूर रखने की कोशिश में संलग्न हैं । मानसिक गुलामी और अनुकरण में अपनत्व तक सुध-बिसार देनेवाली हमारी नयी मानसिकता का भविष्य कितना भयावना एवं भयंकर होगा ? अनुमान लगाना कठिन है ।

—श्री भुवनेश्वरी राजा कॉलेज
बाढ़, जिला-पटना

हकलाने से मुक्ति पाइए

अब हकलाने की शिकायत से परेशान लोगों की समस्या का समाधान सोवियत इलेक्ट्रोन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने खोज लिया है । उन्होंने एक ऐसे यंत्र का निर्माण किया है, जिसकी सहायता से व्यक्ति अपनी वाक्-शक्ति सुधार सकता है ।

यह यंत्र पॉकेट ट्रांसिस्टर आकार का है । एक माइक्रोटेलिफोन रोगी के कान में लगा दिया जाता है और उसे एक छोटे-से जेबी यंत्र से जोड़ दिया जाता है । इस यंत्र का नाम आइर-२ है । इसकी मदद से रोगी अपनी ही आवाज को कुछ क्षण देरी से सुन पाता है । अधिकांशतः हकलानेवाला व्यक्ति बहुत तेजी से बोलता है । यह आइर-२ यंत्र उसे धीरे-धीरे बोलने के लिए विवश कर देता है । इस तरह धीरे-धीरे बोलने से उस व्यक्ति में आत्मविश्वास जगता है और वह अपनी वाक्-शक्ति में सुधार कर पाता है ।

इस जेबी यंत्र आइर-२ में लगे एक बटन की सहायता से हकलानेवाला व्यक्ति अपनी सुविधानुसार आवाज कम या अधिक देर से सुनने की व्यवस्था भी कर सकता है ।



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प। —संपादक

१. विमल के पास सोहन के रुपयों के तिहाई से ५ कम हैं। दोनों के पास मिलाकर ९५ रु. हैं। बताइए, दोनों के पास अलग-अलग कितने रुपये हैं ?

२. क. 'कान्हावत' किस प्रसिद्ध कवि का महाकाव्य है, जिसका कई सौ वर्ष बाद वर्तमान शताब्दी में पता चला है ?

ख. इसमें क्या वर्णित है ?

ग. इसकी भाषा क्या है ?

३. क. इंगलैंड में प्रकाशित शेक्सपीयर के नाटकों का नायाब प्रथम संस्करण भारत में कहां सुरक्षित है ?

ख. इसका कितना मूल्य आंका गया है ?

४. वर्तमान शताब्दी में कौन-सा प्रधानमंत्री हुआ है, जो अपने देश में इस पद पर निरंतर सबसे अधिक समय तक रहा और जो सबसे कम उम्र में पदासीन हुआ था ?

५. गत वर्ष नवंबर में यूरोप में पारंपरिक (गैर-आणविक) अस्त्रों को कम करने के बारे में कौन-सा ऐतिहासिक समझौता हुआ है, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बताया गया है ?

६. क. संयुक्त राष्ट्रीय महासभा की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन हुई हैं ?

ख. वह अन्य किन महत्त्वपूर्ण पदों पर रहीं ?

७. क. किस गेंदबाज ने टेस्ट मैचों में सर्वाधिक विकेट लेने में दूसरा स्थान प्राप्त किया है ?

ख. पहला गेंदबाज कौन रहा है ?

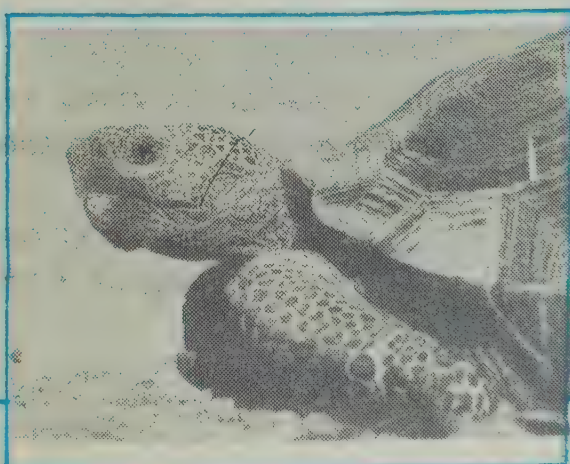
८. क. गत वर्ष दिसंबर में डेविस कप टेनिस की युगल प्रतियोगिता में कौन विजयी रहा ?

ख. उसने यह विजय कितने वर्षों बाद प्राप्त की है ?

९. क. 'गिनीज बुक आफ रिकार्ड' के अनुसार दुनिया में इस समय सबसे अधिक आयु की महिला कौन है ?

ख. दुनिया में जुड़वां व्यक्तियों की संख्या अनुमानतः कितनी है ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—



अनुभव

● शीला शर्मा

इत्तिफाक से एक दिन हमारी मुलाकात एक पत्रिका के संपादकजी से हो गयी । बातों का सिलसिला शुरू हुआ तो मन की जिज्ञासा आखिर फूटकर बाहर आ ही गयी कि हम भी उनकी पत्रिका के लिए कुछ लिखें । संपादकजी ने हमें सुझाव दिया कि हम चंद ऐसी महिलाओं से, जिनका या जिनके पति का स्थानांतरण होता रहता हो, मिलकर स्थानांतरण के उनके अनुभव लिखकर पत्रिका में भेजें । साथ में सबकी फोटो भी भेज दें । इसमें एक या दो पुरुषों के भी अनुभव जरूर लिखें । यह भी बताया कि कुल मिलाकर आठ या नौ लोगों के ही नाम शामिल करें ।

हम तो खुशी से फूलकर कुप्पा हो गये । अब किसी काम में हमारा मन नहीं लग रहा था । दिमाग में उधेड़बुन शुरू हो गयी कि किसका नाम इसमें रखें और किसका न रखें ।

यूं तो हमारी कॉलोनी में सभी सरकारी अधिकारी व कर्मचारी हैं, जो स्थानांतरण वाले ही हैं । कुल मिलाकर तीस मकान हैं । सभी से अपनी अच्छी-खासी दुआ-सलाम भी है । जिनसे रोज का उठना-बैठना है, उनकी भी संख्या अठारह-बीस से कम नहीं है । हमने सोचा कि सबसे पहले जिनके अनुभव लिखने हैं, उनके नामों की सूची बना डालें । श्रीमती गुप्ता का नाम रखते हैं तो श्रीमती श्रीवास्तव को छोड़ना मुश्किल है । दोनों अगल-बगल रहती हैं और दिन-रात का उनका साथ है । इधर श्रीमती चंद्रा का नाम रखें तो श्रीमती जोशी का भी रखना पड़ेगा वरना वह बुरा मान जाएंगी । श्रीमती वाछवानी का नाम तो रखना ही पड़ेगा भले ही उन्हें कुछ अनुभव हो या न हो क्योंकि उनके मिजाज से तो यहां सभी डरते हैं । उन्हें नाराज करके कौन मुसीबत मोल लेगा ।

हमारी परेशानी देखकर हमारे पतिदेव ने सुझाव दिया कि हमें कम से कम एक पुरुष का नाम भी तो रखना है सो हम जलील भाई का नाम रख लें । वैसे जलील भाई अजीब किस्म के आदमी हैं । उनकी यहां सभी से लड़ाई हो चुकी है । जब किसी के पीछे पड़ जाएं तो ऐसी फब्तियां कसते हैं कि सुननेवाला कानों में अंगुली लगाने पर मजबूर हो जाता है । पर हमारे साथ तो उनकी अच्छी निभ रही है । अतः आगे भी अच्छी निभी रहे सो हमें पतिदेव का



सुझाव बहुत अच्छा लगा और इसी बहाने भाई साहब को मक्खन लगाने का भी मौका मिल गया ।

हमने सबसे ऊपर जलील भाई का नाम तो लिखा ही और तुरंत उनसे बात करके अनुभव भी लिख डाले । फोटो भी मिल गयी क्योंकि उनकी सभी से लड़ाई है सो बात फैलने का भी उनसे कोई डर नहीं था । फिर हमने ऐसी सात महिलाओं के नाम की सूची बनायी, जिनको ज्यादा से ज्यादा स्थानांतरण का अनुभव हो । साथ ही ज्यादा से ज्यादा स्थानांतरणों के अनुभव वाली बात को जरूरत पड़ने पर एक शस्त्र की तरह उपयोग करने का फैसला किया ।

अब मन में एक और शंका उठी कि जब हम महिलाओं से उनके अनुभव व फोटो पत्रिका में छपने की बात कहेंगे तो न जाने उन पर इसकी कैसी प्रतिक्रिया होगी । पत्रिका में फोटो आदि छपवाने में किसी को आपत्ति न हो । मन में दुविधा बनी हुई थी सो हमने डरते-डरते श्रीमती गुप्ता को फोन मिलाया और सब बात बतायी । वह तो इसके लिए बड़ी खुशी से तैयार हो गयीं । और स्वयं ही आकर अपने अनुभव भी लिखवा गयीं और फोटो भी दे गयीं । हमने राहत की सांस ली कि चलो श्रीगणेश तो अच्छा हुआ । फिर हमने श्रीमती चंद्रा से भी फोन पर ही सब बात बतायी तो वह भी बिना किसी हील हुज्जत के स्वयं ही आकर अपनी बात लिखवा गयीं मय फोटो के ।

अभी दो दिन ही बीते थे कि सुबह-सुबह फोन की घंटी घनघनायी । श्रीमती भार्गव का फोन था और अनुभव बताने के लिए मय फोटो सहित आने पर आमादा थीं । क्या करते !

उनके भी अनुभव लिखे ।

हमने यह बात जितनी छिपाकर रखनी चाही वह उतनी ही आग की चिनगारी की तरह फैलती गयी । हमारी बनायी हुई सूची से नाम कटते गये और नये नाम जबरदस्ती जुड़ते चले गये । इस तरह कुल ग्यारह लोगों के अनुभव लिखकर तैयार हो गये । अब तो जो महिलाएं अपने अनुभव लिखातीं वह पहले हमारा इंटरव्यू लेने लगीं कि हमने और किस-किस के अनुभव लिखे हैं ? किसने क्या लिखवाया है ? किसकी फोटो कैसी है ? पोज कौन-सा है ? साड़ी उन पर फब रही है या नहीं ? यानी एक-दूसरे की आलोचना शुरू हो गयी ।

हमने जल्दी ही सारा मैटर संपादकजी को भेजकर चैन की सांस ली । इधर कई दिनों से दिमाग पर बड़ा बोझ था सो अब जरा शांति मिली ।

जिन महिलाओं के अनुभव नहीं लिखे गये थे और उन्हें जब बाद में पता लगा तो उनके ताने-उलाहने हमें अभी भी झेलने पड़ रहे थे कि एक दिन अपना भेजा हुआ मैटर वापस आ गया । हमने कांपते हाथों से बड़ा साहस बटोरकर लिफाफा खोला तो उसमें हमारे भेजे हुए मैटर के साथ संपादकजी का पत्र था जिसमें उन्होंने खेद सहित रचना लौटायी नहीं थी, मैटर बहुत बड़ा हो जाने के कारण छापने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए उसे छोटा करके तुरंत भेजने को लिखा था । हमारी जान में जान आयी । मगर आसमान से टपके तो खजूर पर अटक गये थे हम । अंततः हमने रचना काटने-छांटने की जिम्मेदारी संपादकजी को ही संभालने का निवेदन किया । शुक्र खुदा का, वे मान भी गये । यही नहीं, यह भी सूचना दी कि लेख फरवरी अंक में छप रहा है ।

हमने सबको बता दिया तो सबने फरवरी अंक की अग्रिम बुकिंग करा ली पर लेख न फरवरी में छपा, न मार्च में ।

आखिर एक दिन इंतजार की घड़ियां खतम हो ही गयीं । सुबह ही पत्रिका हमारे हाथ में आयी तो हमने झट खोलकर देखा । अपना मैटर छपा देखकर मानो जान बची तो लाखों पाये । उधर फोन की घंटी बजी तो हमने सोचा कि जरूर किसी ने हमें बधाई देने को फोन किया होगा और हमने लपककर रिसीवर उठाया । पर हमारा सारा नशा काफूर हो गया जब श्रीमती चंद्रा ने अपनी दिलचस्प बातें कट जाने का दोष हमारे पर डालते हुए हमें उलटी-सीधी सुनायी । हमने लाख सफाई दी, पर वे न मानीं । फिर तो एक के बाद एक फोन आने शुरू हो गये और हम पर बेभाव की पड़ने लगी ।

हम मन ही मन उस मनहूस घड़ी को कोस रहे थे जिसमें हमारी मुलाकात संपादकजी से हुई थी । औरों के अनुभव बटोरने चले थे पर उसमें हमें जो अनुभव हुए भगवान न करे कि किसी और को भी हों ।

— द्वारा श्री अरुणकुमार शर्मा, आई.ए.एस.
ब्लाक ए (डी टू), १९ मोतीबाग दक्षिण
नयी दिल्ली ।

दूसरों के गुण और अपने अवगुण ढूंढ़ो । **—बेंजामिन फ्रैंकलिन**

समय की पुकार

● पशुपति नाथ सुकुल

चंद बूंदें रक्त की
और चंद लाशें,
चंद रोते हुए परिजन
और दहशत से भरे,
आंखें लिये गीली, खड़े
कुछ और पुरजन—
पांच वर्षों से
कथा केवल यही
दुहरा रही है
स्वयं को
पंजाब में प्रतिदिन;
और हम सब सोचते हैं—
क्या किया था
पांच वर्षों की
कुमारी कौर ने !
क्या किया था
दस बरस के
इस निरीह किशोर ने !
क्यों इन्हें मारा किसी ने ?
क्या था दोनों का कुसूर !
धर्म के उन्माद में
क्यों बलि हुए
ये बेकुसूर !
क्या कभी नानक ने
बोला था कि
बच्चे मार दो !
या कहा गोविन्द सिंह ने
भाई सच्चे को मार दो !
कर रहे जो भी हैं ये सब
वे हैं दुश्मन धर्म के
आदमी हरगिज नहीं हैं
वे हैं काबिल शर्म के ।
साथियों अब उठ पड़ो
ऐसा करारा दो जवाब,
जान जाएं वे भी
क्या सचमुच है
अपना पंज-आब !
मार दो फौरन
तुम अपने
आस्तीं के सांप को,
रौंद कर रख दो
तुम अपने
देश के अभिशाप को ।
राम को और कृष्ण को,
गौतम को, नानक को भजो,
एकता को याद रखो
दुई को फौरन तजो ।
बस तभी कर पाओगे
अपनों का,
दुनिया का भला,
और तभी चल पाएगा
दीनो-धरम का सिलसिला ॥

१५-जनपथ,
नयी दिल्ली-११०००१

कैद हो जाता हूं

देख लेने से ही
यादों के कमरे में कैद हो जाता हूं
चेहरों के दर्पण में
चांदनी तलाशता हूं
चमकीली आंखों में
आहट सुन लेता हूं
मुसकराहट का मौसम है
मातम मनाता हूं
खुले हुए होठों से
हसरत मिटाता हूं
चलती हुई दुनिया में
दुश्मन बनाता हूं
ख्यालों के खंजर से
खैरियत मनाता हूं
हाय मेरी मजबूरी
कि फिर कैद हो जाता हूं

● अरविन्द आलोक
प्राध्यापक, केंद्रीय हिंदी संस्थान
नयी दिल्ली ।

सूफी साधक और समाज-सुधार की भावना

• ए. ताहाकुंजुं

मध्यकालीन भारतीय सामाजिक परिस्थिति पर विचार करने पर पता चलता है कि तत्कालीन समाज में अस्थिरता और अनिश्चिता की अवस्था प्रबल थी । इस समय भारतीय समाज कई तरह के अनाचार, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और निराशाजनित भावनाओं का केंद्र बन गया था । पराधीनता के पाश में आबद्ध भारतीय समाज के सामने भविष्य एक प्रश्न रह गया । अस्त-व्यस्त सामाजिक व्यवस्था का सुधार समाज की अतिप्रधान मांग थी । मुसलमान शासक और हिंदू शासित दोनों ने अपने-अपने धर्म के प्रचार में ही पूरा ध्यान दिया था ।

समाज में दिनोंदिन बढ़ते रहे जाति-भेद, छुआछूत, वर्ण-भेद, वर्ग-भेद, धार्मिक बाह्याडंबर, अंधविश्वासजन्य अनाचार, आर्थिक असमानता आदि अभिशापों को नजरअंदाज कर तथाकथित हिंदू-मुसलिम धार्मिक नेता अपने-अपने धर्म का प्रचार-प्रसार मात्र ही अपना कर्तव्य मानकर बैठे थे । ऐसी ही अवस्था में पतनोन्मुख भारतीय समाज के उद्धार के लिए सूफी साधक सामने आये और अपनी ओज और प्यारभरी वाणी तथा करनी द्वारा भटकती जनता को सच्चे रास्ते पर ले चले ।

मुसलिम सूफी साधक जनसाधारण के बीच रहते थे और अपनी ईश्वर-भक्ति, धर्म-निष्ठा और अध्यात्मवाद से बहुत से हिंदुओं को आकर्षित कर लेते थे, जो उनके प्रिय शिष्य बन जाते थे । सूफी साधकों का विश्व-एकतावादी सिद्धांत भारतीयों को बहुत भाया और वे उनके अनुयायी बन गये । सूफी संतों में मुइनुद्दीन चिश्ती, पाकपटन के फरीदुद्दीन शकरगंज, दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया, वासिरुद्दीन, चिराग देहलवी आदि प्रमुख संत थे । इन साधकों को कविताओं पर सूफी मत के सिद्धांत ने बहुत गहराई से प्रभाव छोड़ा है ।

समतावादी दृष्टिकोण

सूफी साधकों का समतावादी दृष्टिकोण बहुत प्रसिद्ध है । यह उनकी कविताओं में विद्यमान है । संतों में समतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है लेकिन संतों के साम्यवाद के स्वरूप पर विद्वानों के बीच मतभेद दिखायी देता है । कतिपय विद्वानों का विचार है कि संतों का साम्यवाद इस्लामी साम्यवाद का

रूपांतर मात्र है । कुछ आलोचक उसे मौलिक साम्यवाद मानते हैं और कुछ संतों को अराजकतावादी तथा क्रांतिवादी समझते हैं । सूफी संतों का कर्म-क्षेत्र धर्म एवं समाज ही रहा है । इस्लामिक समतावादी दृष्टिकोण की आधारभूमि धार्मिक एवं सामाजिक है, जहां धर्म और समाज की दृष्टि में सब बराबर हैं ।

वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत जातिवाद भारतीय समाज का आधार रहा है । वह आर्थिक बुनियाद पर सामंती व्यवस्था के कारण जन्मा था और प्रांतीय जातिवाद राजनीतिक शक्ति संतुलन के कारण था, जो आर्थिक बुनियाद पर आश्रित था । जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए जो प्रयास सूफी साधकों ने किया, उसमें वे बहुत अधिक सफल हुए ।

सूफियों की सामाजिक सुधार की भावना

सूफी साधकों की साधना व्यक्ति की मुक्ति पर केंद्रित होने से कतिपय आलोचकों ने इन साधकों की साधना-पद्धति में सामाजिक सुधार भावना की कमी का आरोप लगाया है । व्यक्ति और समाज के आपसी समन्वय को भलीभांति समझ लेने पर यह आरोप निराधार हो जाएगा । व्यक्ति समाज का दर्पण है । यदि व्यक्ति का आचरण शुद्ध न हो तो समाज प्रगति नहीं करेगा । मतलब यह है कि समष्टि के सुधार के लिए व्यक्ति का सुधार अनिवार्य है । समाज का निर्गुण मनुष्य को मुक्ति के पथ की ओर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही होता है । समाज को व्यक्ति से भिन्न मानना तथा वैयक्तिक सुधार भावना को सामाजिक सुधारभावना के रूप में मानने को तैयार न होना आदि बातें तर्कसंगत नहीं हैं ।

तत्कालीन समाज की जाति-पांति और छुआछूत की भीषणता को सूफी साधकों ने दूर किया । सूफी साधकों ने स्पष्ट रूप से कहा—किसी उच्च कुल में उत्पन्न होने से किसी को गर्व नहीं करना चाहिए । वास्तव में उच्च जाति का व्यक्ति बड़ा नहीं होता । बड़ा वह होता है, जो प्रभुस्मरण एवं उपासना करता है । इस तरह सूफी साधकों ने सामाजिक विषमता को दूर करके एक ही जाति—मानव जाति का संदेश दिया ।

लोक-संग्रह की भावना में अटूट आस्था

सूफी साधकों ने विरक्ति का विरोध करके

> निष्काम कर्म के फलस्वरूप ज्ञानी इस देह के बंधन से पार हो जाते हैं । फलेच्छा से जब कर्म किया जाता है जब जीवन लोभी हो जाता है । लोभियों की संख्या के बढ़ने के कारण ही समाज में अमीर-गरीब वर्गों के बीच खाई बढ़ जाती है ।

लोक संग्रह की भावना पर विशेष बल दिया है । प्रख्यात सूफी अबू-अल-सरीज ने किताब-अल-लुमा में यह विचार इस प्रकार व्यक्त किया है—कुछ लोग खाना-पीना यह सोचकर त्याग देते हैं कि जब मनुष्य का शरीर कमजोर हो जाता है उसमें मानवी गुण समाप्त होकर दैवी गुण आ जाते हैं । इस सिद्धांत को माननेवाले लोग मनुष्य तथा मनुष्य के जन्मजात गुणों में विभेद नहीं कर पाते ।

यहां ध्यान देने की एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मध्यकाल में जितने सूफी साधक हुए उनमें से कुछ साधकों को छोड़ शेष सब पारिवारिक जीवन बिताने वाले थे । सूफियों ने जगत में रहते हुए निरासक्त निष्काम भाव से जगत की सेवा करने का उपदेश दिया है । परंपरागत रहस्यवादियों और धार्मिक नेताओं ने शरीर को भार रूप समझा है । मध्यकालीन भारतीय समाज में यह विश्वास प्रबल रूप से प्रचलित था कि शरीर बंधन स्वरूप है । मध्यकालीन धार्मिक गतिविधियों पर दृष्टि डालते वक्त मुक्ति हेतु की गयी आत्माहुति के कई उदाहरण मिल जाते हैं । मध्यकालीन धार्मिक मान्यताओं का यह दुष्परिणाम था । किंतु, वास्तव में हिंदू-धर्म शास्त्र आध्यात्मिक संघर्ष के लिए शारीरिक तैयारी की हमें प्रेरणा देते हैं, न कि शरीर नाश की । इंद्रिय निग्रह, एकांतवास इत्यादि का विधान शरीर शुद्धि के लिए किया गया है ।

भारतीय दार्शनिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि आध्यात्मिक संघर्ष के लिए शारीरिक तैयारी की आवश्यकता है । सूफी साधकों ने कुत्सित प्रवृत्ति का कटु शब्दों में विरोध करके शरीर रक्षा की आवश्यकता की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया । शरीर को अपने उद्देश्य की पूर्ति का साधन समझ उसे सुरक्षित रखना नितांत आवश्यक है ।

पुनर्जन्म द्वारा सत्कर्म की प्रेरणा

सूफियों ने पुनर्जन्मवाद को स्वीकार किया क्योंकि उन्होंने जान लिया था कि पुनर्जन्मवाद जीव को सत्कर्म की प्रेरणा देता है । इस जन्म में अच्छे कर्म करने पर अगले जन्म में सुख मिलने की आशा पुनर्जन्मवाद के आधार पर गढ़ती गयी । संत लोगों ने भी पुनर्जन्मवाद को स्वीकार किया । निष्काम कर्म भगवत् प्राप्ति का उत्तम मार्ग है । गीता में निष्काम कर्म की महत्ता का बारंबार प्रतिपादन हुआ है । निष्काम कर्म के फलस्वरूप ज्ञानी इस देह के बंधन से पार हो जाते हैं । फलेच्छा से जब कर्म किया जाता है तब जीवन लोभी हो जाता है । लोभियों की संख्या के बढ़ने के कारण ही समाज में अमीर-गरीब वर्गों के बीच खाई बढ़ जाती है । अगर यह स्थिति बदलती है तो मानव-मन से लोभ का भाव पूर्ण रूप से दूर होता है । यह निष्काम कर्म के द्वारा ही संभव है । इस तरह सामाजिक उन्नयन को ध्यान में रखकर ही सूफी कवियों ने निष्काम कर्म की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया था ।

—हिंदी विभाग, एम. ई. एस. कॉलेज
वलान्चेरी (केरल)

मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास हो । — स्वेट मार्डेन



महकती है लता की आवाज

• वि.स. खांडेकर

स्वर्गीय श्री वि.स. खांडेकर मराठी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे । उनकी 'क्रौंच वध' तथा 'ययाति'—जैसी श्रेष्ठ औपन्यासिक कृतियों का हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका था । लता मंगेशकर के पिता स्वर्गीय दीनानाथ मंगेशकर से स्वर्गीय खांडेकर की गहरी आत्मीयता थी । यहां प्रस्तुत है, लता मंगेशकर के संबंध में स्व. खांडेकर का संस्मरणात्मक लेख ।

लता ? नहीं, नहीं, कल्पलता !

ज्योतिष पर मेरा विश्वास नहीं । किंतु एक भविष्यवाणी आज भी मेरे कानों में गूंज रही है । उसे मैंने सुना था ठीक आधी रात के समय, सांगली स्थित सदासुख नाट्यगृह में । 'मानापमान' नाटक के प्रयोग के समय, दो अंकों के मध्यांतर में । यह भविष्यवक्ता सज्जन थे मास्टर दीनानाथ और सुननेवाले व्यक्ति थे हम—फिल्म निर्देशक मास्टर विनायक और मैं ।



यह घटना कुछ इस प्रकार घटी । सन् १९३८ में हंस पिक्चर्स के कथा लेखक के रूप में मैं कोल्हापुर गया । मैं खुद तो क्या जाता, विनायकरावजी मुझे जबर्दस्ती कोल्हापुर ले गये । मास्टर विनायक ने एक दिन अचानक मुझसे कहा 'आज रात हमें सांगली जाना है । दीनानाथ जी ने बुलाया है । वे फिर नाटक कंपनी शुरू कर रहे हैं । उसी के द्वारा आयोजित आज 'मानापमान' खेला जाएगा ।

हम दोनों ने उस रात, नाटक शुरू होने के समय सदासुख नाट्यगृह में प्रवेश किया । नाटक गृह आधे से ज्यादा खाली पड़ा था । उसे देखकर मेरा मन खिन्न हो उठा । मराठी रंगभूमि का वह काल निराशाजनक था । कहीं भी पहले जैसी धूमधाम दिखायी नहीं पड़ती थी । यही कारण था कि बलवंत नाटक मंडली का पुनरुत्थान होते हुए भी नाट्यगृहों का वातावरण उत्साहमय नहीं था । इन परिस्थितियों में भी उस रात दीनानाथजी ने धैर्य धर का 'शूरां मी वंदिव्ठें' (हे शूर तुम्हें मेरा प्रणाम) नामक पद ऐसी प्रभावपूर्ण शैली में गाया था कि आज भी मुझे याद है । दो अंकों के बाद चाय पीने के लिए मैं और मास्टर विनायक दोनों अंदर गये । दीनानाथजी से गपशप का सिलसिला शुरू हो गया । बातों ही बातों में भविष्य कथन के संबंध में चर्चा होने लगी । एक तो विनायकराव का ज्योतिष पर विश्वास था, साथ ही उन्हें यह भी मालूम था कि दीनानाथजी भविष्य बहुत अच्छा बताते थे । दीनानाथजी के चेहरे पर खुशी की एक लहर-सी दौड़ गयी । उन्होंने बताया कि भावी जीवन में उनके ग्रह अत्यंत अनुकूल हैं । पिछले दिनों में ऐश्वर्य का जो जमाना उन्होंने देखा है, आनेवाला भविष्य उससे भी अधिक उज्ज्वल, कीर्तिमान तथा वैभवशाली होगा । यह बात उन्होंने इतने आत्मविश्वास से कही थी कि उस भविष्यवाणी के प्रति शंका व्यक्त करने की हिम्मत मैं न कर सका । चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा । आज जब मैं लगभग बीस-पच्चीस वर्षों से पार्श्व गायन के क्षेत्र में लताजी का निरंतर विकास देखता हूं तो मन में आता है कि जिस उज्ज्वल भविष्य की दीनानाथजी ने कल्पना की थी उसे सत्य में परिणत होना ही था । केवल एक छोटी-सी भूल रह गयी थी उनकी भविष्यवाणी में । वह सब कुछ उनके जीवन में घटित न हो सका । भविष्य की उस कल्पना को साकार करना था उनकी लाडली बड़ी बेटी ने ।

★

इस अल्हड़ लड़की लता को सबसे पहले मैंने देखा था पूना में, 'सरकारी पाहुणे' नामक फिल्म के सेट पर । बातों बातों में विनायकराव ने दो अपरिचित लड़कियों से परिचय कराते हुए कहा, 'यह बेबी आचरेकर है, और यह है लता, दीनानाथ की लड़की । इन दोनों को अपनी अगली फिल्म में काम करना है । लता की

आवाज बड़ी मीठी है । किंतु बिना सुने आप इसकी कल्पना नहीं कर सकते ।'

थोड़े दिनों बाद विनायक राव ने कोल्हापुर में प्रफुल्ल पिक्चर्स नामक अपनी ही संस्था स्थापित की । उनसे संबंधित सारे लोगों का कोल्हापुर आ जाना स्वाभाविक ही था । मंगेशकर परिवार भी उन्हीं में से था । प्रफुल्ल पिक्चर्स की प्रथम फ़िल्म 'माझे बाव्ठ' (मेरा मुन्ना) मैंने लिखी थी । उस फिल्म में लता के लिए कोई उपयुक्त भूमिका निकालनी कठिन थी, क्योंकि मूलतः कुमारी माता के जीवन पर आधारित उस फिल्म की रूपरेखा गंभीर थी । किंतु इस बारह वर्षीय बालिका लता की मधुर आवाज लोगों को इस फिल्म के द्वारा सुनने को मिले इसके लिए विनायक राव लालायित थे । कहीं न कहीं एक गीत के लिए जगह निकालनी ही थी । किंतु गंभीर कथानक वाली इस फिल्म में रस परिपोषक किसी गीत के लिए जगह निकालना उतना ही कठिन काम था, जितना कि किसी बड़े शहर में रहने के लिए जगह तलाश करना । विनायक राव को नन्हे, नटखट बच्चों का चित्रण तथा ऐसे गीतों के फिल्मांकन का बड़ा शौक था, जो बच्चों की अभिरुचि के अनुकूल हों । उन्होंने कथानक से संबंधित आश्रम में रहने वाली एक नटखट लड़की का काम लता को दिया । उन्होंने सुझाव दिया कि वह लड़की आश्रम में अण्णा साहब के कमरे में नाना प्रकार की वस्तुओं से खेलती हुई, और अपने से बड़े आदमियों की नकल करती हुई, एक गीत गा रही है । बड़ी मुश्किल से मैंने उस लड़की के लिए एक गीत की रचना की । उस गीत का मुखड़ा था, 'नाही मी एकटी' (मैं अकेली



नहीं) । सच बात यह है कि उस गीत के योग्य उस कथानक में जगह नहीं थी । यही कारण था कि वह गीत उस प्रसंग से एकरूप न हो सका ।

थोड़े दिनों के बाद ही प्रफुल्ल पिक्चर्स की ओर से बंगाल की अकाल पीड़ित जनता की मदद के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया । एक जलसे में गीत, नृत्य तथा अनेक प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रमों का विनायक राव ने समावेश किया था । यूं तो सारे कार्यक्रम अच्छे हुए, किंतु लता के गीत उसमें विशेष उल्लेखनीय रहे । आगे चल कर प्रफुल्ल पिक्चर्स द्वारा निर्मित 'गजाभाऊ', 'सुभद्रा' आदि फिल्मों में लता ने छोटे-मोटे काम जरूर किये, किंतु लता की मधुर आवाज तथा उसके संगीत संबंधी ज्ञान का पर्याप्त उपयोग प्रफुल्ल पिक्चर्स नहीं कर सकी । उसके लिए आवश्यकता थी एक ऐसे कथानक की जिसमें किसी नटखट लड़की का काम होता, साथ ही संगीत पर आधारित कोई योग्य प्रसंग होता ।

इन दिनों एक तरफ तो विनायक राव लता को आगे बढ़ाने में लगे हुए थे और दूसरी तरफ

लता, इतनी छोटी होते हुए भी अपनी कला को समृद्धिशाली बनाने में खुद प्रयत्नशील थी। इसमें अभिनेत्री नूरजहां से लता को बड़ी सहायता मिली। वह प्रफुल्ल पिक्चर्स की 'बड़ी मां' (हिंदी फिल्म) की नायिका थी। उसकी खुली हुई आवाज में मिठास और गायकी में स्वाभाविक सहजता थी। सहगल की तरह उसके गाने भी हृदय पर अंकित हो जाते थे। नूरजहां की स्वरसाधना, रसानुभूति और शब्दोच्चारण पद्धति सीखने योग्य थी। 'बड़ी मां' की शूटिंग लगभग एक वर्ष तक चलती रही। नूरजहां के व्यक्तित्व से प्रभावित लता को कला के क्षेत्र में प्रथम चिह्न उन्हीं दिनों दिखायी पड़ने लगे।

थोड़े दिनों के बाद वह कंपनी बंबई चली गयी। कहानियों के संबंध में मैं बीच-बीच में बंबई जाता था। विनायक राव लता की प्रगति के विषय में चर्चा भी करते थे, किंतु संगीत-संबंधी पर्याप्त ज्ञान मुझे न होने के कारण मैं लता का ठीक मूल्यांकन न कर सका।

विनायक राव का सन् १९४७ में अचानक देहांत हो गया। मंगेशकर कुटुंब पर भी इस घटना से तीव्र आघात पहुंचा। बड़ी लड़की होने के नाते बंबई जैसे शहर में, मां और भाई-बहनों के साथ गृहस्थी चलाने की सारी जिम्मेदारी पंद्रह-सोलह वर्ष की बालिका लता पर आ पड़ी। लता के पास गाना छोड़कर धनोपार्जन का दूसरा कोई भी साधन न था। ऐसी परिस्थिति में प्ले बैक गीतों के लिए काम की तलाश, वक्त-बेवक्त रेकार्डिंग के लिए रेलगाड़ी या बसों से स्टूडियो में आना-जाना, रात-बेरात, कभी-कभी अकेले फिल्म जगत की माया नगरी में भटकना, इस पंद्रह-सोलह वर्ष की लड़की के लिए आसान न था। किंतु लता ने इन कठिनाइयों का सामना किया। उम्र में अवश्य छोटी थी वह, किंतु मानसिक दृष्टि से प्रौढ़ हो चली थी। एक बार शहर के बाहर, स्टेशन से मील-डेढ़ मील दूर एक स्टूडियो में, लता की रेकार्डिंग थी। रात के लगभग ग्यारह बज चुके थे। उस दिन अशोक कुमार ने अपनी मोटर में उसे घर तक पहुंचाया था। इस बात का वह अक्सर बड़ी कृतज्ञतापूर्वक जिक्र करती है।

★

पार्श्वगायिका के रूप में फिल्म के क्षेत्र में पदार्पण करते ही, उसके कंठ-माधुर्य तथा प्रसंगानुकूल गीतों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के कारण, अधिकांश संगीत प्रेमियों का ध्यान लता की ओर गया। उन दिनों के लोकप्रिय गायक-गायिकाओं में कानन देवी, सुरैया, शमशाद बेगम, नूरजहां आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। लता के अभ्युदय के पूर्व अनेक सितारे जगमगा रहे थे। किंतु 'बरसात' तथा 'महल' आदि फिल्मों में लता के गीत सुनने के पश्चात लोगों को एक नया उगता हुआ चांद नजर आया।

लता की संगीत साधना के संबंध में कुछ लिखने का अधिकार मुझे नहीं है। लता की संगीत साधना भी, ऐसा लगता है, जैसे एकनाथजी की भक्ति साधना के दिखाये मार्ग पर चल रही हो। औरतों के फैशन की तरह फिल्मी संगीत भी नित नये रंग बदलता है। किंतु लता के संगीत की अछूती, परिवर्तनशील शैली के लिए यह बात लागू नहीं होती। गाने की धुन चाहे तार पर नाचनेवाली सर्कस सुंदरी के लिए

हो अथवा सूर्योदय के समय अर्ध्यदान करते हुए 'ऊं तत्सवितुर्वरेण्यं' का जप करने वाले किसी भक्त के लिए हो, लता में विशेषता यह है कि वह अपने आपको उसी रंग में रंग कर, अंतर्निहित भावों को अभिव्यक्त करती है। उदाहरण के लिए कुछ गीतों को ही ले लीजिए, 'ओ सजना बरखा बहार आयी', 'नैना बरसें रिमझिम', 'कहीं दीप जले कहीं दिल', 'ऐ मेरे वतन के लोगों', 'कैसे दिन बीते', 'जाने कैसे सपनों में खो गयीं अंखियां' इत्यादि गीतों को सुनने के बाद लता के संगीत संबंधी गहन अभ्यास, परिश्रम तथा उनमें अंतर्निहित प्रतिभा का वास्तविक परिचय मिलता है।

यह बड़े सौभाग्य की बात है कि लता का संगीत राजमहलों की चहारदीवारी अथवा कलाकारों की महफिल तक ही सीमित नहीं है। उसके गीतों की माधुरी झोंपड़ियों तक पहुंच गयी है। जीवन संघर्ष में थके हुए इंसानों को वह रिझाती है। संध्या के समय जब मैं घूमने निकलता हूं तो सूर्यास्त की बेला में क्षितिज पर बिखरी हुई लालिमा को देख कर हृदय पुलकित हो उठता है और जब थोड़ी देर बाद वापस आता हूं, तो बहुधा देखता हूं कि उस सांझ की लाली को आने वाली रात की अंधेरी चादर ढक लिया करती है। किंतु उस अंधकारमय वातावरण को सुखमय बनाने तथा खोये हुए आनंद की क्षतिपूर्ति के लिए केवल दो चीजों के सहारे रास्ता कट जाता है। एक तो रातरानी की सुगंध और दूसरी बंगलों तथा झोंपड़ियों से निरंतर ध्वनित होने वाली लता की सुरीली आवाज।

□□□

'लता के गले में तो भगवान ने सुर कूट-कूटकर भरे हैं !'

मरहूम बाई रसूलन बाई ख्याल, ठुमरी और टप्पे की प्रसिद्ध गायिका थीं। एक बार वे नागपुर आयीं थीं। मैं उनसे इंटरव्यू लेने गया था। चर्चा में लता मंगेशकर की गायकी को लेकर उनमें और उनके भतीजे में थोड़ी नोक-झोंक हो गयी।

रसूलन बाई का कहना था कि फिल्मों में लता मंगेशकर से बढ़कर कोई गानेवाली नहीं और उनके भतीजे का कहना था कि 'नहीं अम्मी, लता से बढ़कर नूरजहां गाती हैं।' रसूलन बाई बोलीं, 'तुम्हें क्या मालूम, लता की आवाज में जो मिठास है, उसका सानी नहीं।' फिर वे मुझसे बोलीं, 'बेटवा, लता के गले में तो भगवान ने सुर कूट-कूट कर भरे हैं। उसे इतनी बार सुना है। कभी बेताला होते नहीं देखा।'

मगर एक स्थल पर उन्होंने लता मंगेशकर की आलोचना भी की। बोलीं, 'भैया, एक

ठुमरी तो लता ने गारद कर दी । तुमने भी सुनी होगी —'मोरे सैंयाजी उतरेंगे पार, नदिया धीरे बहो ।' यही ठुमरी गया (प्रसिद्ध नर्तकी अभिनेत्री कुमकुम की मां) से सुनो । तब पता लगेगा कि ठुमरी क्या चीज है ।'

लता मंगेशकर की गायन शैली से रसूलन बाई ही नहीं अन्य शीर्षस्थ संगीतज्ञ भी प्रभावित थे ।

लता मंगेशकर के छोटे भाई हृदयनाथ मंगेशकर ने अपने एक संस्मरणात्मक लेख में यह प्रसंग दिया है :

'एक बार जब हम लोग दिल्ली से वापस आ रहे थे तो रास्ते में कार के ट्रांजिस्टर में बड़े गुलाम अली खां साहब का गाना बज रहा था । दीदी अत्यंत दुःखी हो कर कहने लगीं, बीमारी और उम्र अधिक हो जाने के कारण अब खां साहब से गाया नहीं जाता । अरे रेरे कितना बड़ा कलाकार और आज यह कैसी दशा ! दिमाग में सब कुछ है, किंतु गले से निकल नहीं पाता । भगवान न करे किसी को ये दिन देखने पड़ें । हम सब लोग दीदी को रोते देखकर घबरा उठे । डर लगता था कि कहीं रोते-रोते यह बेहोश न हो जाएं । इसी संवेदनशील हृदय के कारण दीदी के स्वरों में दर्द और करुणा अत्यधिक प्रधान हो गयी है ।'

"एक दिन बड़े गुलाम अली खां गा रहे थे । झूम रही थी सारी महफिल उनकी भैरवी सुनकर । उसी समय कहीं पड़ोस से रेडियो पर सुनायी पड़ा —'कदर जाने ना ओ कदर जाने ना' दीदी का गीत लगा था । खां साहब ने स्वरमंडल नीचे रख दिया । बोले, 'माशा अल्लाह ! इसे कहते हैं, 'स्वर' । मैं अब नहीं गाऊंगा ।" महफिल वहीं की वहीं खत्म हो गयी ।

दीदी के स्वर इतने मर्मस्पर्शी होते हैं कि मैंने अपनी आंखों से वृंदावन के एक वयोवृद्ध साधु को दीदी के चरणों की धूल अपने माथे पर लगाते हुए देखा है ।

एक बार मैंने अमीर खां साहब से पूछा, 'खां साहब, दीदी के गाने के बारे में आपकी क्या राय है ?' बहुत देर तक वे यूं ही चुपचाप सोचते बैठे रहे, फिर अचानक भावनावश होकर कहने लगे 'हमने बरसों रियाज किया, खाक किया ! जो बात हम तीन घंटों में पैदा करते हैं, वह लता सिर्फ तीन मिनट में पैदा कर देती है ।"

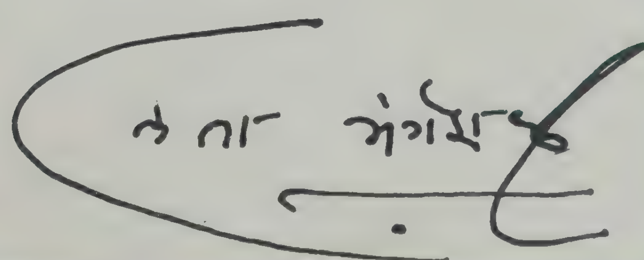
□□□

पेट्रोल के अभाव को देखते हुए जहां अमरीका अपनी बड़ी भारी-भरकम कारों के लिए छोटी-छोटी प्लास्टिक की बैटरियों के निर्माण में लगा है, वहां जापान ने सौर ऊर्जा कार निर्मित कर ली है ।

'साइंस एंड टेक्नोलॉजी' पत्रिका के अनुसार यह कार १०० किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ़्तार से दौड़ सकेगी और इसका वजन भी कुल १५० किलोग्राम होगा । सोलर कारपोरेशन ने अपनी इस कार के इंजन में ऐसे उपकरण लगाये हैं जो सौर ऊर्जा को विद्युतधारा में परिवर्तित कर १.४ किलोवाट बिजली का उत्पादन कर सकते हैं । कार के इंजन में इस केंद्र का नाम फोटोवाल्टिक केंद्र रखा है ।

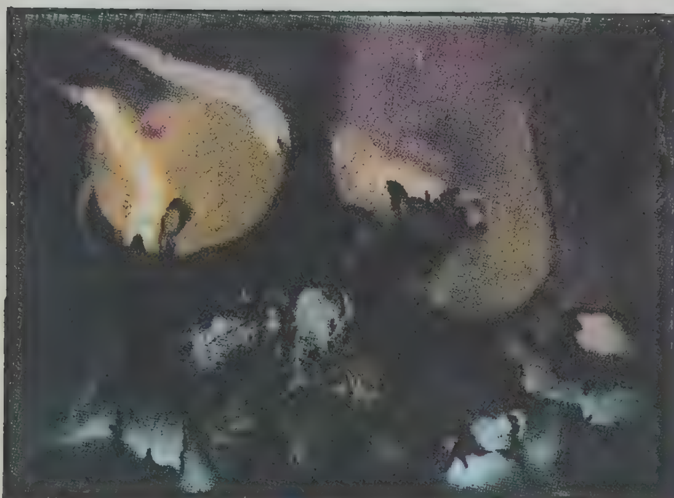


स्वरों की साम्राज्ञी : लता मंगेशकर



छाया : एम. एस. अग्रवाल

देवेन सेठ की 'जल-परियां'







सम्मोहन की भाषा गढ़ते चित्रकार

● राधेश्याम यादव

दिल्ली के चित्रकार समाज में देवेन सेठ एक ऐसे चित्रकार हैं, जिन्होंने चित्रकारिता के प्रति अपनी लगन के द्वारा ही भारतीय कला-जगत में अपना स्थान बनाया है । वे लखनऊ (उ.प्र.) के आर्ट कॉलेज से शिक्षा प्राप्त कर ऐसे समय दिल्ली आये, जब कला के लिए कोई बाजार यहां नहीं था । इसलिए उन्हें बहते पानी में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा । लेकिन उन्होंने कला के मामले में कोई समझौता नहीं किया ।

देवेन सेठ ने अपनी कला के लिए समुद्री जगत की रंग-बिरंगी दुनिया को चुना और एक अर्से से वे पानी की संतह के नीचे के जीवन को तरह-तरह के भाव और भंगिमाओं में चित्रित करते रहे हैं । उन्होंने जिस तरह से पानी की तरलता और समुद्री जीव-जगत की संघर्षशील एवं संतुलित दुनिया को अपने चित्रों में उतारा है, वह सौंदर्य के क्षेत्र में एक अपनी तरह का विशिष्ट अनुभव है— कुछ-कुछ भौतिक और कुछ-कुछ दार्शनिक । वे अपने समुद्र-सतह के नीचे के चित्रों में उस जगत की सक्रिय शांति को विशेष रूप से उजागर करते हैं जो दर्शक को सहअस्तित्व का संदेश देती है । उनके रंग उस दुनिया के वैविध्य और चित्रकार के मनोभावों को उजागर करने में सक्षम हैं और वे दर्शक को उस दुनिया में ले जाते हैं, जहां एक तरह की जिंदगी और दूसरी तरह की जिंदगी में फर्क नहीं रह जाता । दर्शक समुद्री-जगत को ठीक उसी तरह देखने पर मजबूर हो जाता है जिस तरह की वह अपनी दुनिया को देखता है । दरअसल देवेन सेठ जीवन की उस सचाई और ललक को





उजागर करते हैं, जो मनुष्य, मछली तथा पेड़-पौधों में एक-सी ही है। वही एक निश्चित वातावरण में जीने का सघन संघर्ष। वही एक संतुलन लाने की स्थिति, जिसमें जीवन दो क्षण चैन की सांस ले सके। वही जिंदगी को लेकर एक सुनहरा सपना जो 'कल' के लिए हर जीव पालता है। और जीवन की वही परिणति जो संघर्ष की चरमसीमा के बाद होती है।

यों देवेन सेठ की कृतियों में प्रकृति ही नारी तत्त्व है जो तरह-तरह के जीवन को अपने गर्भ में पैदा करती, पालती और फिर सदा के लिए सुला देती है। लेकिन हाल के उनके 'जलपरी' शीर्षक वाले चित्रों में उन्होंने प्रकृति को अर्ध मानवाकृतियां को लाकर उसे कुछ ज्यादा स्पष्ट कर दिया है। कटि से ऊपर की नारी आकृति, सम्मोहक उरोज, जलपरियों की लालित्यपूर्ण भंगिमाएं (कुछ -कुछ अजंता के भित्तिचित्रों में अंकित सुंदरियों की याद दिलाती हुई और कुछ गोगां-फ्रांसीसी चित्रकार के ताहिती द्वीप की सुंदरियों के चित्रों का आभास देती हुए) और भौतिक आकृतियों की जल की तरह की तरलता दर्शक को प्रकृति के सम्मोहन और सृजनात्मकता के सामने लाकर खड़ा कर देती है। देवेन सेठ दर्शक के मानस पर यह अंकित कर देते हैं कि सौंदर्य के बिना कशिश नहीं होती और कशिश के बिना (जिसे पश्चिमी दर्शनशास्त्र में तनाव कहा जा सकता है) सृजन नहीं होता। "सौंदर्य और सृजन का साथ है!" यही देवेन सेठ के तैल-चित्रों का सुखद संदेश दर्शक के मानस की गहराइयों में उतरता है।

उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में जन्मे देवेन ने कला के सुनिश्चित राजमार्ग से अपनी यात्रा आरंभ की। १९६४ में लखनऊ गवर्नमेंट आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स कॉलेज से डिप्लोमा करने



के बाद १९७६ में दिल्ली के कालेज आफ आर्ट्स से ललितकलाओं में डिप्लोमा हासिल किया और इस बीच (१९६४-से-१९७६ तक) बराबर विभिन्न राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे।

देवेन सेठ को उनकी कला की उत्कृष्टता के लिए अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

शैली की दृष्टि से देखा जाए तो देवेन सेठ आधुनिक शैली के चित्रकार हैं लेकिन अमूर्त विधा की तरफ वे नहीं जाते। उनकी शैली अपनी निजी है और उनके चित्रों का गठन संतुलित और सुदृढ़ होता है। अर्थहीन जगह वे नहीं छोड़ते तथा आकारों या रंगों के बीच के रिश्ते असंगत नहीं होते। गठन और भार-संतुलन उनके चित्रों में देखते ही बनता है। वे काफी जिंदादिल रंग इस्तेमाल करने के आदी हैं। रंग की ऊर्जा और भाव शक्ति का वे पूरा-पूरा इस्तेमाल करते हैं। उनके चित्रों में हमेशा एक 'मुख्य आकर्षण केंद्र' होता है जिसके आसपास बाकी दुनिया रची गयी होती है। इस मुख्य आकर्षण केंद्र से दर्शक की आंख बाकी क्षेत्र का भ्रमण करती हुई बार-बार उसी केंद्र पर लौटकर आती है। चित्र की संरचना में संरचना के मूलभूत सिद्धांतों का पालन करना इस प्रकार देवेन सेठ के चित्रों की विशेषता है।

सौंदर्य अभिरुचि

रंगों के मामले में देवेन सेठ कुछ सौंदर्यशास्त्र के आधार पर ही चलते नजर आते हैं। आंखों को प्रिय लगनेवाले, मोहक रंग ही वे इस्तेमाल करते हैं और उनकी रंग योजना में काफी अच्छा समन्वय होता है विभिन्न रंगों का— इतना कि कहीं भी दो रंग आंख को गलत स्वर की तरह खटकते नहीं। दर्शक को उनकी परस्परता स्वाभाविक लगती है और वे एक-दूसरे की शक्ति को बढ़ाते लगते हैं। ऐसा संतुलन बैठाना सहज नहीं है। लेकिन देवेन सेठ रंगों के मिश्रण और उनका एक-दूसरे से संबंध बैठाने में दक्ष चित्रकार हैं। और चूंकि अभी युवा हैं, इसलिए अपनी चित्रकला को नयी ऊंचाइयां देने, नये आयाम देने के लिए उनके पास काफी समय है।

— द्वारा श्री जयसिंह,
३५/४७३, हिम्मतपुरी, दिल्ली-११००९१

जूलियस सीजर के विरुद्ध उसके शत्रु षडयंत्र करने में लगे थे। उसके शुभचिंतकों तथा मित्रों ने जूलियस को सलाह दी, "आप अपने अंगरक्षक सिपाहियों के बिना अकेले खाली हाथ घूमने अब न निकला करें।"

जूलियस सीजर मुसकराया और बोला, "कोई अमर होकर संसार में नहीं आता, सबको मरना ही पड़ता है। किंतु मुझे एक ही बार मरना है, मृत्यु से भयभीत रहने वाले तो पल-पल मृत्यु की पीड़ा भोगते रहते हैं।"

कहानी

बदला हुआ रिश्ता

● सुखबीर

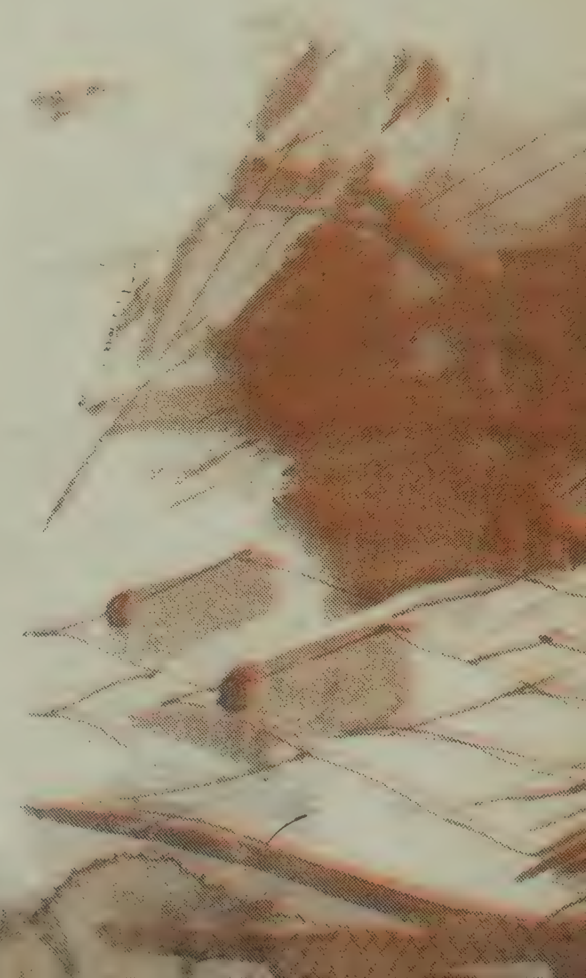
मेटरीमोनियल के सिलसिले में बहुत-से पत्र आ चुके थे । अलका एक दिन उन्हें अपने सामने रखकर बैठ गयी । उनमें से कुछ पत्र चुनकर उसे अपने पिताजी को दिखाने थे और फिर उनके बारे में पिताजी की ओर से खुद ही पत्र-व्यवहार करना था ।

रोज आनेवाले उन पत्रों को पढ़ना, उनके बारे में अपनी राय देना और प्रत्येक लड़के और उसके घर-परिवार के बारे में बातें करना—अलका के लिए एक नया शगल बन गया था । वह रोज नये आनेवाले पत्रों के बारे में अपनी मां या पड़ोस में रहनेवाली अपनी एक सहेली से बातें करती, मजाक उड़ाती, और उनकी लिखावट में वह कुछ देखने-पढ़ने का यत्न करती, जो उनमें लिखा हुआ न होता ।

रोज कई पत्र आते रहे । अलका उन पर अपने 'रिमार्क्स' लिखती रही और उन्हें एक फाइल में रखती गयी । कुछ दिनों के बाद पत्र आने बंद हो गये, तो पत्र-व्यवहार करने के लिए वह उनमें से कुछ पत्र चुनने के लिए बैठी ।

मेटरीमोनियल दिये जाने के पहले कुछेक जगह अलका के रिश्ते की बात चली थी, लेकिन कहीं भी बात सिरे नहीं चढ़ सकी थी । फिर, रिश्ते की बात होनी ही बंद हो गयी थी ।

पत्रों को सरसरी नजर से देखते और उन पर लिखी अपनी टीका-टिप्पणी पढ़ते हुए अलका को बड़ा मजा आ रहा था । आखिर, सभी पत्रों में से उसने आठ पत्र चुने, जो उसे किसी हद तक ठीक लगे थे, यद्यपि वह उनसे पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी । उनमें से कोई भी पत्र उन पत्रों के स्तर का नहीं था, जो उसने कुछ अरसा पहले एक उपन्यास में पढ़े थे । वह उपन्यास था ही पत्रों में लिखा हुआ । उसके पांच-छह पात्रों के कई किस्म के पत्र थे, विभिन्न मनोभावों को अभिव्यक्त करनेवाले, और लेखक के कथनानुसार, उन पत्रों में प्रत्येक पात्र नंगा होकर



सामने आता था । अलका ने दो बार वह उपन्यास पढ़ा था, और उसके पत्रों से वह इतनी प्रभावित हुई थी कि एक डायरी लेकर खुद उस क़िस्म के पत्र लिखने लगी थी—एक कल्पित लड़की और लड़के की ओर से एक-दूसरे के जवाब में ।

उन आठ पत्रों के आधार पर अलका ने बात आगे बढ़ायी, चार-पांच महीने पत्र-व्यवहार करती रही, लेकिन कहीं भी बात नहीं बनी । आखिर, उसने हंस दिया, जैसे उसे पहले से पता हो कि बात नहीं बनेगी ।

मेटरीमोनियल के सिलसिले में अभी भी दूसरे-चौथे कोई पत्र आ जाता था । एक दिन ऐसा ही एक पत्र आया, तो अलका ने सरसरी नजर से उसकी ओर देखा, लेकिन फिर उसके पते पर से नजर न हटा सकी । वह हलके रंग का लिफाफा था, जिस पर हरे रंग की स्याही से बहुत सुंदर अक्षरों में पता लिखा हुआ था । उस लिखावट के पीछे अलका ने एक सुंदर, सुसंस्कृत व्यक्तित्व की कल्पना की । वह देर तक पते की लिखावट को देखती रही और अपनी आदत के अनुसार अनुमान लगाने लगी कि पत्र में क्या लिखा होगा । लिफाफे को खोलने की उसे उत्सुकता नहीं थी । इस तरह देखने में भी एक आनंद था । भला किसका खत होगा ? उसने सोचा । खुद लड़के का, या उसके पिता का ? लड़के का हुआ, तो कहना ही क्या है ! पिता का हुआ, तो भी अच्छी बात है । वैसे, लड़के का नहीं हो सकता, क्योंकि पते की लिखावट में न अक्षरों को खासतौर से बना-संवारकर लिखने की कोशिश है, न हाथ का कंपन ।



आखिर, उसकी शादी हो गयी और वह देवराज के परिवार का एक अंग बन गयी । पति को देखकर वह फूली नहीं समायी । उसे लगा, उसने जैसे सब कुछ पा लिया था । पति इकहरे शरीर का, सुंदर नाक-नक्शोंवाला, बढ़िया कपड़े पहनने का शौकीन था । वह बहुत हद तक अपने पिता से मिलता-जुलता था ।

आखिर, उसने कैंची से लिफाफे को एक तरफ से काटकर उसमें से पत्र निकाला और जब पढ़ा तो उसका दिल किसी अलौकिक खुशी से भर गया । लिफाफे के रंग का ही मोटा कागज था वह, जिसके सिरे पर हरे रंग में 'देवराज' नाम और एक लंबी पंक्ति में पता छपा हुआ था । वह लड़के के पिता का पत्र था, जिसमें साफ, सुंदर, स्वाभाविक किस्म की लयपूर्ण लिखावट थी । वह रस्मी किस्म का पत्र होने पर भी रवायती ढंग से लिखा हुआ नहीं था । उसमें से हलका-सा अपनत्व झलकता था, जैसे उसे लिखनेवाले का व्यक्तित्व इतना मधुर और स्निग्ध हो कि वह अपनत्व के बिना बात कर ही न सकता हो । कहीं भी कोई फालतू वाक्य नहीं था । हर बात सहज, स्वाभाविक नपे-तुले शब्दों में लिखी हुई थी ।

यहां बात बनकर ही रहेगी, अलका ने सोचा, और उसके मन में खुशी और डर का एक मिला-जुला भाव जागा ।

पत्र में देवराज ने अपने पुत्र के बारे में लिखा था कि वह दरमयाने कद-काठ का, चौबीस साल का सुंदर, हंसमुख युवक है, जो पेशेवर फोटोग्राफर होने के साथ-साथ चित्रकला का भी शौक रखता है । वह उसका इकलौता पुत्र है और अपना स्टुडियो चला रहा है । कुछ समय के बाद वह फोटोग्राफी के सिलसिले में विदेश का दौरा करनेवाला है । उसकी मां की बहुत लालसा है कि कोई मीठे स्वभाव की अच्छी, सुशील लड़की उसकी पुत्रवधू बनकर उसकी दोनों बेटियों की कमी पूरी करे, जो कि ब्याही जा चुकी हैं । देवराज ने पुत्र के अलावा अपने बारे में भी कुछ जानकारी दी थी कि वह खुद भी फोटोग्राफर है, और लेखक भी—खासकर फोटोग्राफी के बारे में विदेशी पत्रिकाओं में लेख लिखा करता है । पिछले कुछ सालों से वह एक पुस्तक पर काम कर रहा है, जिसमें कैमरे की आंख से हिंदुस्तान के लोगों की विभिन्नता में समायी हुई एकता को देखा गया होगा ।

ऐसे पत्र का जवाब लिखना अलका के लिए आसान काम नहीं था । वह ऐसा पत्र लिखना चाहती थी, जो देवराज के पत्र के स्तर पर आ सके, और लड़के की मां हर हालत में उसे अपनी पुत्र-वधू बनाने के लिए लालायित हो उठे ।

उसके पत्र के जवाब में देवराज का पत्र आया, जिसमें कुछ और बातों का विवरण था और साथ में उसके पुत्र की फोटो भी । उसने अलका और उसके परिवार के बारे में भी कई बातों का विवरण मांगा था ।

फोटो देखकर अलका मोहित हो गयी, जो

वह देवराज की कला का मुंह बोलता सबूत था। बेटे की सारी शखसियत साकार करके रख दी है, अलका ने मन में कहा। वह बात जो उसके लिखने में है, वही इस फोटो में—फोटोग्राफी की कला में भी है, या कहना चाहिए कि उसकी फोटोग्राफी की कला उसके लिखने में भी है।

तीसरे पत्र में देवराज ने लिखा कि वह उसके पिता को मिलने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता है। सो, वे उसके यहां आने का कष्ट करें और उसके पुत्र को भी देख जाएं। अगर उन्हें सब कुछ परवान हुआ तो फिर वह अपनी पत्नी के साथ उनके घर आने की खुशी लेना चाहेगा, और अगर भाग्य ने साथ दिया तो दोनों परिवार एक सूत्र में बंध जाएंगे।

***

अलका का पिता देवराज को मिल आया, उसके पुत्र और घर-बार को देख आया। वह बहुत ही अपनत्व और खुशी का एहसास लेकर लौटा। 'सभी कुछ बढ़िया था', उसने बताया। 'और देवराज तो हीरा है। ऐसे आदमी कभी-कभार ही देखने में आते हैं। वह बहुत ही प्यार से मिला और उसने मेरी फोटो भी खींची।...'

वह फोटो देखकर अलका की आंखें गीली हो गयीं। फोटो में उसके पिता का साधारण-सा चेहरा, उसके अंदरूनी गुणों के कारण साधारण-सा नहीं लग रहा था। उसकी आंखों में से ईमानदारी और नम्रता झलकती थी, और उसके होंठ ऐसे थे, जैसे उनमें से कभी कोई कड़वी या तलख बात न निकली हो।

तब तो देवराज मेरी भी फोटो खींचेगा,

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, अलका को अपने पति में एक खोखलापन-सा नजर आने लगा। उसे लगता कि उसकी सारी अकड़, जरूरत से ज्यादा बन-ठनकर रहना, कई-कई कैमरे रखना और फोटोग्राफी के बारे में बढ़-चढ़कर बेसिर-पैर की बातें करना—यह सब उस खोखलेपन की ही पैदावार थी।

अलका ने सोचा। एक नहीं, कई। और हर फोटो अपने आप में उसकी कला का शाहकार होगी।

जिस दिन देवराज को उनके घर आना था, अलका का दिल धड़क रहा था। यद्यपि वह जानती थी कि देवराज उस जैसी सुंदर लड़की को नापसंद नहीं कर सकेगा—खासकर इतने अच्छे स्वभाव और कलात्मक दृष्टिवाला आदमी—फिर भी उसके दिल में एक डर समाया हुआ था। वास्तव में, वह अपने ख्यालों में खुद को देवराज के घर-परिवार के साथ इस तरह जोड़ चुकी थी कि उससे टूटने की बात उसे भयभीत कर रही थी।

देवराज अकेला ही आया। अलका ने उसे देखा, तो वह हूबहू अपने पुत्र की फोटो जैसा लगा। फिर, उसके साथ कुछ ही बातें करने के बाद अलका का सारा डर जाता रहा और उसे लगा, जैसे एक लंबे अरसे से उसे वह जानती हो। देवराज ने भी कहा, ''तुम्हें मैं सड़क या बाजार में कहीं देखता, तो झट पहचान जाता। तुम्हारे खतों से—हां, मैं जान गया था कि

अपने पिताजी की तरफ से तुम्हीं खत लिखा करती हो—तुम्हारा जो चेहरा मेरे सामने आया था, वह बिलकुल ऐसा ही था ।''

स्वाभाविक था कि देवराज अलका की फोटो खींचता । उसने उसके माता-पिता की भी एक इकट्ठी फोटो खींची । एक फोटो उन तीनों की खींची—परिवार के रूप में । अलका की उसने छह फोटो खींचीं । आखिर, उसने कहा, ''वापस जाने पर इन्हें अपने स्टूडियो में ही तैयार करवा कर भेजूंगा ।''

दोनों परिवारों को सब कुछ रास आ गया था । रिश्ते की बात पक्की हो गयी, शादी भी लगभग छह महीने में कर देने का फैसला हो गया ।

देवराज ने वापस जाकर फोटो भेजी, और साथ में दो पत्र लिखे—एक अलका के पिता के नाम, दूसरा अलका के नाम । अलका को उसने लिखा कि वह तोहफे के तौर पर उसे एक कैमरा और साथ में फोटोग्राफी के बारे में एक पुस्तक भेज रहा है, और आशा करता है कि वह फोटोग्राफी की 'हॉबी' शुरू करेगी । हो सकता है, इस हॉबी के जरिये उसके अंदर छिपी हुई कला रूपमान हो और एक दिन वह कोई करिश्मा कर दिखाये ।

अलका ने फोटोग्राफी का नया शौक पालना शुरू किया । वह फोटो खींचकर देवराज को भेज देती । वे उसके स्टूडियो में धुलतीं, बनती, और वापस भेज दी जातीं । साथ में देवराज की राय और सुझाव होते । कुछ अर्से के बाद अलका खुद फोटो धोने और बनाने लगी । इस दौरान एक बार देवराज दिल्ली जा रहा था कि रास्ते में उनके शहर कुछ घंटों के लिए उतर गया । अलका उसे मिलकर बेहद खुश हुई । फोटोग्राफी संबंधी बहुत-सी बातें हुईं । देवराज ने उसे एक साधारण फोटो को 'कंपोज' करके कलात्मक फोटो में बदलने का हुनर बताया । फिर, उसने वे बहुत-सी फोटो भी दिखायीं, जो उसने अपनी पुस्तक के लिए खींची थीं । उनमें से हर एक फोटो अलका को शाहकार प्रतीत हुई । और उसके दिल में आया कि जल्दी से जल्दी शादी हो जाए, ताकि वह देवराज और अपने होनेवाले पति के साथ दिन-रात फोटोग्राफी के बारे में बातें कर सके । उनके बढ़िया स्टुडियो में काम कर सके, और वह सब कुछ सीख सके, जो देवराज जैसे महान फोटोग्राफर से सीखा जा सकता है ।

***

देवराज अगले दिन दिल्ली चला गया ।

अलका सोचती कि शादी होने के पहले ही उस घर का दरवाजा खुल गया था, जिसमें उसे दाखिल होना था । देवराज के जरिए वह उसके परिवार के बहुत निकट हो गयी थी । यद्यपि, उसने उस परिवार के बाकी व्यक्तियों को देखा नहीं था, फिर भी उनके बारे में बहुत कुछ जान गयी थी । अपने होनेवाले पति को वह देवराज में हूबहू देख सकती थी । और देवराज के बारे में बहुत कुछ जानकर भी जैसे अजनबी थी । उसका बहुत बड़ा व्यक्तित्व था—बहुत प्यारा और बहुत गहरा ।

पत्रों का सिलसिला चलता रहा । उन पत्रों के जरिये अलका ने फोटोग्राफी के अलावा और भी कई चीजों के बारे में बहुत कुछ सीखा । वह कभी देवराज के पुराने पत्र लेकर पढ़ती । फिर, वह अपने पत्र पढ़ने लगती, जिनकी कॉपियां

उसने संभालकर रखी हुई थीं । भला किसी लड़की की जिंदगी में ऐसा तजरुबा भी आया होगा ? वह सोचती और अपने सौभाग्य को सराहती ।

आखिर, उसकी शादी हो गयी और वह देवराज के परिवार का एक अंग बन गयी । पति को देखकर वह फूली नहीं समायी । उसे लगा, उसने जैसे सब कुछ पा लिया था । पति इकहरे शरीर का, सुंदर नाक-नक्शोंवाला, बढ़िया कपड़े पहनने का शौकीन था । वह बहुत हद तक अपने पिता से मिलता-जुलता था । उसे देखकर अलका को एक-दो बार ऐसे भी महसूस हुआ, जैसे खुद देवराज अपनी जवानी की उम्र में उसके सामने आकर खड़ा हो गया हो । वैसे भी, देवराज अपनी छियालीस-सैंतालीस साल की उम्र से कम उम्र का लगता था । और उसकी हरकतों में ऐसी लचक और स्फूर्ति थी कि वह नौजवान होने का प्रभाव डालता था ।

अलका ससुराल में एक नया जीवन जीने लगी । वहां उसकी कुछ फोटो उसके पति ने और कुछ देवराज ने खींची । उन फोटुओं में वह खुद को देखती, तो सोचती, कितने विभिन्न भावों को जन्म दे सकता है मेरा चेहरा ! और कैमरे की आंख है कि उसने उन भावों में से गुजर रहे मेरे चेहरे को विशेष कोणों से पकड़ लिया है । लेकिन क्या यह सिर्फ कैमरे की ही आंख है ? नहीं, उसके पीछे एक और भी आंख है—देवराज की आंख, मेरे पति की आंख । और इन दोनों आंखों में कलात्मक दृष्टिकोण से कितना बड़ा अंतर है !

***

अलका घर के काम-काज से फुरसत पाकर रोज नियमित रूप से दो घंटों के लिए स्टुडियो जाती और फोटोग्राफी संबंधी प्रयोग करती । कुछ बातें वह अपने पति से सीखती, कुछ देवराज से । कुछ ही अरसे में उसने महसूस किया कि फोटोग्राफी में उसके पति का अपने पिता जैसा शौक नहीं था—खासकर कलात्मक दृष्टिकोण से । उसका ज्यादा जोर अपने स्टुडियो को कामयाब बनाने पर था । वह उसे बिलकुल व्यापारिक ढंग से चला रहा था और काफी पैसे कमा रहा था । वह फोटोग्राफी को बुनियादी तौर पर 'कमर्शियल आर्ट' मानता था । अलका ने महसूस किया कि उसमें जो कलात्मक दृष्टिकोण की कमी थी, उसी के कारण वह फोटोग्राफी के व्यापारिक पहलू पर इतना जोर दे रहा था । इसी कमी के कारण उसमें किसी हद तक अहंकार भी था । वह खुद को बहुत कुछ समझता था और फोटोग्राफी के बारे में बड़े अधिकारपूर्ण ढंग से बातें करता था । अलका कभी बहस करने लगती तो वह टाल देता, जैसे किसी गंभीर समस्या पर बात करते समय बच्चे को टाल दिया जाता है । अलका को बुरा लगता ।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, अलका को अपने पति में एक खोखलापन-सा नजर आने लगा । उसे लगता कि उसकी सारी अकड़, जरूरत से ज्यादा बन-ठनकर रहना, कई-कई कैमरे रखना, और फोटोग्राफी के बारे में बढ़-चढ़कर बेसिर-पैर की बातें करना—यह सब उस खोखलेपन की ही पैदावार थी । वास्तव में, वह एक दुकानदार था, जो फोटोग्राफी का पेशा करता था और उस पेशे में ज्यादा-से-ज्यादा पैसे कमाना चाहता था । यह सब कुछ करते हुए वह अपने पिता को किसी हद तक नाखुश भी करता था । तब अलका को

पिता-पुत्र के बीच की उस दूरी का कारण समझ में आया, जो वह कई मौकों पर उनके बीच में महसूस कर चुकी थी। फिर, एक बार जब उसने स्टुडियो में एक लिफाफे में पड़ी बहुत-सी न्यूड फोटो देखीं, तो वह सब कुछ समझ गयी। वह लिफाफा उसका पति शायद जल्दी में अपने साथ ले जाना भूल गया था, या गलती से उस अलमारी में रख नहीं पाया था, जो हमेशा बंद रहती थी। तब उन नंगी औरतों की फोटुओं को देखकर अलका जान गयी कि उस अलमारी में और क्या बंद होगा। उस अलमारी की तरह ही उसके पति की जिंदगी का भी एक हिस्सा उसके सामने कभी नहीं खुला था और रहस्य भरा लगा करता था। वे न्यूड फोटो अलका ने एक नजर देखकर ही रख दीं और उसी क्षण वहां से बाहर आ गयी। उसे लगा कि उन नंगी औरतों की बजाय उसने अपने पति को नंगे रूप में देखा है, और उसका दिल धक्-धक् करने लगा। फिर, वह स्टुडियो में भी न रह सकी और सीधी घर चली गयी।

अपने वैवाहिक जीवन का रूप अलका के सामने पूरी तरह उभर आया था। अब उसका कोई पहलू छिपा हुआ या धुंधला नहीं था। उसे अपना पति एक आम-सा फोटोग्राफर प्रतीत होने लगा, जो स्टुडियो चला रहा था और अपने उस पेशे में गुप्त ढंग से कुछ गंदी चीजों का भी व्यापार कर रहा था।

जिस बहुत बड़े फोटोग्राफर के संग जीवन बिताने का अलका ने सपना देखा था, वह फोटोग्राफर उसे अपने पति के बजाय देवराज दिखायी देने लगा। और हर बार पति की जगह ससुर को देखकर वह कांप उठती।

—बी-१९, सन एंड सी
बारसोवा रोड, बंबई-६१

अपनी जान बचाने के लिए एक मेमना बेतहाशा भागा जा रहा था जिसका पीछा एक भेड़िया कर रहा था। दोनों की नजदीकी इतनी रह गयी थी कि लग रहा था कि मेमना अब भेड़िये का ग्रास बनने ही वाला है। इसी समय दो तीरंदाज वहां आ गये जिन्होंने भेड़िये को मार कर मेमने को बचाने के लिए अपने तीर निकाल लिये।

एक तीरंदाज ने दूसरे से कहा, ''हमें भेड़िये की आंखों पर तीर मारना चाहिए, चलो मैं बायीं आंख को निशाना बनाता हूं, तुम दाहिनी को बनाओ। इस तरह उसे अंधा करके हम मेमने को बचा लेंगे।''

''नहीं,'' दूसरा बोला, ''हम उसे लंगड़ा करके मेमने को बचा सकते हैं, इसलिए तुम बायें पैर को तोड़ो और मैं दाहिने को तोड़ता हूं।''

''नहीं, नहीं,'' अब पहला फिर बोला, ''इससे भी बेहतर तरकीब ! हम दोनों इसके मुंह को छेद देते हैं। जब मुंह ही नहीं रहेगा तब यह खाएगा कैसे ?'' लेकिन यह क्या इसी समय जब भेड़िया अपने दांत मेमने के शरीर में गड़ाने ही वाला था कि कहीं से एक तीर सनसनाता हुआ आया जिसने भेड़िये के सिर को छेद दिया। भेड़िया मर गया और मेमना बच गया। इन दोनों ने तब ही अपने कंधों पर एक हाथ का स्पर्श महसूस किया।

वह बोला, ''यदि तुम इसी तरह बहस करते रहते तो भेड़िया अब तक मेमने को खा चुका होता। जब जल्दी निर्णय की आवश्यकता होती है तब इस तरह की बहस बेकार होती है।''


आख़िर बेमतलब कैसे व्यर्थ होती हैं
कैलोरीज़
विनय राय
अखबार का मुख-पृष्ठ पढ़ने पर
१००-२०० कैलोरीज़
हे प्रभु!.. खून, डकैती, टैक्स ... से मेरी रक्षा करना।
दफ्तर के लिए देर होने पर
१५०-२५० कैलोरीज़
अजी! खाना तो लेते जाओ
भीड़-भाड़ वाली सड़क पार करने पर
२००-३०० कैलोरीज़
अबे मरेगा क्या!!
डी.टी.सी की बसों में यात्रा करने पर
४००-५०० कैलोरीज़
घर देर से लौटने पर
३००-३५० कैलोरीज़
अब मुँह से कुछ बोलो भी।
अभी तो याद था..



दुश्मनी की वसूली

कहते हैं, 'दोस्ती का पहला रूप जितना स्वर्गीय होता है, उतना ही प्रलयंकारी होता है, इसका दूसरा रूप । बिल्कुल इसी दौर से गुजरी मेरी और पटेल की दोस्ती ।

तब मैं काफी छोटा था और उस वीरान नगर में बिल्कुल ही अकेला । नगर की सारी चीजें मुझे नफरतों से भरी मालूम पड़ती थीं और हर पल मेरे दिमाग के धुंधलके में सिर्फ परिवार की छाया ही दिखायी पड़ती थी । अपने स्वर्गीय ग्रामीण जीवन की याद चारों वक्त मेरी यादों के चिराग को प्रज्वलित करती रहती थी । ऐसे ही समय में मेरी मुलाकात पटेल नामक एक हमउम्र लड़के से हुई । कुछ ही दिनों में यह मुलाकात दोस्ती में बदल गयी और देखते-ही-देखते हम दोनों की दोस्ती सबके सर चढ़कर बोलने लगी । ऐसा मालूम पड़ता था कि श्रीकृष्ण और सुदामा की मधुर जोड़ी के पश्चात यही एकमात्र वैसी जोड़ी है, इस पृथ्वी पर । स्कूल भी जाते तो साथ-साथ, खाना भी खाते तो साथ-साथ और यहां तक कि खेलते भी तो साथ-साथ, अर्थात किसी एक के बिना सारा कार्यक्रम ही अधूरा मालूम पड़ता था ।

लेकिन जैसा कि मैं बहुत पहले ही कह चुका हूं कि दोस्ती का दूसरा रूप बड़ा ही कट्टरपन लिये होता है, वही स्थिति हम दोनों की दोस्ती के जीवन में भी अंततः आयी । हुआ यों कि एक दिन खेलते वक्त हम दोनों दोस्त बातों में उलझ गये और यहीं से शुरू हो गया हमारी दोस्ती का नाटकीय दौर । तत्पश्चात जब कभी भी हम दोनों मिलते, तो बिल्कुल दाल और नमक की तरह । हर समय एक-दूसरे को नीचा दिखलाने की ही तरकीबें सोची जातीं । पूरी तरह से प्रेमचंद के पात्रों अलगु चौधरी और जुम्मन शेख— की याद दिलाती थी यह जोड़ी, और ऐसा प्रतीत होता था इन पात्रों की भांति ही हम दोनों की जोड़ी भी बालू की भीत पर खड़ी थी, जो कि हवा के एक झोंके को सहन न कर पायी ।

इन्हीं दिनों पटेल की लड़ाई एक लड़के से हो गयी । मैं उस मल्लयुद्ध का आधोपांत देखनेवाला एक स्थायी दर्शक था । अतएव, युद्धरत लड़कों के अभिभावक ने मुझे ही इस युद्ध का सही मुजरिम बतलाने को कहा, ताकि दूध का दूध और पानी का पानी अलग किया जा सके । मैंने इस स्वर्णिम अवसर को गवाना उचित न समझा, और यह जानते हुए भी कि पटेल इस लड़ाई का असली मुजरिम नहीं है, मैंने अपना फैसला उसके विरुद्ध सुनाया । और, इस प्रकार उसे सजा झेलनी पड़ी । इस तरह मैंने अपनी दुश्मनी की जबरदस्त वसूली तो कर ली । लेकिन वस्तुतः मेरा निर्णय पक्षपात के रंगों से सराबोर था और सच्चाई को पूरी तरह से

तख्ते पर रखता था । यह घटना आज तक मेरे दिमाग में दस्तक देती है और जब कभी भी इसकी याद मुझे आती है, पीड़ा के अनेकों तार मेरे दिमाग में झंकृत हो जाते हैं, और चेहरा शरम से ढका मालूम पड़ता है ।

● **मनोज कुमार चौरसिया**
— अंगरेजी (ऑनर्स)
मगध-विश्वविद्यालय, बोधगया, गया, बिहार

चुनाव

रह-रहकर आज ये याद मस्तिष्क पटल पर दस्तक दे न जाने क्यों कहीं दूर तक झकझोरती जा रही है । एक बार मैं एक साक्षात्कार के लिए एक होटल में गया । दवाई-विक्रेता के पद के लिए मैंने आवेदन-पत्र भरा था, तथा उसका ही बुलावा था यह । वहां मेरे अतिरिक्त लगभग चालीस और उम्मीदवार थे । आपस में अधिकतर बेरोजगार बेजार और निरुत्साहित अभी हम अपनी-अपनी व्यथा-कथा सुनने-सुनाने में व्यस्त थे कि पता चला, कंपनी की ओर से भेजा गया व्यक्ति शायद आज न आकर कल आनेवाला है । हम सब उठे और बाहर खिली धूप में, एक नजदीक के ढाबे में, चाय की चुस्की ले सुस्ताने को ज्यों ही आकर बैठे, तो एक सज्जन का सामना हो गया । वह व्यक्ति अधेड़ उम्र का था । जानकारी पाकर वह समझाने लगा, ''हमें निराश, निष्कर्म होकर सभी कुछ भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिए। मैं तुम्हें घरेलू लघु-उद्योग— जैसे मोमबत्ती, अगरबत्ती, साबुन अथवा बाल-पाईंट रिफल बनाने की सलाह देता हूं, यदि तुम में से कोई चाहे, तो उसे व्यापार की अन्य आवश्यकताओं में भी सहायता कर सकता हूं ।'' एक मित्र जो बहुत आर्थिक कठिनाई के दौर से गुजर रहा था, उसने 'हां' भर दी तथा हम वहां से अपने घर लौट गये । दो वर्ष गुजर चुके, मुझे तकनीकी सहायक का पद अनुसंधान संस्थान में मिल गया । एक दिन बस में दोबारा उस मित्र से मिलन हुआ । आज उसकी दुकान है । वह मुझसे बेहतर हालत में है । सोचता हूं कभी भी किसी कार्य को छोटा-बड़ा सोचकर त्याग देना उचित नहीं, न जाने हमारे भाग्य-द्वार का खुलना कैसे लिखा है... ?

● **रवीन्द्र ऋषि 'रवि'**
— के. पी./२२६ मौर्य एन्क्लेव,
दिल्ली-११००३४

करंट से कैसे बचें

अब बिजली के करंट से डरने या बचने की आवश्यकता नहीं रहेगी । हमारे देश की ही एक इलैक्ट्रिकल कंपनी ने ऐसे उपकरण का निर्माण कर लिया जो यूरोप में काफी समय से प्रचलित है । इस उपकरण का नाम है 'सेफ एंड सुपर ट्रिप' । यह उपकरण बिजली के नंगे तार छू जाने पर करंट की सप्लाई को तुरंत ही काट देता है और व्यक्ति करंट के झटके से बच जाता है ।

इनके पुरखे मुगल बादशाह थे

हबीब खान

मुगलिया सल्तनत के आखिरी बादशाह बहादुरशाह जफर द्वितीय, जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपनी आंखों में स्वप्न संजोये ही रंगून की जेल में दम तोड़ दिया था, आज उनके छर-पोते मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन दिल्ली की तंग गलियों के एक महान में अपने परिवार के साथ अस्सी वर्ष की उम्र होने के बावजूद दरिद्रता से संघर्ष करते हुए भारत सरकार से इनसाफ पाने की उम्मीद किये बैठे हैं। बहादुरशाह जफर की तसवीर अपने सीने से लगाये और अपने अंधेरे मकान में चिपकाये हुए अपने घर पहुंचे हर आगंतुक को वह अपने पुरखों की कुरबानी की कथा, जिन्होंने भारत से अंगरेजों को भगाने के लिए अंतिम दम तक संघर्ष किया था, आज भी बड़े फख्र से सुनाते हैं।



जिन मुगल सम्राटों ने कभी इस भारत पर लगभग तीन सौ बत्तीस वर्षों तक शासन किया और इस दरम्यान इस देश को कई बेजोड़ स्थापत्य कला एवं महलों व मसजिदों के नमूने प्रदान किये, वे आज भी कई सौ वर्ष बीत जाने के बावजूद ज्यों-की-त्यों उनकी यादों को तरो-ताजा बनाये हुए हैं। यह एक कितनी अफसोस की बात है कि आज उन्हीं मुगल सल्तनत के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफर (द्वितीय) के वंशज मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन पुरानी दिल्ली इलाके के चूड़ीवालान की एक तंग गली

के अंधेरे कमरे में अपने परिवार के साथ गरीबी की जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं ।

भारत की आजादी के लिए जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में शांतिपूर्ण ढंग एवं अहिंसक रूप से अंगरेजों के खिलाफ आंदोलन में भाग लिया था और जेल गये थे, उन्हें तो आज आजादी मिलने के बाद भारत सरकार की ओर से पेंशन भी दी जाती है, मगर मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन जिनके परदादा मिर्जा जहीरउद्दीन उर्फ मिर्जा मुगल सन १८५७ में बागियों के कमांडर-इन-चीफ थे और वह अंगरेजों से लड़े थे, फटेहाल जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं— मगर केंद्रीय सरकार ने कभी भी उन्हें पेंशन दिये जाने के विषय में नहीं सोचा ।

सिर्फ वह बचे रह गये

मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन के पिता मिर्जा कादिरउद्दीन जब आठ वर्ष के थे, १८५७ के विद्रोह के समय उन्हें किसी बफादार ने छिपा दिया था, ताकि अंगरेजों के कोप भाजन का शिकार यह बच्चा भी न हो जाए । इसी के पिता मिर्जा जहीर उद्दीन थे जो विद्रोहियों के सेनापति थे । यह एक विडंबना ही है कि बहादुरशाह जफर के सारे पुत्रों को अंगरेजों ने बर्बरतापूर्वक मार दिया था । इनके वंशज के रूप में अब उस समय सिर्फ मिर्जा कादिरउद्दीन ही जीवित रहे । और वह जब बड़े हुए, तो महरौली में बहादुरशाह जफर महल में रहने लगे । इनके पांच लड़कियां व पांच लड़के हुए । जिनमें से एक मिर्जा कादिरउद्दीन कूंचा चालान में जाकर रहने लगे । मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन उन्हीं के लड़के हुए ।

एक बार भारत की राजधानी दिल्ली में २४



अक्तूबर, १९७५ को बहादुरशाह जफर मेमोरियल सोसायटी के संस्थापक, पत्रकार श्री एफ. आर. खान और उनके कुछ सहयोगियों के प्रयास से हिंदू-मुसलिम एकता और भारत की धर्म निरपेक्षता की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से जफर साहब की २००वीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी और जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति स्व. फखरुद्दीन अली अहमद साहब अंतिम मुगल बादशाह की आदमकद तसवीर पर फूल मालाएं अर्पित करने पधारे थे, तो मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन को भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था । तब भारत के सभी भाषाओं के छोटे-बड़े अखबारों में इनकी चर्चा हुई थी और फखरुद्दीन साहब के साथ इनकी भी तसवीरें अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर छपी थीं । उस कार्यक्रम में भाग लेने आये भारत सरकार के

तत्कालीन संचारमंत्री जो अब भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में पदस्थापित हैं, भी वहां पधारे थे। उस समय के चोटी के फिल्म अभिनेता स्व. राज कपूर भी तब बंबई से दिल्ली भागे आये थे और इन सबने मिर्जा साहब की दयनीय स्थिति पर दुःख प्रकट किया था। और उस समय की इंदिरा सरकार ने भी इन्हें मदद पहुंचाने का आश्वासन दिया था।

नयी सरकार से उम्मीदें

लेकिन इनकी बड़ी लड़की की शादी के मौके पर तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने जब मात्र एक हजार रुपये देकर अपने हाथ रोक लिये तो मिर्जा साहब को बड़ी निराशा हुई। इनके स्वाभिमान को चोट पहुंची। अब कांग्रेस की सरकार केंद्र में नहीं रही। वर्तमान सरकार से वह बड़ी आशा लगाये बैठे हैं कि वह मुगल सल्तनत के आखिरी बादशाह जफर (द्वितीय) के छर-पोते के रूप में इनकी आर्थिक मदद अवश्य करेगी। अब इनकी एकमात्र इच्छा यह है कि वे अपने जीते-जी अपने परिवार के रहने के लिए जमीन, मकान और कारोबार करने के लिए एक दुकान का प्रबंध सरकार से कह-सुनकर अवश्य करवा लें ताकि उनके मरने के बाद उनके लड़के उन्हें नहीं कोसें। मिर्जा साहब के तीन लड़के हैं— मिर्जा एहसान उद्दीन, मिर्जा कलीम उद्दीन और मिर्जा अजहर उद्दीन। तीनों की शादियां हो चुकी हैं ये सब दस्तकारी का काम करते हैं। वैसे वे इलैक्ट्रीशियन और मोटर मैकेनिक भी हैं। मिर्जा साहब ने बताया कि ये तीनों लड़के उनके साथ ही उसी एक कमरे में अपने बीबी-बच्चों के साथ मिलकर गुजारा कर रहे हैं। हमने जब यह पूछा कि एक ही कमरे को चार भागों में बांटकर कैसे रहते हैं, तो उन्होंने बताया कि कमरे को परदे और तख्ते की दीवारें घेरकर विभक्त कर दिया गया है।

मिर्जा साहब की दो लड़कियां हैं और दोनों को ही उन्होंने ग्रेजुएट तक की शिक्षा दिलवायी है— दिल्ली के जाकिर हुसैन कालेज से और दोनों लड़कियों की शादियां कर दी हैं। मिर्जा साहब ने कहा कि खुदा के रहम से उनकी दोनों लड़कियां संपन्न और पढ़े-लिखे परिवार में गयी हैं। वे बराबर अपना हालचाल लिखती रहती हैं। लेकिन वे अपने लड़कों को उच्च शिक्षा नहीं दिलवा गये, इसका उन्हें आज तक मलाल है।

दस्तकारी से गुजारा

मिर्जा साहब के पिता का नाम मिर्जा जाकिर उद्दीन था जो उन्हीं की तरह दस्तकारी का काम करके परिवार का गुजारा चलाया करते थे। जब वह आठ वर्ष के थे, उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी और तब से ही वे दस्तकारी के काम में लगे हुए हैं। यह उनका पुश्तैनी काम रहा है। सल्तनत, जमीन, जायदाद हाथ से निकल जाने के बाद उनके पुरखों ने दस्तकारी के काम को अपना लिया था।

अस्सी साल की उम्र में भी मिर्जा ऐतमाद-उद्दीन हृष्ट-पुष्ट दिखते हैं। हां, अलबत्ता उनकी कमर कुछ झुकी हुई है और आंखों से अब कम दिखायी पड़ता है। उनके दादा का नाम मिर्जा कादिर उद्दीन था और वह महरौली के जंगी देवड़ी में रहा करते थे। उन्होंने बताया कि अंगरेजों के जमाने में वहां उनका अपना मकान था और वे शिकार करने के बड़े

शौकीन थे । वह हिरण, सांभर, चीता, नीलगाय आदि का शिकार करते थे और उन्हें बेचकर गुजारा चलाते थे । मिर्जा साहब बताते हैं कि आज भी उनकी पुश्तैनी जमीन और महल महरौली में कायम है— बहादुर शाह जफर के महल के नाम से । वहां फूलवालों की सैर का आयोजन हर वर्ष हुआ करता है, जहां बहादुरशाह जफर भी अपने समय में जाया-आया करते थे । वे जगह-जमीनें उनके दादा के समय में बंधक रख दी गयी थीं, जिन्हें वे अपने जीवनकाल में कभी नहीं छुड़ा पाये । इस तरह से वह पुश्तैनी जमीन और महल हाथ से निकल गये । महरौली में शाह जफर का महल आज भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ है । सरकार मुगल बादशाह की इस देन को संजोकर रखने की दिशा में कोई ध्यान नहीं दे रही है ।

अंगरेजों को खटकते रहे

मिर्जा साहब से बातों-बातों में ही यह पता चला कि उनके बड़े भाई का नाम मिर्जा इख्तियार उद्दीन था, जो अब नहीं रहे । उसके बाद वह स्वयं हैं और उनसे भी एक छोटा भाई हमीद उद्दीन था जो अब जिंदा नहीं हैं । सबसे छोटे भाई का नाम सलीम उद्दीन है जो अब पाकिस्तान में अपने परिवार के साथ रहता है । काफी दिनों से वह भारत नहीं आया है ।

मिर्जा साहब से यह पूछे जाने पर कि अंगरेजों ने अपने समय में क्या आपके बाप-दादों की कोई मदद नहीं की, उन्होंने कहा कि सत्तावन के गदर में हमारे पुरखों ने उनका कड़ा मुकाबला किया था, भला वे इस बात को कैसे भूल जाते ? वे तो जब तक भारत में रहे हमारे खानदान से खार खाते रहे । मिर्जा जहीर उद्दीन मुगल बहादुर शाह जफर के पुत्र थे और सन सत्तावन के गदर में ये बागियों के सिपहसालार के रूप में अंगरेजों से लड़े थे । इन्हीं सब वजहों से उनकी आंखों में हम सब खटकते रहे । क्योंकि हमारी रगों में भी तो आखिर बहादुरशाह जफर का ही खून दौड़ रहा था ।

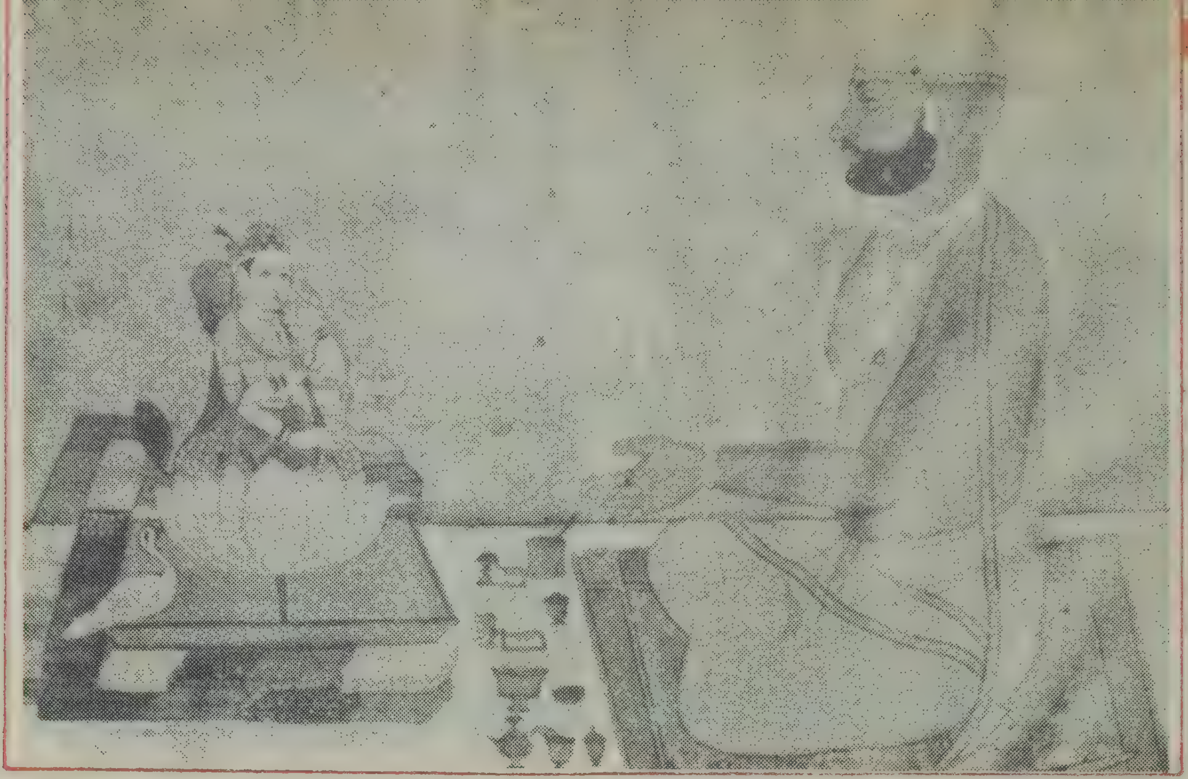
मिर्जा ऐतमात-उद्दीन ने एक गहरी निःश्वास छोड़ते हुए कहा कि कभी-कभी भूले-भटके आप-सब-जैसे नौजवान पत्रकार जब मुझे याद कर मेरे घर में पहुंच जाते हैं, तो हमारा सीना फ़ख्र से और भी ऊंचा और चौड़ा हो जाता है कि अभी भी हिंदुस्तान में मुगल बादशाहत की आखिरी कड़ी जफर के नाम पर खोजबीन करनेवाले कुछ लोग बचे हुए हैं । वरना कौन इन गंदे मोहल्ले और तंग गलियों की अंधेरी कोठरी में रहनेवाले इस बूढ़े आदमी से मिलने की इच्छा रखता है ?

क्या वर्तमान सरकार जामा मसजिद क्षेत्र के चूड़ी वालान में रहनेवाले इस छर-पोते के अंधकारमय जीवन में प्रकाश की एक किरण बिखेरकर उजाला भरने की कोशिश करेगी ?

— ३८७, हौज काजी, दिल्ली-११०००६

एक कर्त्तव्य-पूर्ति का पुरस्कार है दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की योग्यता ।

—जार्ज इलियट



महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

आस्था के आयाम

क्रांतिकारी कवि जिन्होंने तात्या टोपे की सहायता की

● एच. भीष्म पाल

राजस्थान ने न केवल वीर योद्धा ही उत्पन्न किये हैं, अपितु महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण जैसे वीर, निर्भीक एवं क्रांतिकारी कवि भी संसार को दिये हैं । श्री मिश्रण उन कवियों में से थे जिन्होंने आश्रयदाता की इच्छा की भी चिंता न करते हुए कटु सत्य कहने से भी कभी पीछे नहीं हटे । उनका समस्त जीवन व्यक्तियों को उत्साही तथा स्वतंत्रता के लिए मर मिटने हेतु प्रेरित करता रहा ।

भारत के इतिहास में सूर्यमल्ल द्वारा सन १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में किया गया कार्य सदा स्मरण रहेगा । इतिहासकारों और स्नातकों द्वारा उनकी कृति 'वंश भास्कर' को भारत का 'उन्नीसवीं शताब्दी का महाभारत' कहा गया है ।

बूंदी राज्य के प्रसिद्ध चारण संप्रदाय से संबंधित श्री सूर्यमल्ल का जन्म सन १८१६ ईस्वी में राजकवि चंडीदान के यहां हुआ । जिस हवेली में उनका जन्म हुआ था, उसे हाल ही में उनके प्रपौत्र ने इनटाक संस्था को राष्ट्रीय धरोहर



महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण अनेक विषयों के विद्वान ही नहीं कट्टर देशभक्त भी थे । यहां प्रस्तुत हैं उनके कृतित्व और प्रेरक जीवन-प्रसंगों पर प्रकाश डालनेवाले दो लेख ।

के रूप में विकसित करने हेतु प्रदान की है ।

बचपन से ही वे प्रतिभावान थे और पांच वर्ष की अल्प आयु में ही उन्होंने न केवल भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लिया बल्कि दस वर्ष की अवस्था में तो 'रायरंजाट' नामक काव्य की भी रचना कर डाली । स्वल्पायु में ही उन्हें प्राकृत, संस्कृत तथा डिंगल भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया था ।

वीणा और अंकुश साथ-साथ

सूर्यमल्ल सदा अपने साथ वीणा और अंकुश रखते थे । जहां वीणा उनके हृदय की कोमलता और करुणा की द्योतक थी, वहां अंकुश उनके चारणोचित स्वाभिमान का परिचय देती थी ।

उल्लास भरे यौवन में सूर्यमल्ल ने अनेक कृतियां प्रस्तुत कीं तथा स्वतंत्रता-संग्राम के लिए अनेक को प्रेरणा दी । जीवन के अंतिम वर्षों में वे अत्यंत दुःखी रहे । अकेलेपन को महसूस करते हुए वे अपनी हवेली के आंगन में लगे इमली के पेड़ पर चढ़ जाते और गाते रहते । उनकी मृत्यु ५३ वर्ष की अवस्था में सन १८६९ ई. में हुई ।

अंगरेजों के प्रबल विरोधी

महाकवि जीवन पर्यत अंगरेजों को भारत के बाहर निकालने हेतु लोगों को प्रेरित करते रहे । बूंदी के राजा राम सिंह के राजकवि होने पर भी उसने अपने क्रांतिकारी विचारों को कभी नहीं त्यागा । एक दोहे में उन्होंने कहा कि—

इला न देवी आपणी, हालरिया दुलराय ।
पूत सिखावे पालणै, मरण बढ़ाई माय ।।

(माता झूले में झुलाती हुई अपने पुत्र से कहती है कि उसके लिए अपनी भूमि शत्रुओं को देने के बजाय युद्ध क्षेत्र में मर जाना श्रेयस्कर है ।)

उन्होंने अपने मित्रों को पत्र लिखकर अंगरेज शासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भी उकसाया । पत्रों में उन्होंने कुछ दोहे लिखे जो इस प्रकार थे—

इन बेला रजपूत वे, राजस गुण रंजाट ।
सुमिरन लज्जा वीर सब, वीरां रो कुल बांट ।।

(इस घड़ी समस्त राजपूतों, जिनमें वीरोचित गुण हैं, ने मर मिटने का मार्ग अपना लिया है ।)

नागन जाया चीटला, सीहण जाया साब ।
राणी जाया नहं रुकै, सो कुल बाट सुभाव ।।

(सर्पणियों, सिंहनियों तथा रानियों के बच्चे युद्ध और त्याग के समय कभी पीछे नहीं रहते ।)

देश-प्रेम महाकवि के जीवन में कूट-कूटकर भरा हुआ था । अंगरेजी सेनाओं की कोटा में पराजय ने उन्हें अत्यंत प्रफुल्लित किया । इससे वे इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने अपने 'वंशभास्कर' जिस पर वह रचना कर रहे थे, उसे अधूरा छोड़ दिया और 'वीर सतसई' की रचना प्रारंभ कर दी । उन्होंने हर प्रकार से प्रयास किया राजस्थान के सब रजवाड़े मिलकर अंगरेजों को भारत से खदेड़ने में योगदान दें ।

प्रमुख रचनाएं

सूर्यमल्ल की प्रमुख रचनाओं में रामरंजाट, बलभद्र विलास, वीर सतसई और वंशभास्कर हैं। बलभद्र विलास के २८८ दोहे देशप्रेम से ओत-प्रोत हैं। यह वह समय था जब १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम अपने पूर्ण यौवन पर था। उनके महाग्रंथ 'वंश भास्कर' में सवा लाख छंद हैं। यह ग्रंथ आठ खंडों में विभाजित है। काव्य और इतिहास के अतिरिक्त महाभारत की भांति इस ग्रंथ को भी सर्व संग्रह अर्थात एन साइक्लो पीडिया की तरह बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें वैष्णव, शैव और जैन दर्शन, षट्शास्त्र, वाराही संहिता, वृक्षायुर्वेद, संगीत, कामसूत्र, ज्योतिष, खगोल, भूगोल, राजनीति आदि अनेक विषयों का वर्णन है। प्रकांड पंडित होने के कारण उन्हें प्राकृत, मागधी, पैशाची, पिंगल, संस्कृत और डिंगल इन छह भाषाओं का विशेष ज्ञान था। उन्होंने अपने काव्य में इन भाषाओं का खूब प्रयोग किया है। दुर्भाग्यवश सूर्यमल्ल 'वंश भास्कर' पूर्ण न कर सके। उनकी मृत्यु के तीस वर्ष पश्चात सन १८९९ ई. में बारहठ कृष्णा सिंह ने टीका सहित इसे प्रकाशित करवाया था।

'वंश भास्कर' भारतीय साहित्य में एक अनूठा ग्रंथ है और हिंदी साहित्य में वीर रस का संभवतः यह सबसे बड़ा ग्रंथ है। सूर्यमल्ल युद्ध के वर्णन में भी अत्यंत कुशल हैं।

'वंशभास्कर' में आदि से अंत तक सैकड़ों युद्धों का वर्णन है फिर भी उनमें सब जगह नवीनता है।

वीरभाव आवश्यक

सूर्यमल्ल का विश्वास था कि वीर भाव के पल्लवित-पुष्पित होने के लिए वीरता का वातावरण चाहिए। वे सदा कामना करते थे कि समाज में वीर भाव ही नहीं अपितु वीर समाज के संगठन की आवश्यकता है। राजस्थान के राजाओं की तात्कालिक स्थिति की ओर सूर्यमल्ल ने बार-बार इंगित किया है। उन्होंने संकेत किया कि विदेशियों से कई बार पिटने पर क्षत्रिय समाज संगठित नहीं था, विश्रृंखलित था और परस्पर विग्रहशील था। आजादी की लौ को उन्होंने गुप्त रूप से लिखे जागीरदारों को अपने पत्रों द्वारा प्रज्वलित किया। ये पत्र वे अपने विश्वासपात्र दूतों द्वारा भिजवाते। सूर्यमल्ल ने अपने प्रश्रयदाता राव राजा को तात्या टोपे की सहायता हेतु भी निवेदन किया। इसी प्रच्छन्नता की रक्षा हेतु महाकवि ने काव्य की अभिव्यंजना शक्ति को माध्यम बनाया। इस उद्देश्य की पूर्ति उनके द्वारा रचित बोल-चाल की भाषा हड़ौती में 'वीर सतसई' ग्रंथ से हुई। उनका स्वतंत्रता के समय लिखा गया काव्य वीरों का प्रेरक और कायरों का काल बन गया था।

न थी रजोगुण ज्यां नरो, वां पूरो न उफांण
वे भी सुणताऊफ णौ, पूरा वीर प्रमाण।
सूरा सूरज सूं कहे, सीस करो बमसीस
सीस कटे धड़ उचटे, ऊ दिन कर जगदीश।

आज भी सूर्यमल्ल राष्ट्र के निर्भीक, देशप्रेमी और विद्वान कवियों की अग्रणी पंक्ति में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

— ७०६ लक्ष्मी बाई नगर,
नयी दिल्ली-२३

विद्यानुरागी साहित्यप्रेमी महाराजा रामसिंह का दरबार ! एक स्मरणीय प्रसंग । आध्यात्मिक चर्चा करते-करते अचानक ही यह प्रश्न उठा कि क्या कोई इस युग में महाभारत के समान— विशाल ग्रंथ लिख सकता है ?

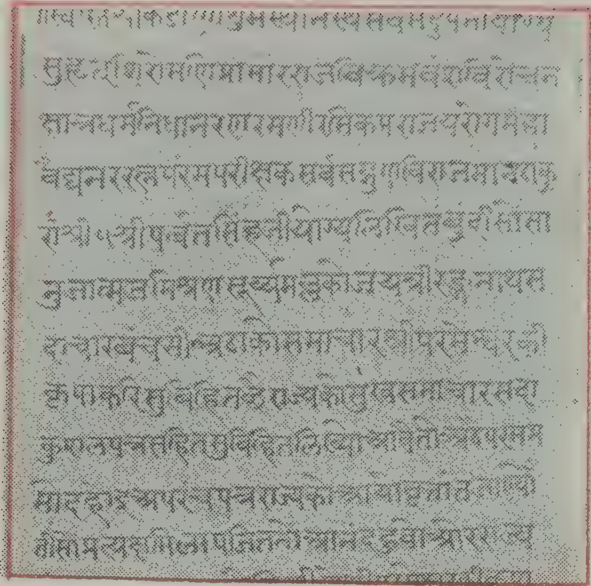
चर्चा तो दरबारी थी, पर सूर्यमल्ल मिश्रण ने इसको एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और फिर व्यासपीठ पर आसीन हो एक नहीं दस हजार पृष्ठों में 'वंश भास्कर' लिखवा डाला । रचना की, जिसमें संस्कृत, अपभ्रंश शौरसेनी, मागधी, पैशाची, प्राकृत का प्रयोग हुआ है । कवि का विश्वास था कि जिस प्रकार सूर्य बारह राशियों पर अपनी हजार मयूखों सहित परिक्रमण करता है उसी आधार संपूर्ण भारत का इतिहास आठ-राशियों में संपूर्ण कर— शेष अन्य चार राशियों के नाम पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पर विशदता से प्रकाश डाल सकेगा । काश ! यह सब कुछ पूर्ण हो पाता । सन

'लाडीजी घुंघटड़ो खोलो !'

● डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी

बूंदी के राजमार्ग पर एक शताब्दी से यह प्रवाह प्रचलित है कि महाकवि सूर्यमल्ल ने सरस्वती को सिद्ध किया था । कुछ कहते हैं कि वाग्देवी ने स्वयं उनकी जिह्वा का संस्कार किया था । ये किंवदंतियां हो सकती हैं पर यह सत्य है कि महाकवि सूर्यमल्ल साहित्य के निष्णात पंडित, तत्वबोध के मूर्तिमान स्वरूप, इतिहास के मर्मज्ञ, चौदह विद्यानिधान, चौसठ कला निपुण और मीमांसा, काव्यशास्त्र, योग शास्त्र, न्याय शास्त्र, व्याकरण, पालकाव्य, शालिहोत्र, शकुन शास्त्र के तलस्पर्शी विद्वान थे । उन्होंने 'प्रयोब्रजदेशीय भाषाओं में वंश भास्कर की

१८५७ की जनक्रांति की विफलता ने कवि को इतना निराश किया कि वह लेखकीय अनुष्ठान की ओर उन्मुख हो ही नहीं सका ! आज वंश भास्कर जिस रूप में भी उपलब्ध है, वह चिर-स्मरणीय, संग्रहणीय ऐतिहासिक आलेख है, जिसमें समग्र भारत के अतीत को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में संजोने का प्रयास किया गया है । सूर्यमल्ल ने स्वयं २४ मार्च सन १८५८ के एक पत्र के उत्तर में इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स मि. फालन को पत्र लिखते हुए स्वीकार किया है, "संवत १८९७ के वैशाख मास में महाराज रामसिंह की आज्ञा से मैंने इस ग्रंथ की



कहाणा के ठाकुर श्री पर्वत सिंह को महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा लिखा गया एक पत्र ।

रचना प्रारंभ की । इसमें ३५ हजार दोहे व पद हैं । दस वर्ष का अनावश्यक एवं अकारण ही विलंब हो गया । अब सरकार की तरफ से भी विशेष त्वरा है । अब छह-सात हजार और बनाने बाकी है— यह काम एक वर्ष में समाप्त हो जाएगा ।''

चुनरी का मूल्य

सूर्यमल्ल मिश्रण का अंतरंग पक्ष अनेक मनोरम अविस्मरणीय प्रसंगों की एक श्रृंखला है, जिसमें कवि जैसी निर्भीकता, तटस्थता और फक्कड़पन निहित है ।

भिणाय (भिनाय-रतलाम) के रंगमहल की ड्योढ़ी । सर्पतोन्मुखी प्रतिभा के धनी महाकवि सूर्यमल्ल स्वयं चलकर भिणाय पधारे हैं । कैसे कुछ भेंट किया जाए । रानीजी चाहती हैं कि ऐसी वस्तु भेंट की जाए, जो महाकवि के पसंद की हो । रानीजी पसंद कराने के बहाने एक चुनरी भिजवाती हैं । दासी चांदी के थाल में चुनरी रखे सम्मुख प्रस्तुत है । अंतःपुर का परदा हिलता है— एक मंद-सी परिहासमय आवाज सुनायी देती है, 'ठाकुर साहब, बताइए इस चुनरी की क्या कीमत है ।' आकांक्षा यह है कि ठाकुर साहब इसे ठकुरानीजी के लिए पसंद कर लें ! पर निर्भीक स्वाभिमानी महाकवि की आंखों में उसकी कीमत के आशय ही दूसरे हैं । बोल उठते हैं, 'ठकुरानीजी ! इसकी कीमत तो जब आकूंगा, जबकि आप इसे पहनकर वीरपति के साथ सती होंगी ।'

रंगमहल का परिहास बर्फ की सफेदी में बदल गया । कहनेवाले होठ नहीं थरथराये, सुननेवालों के होठों पर हंसी बर्फ सी जम गयी । रानी ने चुनरी को संभालकर रख लिया । दुर्भाग्य से राजाजी नहीं रहे । रानी ने सती होने से पूर्व वही चुनरी धारण कर सेवक को बूंदी भेजकर कहलवाया— 'मैंने तो अपना वचन निभा दिया, अब चुनरी की कीमत आंक जाओ ।'

महाकवि ने करुण स्वरों में विगलित 'सतीचरित्र' रानी को अमर कर दिया ।

बूंदी से प्रेम

निर्लोभिता का एक अन्य प्रसंग— महाराज कुमार भीमसिंह की बरात के साथ बांसवाड़ा आगमन । प्रधान अमात्य से रूठ कर, मित्रतुल्य रतलाम नरेश राजा बलवंत सिंह के पास प्रस्थान । सूचना मिलते ही वे स्वयं मार्ग में स्वागत के लिए प्रस्तुत हैं और चाहते हैं कि महाकवि सूर्यमल्ल रतलाम में ही स्थायी रूप से निवास करें । पर बूंदी की कसक हर पल बैचैन कर देती है । इधर महाराजा रामसिंह को भी सूर्यमल्ल का अभाव खटकता है और महाकवि को महाराजा रामसिंह का उलाहना भरा आमंत्रण

मिलता है ।

सूर्यमल्ल अब बूंदी लौट जाना चाहते हैं । उनको बूंदी की अपेक्षा अपने आश्रयदाता से अधिक स्नेह है । राजा बलवंत सिंह दस हजार की जागीर भेंट कर महाकवि को रोकना चाहते हैं । होठों पर एक ही उत्तर है— 'मेरा राजा रामसिंह के बिना मन नहीं लगता ।' राजा बलवंत सिंह २५ हजार की जागीर प्रस्तुत कर पुनः रुकने का अनुरोध करते हैं, पर सूर्यमल्ल रुकने में असमर्थ हैं । क्या रुपयों का लोभ प्रतिभा को खरीद सकता है ? एक झल्लाहटभरा उलाहना, 'याद रखना, ऐसा देनेवाला नहीं मिलेगा ?' सूर्यमल्ल से नहीं रहा गया— सहज स्वर में उत्तर दे दिया, 'तो तुम भी याद रखना कि ऐसा अस्वीकार करनेवाला भी नहीं मिलेगा ।' और उसी क्षण बूंदी लौट आये और अंत तक वहीं रहे ।

पत्नी को अंतिम बिदाई

कबीर-सी फक्कड़ता और संत फकीर बुल्लेशाह-जैसा अल्मस्तपन और दारुण दुःख के क्षणों में भी मनमौजीपन का दुर्लभ क्षण । एक शवयात्रा । अन्य की नहीं अपनी ही पत्नी की ! शव-यात्रा के साथ चौबे अम्बालालजी, भाई जयदयालजी व अन्य शिष्य भी । स्तब्ध राजमार्ग, श्रद्धानत मौन विदाई । साथ में बहादुरजी कलावंत भी मिल गये, अच्छे संगीतज्ञ और साथ में तंबूरा । सूर्यमल्लजी को देखते ही अश्रुपात करने लगे । सूर्यमल्लजी ने तंबूरा सहित उनको भी साथ ले लिया । शोकाकुल परिजनों के मध्य संपन्न होनेवाली दाह-क्रिया को रोकते हुए बोले, 'कलावंतजी, इस प्रसंग पर भी तो गाइए ।' कलावंतजी बोले, 'आप क्या मेरी इज्जत बिगाड़ना चाहते हैं ?' तब उन्होंने स्वयं तंबूरा ले लिया और अलापने लगे—

'लाडी जी घूंघट्ड़ो खोलो
म्हाने देखन को चाव छे...'

करुणा से विगलित स्वर परिजनों को विभोर करने लगे । पद पर पद बनने लगे । लोग याद दिलाते विलंब हो रहा है । वे कहते, 'जरा ठहरो, फिर यह अवसर थोड़े ही आवेगा । यह तो पति की पत्नी को अंतिम विदाई है ।'

काव्य का प्रभाव

उदयपुर के राणा के दरबार में वंश भास्कर का पाठ होनेवाला है । राणाजी की आज्ञा मिलती है पर कवि मौन । जब काफी आग्रह किया तो अर्ज किया, 'अन्नदाता, पहले तो आपकी और सभी दरबारी सामंतों की तलवारें भंडार में बंद कराकर चाबी मुझे दे दीजिए ।' यह सुनते ही सबके मन में आशंका के बादल घुमड़ उठे । महाकवि ने विश्वास दिलाया कि कोई धोखा नहीं होगा । मेरी बात का अर्थ बाद में समझ जाएंगे । अंततः बात स्वीकार कर ली गयी । 'वंश भास्कर' का पाठ प्रारंभ हुआ— सुनते-सुनते ही वीर सामंतों की भुजाएं फड़कने लगी, चेहरे तमतमाने लगे— और वीर दांतों से हाथ काटने लगे— पैर धरती पर पटकने लगे । पाठ समाप्ति का आदेश हुआ । स्थिति यथावत हो गयी । महाकवि ने कहा, 'अन्नदाता ! यदि तलवारें भंडार में नहीं होतीं तो हाथ मूंठ पर होते और काव्य कलंकित हो जाता ।

— अधीक्षक, रघुनाथ होस्टल,
राजकीय महाविद्यालय, नयापुरा, कोटा

क्या करेंगे आप

कोई कर जाए जबरन बरजौरी

आगामी काव्य चर्चा का विषय

राजनीति के दंगल में

संपर्क 'क्या करेंगे आप', द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१
अंतिम तिथि : २० फरवरी १९९१



शीर्षक है यह गूंगे का गुड़
कलम से करता है जोराजोरी
बूढ़े मुंह नहीं उगते मुंहासे
भले ही कर जाए कोई बरजौरी

र.ना. वर्मा

अवर न्यायाधीश प्रथम मुंगेर-८११२०१

फागुन का गुन सौगुन बढ़ता
जब यह रंग नशा बन चढ़ता
कोई आ जाए आंगन में
सपना यही संजोती मन में
नव उमंग में सनी किशोरी
जबरन कर जाए बरजौरी

—डॉ. भवदेव झा

संकट मोचन मार्ग, मच्छा हट्टा पटना सिटी

तू यौवन की शतपदी, मैं पीड़ा का गीत ।
बरजौरी न तोड़ दे समय हमारी प्रीत ।।

यौवन के मद में लिखे प्रेम-पत्र मत बांच ।
तू सपनों के गांव में हरियाली बन नाच ।।

तू बन मेरी सोहनी, मैं तेरा महिवाल ।
लुटकर भी हो जाएंगे हम— तुम मालामाल ।।

कंचन-काया बावरी ! है मधु-रितु का राज ।
जबरन बरजौरी कोई कर जाएगा आज ।।

—रमेश सारथी

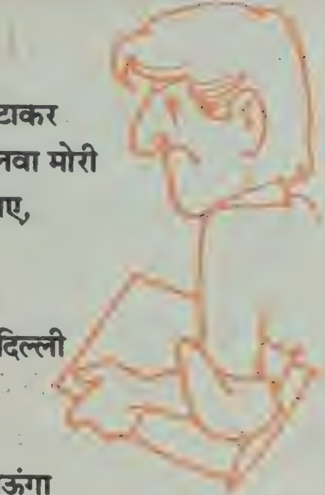
४/२७५९ बिहारी कॉलोनी, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

बिक जाऊंगा नेह में उपजे प्रेम अपार;
बरजौरी जोरी बने, महक उठे संसार
महक उठे संसार प्रेम की दुनिया बांकी
'ढाई आखर' कबिरां के हैं आज भी सांची
कान्हा जैसी बरजौरी' की बात कहां है,
कोई हमसे कर जाए एतराज कहां है ।

—सुरेंद्रपाल सिंह कुशवाहा

जवाहर कॉलोनी, गांधी रोड
मेंहगांवः जिला भिंड (म.प्र.)

अजी संपादक जी
बार-बार
मेरी रचनाओं को लौटाकर
काहे दुखावत हौ, दिलवा मोरी
मेरी कविताओं के लिए,
'कादम्बिनी' में,
जगहवा नाही है थोड़ी
अगर मैं, आ गवा न दिल्ली
तो समझ लो,
छप गवा रचना मोरी,
क्योंकि मैं तो, कर जाऊंगा
तुमसे जबरन बरजौरी ।



—विनय रंजन

पंजाब नेशनल बैंक सिवान (बिहार)

पत्नी बोली अकड़कर, यू 'कादम्बिनी' बदजात
सोवत-जागत रहत है, सदा तुम्हारे साथ
सदा तुम्हारे साथ, नींद खो दिनी मोरी
चुनना होगा मुझे या उसे जो मोरी सौत
वरना समर्थन दो बाहर से और आप उड़ाओ मौज

—रणजीत 'बड़लिया'

सिंडिकेट बैंक अंबाला कैंट-१३३००१ (हरियाणा)

बगली में दाम नहीं, मिलत है काम नहीं
इत मुई मंहगाई करै जौरा-जौरी

करि-करि कारै सारै, कगदवा सोचे मन
पेट भी ना भरि सकै लेखनि निगौरी ।

वोटवा को ताकै मुओ, नेतवा लजाए नाहीं
हाथ जौरि निरलज कहे वैरी-सौरी

कारि कोठरी में बैठि करै काज कारै-कारै
मौंहि कारौ करन को करै बरजौरी ।

—जगदीश ज्वलंत

२५, लक्ष्मीबाई पथ, महिदपुर (उज्जैन) ४५६४४३

पेट नहीं भरता नेता जी
जनता का आश्वासन से
महंगाई को दूर कीजिए
गोदामों के राशन से
नहीं गलेगी दाल आपकी
लंबे-चौड़े भाषण से
नहीं समझ कुछ आता हो तो
जाओ दूर सिंहासन से
वरना जबरन बाहर करेंगे
बरजौरी कर, शासन से ।



—प्रणव कुमार मुखर्जी

विद्या कॉटेज पावर हाऊस चौक माड़ीपुर-मुजफ्फरपुर
बिहार-८४२००१

एक परम रूपसी बाला को देखा करता था मैं
चोरी-चोरी
रहा न वश मेरा दिल पर कर गया मैं बरजौरी
कर गया मैं बरजौरी, धोना पड़ा मुक्त जीवन से हाथ
आजीवन कैद की सजा मिली है जेलर श्रीमती नाथ
संपादक जी क्या सूझी आपको जो रखा यह विषय
काव्य चर्चा का
क्या बीते दिनों की याद आ रही ? जवाब नहीं
आपकी रसिकता का ।

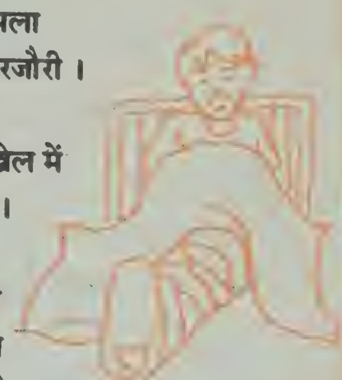
—देवेंद्र नाथ

ग्रा. व पो.-संडा जिला-गया (बिहार)-८२४२३५

हनीमून पर गये थे शिमला
सजना ने की जबरन बरजौरी ।

हंसी-हंसी और खेल-खेल में
मेरे पांव की हड्डी तोड़ी ।

हनीमून तो गया भाड़ में
पड़े रहे पलस्तर चढ़वाये
उठने लायक हुए जरा तो
लौट के बुद्धू घर को आये ।

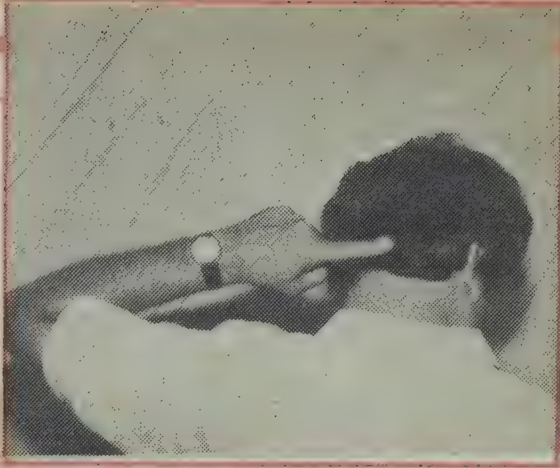


—कृष्णा बजाज

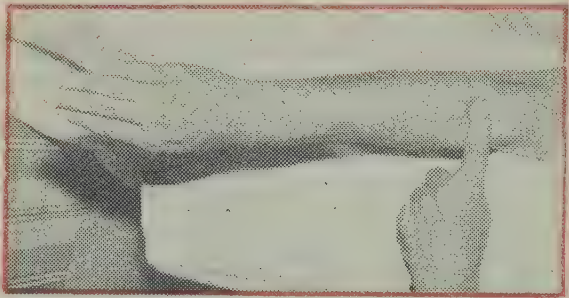
११३९/५-ए प्रेम नगर, जबलपुर (म.प्र.)

सिर के पीछे बननेवाले गड्ढे में स्थित बिंदु

स्मरण शक्ति बढ़ाना, सिर दर्द, माइग्रेन में इस बिंदु पर दबाव दें ।



अद्‌भुत करिश्मे : अपना



कोहनी के एकदम नीचे स्थित बिंदु

कोहनी का दर्द, हाथ का लकवा हो तो इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है । इस चिकित्सा पद्धति में शरीर के विभिन्न स्थलों को दबाकर रोगों का निवारण किया जा सकता है । पाठकों के लाभ के लिए हम एक्यूप्रेशर की विधियां प्रकाशित कर रहे हैं । इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं एक्यूप्रेशर-चिकित्सा के जाने-माने विशेषज्ञ—डॉ. सुधीर खेतावत

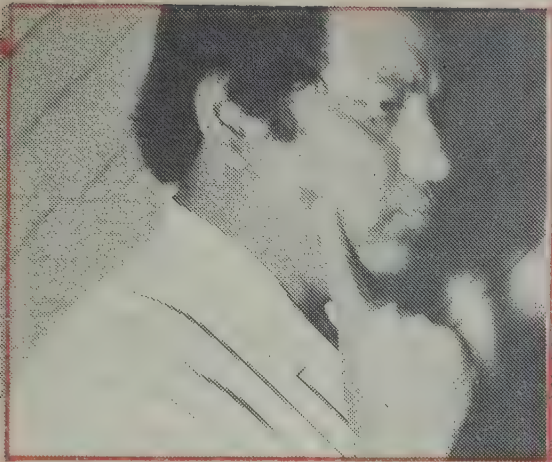


पैर के अंदरूनी भाग पर, घुटने की कटोरी की सीध से दो अंगुल ऊपर स्थित बिंदु

मासिक की गड़बड़ी में इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

दूसरी और तीसरी अंगुली के मिलन स्थान से एक अंगुल दूरी पर स्थित बिंदु पैर में दर्द, पैर की अंगुलियों का आर्थराइटिज में इस बिंदु पर दबाव दें ।





गाल पर स्थित बिंदु

चेहरे का लकवा, दांत का दर्द होने पर इस बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

इलाज स्वयं कीजिए—३०



पैर और पंजे के मिलन स्थान पर, मध्य में स्थित बिंदु

टखने का दर्द, पैर का लकवा आदि में इस बिंदु पर दबाव दीजिए ।



टेंटुए के बगल में स्थित बिंदु

खांसी, हकलाना आदि में इस बिंदु पर हल्का दबाव दीजिए ।

घुटने की कटोरी के निचले भाग से चार अंगुल नीचे, हड्डी के बाहरी किनारे पर स्थित बिंदु

चक्कर आना, अपचन, पैर का लकवा में इस बिंदु पर दबाव दें ।



दबाव कितनी देर डालें

१. बारह घंटों में दो बार
२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है एक बिंदु पर साठ बार ।
३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद
४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।

—एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र
नीलकमल सिनेमा परिसर इंदौर-४५२००३



● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास उत्साहवर्धक तथा सफलतादायी होगा। साहसिक प्रयासों से संपत्ति-कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग मिलेगा। लंबित योजना पूर्ण होगी। आध्यात्मिक यात्रा होगी। ८ से १५ के मध्य परिवार में मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी। आर्थिक दिशा में अनपेक्षित सफलता का योग उपस्थित होगा। नवीन अधिकार पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग होगा। १६ से २४ के मध्य विपरीत परिस्थितियों का उदय होगा। षड्यंत्रों से सावधानी हितकर होगी। मासांत में संपत्ति संबंधी विवाद का समाधान होगा। आर्थिक प्रयासों में सफलता मिलेगी।

महिलाओं को आजीविका संबंधी सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों से यश प्राप्ति होगी। उन्नति के नवीन अवसरों का उदय होगा।

विद्यार्थियों को शिक्षा, परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों की पूर्ति होगी।

वृषभ : मास श्रेष्ठ फलदायी होगा। आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य आजीविका संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष से सुलह होगी। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता विद्यमान रहेगी। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा। प्रवास लाभदायी होगा। १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। मासांत में रक्त-संबंधियों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा।

महिलाओं को आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी। आजीविका संबंधी प्रयास पूर्ण होंगे। कार्यों की अधिकता होगी। आर्थिक समस्या का समाधान होगा।

विद्यार्थियों को परीक्षा-प्रतियोगिता संबंधी सुखद समाचार मिलेंगे। वरिष्ठजनों का उत्साहवर्धक सहयोग रहेगा।

मिथुन : मास में सावधानी तथा संयम से कार्य करें। आर्थिक जोखिम हानिप्रद होगा। १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में अकारण विरोधाभास होंगे। पारिवारिक अस्वस्थता पर धन व्यय होगा। ८ से १५ के मध्य आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। स्वजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष से सुलह होगी। संपत्ति विवाद टालना हितकर होगा। १६ से २४ के

ग्रहस्थिति-सूर्य १३ फरवरी से कुंभ में, मंगल वृषभ में, बुध १ से मकर २० से कुंभ में, गुरु कर्क में, शुक्र १७ से मीन में, शनि-राहू मकर में, केतु कर्क में, हर्षल नेप्च्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

पर्व और त्योहार

२ फरवरी संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, ६ कालाष्टमी जानकी जयंती, १० विजया एकादशी पर भौमप्रदोष, १४ स्नानदान श्रद्धादिकी दर्श अमावस्या, १६ चंद्रदर्शन, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, १८ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थीव्रत, २२ होलाष्टकारंभ, श्री अन्नपूर्णाष्टमी, २५ आमलकी एकादशी त्रिस्पृशा महाद्वादशी, २६ भौमप्रदोष, २८ स्नानदान व्रतादि की फाल्गुनी पूर्णिमा, होलिकादाह, श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती।

मध्य स्व-पराक्रम तथा परिश्रम से उच्च वर्ग पर अनुकूल प्रभाव होगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। साझेदारी के कार्यों में हानि संभावित है। मासांत में नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी। प्रवास सुखदायी होगा।

महिलाओं को आजीविका की दिशा में विरोधाभास अथवा विलंब का सामना करना होगा। पारिवारिक चिंताएं बढ़ेंगी।

विद्यार्थियों को श्रम साध्य सफलता मिलेगी। वाहनादि से सावधानी रखें।

कर्क : मास में असाधारण कीर्ति तथा सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों में उपलब्धि की प्रबल संभावना है। रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। संपत्ति संबंधी विवाद का निराकरण होगा। ८ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। आत्मविश्वास से मन वांछित कार्यों की पूर्ति होगी। १६ से २४ के मध्य नवीन योजनाओं की प्रगति होगी। मासांत में रक्त-संबंधियों से भावनात्मक पीड़ा होगी। आकस्मिक धन-लाभ होगा।

महिलाओं की आध्यात्मिक प्रवृत्ति बढ़ेगी। पारिवारिक सुख उत्तम होगा।

आजीविका संबंधी प्रयास पूर्ण होंगे। संभाषण पर नियंत्रण रखें।

विद्यार्थियों को अनपेक्षित सुखद समाचार मिलेगा। शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। पुरस्कार अथवा उपहार मिलेगा।

सिंह : मास मध्यम फलदायी होगा। व्यर्थ विरोधाभास तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना होगा। साहस तथा पराक्रम से विजय मिलेगी। आध्यात्मिक अथवा सृजन संबंधी कार्यों की अधिकता होगी। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा। लंबित कार्यों में प्रगति होगी। गुप्त शत्रुओं के कारण तनाव का सामना करना होगा। औद्योगिक कार्यों से धनलाभ होगा। १६ से २४ के मध्य अज्ञात भय एवं मानसिक तनावों का सामना करना होगा। व्यर्थ विवाद टालकर धैर्य से कार्य करें। प्रवास टालना हितकर होगा।

महिलाओं को आत्म-विश्वास से नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक विवाद टालना हितकर होगा। उत्साह तथा व्यस्तता रहेगी।

विद्यार्थियों की शिक्षा, परीक्षा, प्रतियोगिता में धीमी प्रगति होगी। पारिवारिक सुख उत्तम होगा।

कन्या : मास में कार्यों की अधिकता होगी। राज्याधिकारी वर्ग के सहयोग से योजनाएं पूर्ण होंगी। आकस्मिक धन-लाभ होगा। व्यर्थ विवादास्पद स्थितियों को टालना हितकर होगा। १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों की अधिकता होगी। आकस्मिक धन लाभ होगा। शत्रु पक्ष का शमन होगा। ८ से १५ के मध्य व्यर्थ विरोधाभास अथवा विवाद का सामना करना होगा। संभाषण पर संतुलन रखें। १६ से २४ के मध्य विपरीत स्थितियों में उत्तराधिकारियों के सहयोग से लाभ मिलेगा। आकस्मिक रूप से प्रवास होगा। मासांत में संपत्ति विवाद का समाधान होगा। स्वजनों से भेंट होगी।

महिलाओं को उपहार भेंट अथवा आकस्मिक धन-लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी कार्यों की अधिकता होगी। मित्रों से सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सुख उत्तम होगा।

तुला : मास में राजकीय कार्य पूर्ण होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। नवीन उद्यम में राज्याधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। व्यर्थ मानसिक तनाव बढ़ेंगे। नवीन योजनाओं में धीमी प्रगति होगी। संपत्ति कार्यों में विलंब होगा। ८ से १५ के मध्य नवीन उद्यम में उत्तराधिकारियों के सहयोग से धन लाभ होगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी। १६ से २४ के मध्य स्वजनों के सहयोग से संपत्ति विवाद का समाधान होगा। पारिवारिक सुख उत्तम होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यशवृद्धि होगी।

महिलाओं को स्वास्थ्य तथा परिवार संबंधी चिंता होगी। आजीविका संबंधी सफलता मिलेगी। प्रभावक्षेत्र में वृद्धि होगी।

विद्यार्थियों को प्रगति के नवीन अवसर मिलेंगे। सुखद समाचार मिलेगा। उत्साहवर्धक वातावरण रहेगा।

वृश्चिक : परोपकार तथा भावुकता से पीड़ा होगी। श्रम की अधिकता के बावजूद न्यूनतम उपलब्धियां होंगी। संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। दीर्घकालिक योजनाओं में धन व्यय होगा।८ से १५ के मध्य जोखिमपूर्ण अथवा परोपकारी प्रयासों से हानि संभावित होगी। विवेकपूर्ण निर्णय लें। श्रम की अधिकता होगी। १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष से सुलह होगी। परिवार में प्रसन्नता तथा उत्साहवर्धक वातावरण होगा।

महिलाओं को कार्यों की अधिकता होगी। रोजगार संबंधी कार्य पूर्ण होंगे। वांछित स्थान पद-प्राप्ति होगी। स्वजनों का सहयोग मिलेगा।

विद्यार्थियों को मित्रों अथवा आत्मीयजनों का सहयोग मिलेगा। सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा मिलेगी। शिक्षा कार्यों में एकाग्रता हितकर होगी।

धनु : मास में साहसिक प्रयासों से भाग्योन्नति होगी। न्यायालयीन विवाद हल होगा। प्रियजनों के सहयोग से कार्यों की पूर्ति होगी। १ से ७ के मध्य आर्थिक स्थिति में

सुधार होगा । प्रियजनों के सहयोग से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा । ८ से १५ के मध्य नवीन योजनाओं से सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । १६ से २४ के मध्य रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद होगा । राजकीय कार्यों में प्रगति होगी । लेखन-सृजन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । मासांत में प्रवास का योग उपस्थित होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी ।

महिलाओं को पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । आजीविका की दिशा में भावुकता की अपेक्षा विवेकपूर्ण निर्णय लें ।

विद्यार्थियों को शिक्षा, परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी । पारिवारिक सहयोग होगा ।

मकर : मास में आजीविका संबंधी प्रयास पूर्ण होंगे । लंबित योजनाओं में सफलता मिलेगी । १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । राजकीय कार्यों से धन लाभ होगा । प्रियजनों से भेंट होगी । संपत्ति कार्यों में विलंब होगा । ८ से १५ के मध्य विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । लंबित योजना पूर्ण होगी । आकस्मिक धन-लाभ होगा । १६ से २४ के मध्य प्रवास का योग उपस्थित होगा । मासांत में शारीरिक पीड़ा अथवा भावुकता से कष्ट होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से आकस्मिक एवं अनपेक्षित लाभ होगा ।

महिलाओं की स्वजनों से भेंट होगी । आजीविका संबंधी कार्यों में आंशिक परिवर्तन होगा । उत्साह तथा व्यस्तता में वृद्धि होगी ।

विद्यार्थियों को शिक्षा परीक्षा संबंधी व्यस्तता होगी । स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता रखें । पारिवारिक वातावरण सुखद होगा ।

कुंभ : मास उत्तम फलदायी होगा । आत्म-विश्वास से प्रतिकूल स्थितियों में विजय मिलेगी । नवीन योजनाओं पर धन व्यय होगा । मित्रों व स्वजनों का उल्लेखनीय सहयोग रहेगा । १ से ७ के मध्य नवीन योजनाओं में राजकीय सहयोग मिलेगा । नवीन वाहन भवन संपत्ति संबंधी कार्य पूर्ण होगा । ८ से १५ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा होगी । नवीन संपर्क लाभदायी होंगे । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों के प्रति रुझान बढ़ेगा । विशिष्ट कार्य की पूर्ति से सम्मान दायी स्थितियों का उदय होगा । मासांत में उदर अथवा रक्त-संबंधी पीड़ा होगी ।

महिलाओं को रोजगार की दिशा में वांछित सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा । रुका हुआ धन मिलेगा । स्वजनों से भेंट होगी ।

विद्यार्थियों को परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी व्यस्तता होगी । सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । पारिवारिक दायित्वों की चिंता होगी ।

मीन : मास मध्यम फलदायी होगा । आजीविका संबंधी प्रयास साकार होंगे । स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें । उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग के बावजूद कार्यों में विलंब होगा । १ से ७ के मध्य प्रियजनों का सहयोग मिलेगा । सांस्कृतिक अथवा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । संपत्ति कार्यों में धीमी उन्नति होगी । ८ से १५ के मध्य संपत्ति अथवा लंबित योजनाओं में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । कार्यों में व्यर्थ विलंब होगा । शत्रु

पक्ष से संयमपूर्ण व्यवहार करें । १६ से २४ के मध्य मनोवांछित स्थान की यात्रा होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । मासांत में जोखिमपूर्ण सौदे लाभदायी होंगे । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें ।

महिलाओं को कार्यों की अधिकता होगी । पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका संबंधी इच्छित परिवर्तन होगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा कार्यों में सफलता मिलेगी । परीक्षा प्रतियोगिता संबंधी मनोनुकूल सफलता मिलेगी ।

— ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा भोपाल (मध्य प्रदेश)



पेड़-पौधों से पेट्रोल मिलेगा

पेट्रोल के वर्तमान संकट के दौर में पेड़-पौधों से भी पेट्रोल प्राप्त किया जा सकता है । एक अमरीकी वैज्ञानिक मेल्विन के अनुसार यूफोर्बिएसी, एसक्लेपिएडेसी व एपोसायनेसी वंश के पौधों में पेट्रोल जैसा ही रसायन पाया जाता है । यह रसायन इन पौधों दूध (लैटेक्स) में मौजूद रहता है । रासायनिक भाषा में इसे 'हाइड्रोकार्बन' कहते हैं ।

हमारे देश के ही दो संस्थान— राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान, लखनऊ व देहरादून का भारतीय पेट्रोलियम संस्थान इस दिशा में अनुसंधान कर रहे हैं । कुछ पौधों से तो प्रोसेसिंग के बाद पेट्रोल प्राप्त करने में सफलता भी मिल गयी है । ऐसे १७ पौधों की खोज भी कर ली गयी है, जिनसे पेट्रोल जैसा ही तेल प्राप्त हो सकेगा ।

ब्राजील में दो ऐसे पेड़ भी पाये गये हैं, जिनमें प्रोसेसिंग की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी । इनके नाम हैं —कोपेफेरा लैंड्सडोरफी व कोपेफेरा मल्टीजुगा । इनका तेल डीजल इंजन के उपयोग में लाया जा सकेगा । एक पेड़ से २० से ३० लीटर तक तेल प्राप्त किया जा सकता है । ऐसा एक पेड़ और भी है जो 'पेट्रोलियम नट' के नाम से प्रसिद्ध है । इसका वास्तविक नाम है —पिटास्पोरम रेसिनीफेरम । इसके फल से निकलने वाली गंध बिलकुल पेट्रोलियम जैसी होती है ।

प्रो. मेल्विन ने एक हजार बैरल तेल प्रतिदिन तैयार करनेवाले एक संयंत्र में 'यूफोर्बिया लेथिरिस' नामक पौधों से तेल तैयार करवाया तो उसकी कीमत ६० डॉलर प्रति बैरल पड़ी है । उनका कहना है कि अगर बड़े पैमाने पर, एक लाख बैरल प्रतिदिन के हिसाब से तेल तैयार करवाया जाए तो इसकी लागत और घट सकती है ।

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि १०७ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं । कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी—अजय भाम्बी



सुरेश कौशिक, दिल्ली

प्रश्न : आध्यात्मिक लक्ष्य-सिद्धि प्राप्त कर समाज सेवा करना चाहता हूं । लक्ष्य की प्राप्ति कब संभव है ?

उत्तर : आपके नवम् भाव में स्थित शनि, द्वादश में केतु एवं सप्तम में वृहस्पति ऐसे विचार देता है । आध्यात्मिक मन होता है । आध्यात्मिक लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती । समाज सेवा करें ।

कुमारी कल्पना, दिवियापुर (इटावा)

प्रश्न : विवाह कब ? घर-वर कैसा ?

उत्तर : विवाह अगस्त तक । वर सुंदर होगा ।

केशव चरण वर्मा, बोकारो स्टील सिटी

प्रश्न : पदोन्नति एवं निजी आवास कब तक ?

उत्तर : अभी समय है ।

प्रदीप कुमार प्रभाकर, ऋषिकेश

प्रश्न : स्वास्थ्य कब तक ठीक होगा ? नग वजन सहित बताएं ?

उत्तर : किसी अच्छे न्यूरो सर्जन को दिखाएं । सात रत्ती का पुखराज धारण करें ।

अश्विनी कुमार जोरिहार, (कोलाघाट) मिदनापुर

प्रश्न : मैं अभियंता कब तक बन सकूंगा ? रत्न भी सुझाएं ?

उत्तर : अभी कुछ प्रतीक्षा और करनी पड़ेगी । पुखराज धारण करें ।

दीप्ति शर्मा, सहारनपुर

प्रश्न : जीवन में स्थायित्व कब व किस क्षेत्र में ?

उत्तर : पूर्ण स्थायित्व जीवन के चौबीसवें वर्ष में आएगा ।

जवाहरलाल शुक्ला, राजनंदगांव

प्रश्न : पुत्र-प्राप्ति कब होगी ?

उत्तर : पत्नी की कुंडली भी भेजें ।

हेमा उपाध्याय, जबलपुर

प्रश्न : शादी कब ? घर-वर कैसा ?

उत्तर : शादी इसी वर्ष । वर सर्विस में होगा ।

शशिभूषण, आरा

प्रश्न : मैं व्याख्याता कब तक बनूंगा ?

उत्तर : डेढ़ वर्ष के अंदर ।

प्रताप नारायण दीक्षित, इलाहाबाद

प्रश्न : मकान और प्रमोशन से सुख कब तक ?

उत्तर : प्रमोशन इसी वर्ष एवं मकान दो वर्ष के भीतर ।

हरिश्चन्द्र दुबे, बिलासपुर

प्रश्न : आर्थिक संघर्षों से छुटकारा कब तक

मिलेगा ?

उत्तर : मार्च से अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है। कठिनाइयों से राहत मिलेगी।

शरद कांत त्यागी, चंदौसी

प्रश्न : मेरी नौकरी कब लगेगी ?

उत्तर : नौकरी अगस्त तक लग जाएगी। प्रयासों में गति लाएं।

रवि कुमार अकेला, धनबाद

प्रश्न : क्या प्रेम विवाह संभव है ?

उत्तर : अगले दो वर्ष तक नहीं होगा।

उपेन्द्रनाथ गुप्ता, बरेली

प्रश्न : मकान का योग कब तक आएगा ?

उत्तर : उम्र के बयालिसवें वर्ष में।

ज्ञानेश शाक्य, ग्वालियर

प्रश्न : मेडिकल में प्रवेश कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष होगा।

मनीष गोयल, सहारनपुर

प्रश्न : विदेश यात्रा कब तथा किस सिलसिले में होगी ?

उत्तर : जीविकोपार्जन के लिए अगले वर्ष विदेश जाना होगा।

बी. डी. शर्मा, गाजियाबाद

प्रश्न : जून '९२ में रिटायरमेंट के उपरांत कैसा रहेगा ?

उत्तर : बहुत अधिक विचलित नहीं होंगे, घबराएं नहीं।

रेनू नागर, साहाबाद (म.प्र.)

प्रश्न : संतान की प्राप्ति कब तक ?

उत्तर : पुखराज धारण करें। संतान प्राप्ति १९९२ में।

पंकज कुमार, सहरसा (बिहार)

प्रश्न : मनचाहा स्थानांतरण कब तक ?

उत्तर : जुलाई के पश्चात।

पन्नालाल श्रीवास्तव, कानपुर

प्रश्न : पुराना मकान बेचकर नया मकान कब तक प्राप्त होगा ?

उत्तर : सितम्बर के उपरांत।

हरिकिशन, पानीपत

प्रश्न : क्या निजी व्यवसाय संभव है ? कब तक ?

उत्तर : साझेदारी में व्यापार होगा लेकिन अभी थोड़ा प्रतीक्षा करें तो लाभ होगा।

कु. सीमा गुप्ता, भवानी मंडी (राज.)

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : इसी वर्ष विवाह का योग है।

भोलानाथ त्रिपाठी, इलाहाबाद

प्रश्न : संकट से मुक्ति कब तक ?

उत्तर : अभी समय लगेगा।

खेमचंद शर्मा, बीनागंज (गुना)

प्रश्न : राजकीय नौकरी कब तक लगेगी ?

उत्तर : नवम्बर से पूर्व।

डॉ. देवेन्द्र वर्मा, भड़ोच (गुजरात)

प्रश्न : संतान की प्राप्ति कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष।

राकेश कुमार गुप्ता, सहारनपुर

प्रश्न : स्वयं का मकान कब तक ? नीलम रत्न का कोई सस्ता विकल्प रत्न सुझाएं ?

उत्तर : अगले तीन वर्ष में मकान। नगों के विकल्प ज्यादा कारगर नहीं होते।

संजय कुमार सिन्हा, गोरखपुर

प्रश्न : क्या मेरे भाग्य में लाटरी खुलने का योग है ? यदि हां तो कब तक ?

उत्तर : कर्म पर विश्वास रखें। बिना मेहनत के धन मिलने का योग है।

राजेन्द्र त्रिवेदी, जोधपुर

प्रश्न : ए.एम.आई.ई. पूरी कब होगी ? समय बताएं ?

उत्तर : शनि के साढ़े साती के पांच वर्ष पूरे हुए ढाई शेष हैं। इन्हीं में हो जाएगी।

प्रभात कुमार सक्सेना, नयी बम्बई

प्रश्न : सरकारी नौकरी अथवा व्यवसाय ?

उत्तर : व्यवसाय अधिक ठीक रहेगा।

पीताम्बर शर्मा, मुंगेली

प्रश्न : दुःखमय पारिवारिक (दामपत्य भी) स्थिति में सुधार कब तक ?

उत्तर : शनैः-शनैः समय अच्छा आ रहा है। परिस्थितियां आपके पक्ष में हो जाएगी।

घनश्याम ठाकुर, पटना

प्रश्न : पटना में अपना मकान कब तक बनेगा ?

उत्तर : १९९२ में।

नीना सिंह, लखनऊ

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष।

— डी-२/२, जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५८

१०८



नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... **महीना** .... **सन**.............................

जन्म-स्थान......... **जन्म-समय**...

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..

पता...

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १०८) 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० फरवरी, १९९१

प्रवेश



विवस्त्रता

इतनी भीड़ में
इतना गहन मौन क्यों
हो गये सभी
संवाद खंडित
क्यों बुने थे
सन्नाटे तुमने
उपेक्षा के करघे पर
नहीं-नहीं
तोड़ दो ताना-बाना
इस वस्त्र का
यह नहीं ढक सकेगा
मेरी विवस्त्र
व्यथा को ।

सारांश

भटकते रहे
जीवन भर
बादलों की तरह
आवारा हवाओं
के साथ
पीते हुए गरल बेबसी का
किंतु अब महसूस होता है मुझे
बादल खाली नहीं थे मेरे
अमृत बरसाया था उन्होंने
शमशानों पर
और गरल भी पिया था मैंने
नीलकंठ की तरह उम्रभर ।

मेरा मन आलोकित कर दो

रोक लो तुम हाथ अपने
बढ़ाये हैं तुमने जो
मुझे गहन अतल
से निकालने को
मत हटाओ
कांटे
मेरी राह के
बींधते रहे हैं जो
सदा ही मेरा अंत:स्थल
दो मुझे संबल इतना
जूझकर तूफानों से
मैं देख सकूं
तुम्हारे नेह का सूरज
आलोकित कर दो
मेरा मन बस
इतना ।



—ममता चतुर्वेदी

आत्मकथ्य : प्राचीन भारतीय इतिहास में एम.ए. । जीवन में कुछ भावनाएं मन को उद्वेलित कर देती हैं और कविता का जन्म हो जाता है ।"

द्वारा श्री शरद चतुर्वेदी (सहायक प्रबंधक)
भारतीय कपास निगम, तिरुपति जिनिंग फैक्ट्री, बदनावर (जिला : धार)

बच्चे

एक

कल दिखे
स्कूल जाते हुए
कुछ छोटे-छोटे बच्चे
बच्चे
जो अपने कंधों पर
पहाड़ जैसे बस्तों का
बोझ लादे हुए थे

तब
कौंध उठे आंखों में
वे पौधे
जिन पर
जरूरत से ज्यादा खाद
उलेड़ दी जाती है
और फिर
वे अपनी
सारी की सारी हरी पत्तियां
खो बैठते हैं

दो

बच्चे
जो जल्दी
समझदार हो जाते हैं
अक्सर
उनकी मुट्ठी की पकड़ से
छूट जाती हैं
कुछ चीजें

कुछ चीजें
जैसे कि
खिलखिला कर हंस पड़ना
जैसे कि,
जैसे कि....

जिंदगी

जिंदगी
पेंसिल के
लेड की तरह है
जिसका
अधिकतर भाग
नष्ट होता रहता है
कटर या ब्लेड की
धार में आकर

केवल
बहुत थोड़ा-सा हिस्सा ही
काम आता है
लिखने के

शायद
कटर या ब्लेड से
सामना
जरूरी भी है
क्योंकि
इससे ही दूर होता है
जिंदगी का भुथरापन
आती है इसमें धार

संभावनाओं का आकाश

हमारे ऊपर
संभावनाओं का
विस्तृत आकाश
टंगा हुआ है
छत्र-सा

हमारे पैरों पर
पड़ी हुई है वह धरती
जिस पर
बिखरे हुए हैं
सारे लक्ष्य
फूलों की तरह

हमारा मस्तिष्क
उन्नत है
किरीट के समान

भावनाओं की
सुंदर माला
पड़ी हुई है
हमारे हृदयस्थल पर

और
कर्म का शंख
सुशोभित है
हमारे हाथों में

हमारे समीप
प्रेरणादायी
आकांक्षाओं की
धूप बत्ती
जल रही है

हम स्वयं
कम हैं क्या
किसी देवता से ।

—संजीव गुप्त

आत्मकथ्य : छात्र हूं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग का, मेरी कविताएं मेरे अंतर्नाद का शब्दमय स्फोट हैं ।

११७/के/८२, सर्वोदय नगर, कानपुर



नोस्टरडम्स की भविष्यवाणी :

इक्कीसवीं सदी में भारत महाशक्ति बनेगा

१९९९ के सातवें महीने में भारत एक महाशक्ति के रूप में उभरेगा और अब तक अपने पर आक्रमण करनेवालों को पूरी तरह नष्ट कर देगा ।

यह भविष्यवाणी है लगभग चार सौ वर्ष पूर्व हुए फ्रांसीसी यहूदी भविष्यवक्ता नोस्टरडम्स की । नोस्टरडम्स और उनकी चकित कर देनेवाली भविष्यवाणियों के बारे में सारे संसार की पत्र-पत्रिकाओं में बहुत-कुछ छप चुका है ।

नोस्टरडम्स का जन्म गुरुवार १४ दिसम्बर १५०३ को दक्षिणी फ्रांस में हुआ था । उनका परिवार यहूदी था और उसे बलात ईसाई बनाया गया था । नोस्टरडम्स ने २६ वर्ष की अवस्था में चिकित्सा विज्ञान में उपाधि प्राप्त की लेकिन प्लेग-पीड़ित लोगों के उपचार की उसकी नयी विधि ने उसे लोकप्रिय बना दिया । पर नोस्टरडम्स की सफल चिकित्सक बनने में कोई रुचि नहीं थी । उसे अनुभव होता था कि वह भविष्य देख सकता है, व्यक्तियों का ही नहीं, देशों का भी और उसने अपनी मित्र-मंडली में भविष्यवाणियां करना शुरू किया । बाद में नोस्टरडम्स दक्षिणी फ्रांस स्थित सालोन नगर में बस गया ।

उसकी भविष्यवाणियों का प्रथम संकलन १५५५ में प्रकाशित हुआ । 'सेंचुरीज' शीर्षक इस कृति में उसने भविष्यवाणी की थी कि १५५६ में फ्रांस के नरेश की एक द्वंद्वयुद्ध में मृत्यु हो जाएगी । यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई । २ जुलाई १५६६ को नोस्टरडम्स की सलोक में ही मृत्यु हो गयी । इस नगर में उसका निवास स्थान आज भी सुरक्षित है ।

नोस्टरडम्स की भविष्यवाणियां लैटिन में है और अनेक लोगों ने उनका अर्थ लगाया है । भारत में आकाशवाणी के एक भूतपूर्व अधिकारी श्री जी. एस. हिरण्यप्पा तथा कुछ और लोगों ने नोस्टरडम्स की भविष्यवाणियों में भारतीय संदर्भ, भारत का भविष्य देखने का प्रयत्न किया है ।

चार सौ वर्ष पूर्व हुए फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नोस्ट्राडमस की भविष्यवाणियों की सारे संसार में चर्चा है । लैटिन भाषा में लिखी गयी इन भविष्यवाणियों के कुछ विश्लेषकों ने नोस्ट्राडमस की भविष्यवाणियों में भारतीय संदर्भ भी खोज निकाला है । ऐसे विश्लेषकों के अनुसार नोस्ट्राडमस ने भविष्यवाणी की है कि २१वीं शती में भारत एक महाशक्ति के रूप में उभरेगा ।

नोस्टरडम्स की भविष्यवाणी के विश्लेषकों का कहना है कि 'सेंचुरी' के दसवें भाग में ९६वें क्वाट्रेन में भारत के भविष्य का इस तरह उल्लेख किया है—

सागर के नामवाले धर्म की कट्टरपंथियों पर विजय होगी । खूंखार नस्लवाले समुदाय अलिफ-अलिफ द्वारा क्षतिग्रस्त दोनों (धर्मों) से अत्यंत भयभीत होंगे ।

भविष्यवाणी के विश्लेषकों का कहना है कि संसार में केवल हिंदमहासागर से ही भारत का बोध होता है । और किसी महासागर का नाम किसी देश पर नहीं रखा गया है । हिंदू एवं यहूदी धर्मावलंबियों को अपने धर्म के खातिर अन्य धर्मावलंबियों से काफी अत्याचार सहने पड़े । नोस्टरडम्स के अनुसार अब अत्याचार करने धर्मावलंबियों को अत्यंत भयभीत होना पड़ेगा और उनके अंधविश्वासों का उन्हीं के देशों से खात्मा हो जाएगा ।

'सेंचुरी' के तीसरे भाग के ५६वें क्वाट्रेक में नोस्टरडम्स ने १९९९ में एक भयानक विश्वयुद्ध की भविष्यवाणी की है । यह विश्वयुद्ध चीनी कम्युनिस्टों और उसके मुसलिम-समर्थकों द्वारा शुरू किया जाएगा । इस भीषण युद्ध में विश्व की साठ प्रतिशत आबादी नष्ट हो जाएगी ।

विश्लेषकों के अनुसार, सेंचुरी के दूसरे भाग की आठवीं क्वाट्रेन में नोस्टरडम्स ने भविष्यवाणी की है कि पश्चिमी देशों द्वारा पारंपरिक धार्मिक आस्थाओं को त्यागकर हिंदू धर्म के सिद्धांतों को अपनाया जाएगा ।

नोस्टरडम्स की ये भविष्यवाणियां कितनी सच होंगी, यह तो समय ही बताएगा लेकिन उसकी भविष्यवाणियों के विश्लेषकों का कहना है कि उसकी पिछली प्रायः सभी भविष्यवाणियां बिलकुल सत्य सिद्ध हुई है अतः ये भविष्यवाणियां भी सच सिद्ध होंगी, इसमें कोई संदेह नहीं । ●



मैं कला के लिए ही जीना चाहती हूं

रामानन्द सागर के दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' में भरत की पत्नी 'मांडवी' की भूमिका में बहुत ही कम समय के लिए एक लड़की को देखा था । तब से मेरी यह धारणा थी कि यह लड़की सिर्फ अपने शौक को पूरा करने के लिए पर्दे पर आयी होगी । लेकिन धीरे-धीरे उसके पर्दे पर होने वाले विस्तार से मेरी जिज्ञासा बढ़ी और मैं सुलक्षणा से कुछ उसके कार्यों के बारे में पूछ बैठा

सुलक्षणा दिल्ली विश्वविद्यालय से अंगरेजी में स्नातकोत्तर है । सन १९७५ से आकाशवाणी दिल्ली से इनके नाटकों का समय-समय पर हिंदी, उर्दू व पंजाबी में प्रसारण होता रहा है । जलंधर केंद्र के अलावा दूरदर्शन उपग्रह से भी इनकी कला को लोगों ने देखा ।

सुलक्षणा की ख्वाहिश है कि समाज के हर चरित्र को पर्दे पर अपनी अभिनय कला से जीवित करूं । इस कला-यात्रा में इन्होंने विभिन्न फिल्मों में अभिनय भी किया है ।

हिंदी की फिल्म—'अबू कालिया' व 'जख्मी आत्मा' में प्रमुख भूमिका अभिनीत की है । हरियानवी फिल्म 'अपने हुए पराये' में भी प्रमुख भूमिका निभायी है । इसी प्रकार वीडियो फिल्म 'शायद' हिंदी में क्रिश्चियन लेडी डॉक्टर, पंजाबी कॉमिडी 'चश्का' व 'जयकारा' में दुर्गा की भूमिका कर रही हैं ।

दूरदर्शन हिंदी फीचर फिल्म पार्वती, डोनेशन व 'गौरी का सिंदूर' के अलावा गुजराती फिल्म 'मीरा दातार' में भी अपना अभिनय कौशल सुलक्षणा दिखा चुकी हैं ।

दूरदर्शन धारावाहिक 'मशाल' में सुलक्षणा ने अरुण गोविल व बशीर खान के साथ

अभिनय भी किया है । इस प्रकार सुलक्षणा खत्री की अभिनय यात्रा के पड़ाव दिन पर दिन आगे बढ़ते ही जा रहे हैं ।

इसी यात्रा में आनेवाले रामानंद सागर के धारावाहिक 'लार्ड कृष्ण', डॉ. चंद्रप्रकाश के धारावाहिक 'चाणक्य' व ऋषिकेश मुखर्जी द्वारा निर्देशित धारावाहिक 'उजाले के ओर' में इन्हें भूमिकाएं मिल चुकी हैं ।

जब सुलक्षणा यह बताती जा रही थी कि कला के लिए ही मैं जीना चाहती हूं और उसके विविध चरित्रों को अभिनीत करने की मेरी हार्दिक तमन्ना है, तब ही उनकी तंद्रा भंग करते हुए मैंने पूछा कि अपने निजी जीवन को किस तरह से जीना चाहेंगी तो वह कुछ सकुचाते हुईं बोलीं कि ऐसा जीवन साथी कला-यात्रा में फिलहाल नहीं बाद्‌ में मिले जो एक दूसरे की भावनाओं और कार्यों का आदर करता हो तो वह स्वीकार्य होगा । जीवन के किसी भी क्षेत्र से जुड़े साथी में परहेज नहीं होगा ।

फिल्म उद्योग में अकसर स्त्री कलाकार के शोषण पर प्रश्न करने पर वह बोलीं । ऐसा कभी नहीं होता । जिसके पास कला की पूंजी है, उसके लिए कोइ भी बाधा सामने नहीं होती । यह निर्भर करता है व्यक्ति-व्यक्ति स्त्री कलाकार पर कि वह अपनी गरिमा किस तरह बनाती है । खाली सुंदरता ही अभिनय कला के लिए जरूरी नहीं है । उसके साथ जब तक 'टैलेंट' नहीं है तब तक आगे नहीं बढ़ सकता । उम्मीदों के सारे भंडार के साथ आज सुलक्षणा खत्री अपनी इस अभिनय यात्रा में आगे विश्वसनीय डग भर रही है । देखें भविष्य उन्हें किस मोड़ पर ले जाता है । **प्रस्तुति : भगवती**

हंसिकाएं

फैशन

फैशन डिजायनर की मृत्यु पर
गीता का प्रवचन सुनकर
मुंह से निकल गया
फैशन इतना-शरीर की तो छोड़ो
आत्मा ने भी चोला बदल दिया

पूछताछ

''लड़का गुणों की खान है''
बात अधसुनी करके...
लड़की के पिता का था कहना—
''खान में कितने लोग काम करते हैं
तथा उनका भी, वेतन होगा कितना ?''

कर

यही वित्तमंत्री की विनम्रता
करबद्ध होकर—'कर' बद्ध करता

अनर्थ

नयी पीढ़ी के नये चोंचले
'भय बिनु होहि न प्रीति' के स्थान पर
एक छात्रा ने लिख दिया
'पद बिनु होहि न प्रीति, सोच ले'

पानी

संबद्ध अधिकारी को क्रुद्ध देखकर
उनका मुंह सूख गया तो
मित्र ने चाहा यही समझाना
जिनमें पानी नहीं रहा
उन्हें मुंह नहीं लगाना

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

दमा (अस्थमा) रोग का आसान इलाज

● वैद्यराज पं. जगदीश प्रसाद शर्मा

संसार में श्वास के रोग से लाखों लोग पीड़ित हैं। वर्तमान चिकित्सा-प्रणाली भी श्वास के रोग की चिकित्सा में सफल नहीं हो पा रही है। सामान्यतः यह भी कहा जाता है कि 'दमा दम के साथ जाता है।' अनेक रोग बेहद कष्टकारक होते हैं, किंतु श्वास रोग तो उनमें भी भयंकर है।

श्वास के कई प्रकार हैं

श्वास तीन प्रकार से देखा जाता है—स्वतंत्र रूप में, लक्षण रूप में और उपद्रव रूप में। उपद्रव रूप में इसे उरो गुहा अर्थात छाती में देखा जाता है। सामान्यतः तमक ही श्वास से पीड़ित होता है।

हमने अपने ५८ वर्ष के चिकित्सा-व्यवसाय में 'आयुर्वेद के सिद्धांतों' के अनुसार चिकित्सा की है लेकिन बाद में वर्द्धमान पीपली रसायन से उपचार से सफलता मिली है। हमने यूरोप, सोवियत संघ, इंगलैंड, कनाडा एवं मारीशस में श्वास के रोगियों पर वर्द्धमान पीपली का प्रयोग किया और उसमें सफलता भी मिली है।

वैद्यराज पं. जगदीश प्रसाद शर्मा देश के वयोवृद्ध चिकित्सक हैं। वे सोवियत संघ सहित यूरोप एवं अमरीका का दौरा कर चुके हैं। मारीशस में उनके प्रयत्नों से आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का काफी प्रचार-प्रसार हुआ है। श्वास के रोग के उपचार का यह अनुभव सिद्ध प्रयोग उन्होंने 'कादम्बिनी' के लिए विशेष रूप से लिखा है।

वर्द्धमान पीपली का प्रयोग

वर्द्धमान पीपली का प्रयोग केवल दूध के पथ्य के आधार पर करते हैं। जो रोगी दूध का पथ्य नहीं ले सकता, उसे यदि अन्न के पथ्य पर दवा दी जाए तो भी सफलता मिलती है, लेकिन उसमें समय अधिक लगता है।

रोगी को घी पिलाकर, फिर सेंककर पसीना दिलाएं, बाद में वमन (कय) कराएं। इसके बाद विरेचन (दस्त) कराएं। जो रोगी घी नहीं पी सकता, उसे खिचड़ी या नमकीन हलवे (उपमा) में अच्छा घी दें। स्वेदन उरोगुहा अर्थात छाती पर कराना चाहिए। पसीना लाने के दो तरीके हैं। एक तो रेत की पोटली बनाकर उसे गरम कर छाती पर सेक करें। यह पथ्य स्वेद कहलाता है। स्निग्ध स्वेद से तात्पर्य है कि अलसी और तेल पीस कर, उसकी पोटली बनाकर सेक करें। फिर वमन अर्थात कय कराकर पीपली वर्द्धमान का प्रयोग करें। वमन के लिए पीपल-मदन फल, सेंधा नमक, वच, मुलहठी का उपयोग ठीक रहता है।

वमन के पश्चात हरीतकी अर्थात हरड़, सेंधा

नमक, आंवला, गुड़वच, वायविडंग, हल्दी, पीपल, सोंठ, हृड़ आदि मिलाकर आठ भाग करें और रोगी को खिलाएं।

दूध द्वारा उपचार

बाद में बड़ी पीपल ३ रत्ती से २१ रत्ती तक प्रतिदिन तीन रत्ती के क्रम से बढ़ाना चाहिए। २१वें दिन इसे ८४ रत्ती तक बढ़ाएं। १२ रत्ती तक प्रातः केवल दूध में मिलाकर दें। १२ रत्ती के बाद रात और दिन दोनों काल में रोगी की इच्छानुसार इसे दूध में पिलाएं। रोगी जितनी बार दूध पिये, उसे दवा मिलाकर देना चाहिए। सामान्यतः रोगी तीन से पांच किलो तक दूध पी लेते हैं। हमारा एक रोगी तो सात किलो तक दूध पी गया। २१वें दिन के बाद दवा की मात्रा क्रमशः घटायी जाती है। साथ ही रोगी को उसकी इच्छा के अनुसार तुरई, पड़वल, टिंडा आदि का सूप पिलाया जाता है। उसे साबुत मूंग का सूप भी देना चाहिए। यह क्रम एक सप्ताह तक चलाना चाहिए। इसी बीच रोगी जितना दूध पीना चाहे, उसे पिलाना चाहिए। यह प्रयोग दो सप्ताह का है।

पीपली वर्द्धमान रसायन के बाद रोगी को यद्यपि किसी औषध की आवश्यकता नहीं होती, तथापि उसे कुछ समय तक पथ्याचार के साथ कुष्मांड रसायन, च्यवन प्राश, वृहत रसायन देना चाहिए।

इस कल्प में कुछ रोगियों को दूध से अरुचि हो जाती है पर इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। यदि रोगी फल लेना चाहे तो उसे चीकू दिया जा सकता है।

—बी ५/७, कृष्ण नगर
दिल्ली

इनके भी नयां जुदा जुदा

अकेले बैठोगे तो मसले जकड़ लेंगे
जरा सा वक्त सही दोस्तों के नाम करो

—दिलशाद नजमी

जहां की भीड़ में यादों की दौलत भी गंवा बैठे
मुकद्दर देखिए जीती हुई बाजी भी हार आये

—जफर गोरखपुरी

मैं वक्त के सीने में धड़कता हुआ दिल हूं
लोगो मुझे कब तक नजरअंदाज करोगे

—इशरत किरतपुरी

मैं अपने ख्वाबों से कटकर जीऊं तो मेरे खुदा
उजाड़ दे मेरी मिट्टी को दर बदर कर दे

—इफ्तिखार आरिफ

बता-बता मुझे मिन्नत गुजार इश्क बता
हुई कबूल अभी तक तेरी दुआ कि नहीं ?

—जिया मेरठी

वही जीने की आजादी वही मरने की जल्दी है
दिवाली देख ली हमने दशहरे कर लिये हमने

—साकी फारूती

जो चीज उन्होंने खत में लिखी थी नहीं मिली
खत हमको मिल गया है तसल्ली नहीं मिली

—नातक गुलावटी

ऐसा नहीं कि और सितमगर न आएंगे
लेकिन तुम्हारे कद के बराबर न आएंगे

—मोहसिन जैदी

कुछ रोज यह भी रंग रहा इंतजार का
आंख उठ गयी जिधर बस उधर देखते रहे

—असर लखनवी

यही अहसास दिल को डस रहा है
तू मेरा होके भी मेरा नहीं है

—शहाब अशरफ

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

नयी कृतियां



जर्मन-हिंदी कोश' केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित भारतीय एवं विदेशी भाषाओं की कोश-परंपरा का सद्य प्रकाशित प्रथम खंड है । हिंदी निदेशालय ने विगत वर्षों में लगभग सभी भाषाओं के द्विभाषी एवं त्रिभाषी कोश प्रकाशित किये हैं, जो विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए तो महत्त्वपूर्ण हैं ही किसी भी पुस्तकालय की संग्रहणीय सामग्री है ।

'जर्मन-हिंदी कोश' भारत जर्मन सांस्कृतिक समझौते के अंतर्गत प्रकाशित हुआ है । जर्मन भाषी एवं हिंदी भाषी दोनों के लिए यह अत्यंत उपयोगी है । जर्मनी में भारतविद्या के प्रति जो रुझान है उसे इस प्रकार के प्रकाशन अधिक तेजी तथा गरिमा प्रदान करेंगे । जैसा कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगाप्रसाद विमल की मान्यता है...'जो लोग हिंदी में संदर्भ ग्रंथों एवं कोशों की वर्तमान प्रगति एवं प्रक्रिया से अवगत हैं वे निश्चय ही इस बात का अनुभव करेंगे कि सामान्यतः हिंदी और विदेशी भाषाओं तथा विशेषतः हिंदी और जर्मन के बृहत् किंतु संतुलित उभयभाषी कोशों का बड़ा अभाव है ।' इसमें संदेह नहीं कि यह कोश भाषाओं के बीच अंतः-संबंध स्थापित करने का बेजोड़ प्रयास है ;

सामग्री की दृष्टि से अत्यंत संपन्न इस कोश में त्रुटियों की ओर तो विशेषज्ञ ही ध्यान दिलाएंगे क्योंकि यह भारतीय एवं जर्मन विद्वानों का संयुक्त प्रयास है परंतु यह अवश्य कहना पड़ेगा कि भारत सरकार को इतनी उपादेय सामग्री की कीमत अवश्य कम रखनी चाहिए ।

—नीरज सूजी

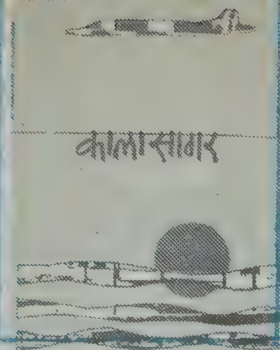
जर्मन हिंदी कोश (खंड-१)
प्रकाशक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय, रामकृष्णपुरम, नयी दिल्ली । मूल्य—दो सौ पंचान्यबे रुपये पचास पैसे ।

संकल्प : दिल्ली प्रशासन की हिंदी अकादमी प्रति वर्ष हिंदी दिवस पर 'संकल्प' शीर्षक से विभिन्न विषयों पर लिखे गये उत्कृष्ट लेखों और सर्जनात्मक रचनाओं का संकलन प्रकाशित करती है । सन १९९० में भी 'संकल्प' शीर्षक से हिंदी अकादमी ने एक संग्रहणीय ग्रंथ प्रकाशित किया है । संकलन में अनेक विद्वानों के लेख हैं, संस्मरण हैं एवं रिपोर्ताज, साक्षात्कार के साथ-साथ कविताएं भी संकलित हैं । संकलन में हिंदी के प्रायः सभी वरिष्ठ रचनाकारों के साथ-साथ नयी पीढ़ी के रचनाकारों की भी रचनाएं हैं अतः अनायास ही यह एक प्रतिनिधि-संकलन भी बन गया है ।

संकल्प
संपादक—नारायण दत्त पालीवाल,
प्रकाशक—हिंदी अकादमी, ए-२६/२७, सनलाइट इंश्योरेंस बिल्डिंग, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली (मूल्य का उल्लेख नहीं)

वह अलग व्यक्ति : डा. रघुवंश विचारवान लेखक के रूप में चर्चित रहे हैं, अब उनका यह





उपन्यास भी कथात्मक कम विचारात्मक आस्वाद अधिक देता है । मि. नायडू, मि. मुकर्जी, आचार्य, डॉक्टर, तीखू, मणि, तनु—जैसे कुछ पात्रों के जरिये लेखक ने स्वातंत्रय पूर्व और स्वतंत्र्य-प्राप्ति के पश्चात की स्थितियों का वैचारिक स्तर पर आकलन प्रस्तुत करवाया है । धर्म और राजनीति के घालमेल में राजनीति की जो दूषित भूमिका रही है, साम्यवाद, समाजवाद, समानता के आकर्षक नारों से जो यहां का प्रजातंत्र भटकता रहा है, समाज से सरोकार रखते हुए भी मणि, आचार्य आदि जैसे पात्र भी परिवार के दायरे में सिमटने को विवश होते रहे हैं—आदि का विश्लेषण लेखक ने प्रबुद्धतापूर्वक किया है । इन सबके होते हुए उपन्यास कथाकृति से अधिक सेमिनार से प्राप्त विद्वानों-विश्लषकों के विचारों-निष्कर्षों का पुलंदा प्रतीत होता है । शायद इसीलिए इसमें घटनाक्रम तो कहीं दृष्टिगत ही नहीं हो पाता और इसी के चलते पात्रों के व्यक्ति की गढ़ना में चारित्रिक विशेषताओं के रंग भी उभर नहीं पाते ।

लेखक को लगता है कि वैचारिक शून्यता ने ही आज के व्यक्ति और उससे बननेवाले समाज को निरर्थक कर्म में भटकने के लिए विवश कर दिया है । एक और साम्यवादी शक्तियों का फासिस्ट शक्तियों से गठबंधन फिर अब दूसरी ओर प्रजातांत्रिक यानी कि साम्राज्यवादी तथा पूंजीवादी शक्तियों का साम्यवादी अर्थात अलग प्रकार की साम्राज्यवादी शक्ति से मैत्री संबंधों वाली राजनीति तो दिशाहीन हो ही रही है—आम आदमी भी जीने का अपना उद्देश्य भूल चुका है । राष्ट्र, समाज, शिक्षा, संस्कृति और साहित्य तथा पत्रकारिता से जुड़े सवालों से सामना करने की कोशिश इस उपन्यासनुमा वैचारिक कृति के पृष्ठों पर पसरी मिलेगी, जिससे यह प्रबुद्ध पाठकों को ही परितोष प्रदान कर सकेगी ।

वह अलग व्यक्ति

लेखक—रघुवंश । प्रकाशक—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली । मूल्य—पच्चासी रुपये ।

कालासागर : तेजेन्द्र शर्मा की दस मर्मस्पर्शी कहानियों का संकलन है । तेजेन्द्र शर्मा मूलतः अंगरेजी में लिखा करते हैं और बायरन तथा कीट्स पर उनकी दो समीक्षात्मक पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं । हिंदी में कहानियों के लेखन को उन्होंने चुनौती के रूप में स्वीकार किया फलतः साहित्य को कुछ अच्छी कहानियां मिल गयीं । लेखक एयर इंडिया में विमान-परिचारक हैं और इस जीवन के अनुभव को उन्होंने दो कहानियों—'उड़ान' और 'काला सागर' में भलीभांति उतारा है । 'उड़ान' एक ऐसी निम्न मध्यवर्गीय युवती की व्यथा-कथा है, जो एयर होस्टेस बनने का अपना सपना पूरा तो कर लेती है, पर विदेश पर जाने की पहली उड़ान के पूर्व ही उसे सेवा निवृत्ति का आदेश मिल जाता है । 'काला सागर' मनुष्य मन की स्वार्थ लोलुपता का चित्रण करनेवाली कहानी है । विदेश में बम-विस्फोट के कारण दुर्घटनाग्रस्त विमान में





मृत यात्रियों की शिनाख्त के लिए गये संबंधी किस तरह अधिक से अधिक मुआवजा और सुविधाएं पाने के लिए आतुर रहते हैं, इसका 'काला सागर' में बखूबी चित्रण है ।

काला सागर
लेखक—तेजेन्द्र शर्मा, प्रकाशक—वाणी प्रकाशन, ४६९७/५, २१-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, मूल्य— तीस रुपये

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. विमल-२० रु. सोहन-७५ रु., २. क. 'पद्मावत' के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी का, ख. श्रीकृष्ण की ब्रज और मथुरा की लीला, ग. अवधी, ३ क. राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली, ख. डेढ़ करोड़ रुपये, ४. सिंगापुर का ली कुआन यू, १९५९ में ३६ वर्ष की उम्र में प्रधानमंत्री पद पर आसीन और ३१ वर्ष पद पर रहने के बाद नवं. १९९० में पदत्याग, ५. 'पेरिस चार्टर' जिस पर अमरीका, रूस तथा यूरोप ('नाटो' तथा 'वारसा संधि' देशों) के राष्ट्राध्यक्षों के हस्ताक्षर हुए हैं, ६. श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित (गत वर्ष ९० वर्ष की आयु में निधन), ख. पहली महिला मंत्री (उत्तर प्रदेश), सोवियत संघ में राजदूत, ब्रिटेन में उच्चायुक्त आदि, ७. क. कपिल देव (३७६ विकेट, ११० टेस्टों में), ख. इयान बोथम (३७६ विकेट, ९७ टेस्टों में), ८. क. अमरीका (आस्ट्रेलिया के विरुद्ध), ख. १९८२ के बाद, ९. क. कैरी व्हाइट (फ्लोरिडा, अमरीका), गत वर्ष नवंबर में ११६ वर्ष की आयु), ख. ७ करोड़, १०. मरुस्थल का कछुआ

यह अपना हिंदोस्तान है क्या : कृष्ण मित्र की कुछ और सामयिक कविताओं का संग्रह है । इस संग्रह की कविताओं में भी देश की वर्तमान दुरावस्था के प्रति व्यथा और आक्रोश का भाव है । इन कविताओं में सम-सामयिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिज्ञों की वायदाखिलाफी और स्वार्थपरक नीतियों तथा अन्य सामयिक समस्याओं को रेखांकित करते हुए करारी चोट की गयी है । इन कविताओं को पढ़ते हुए लगता है कि कवि आपकी व्यथा और आक्रोश को वाणी दे रहा है ।

परिवेश में रहते हुए, यह अपना हिन्दोस्तान है क्या ?
कवि—कृष्ण मित्र, प्रकाशक—मुक्त प्रकाशन, १ लायर्स चेम्बर, गाजियाबाद, मूल्य—तीस रुपये

आवाज और हम : में डॉ. एम.एल. शुक्ल ने ध्वनि के सृजन के साथ-साथ वाणी के सृजन, उसके विकास और विभिन्न प्रकारों की विस्तृत चर्चा की है । उन्होंने कुछ निबंधों में नैसर्गिक और चिरंतन ध्वनियों की ओर भी संकेत किया है तथा प्रत्येक अध्याय में अपने कुछ व्यावहारिक निष्कर्ष भी दिये हैं ।

इन विषयों के अतिरिक्त उन्होंने श्रवणेंद्रिय की रचना की सरल शब्दों में जानकारी देते हुए कान से संबंधित साधारण रोगों के विषय में भी बताया है ।

डॉ. शुक्ल की ये दोनों कृतियां लोकोपयोगी हैं ।

आवाज और हम
लेखक—डॉ. एम.एल. शुक्ल, प्रकाशक- विद्या विहार, १६८५ कूचा दखनीराय, दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य—सौ रुपये ।

असामयिक मृत्यु : कारण और बचाव : मृत्यु अवश्यंभावी है लेकिन असमायिक मृत्यु से बचा भी जा सकता है। ऐसी अनेक बीमारियां हैं, यदि समय रहते उनके प्रति सचेत रहा जाए तो वे असामयिक मृत्यु का कारण नहीं बन पातीं। प्रस्तुत कृति में डॉ. एम.एल. शुक्ल में, जो म.प्र. के एक वरिष्ठ चिकित्सक हैं, अनेक बीमारियों का विस्तार से परिचय देते हुए उनसे बचाव और यदि ऐसी बीमारियां हों भी जाएं तो उन्हें घातक न होने देने के लिए अपने अनुभव-जन्य परामर्श दिये हैं। इस कृति में २६ अध्याय हैं, जिनमें लेखक ने उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर, तपेदिक, एड्स आदि से लेकर सिर दर्द, एलर्जी, नशीली दवाओं के व्यसन के कुपरिणामों की विस्तृत चर्चा की है।

असामयिक मृत्यु : कारण और बचाव :
लेखक—डॉ. एम.एल. शुक्ल,
प्रकाशक—प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६, मूल्य—सौ रुपये।

शारीरिक रोग : बचाव और उपचार

प्रस्तुत कृति में रोगों के कारणों और उनके उपचार पर प्रकाश डालनेवाले सैंतीस लेख संग्रहित हैं। ये लेख प्रतिष्ठित एवं अपने विषय के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा लिखे गये हैं। बच्चों की देखभाल से लेकर हृदय रोग, मिरगी, एलर्जी, यकृत शोथ, गुर्दों की बीमारी, मोतिया बिंद, यौन रोग, प्लास्टिक शल्य चिकित्सा, नाभिकीय चिकित्सा आदि विषयों पर दी गयी जानकारी पाठक के ज्ञान का विस्तार करती है। योगिक अभ्यास एवं कसरत के लाभों को बतलाने वाले दो लेख भी पठनीय हैं। एक लेख में यह बताया गया है कि 'वांछनीय कामोत्तेजना पैदा करने तथा हर प्रकार की यौन-विकृतियों को दूर करने की आशा जगानेवाले सेक्स टानिक गुमराह करनेवाले हैं तथा ये स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक हैं।' इसी तरह एक अन्य लेख में विभिन्न नशों से मुक्ति के लिए कुछ होम्योपैथिक दवाओं के नाम भी सुझाये गये हैं। कुल मिलाकर यह एक उपयोगी पुस्तक है।

शारीरिक रोग : बचाव और उपचार,
संपादक— डॉ. सुकमाल जैन, प्रकाशक— सन्मति प्रकाशन, १३८ सी, सन्मति कुटीर, बावड़ी चाल, चंदावाड़ी, सी. पी. टैंक, बंबई, मूल्य—साठ रुपये।

खरगोश पालन : खरगोश एक सुंदर और पालतू प्राणी है। आम तौर पर लोग निजी मनोरंजन के लिए पालते भी हैं, पर खरगोश-पालन व्यावसायिक दृष्टि से भी लाभप्रद है। प्रस्तुत पुस्तिका में खरगोशों के संबंध में विशद जानकारी दी गयी है तथा उन्हें पालने और उनसे लाभ कमाने के उपाय भी समझाये गये हैं।

आठ अध्यायों में बंटी यह पुस्तिका खरगोश पालनेवालों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। लेखक के अनुसार दस+दो की इकाई से खरगोश प्रजनन केंद्र शुरू किया जाए तो एक वर्ष में लगभग दो सौ खरगोश पैदा हो सकते हैं और इन दो सौ खरगोशों की बढ़िया ऊन से साठ हजार रुपयों की आय मामूली बात है।

खरगोश पालन
लेखक— डॉ. राजीवकुमार फुल्ल, अर्चना फुल्ल, प्रकाशक—किट्म—किट्टू अंगोरा रैबिट फॉर्म, राजपुर (पालमपुर) मूल्य—बीस रुपये।

पुस्तक प्राप्ति

अमिय-हलाहल (कहानी) : लेखक— बिहारीलाल मिश्र, प्रकाशक— श्री जगेन्द्र, शास्त्री सदन, गया कॉलेज के पश्चिम, गया (बिहार), मूल्य— २५ रुपये ।

आसमानी हाथ (कहानी) : लेखक— शील, प्रकाशन— लोक प्रकाशक, ५०६ जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२, मूल्य— २० रुपये ।

भारतीय संस्कृति का विश्वसंचार : लेखक— शरद हेबालकर, प्रकाशक— सुरुचि प्रकाशन, केशवकुंज, झंडेवाला, नयी दिल्ली— ११००५५, मूल्य— १६ रुपये ।

रश्मिधनु (काव्य) : लेखक— डॉ. हरिवंश 'तरुण', प्रकाशक— पूजा प्रकाशन, आनंद भवन, बहादुरपुर, समस्तीपुर (बिहार), मूल्य— २५ रुपये ।

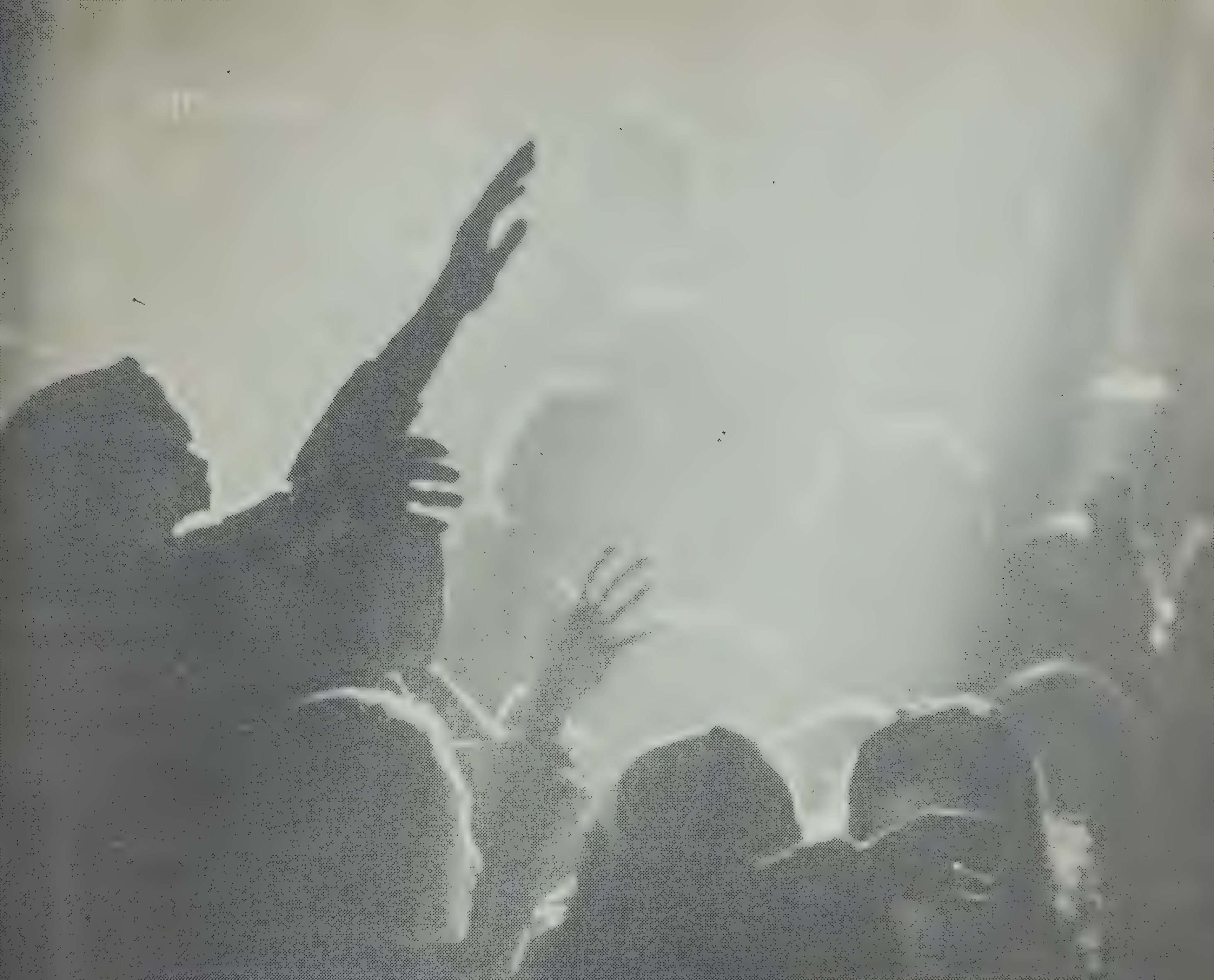
भावांकुर (कविता) : लेखक— अनिल पालीवाल 'अनल', प्रकाशक— अरविंद प्रकाशन, मालन की गली, अलवर, मूल्य— १० रुपये ।

शेष यात्राएं (कविता) : संपादक— भरतचंद्र शर्मा, मणि बावरा, प्रकाशक— दीपशिखा साहित्य संगम, बांसवाड़ा (राजस्थान), मूल्य— १५ रुपये ।

बिम्ब प्रतिबिम्ब (कविता) : लेखक— महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर, प्रकाशक— श्री जितयशाश्री फाउंडेशन, ९सी, एस्प्लानेड रोड ईस्ट, कलकत्ता-६९, ७ रुपये ।

शब्द-योगी डॉ. कन्हैयालाल सहल : लेखक— डॉ. हेतु भारद्वाज, प्रकाशक— राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राज.), मूल्य— १० रुपये ।

क्षण कस्तूरी गंध के (कविता) : लेखक— नथमल केड़िया, प्रकाशक— पुष्पहास प्रकाशन, ५५, जमनालाल बजाज स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७, मूल्य— २५ रुपये ।



ईश्वर कहां है ?

ईश्वर कहां है ? एक चिरंतन प्रश्न जो सभ्यता के विकास के साथ-साथ बहुआयामी भी होता गया है । यहां प्रस्तुत हैं, कुछ उन लोगों के उत्तर, जिनसे पूछा गया था—'ईश्वर कहां है ?'

ईश्वर कहां है ? प्रश्न सहज नहीं है तो कल्पना भी सहज नहीं होगी । अनेक व्यक्तियों से हमने पूछा 'ईश्वर कहां है ?' सभी उत्सुक, परंतु स्पष्ट उत्तर किसी के पास नहीं । किसी ने कहा उत्तर नहीं है—

शायद इसलिए कि इधर ईश्वर का चेहरा धुंधला पड़ गया है : सोवियत संघ में पिछले वर्ष तक ईश्वर एक भगोड़े की तरह छिपकर रह रहा था । अमरीका में, पिछले दशक के दौरान ईश्वर एक राजनीतिक उम्मीदवार के रूप में काम कर रहा था, जिसे स्कूल प्रार्थना और गर्भपात—जैसे विषयों के समर्थन के लिए पेश किया जाता था ।

लेकिन हमारे कथानक का ईश्वर निजी, व्यक्तिगत विश्वास का ईश्वर है । उसे देखनेवालों में हैं बैरुत की एक नौकरानी, कोलम्बिया का एक अपराधी, वाराणसी का एक कुष्ठ रोगी, हालीवुड का एक फिल्म निर्माता, एक रब्बी (यहूदी गुरु), एड्स के कारण मृत्यु शैया पर पड़ा एक पुरोहित, ओजआर्क में एक गिरजाघर का वाद्यकार और एक लेखक । ये सभी अलग-अलग परंपराओं के हैं और जिस ईश्वर की वे आराधना करते हैं उसे अनेक नामों से जाना जाता है । फिर भी वह ईश्वर है, जो अपने प्राणियों की ओर स्थिर समझ से देखता है, जिसे हमारे चेहरे का अवलोकन करने में कोई कठिनाई नहीं होती है ।

ईश्वर का चेहरा !

ईश्वर पर विश्वास कायम है !

एगनेस कोलार्ड : मृत्यु शैया पर है । ६७ वर्ष की उम्र में वह केमोथैरेपी, इंजेक्शन और रक्त-आधान की दुनिया में रह रही है । वह पिछले चार वर्षों से लूकेमिया से पीड़ित है और अपने जीवन के अंतिम चरण में हैं ।

अनेक लोग लगभग ४० वर्ष की उम्र में पहली बार शरीर की नश्वरता की सूचना पाते हैं, जब वे यह अनुभव करते हैं कि उनका यौवन, जो मृत्यु से उनकी रक्षा करता था, समाप्त हो गया है । विचित्र बात यह है कि जब मैं ४० की हुई मुझे ऐसा कुछ कभी नहीं लगा । जब मैं पचास की हुई तब भी मुझे लगता था कि मैं जवान हूं । मैं कभी बीमार नहीं पड़ी । इसलिए कैंसर होने पर अचरज तो हुआ पर ऐसा नहीं लगा कि मैं असाध्य रोग से पीड़ित हूं । मेरी उम्र में इस तरह का कैंसर धीरे-धीरे असर करता है, और मैंने सोचा कि डॉक्टर उसका इलाज कर लेंगे । पर अब डॉक्टरों ने मुझे बताया है कि उसके उपचार की कोई संभावना नहीं है ।

रोग तुम्हारी मौत का कारण बनेगा, तुम्हारे और मौत के बीच में और कोई नहीं है,

मौत समीप है यह अनुभव करना विचित्र है । आपको लगता है कि आप मर गये हैं । मैंने हमेशा ईश्वर पर विश्वास किया है और मेरा यह विश्वास अभी तक कायम है । जब मेरे पति की मृत्यु हुई मैं दुःखी हुई, लेकिन ऐसा लगा कि यह स्वाभाविक है । लेकिन अपनी मौत अलग है । वह अस्वाभाविक लगती है । मुझे धक्का लगा और क्रोध भी आया । मुझे ऐसा नहीं लगा कि मैं अधिक समय तक जीवित रहने की पात्र हूं ।

पिछले तीन-चार महीनों से मेरा भय समाप्त हो गया है । मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि मैं शीघ्र मर जाऊंगी । लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मुझे इसके लिए ईश्वर के प्रति कोई नाराजी नहीं है । मैं अनुभव करती हूं कि भगवान को मेरा कोई ऋण नहीं चुकाना है । मेरा जीवन, मेरा लंबा जीवन उसकी कृपा का फल है । मैं यह स्पष्ट नहीं कर सकती कि मैं अचानक क्यों शांत हो गयी । मैं सोचती हूं कि मैंने फैसला किया कि सिर्फ इसलिए कि मैं अपने को जवान अनुभव करती हूं । मुझे जीवित रहने का अधिकार नहीं है । जैसे ही मेरे भीतर यह विनय भाव आया, मुझे लगा कि मैं मौत का सरलता से सामना कर सकती हूं । तब, मैंने यह भी देखा कि वार्ड में कई में कुछ बच्चे भी हैं, उनमें से बहुत से लोगों को यह मालूम भी नहीं था कि वे बीमार हैं । मेरी अपेक्षा १० वर्ष और जीवित रहने का उन्हें कहीं अधिक अधिकार है । लेकिन वे कभी शिकायत नहीं करते । इस कारण मुझे बहुत शरम आयी ।

मैंने अपने पादरी से इस बारे में बातचीत की । पहली बार मैं गंभीरता से इस बारे में सोचने लगी हूं कि क्या मौत के बाद भी जीवन होता है ? यह बात अब उतनी असंभावित नहीं लगती, जितनी पहले लगती थी । शायद इसलिए क्योंकि अब मौत अधिक दूर नहीं रही है । मैं यह सोचने लगती हूं : अगर वास्तव में ईश्वर है तो वह कहां है, कौन है ? क्या ईश्वर विलक्षण नहीं होगा ?

मौत की आशंका आपको अन्य मनुष्यों से, जो जीवित रहेंगे, अलग नहीं कर देती । आप सोचने लगते हैं मुझे कोई योजना नहीं बनानी है, मैं जीवित नहीं रहूंगी । मैं स्वयं को अपने बच्चों से भी दूर पाती हूं । लेकिन ईश्वर के समीप । मैं नहीं जानती वह क्या और कौन हैं, लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि ईश्वर है । मैं इन भयंकर क्षणों में उनकी उपस्थिति अनुभव करती हूं । मुझे लगता है कि यह मेरे समीप हैं ।

और, मैं प्रेम का अनुभवं करती हूं । कभी-कभी मैं अनुभव करती हूं कि मैं चारों ओर प्रेम से घिरी हूं, प्रेम से आच्छादित हूं । अक्सर सोने के लिए जाने से पहले मैं इस बारे में गहराई से अनुभव करती हूं । फिर मैं अपने माता-पिता के बारे में सोचती हूं, जो वर्षों पहले स्वर्ग सिधारे थे । मुझे याद आता है कि उस समय जब मैं पिता के लिए

> "लोग कहते हैं । उनकी मांस-मज्जा धूल में मिल जाती है । लेकिन प्रेम हमेशा के लिए है । यही ईश्वर है ।"

शोक प्रकट कर रही थी, पादरी ने मुझसे क्या कहा था । उसने कहा था, "लोग मरते हैं । उनकी मांस-मज्जा सड़कर धूल में मिल जाती हैं । लेकिन प्रेम हमेशा के लिए है । मैं सोचती हूं यही ईश्वर है ।"

ईश्वर मेरे साथ गंदगी में है

आर्च बिशप डेसमंड टुटू : ५९ वर्षीय, अपने देश में रंगभेद की व्यवस्था की समाप्ति के संघर्ष के लिए उन्हें १९८४ में नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया ।

जब मैं छोटा था, मैं सोचता था कि ईश्वर एक वयोवृद्ध व्यक्ति दादाजी-नानाजी की तरह है । इससे ईश्वर तक पहुंचना सुगम हो जाता था । अब, मेरे भीतर एक मूर्ति रहित विचार, अथवा अंधकारपूर्ण प्रकाश है । मैं ईश्वर तक जीसस क्राइस्ट द्वारा छोड़े गये संकेतों से पहुंचता हूं—ईश्वर दूसरों की चिंता करता है, वह करुणामय है, वह हमारी हित चिंतना करता रहता है । ईश्वर सदैव उपलब्ध है । आप एलिजा की अद्‌भुत कहानी जानते हैं, जब बाल का मसीहा बाल को बुलाता है, और बाल उत्तर नहीं देता । और एलिजा कहता है : शायद तुम्हारा ईश्वर बहरा है । उसे जोर से पुकारो । वह सो रहा है या वह यात्रा पर गया हुआ है अथवा वह जॉन के पास गया है ।

मैं ऐसा आदमी हूं, जिसका विश्वास यथोचित स्थिर है । कुछ क्षण ऐसे आये हैं, जब यह विश्वास हिला है । लगभग २० वर्ष पूर्व मैंने उस भयंकर दमन को देखा है जो पुलिस ने फोर्ट हेयर में विश्वविद्यालय छात्रों पर किया, मैं यूखारिस्त प्रार्थना सभा में फूट-फूटकर रो पड़ा । मैं मार्टिन लूथर किंग, अथवा महात्मा गांधी की तरह शांतिवादी नहीं हूं । मैं बच्चों को गैस चैंबर में झोंके जाते देखकर चुपचाप नहीं रह सकता । ईश्वर ऐसा कैसे होने देता है ? वह दुष्ट लोगों को बच्चों पर अत्याचार क्यों करने देता है ?

अंततः आप केवल यह कह सकते हैं कि ईश्वर हमसे हटकर किसी शानदार दुर्ग पर नहीं विराजता है । हमारे साथ उसकी गहरी एकात्मकता है । ईश्वर ने मानवीय शिशु रूप धारण किया । ईश्वर थका था । ईश्वर ने पीड़ा सहन की और उसकी मृत्यु हो गयी । ईश्वर हमारे साथ है ।

एक बंदी शिविर में एक यहूदी के बारे में एक अद्‌भुत कथा है । यहूदी को शौचालय साफ करने का काम दिया गया । उसके नाजी गॉर्ड ने उससे व्यंग्य में पूछा, "अब तुम्हारा ईश्वर कहां है ?"

यहूदी ने चुपचाप उत्तर दिया "वह यहां, मेरे साथ गंदगी में है ।"

स्वर्ग में सभी विवाहित होंगे

जोन्ना आशोंग : केवल १८ वर्ष की उम्र में १९७२ में घाना से बेरूत पहुंची । चारों ओर फैली गृह युद्ध की ज्वाला के दौरान उसने नौकरानी का काम किया—कभी-कभी उन परिवारों के लिए भी जिन्हें ईरान समर्थक कट्टरपंथी शिया मुसलमानों ने बंधक बना रखा था ।

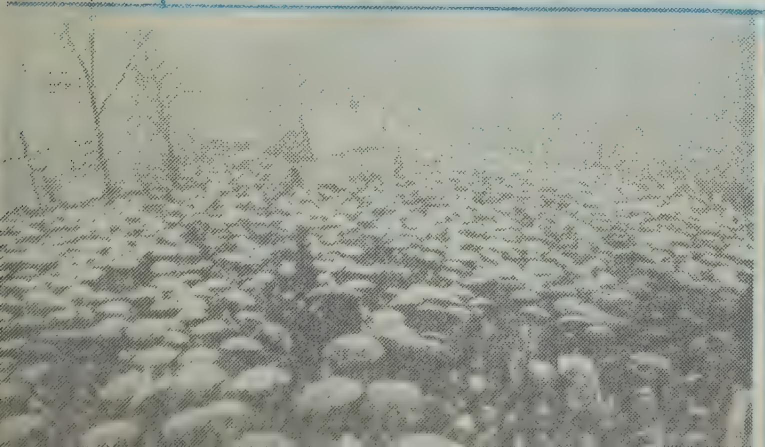
मैं सोचती हूं, ईश्वर काला और गोरा दोनों है क्योंकि बाइबिल में कहा गया है कि ईश्वर ने अपनी तरह आदमी बनाया । अगर ईश्वर आंशिक रूप से काला नहीं होता तो धरती पर काले क्यों होते ? ईश्वर हमें काला क्यों बनाता ? विश्वभर में लोग कालों से घृणा करते हैं क्योंकि हमने भगवान का प्रकाश देखा है, हम अफरीकियों के हृदय साफ हैं और हम सभी का अपनी भूमि में स्वागत करते हैं । लेकिन गोरे कभी भी कालों (अश्वेतों) का स्वागत नहीं करते । हमारी समझ में नहीं आता कि भगवान ने ऐसा क्यों बनाया है ।

मैं सोचती हूं कि ईश्वर की आंखें हमारी तरह हैं, लेकिन बहुत बड़ी हैं ताकि वह सभी कुछ देख सके । मैं सोचती हूं कि उसकी आंखें नीली हैं । जब मैं छोटी थी, पादरी हमें हमेशा बताता था कि ईश्वर एक लंबी सफेद पोशाक पहनता है । मैं उसे इस रूप में देखती हूं । मैं सोचती हूं कि ईश्वर बहुत बूढ़ा है ।

पिछले वर्ष जब वे गोलाबारी कर रहे थे मैंने सोचा, हे ईश्वर, मेरी मौत कैसे होगी ? मैंने अंधेरे में एक हाथ देखा जिसकी सोने की पांच अंगुलियां लाल आग में थीं । फिर वह घर के सामने मैदान में गिर गया और चारों ओर पलटकर मैदान को खोदने लगा । धरती ऐसे उलटने लगी जैसे कि कोई फूल जमीन पर गिरकर बिखरने लगता है । मैं रोने लगी । मैंने सोचा, क्या मैं इस तरह मरूंगी ?

मैंने कभी ईश्वर की आवाज नहीं सुनी है लेकिन अगर 'वह' मुझसे कभी कुछ कहना चाहता है वह ऐसा सपनों के जरिए करता है । कभी-कभी मुझे सपना आता है । कोई मुझसे कह रहा है, 'वहां मत जाओ ।' मैं सोचती हूं कि ईश्वर ने अनेक बार मेरी जान बचायी है ।

ईश्वर हमेशा प्रसन्न रहता है । वह सदानंद हैं । वह उन स्थानों को पसंद करता है, जहां सभी लोग प्रसन्न रहते हैं । जब हम उसकी इच्छा के अनुसार आचरण नहीं करते,





वह नाराज हो जाता है लेकिन वह अपने क्रोध को नियंत्रण में रखता है । वह हमें दंड देता है, लेकिन जब वह देखता है कि यह पर्याप्त है वह रुक जाता है । वह सबको, अपने शत्रुओं को भी प्यार करता है ।

ईश्वर अपनी अंगुलियों से सूरज पर, भला या बुरा जो भी मरने से पहले आपको होगा, लिखता है । वह कयामत के दिन उसे पढ़ेगा । अगर तुम बहुत ही बुरे होंगे तो तुम्हें आग भस्म कर देगी और तुम फिर कभी जन्म नहीं लोगे ।

स्वर्ग में सभी लोग सुखी होंगे, सभी लोग बराबर होंगे । कोई धनी अथवा निर्धन नहीं होगा । हम सभी विवाहित होंगे और हमारे बच्चे होंगे क्योंकि ईश्वर ने ऐसे ही शुरू किया था । हम लोग मकानों में रहेंगे और गाड़ियों में घूमेंगे । लेकिन सभी एक ही रंग के होंगे । मैं सोचती हूं, सभी काले होंगे । यही ईश्वर का रंग है । वहीं ईश्वर है ।

वह किसी का विदूषक नहीं

डेविड 'बी' : २८ वर्षीय एक फ्रांसीसी तंबाकू विक्रेता का अवैध पुत्र, १३ वर्ष की उम्र में चोरी करने लगा और अब डकैती के दौरान एक आदमी की हत्या करने के लिए २१ वर्ष की जेल भुगत रहा है । इन दिनों उसकी कैद का चौथा साल है ।

मैं उसकी हत्या करने के लिए नहीं चला था, लेकिन जब जरूरी हो गया मैंने उसकी हत्या की—निष्ठुरता के साथ की । मैंने उस समय एक क्षण के लिए भी और कुछ नहीं सोचा । मैंने सोचा कि अपने अन्य अपराधों की तरह मैं इसे भी भूल जाऊंगा ।

लेकिन जल्दी ही मुझे पता लग गया कि वह आदमी जो हत्या करता है शेष जीवन में अन्य लोगों से अलग हो जाता है । एक दिन मुझे पता लगा कि इस कार्य से मुझ पर स्थायी कलंक लग गया है । यह भाव इतना प्रबल था कि मुझे इस कारण बंदी होने में प्रसन्नता हुई । घृणा, जुगुप्सा और शर्म का भाव बढ़ने लगा । मैंने कारागार में एक पादरी से सलाह ली । उसने मुझे एक बार बाइबिल दी, और जब मैं उसे पढ़ने लगा । मुझे कुछ दिलासा मिली, शुरू में इस भाव के कारण नहीं कि ईश्वर दयामय है बल्कि इस विश्वास के कारण कि वह सर्वव्यापी है और यहां भी उपस्थित है । मैंने पृथक्करण का जो भाव अनुभव किया, उससे ऐसे ईश्वर के अस्तित्व का संकेत मिला जो नाराज था, मुझे







मैं सोचती हूं, ईश्वर की आंखें हमारी तरह हैं, लेकिन बहुत बड़ी हैं ताकि वह सभी कुछ देख सके ।

इतना प्यार करता था कि वह मेरे कार्यों से शर्मिंदा था । मैं अपराध के द्वारा ईश्वर पर विश्वास के लक्ष्य पर पहुंचा ।

अब जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती है वह ईश्वर की दया है, मेरे किसी भी कार्य से स्तब्ध न होने का उसका निर्णय । मैं जिस ईश्वर को जानता हूं वह सर्वज्ञानी है लेकिन क्षमा कर देता है । वह आसानी से सभी को क्षमा कर देता है क्योंकि वह किसी का विदूषक नहीं है । मैं अभी भी स्वयं को दोषी अनुभव करता हूं, लेकिन मैं अपने अपराध के बारे में शांत और निरभ्र अनुभव करता हूं । मैं इस स्थिति का सामना कर सकता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं दुनिया में अकेला नहीं हूं ।

मुझे विश्वास है कि बाइबिल मुझे बहुत कुछ सिखा सकती है । लेकिन यह मार्ग बहुत कठिन है । मैं इस धर्म के सामने नवजात शिशु और भावनाओं की गहनता के सामने रक्षा विहीन अनुभव करता हूं । मैं हमेशा हिंसक रहा हूं । इन हत्याओं में मेरा नहीं ईश्वर का हाथ रहा है ।

वे मौसम की भविष्यवाणी करते हैं

क्रिस्टी प्लाजा : सात वर्षीय आईओवा के वेस्ट डेस मायनेस में दूसरे ग्रेड की छात्रा है, वह पश्चिम एशिया संकट और अन्य अनेक घटनाओं को देख रही है ।

ईश्वर मौसम की भविष्यवाणी करते हैं । वह हमें पेड़ों, झाड़ियों और हरी घास जैसी वस्तुओं का उपहार देते हैं । लेकिन एक उपहार जो उन्होंने हमें दिया है, जिसे मैं पसंद नहीं करती, लड़ाई की आशंका है । शायद लड़ाई न हो । मैं आशा करती हूं, लड़ाई नहीं होगी । वे लोग अधिक दामों पर गैस (पेट्रोल) बेचना चाहते हैं । उनकी बगल में स्थित छोटे देश को यह मंजूर नहीं है । संभवतः यही समस्या का कारण है । ईश्वर युद्ध होने से रोक सकते हैं । वह मौसम ख़राब कर सकते हैं ।

ईश्वर लोगों की जिंदगी सुधारता है । लेकिन कभी कभी 'वह' अच्छे काम नहीं करता । उसने वह मशीन बनायी जिसे चालू करके आप भरे हुए जानवर प्राप्त कर सकते हैं । उसने इस मशीन के साथ हमें अच्छा भाग्य नहीं दिया और हमने केवल उसके लिए चार डॉलर खर्च किये । केवल उसके लिए डॉलर दिये और हमें भरवा जानवर नहीं मिले । मैं तब कैसे कहूं कि ईश्वर कहां है ? होता तो अन्याय कैसे होता ।

गिरजाघर में ईश्वर नहीं मिला

जीन-पाल काफमैन : ४६, एक फ्रांसीसी पत्रकार जिसे तीन वर्ष तक बंदी रखने के बाद



मैं जिस ईश्वर को जानता हूं, वह सर्वज्ञानी है लेकिन क्षमा कर देता है ।

मुसलिम आतंकवादियों ने मुक्त कर दिया ।

वह दूसरा या तीसरा दिन था । मैं एक अंधेरे कमरे में कुरसी से बंधा था । मुझे उस एकांत में लगा कि मैं ईश्वर के अलावा और किसी से बातचीत नहीं कर सकता हूं । मुझे तब लगा कि मैं ईश्वर के बहुत समीप हो गया हूं क्योंकि मेरा ध्यान बांटनेवाला कोई नहीं था । मुझे लगता है कि मैं अब फिर ईश्वर से दूर हो गया हूं क्योंकि मैं अब फिर अपने परिवार के साथ सुख आराम से हूं । उस कारावास में मैं ईश्वर के साथ आमने-सामने था । मैं उस एकांत के सुख का अभाव अनुभव कर रहा हूं । ईश्वर के साथ अंतरंगता की मुझे बहुत याद आती है । मैं अब उसे देहात में अपने घर में प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूं लेकिन उसकी तीव्रता दोहरायी नहीं जा सकती ।

मैं जानता था कि कष्ट में ईश्वर मेरे साथ है । मैं यह नहीं बता सकता कि मुझे कैसे पता लगा, लेकिन मुझे पता लग गया । मुझे लगा कि वह मेरी रक्षा करेगा । मैंने अवसरवादी रवैया नहीं अपनाया कि अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं ऐसा करूंगा । मैंने केवल इतना कहा, ''प्रभु, आपकी जो भी इच्छा हो पूरी हो ।''

मुझे यह बात देख व्यंग्यपूर्ण आनंद आता था कि मेरे जेलर भी एक दूसरे ईश्वर की ठीक उसी तरह कठोर आराधना कर रहे थे जैसे कि मैं कर रहा था । लेकिन मैं दैवी शक्ति को इस्लाम का आत्मसमर्पण प्रशंसनीय समझता हूं । ईश्वर रहस्यपूर्ण हैं । हम ईश्वर और उनकी योजनाओं को समझ नहीं सकते ।

आज जीवन की समस्या यह है कि केवल थोड़े से लोगों को मौत का सामना करना पड़ता है । एक बंधक के रूप में मैंने हर रोज इसका सामना किया । अतः भय समाप्त हो गया । गार्ड हमारे सिर पर पिस्तौल ताने रहते थे । हम उन्हें उकसाते थे, ''ठीक है, हिम्मत है तो गोली मार दो'' । उन्होंने ऐसा कभी नहीं किया ।

इस तरह की पीड़ा सभी अशुद्ध वस्तुओं को जला देती है, उन सभी को समाप्त कर देती है जो व्यक्ति और ईश्वर की सच्ची आराधना के बीच में आड़े आती हैं । मुझे गिरजाघर में ईश्वर नहीं मिला । अतः मैं वहां नहीं जाता । मेरी ईश्वर के साथ प्रगाढ़ता समाप्त हो गयी है । लेकिन कभी वह मेरे साथ थी । अगर आप एक बार ईश्वर का अनुभव कर लें, आप हमेशा के लिए बदल जाते हैं ।

धरती का एक ही मालिक है

शेख अहमद इब्राहिम ३८ : इसराइली जेल में आतंकवाद के लिए १८ वर्ष बिताने के बाद

हाल में मुक्त हुए हैं । विवाहित हैं । चार महीने का बच्चा है । वह गाजा में एक शरणार्थी शिविर में रहते हैं ।

मैं 'जिहाद' के संघर्ष में मरने-मारने को तैयार हूं क्योंकि अल्लाह की ऐसी ही मरजी है । अल्लाह बदला लेनेवाला खुदा है । जिहाद सही और गलत, न्याय और अन्याय के बीच संघर्ष है ।

जब मुझे गिरफ़्तार किया गया, मैंने खुदा को मानने से इनकार किया । मैं स्वयं को कैद में पाकर बहुत नाराज था । मेरा विश्वास समाप्त हो गया था । मैंने खुदा पर संदेह किया क्योंकि मैंने कहा कि अगर खुदा होता वह मुझे ऐसी हालत में नहीं छोड़ता । फिर मैंने अनुभव किया कि बनानेवाले के विरुद्ध बगावत करना स्वयं अपने विरुद्ध बगावत करना है क्योंकि बनानेवाले ने मेरी हर वस्तु—बुद्धि, भूख, ताकत, कमजोरी, विचार बनायी है ।

ईश्वर (अल्लाह) का बयान करना मुश्किल है । वह मात्र एक बौद्धिक धारणा है, इसलिए उसकी भौतिक तसवीर बनाना मुश्किल है ।

मैं हर समय प्रार्थना करता हूं

ओरल हर्शहाइजर ३२ : वह १९७९ में फिर से ईसाई बने । नौ वर्ष बाद उन्होंने लास एंजीलेम डाजर्स को विश्व श्रृंखला की चैम्पियनशिप में पहुंचा दिया । इस वर्ष पहले उनके हाथ में गंभीर चोट लग गयी । उपचार में शामिल है शल्य चिकित्सा कष्टप्रद थका देनेवाले व्यायाम और निरंतर प्रार्थना ।

मैं धर्म विज्ञानी नहीं हूं, मैं बाल का खिलाड़ी हूं, लेकिन मैं हर क्षण अपने समीप ईश्वर का अनुभव करता हूं । अगर आप पाप न करने का फैसला करें तो ईश्वर आपके साथ है । अगर आप फौरन पाप की क्षमा नहीं मांगते हैं, आप ईश्वर से दूर हो जाते हैं ।

मैं हर समय प्रार्थना करता हूं चलते, किसी से बातचीत करते । मैं बातचीत करते हुए भी प्रार्थना कर लेता हूं । मेरे लिए प्रार्थना करना यह सोचना है : 'हे ईश्वर, इस परिस्थिति में आपके अनुसार मैं क्या करूं ?'



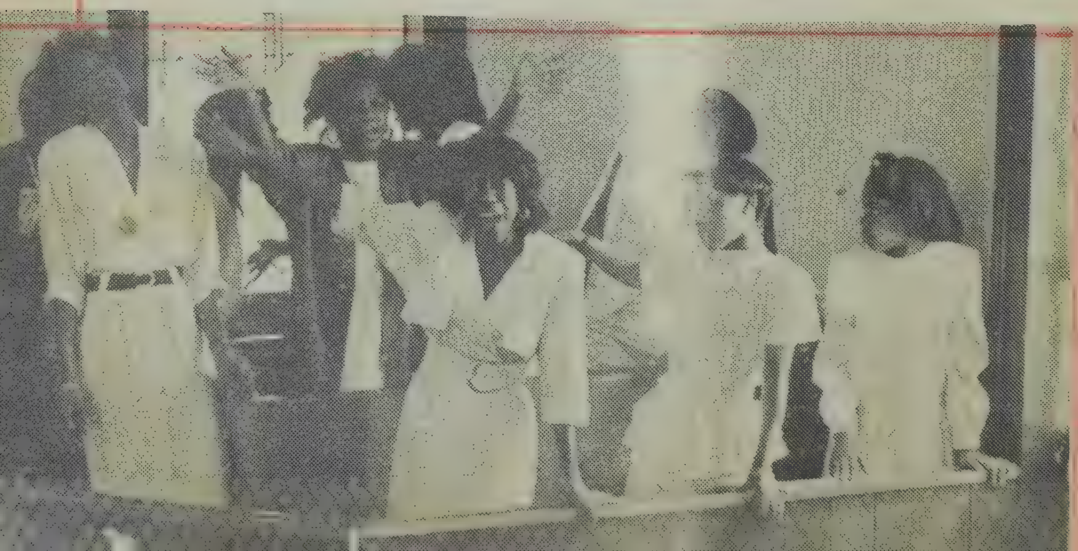
ईश्वर की औपचारिक प्रार्थनाएं हैं लेकिन मैं नहीं सोचता कि ईश्वर को वाकपटु प्रार्थना चाहिए । ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण किया ताकि वह किसी से बातचीत और प्यार कर सके ।

कुछ दिन ऐसे होते हैं जब सभी कुछ ठीक चलता रहता है और हम ईश्वर की उपस्थिति अनुभव नहीं करते । कुछ दिन ऐसे होते हैं जब ईश्वर को धन्यवाद देना चाहते हैं । लेकिन कुछ दिन ऐसे होते हैं जब मेरी वाह में पीड़ा होती है । अथवा मेरा वजन ठीक नहीं बढ़ता है । मैं कहता हूं ''फिर भी मुझे विश्वास है कि सभी कुछ ठीक हो जाएगा क्योंकि ईश्वर मेरे पास है ।

ईश्वर के बिना विश्व सीमित, संकुचित

रब्बी अदिन स्टीनसाल्ज ५३ : परंपरागत यहूदी जीवन और शिक्षा का पोषण करनेवाला सारसंग्रह 'तालमुड' पर विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ ।

मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने ईश्वर को कभी अस्वीकार नहीं किया । वास्तव में कुछ वर्ष ऐसे थे जब मैंने कोई रुचि नहीं ली और यह सबसे बड़ी अस्वीकृति है, यह विरोध और विश्वास की कमी से बढ़कर है । लेकिन ईश्वर के बिना विश्व बहुत सीमित और संकुचित हो जाता है । हर व्यक्ति को ईश्वर से बातचीत करने का, मांग करने और शिकायत करने का अधिकार है । यह कहने का अधिकार है, ''आप अन्यायी हैं ।'' हर बच्चे को अधिकार है कि वह आकर शिकायत करे, ''अन्य बच्चों को अधिक क्यों दिया जा रहा है ... मनुष्य को ईश्वर से शिकायत करने का अधिकार है । यह बात विचित्र है, कभी ... दुखद भी कि वह व्यक्ति जो अपने यथार्थ का सही वर्णन नहीं कर सकता, जो गि... सीधे सरल सवाल नहीं समझ सकता— वह ईश्वर के बारे में फैसला करना चाहता ... (आखिर किस ईश्वर के ? कहां है वह ?)



मुझे लगता है कि मैं अब ईश्वर से दूर हो गया हूं क्योंकि मैं अब फिर अपने परिवार के साथ आराम से हूं ।

ईश्वर कूड़ा-कर्कट तैयार नहीं करता

स्टीफन पीटर्स ३८ : लास एंजीलेस में प्रेसबीटेरियन पादरी हैं । वह आठ वर्षों से एड्स से पीड़ित है । १९८५ में कैंसर से प्रायः उनकी मौत ही हो गयी थी तथापि, वह अपनी भक्त मंडली में सक्रिय हैं ।

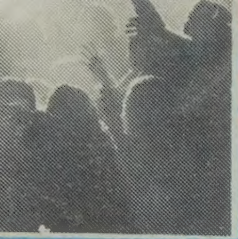
मैं एक प्रेसबीटेरियन पादरी परिवार से हूं । अपनी युवावस्था में मैंने ईश्वर को अस्वीकार किया क्योंकि मेरी समझ के अनुसार ईश्वर (समलैंगिक) लोगों को प्यार नहीं करता था । और अगर मैंने अपनी समलैंगिक कामुकता के अनुसार आचरण किया तो वह पाप होगा । १९७७ में, जब मैंने शिक्षणालय शुरू किया मैंने एक दिन सुबह अपने माता-पिता के यहां अनिता ब्रायंट को डोनाहू पर देखा । वह समलैंगिकता पर बोल रही थी । मैंने कुछ इस तरह की टिप्पणियां कीं : ''वह बेवकूफ है'' और ''क्या वह जानती है कि वह लोगों के जीवन में कितना विनाश ला रही है ?'' मेरे पिता ने पूछा कि क्या में समलैंगिक हूं । मैंने कहा ''हां'' । मैं डर गया था । मेरे माता-पिता दोनों ने मेरा हाथ पकड़ लिया । मेरी मां रोने लगी और मेरे पिता ने कहा कि वह मुझे बहुत प्यार करते हैं । उन्होंने कहा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है ।

इतने अधिक व्यक्तियों की आत्म-घृणा और समलैंगिक-भय धर्म पर आधारित है । एक पादरी के यह कहने पर ''आप जैसे भी हो ईश्वर आपको प्यार करता है'' क्रांतिकारी बदलाव आ सकता है । अचानक वे समझने लगते हैं : मैं कूड़ा कर्कट नहीं हूं । ईश्वर कूड़ा-कर्कट तैयार नहीं करता है । ईश्वर ने मुझे बनाया इसलिए मैं जो हूं अच्छा हूं ।

वर्ष १९८२ में मुझे अनेक बीमारियों से गुजरना पड़ा । मैं चल नहीं सकता था और मेरा वजन घट कर १२५ पौंड रह गया, अब मेरा वजन १६५ पौंड है । मैं एकदम एकाकी अनुभव कर रहा था । मैं आधी रात में पसीने से लथपथ होकर उठ जाता । मैं सोचता था, ईश्वर मैं तुम्हारा अच्छा और स्वामिभक्त सेवक रहा हूं । आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? मैं रोता और सुबकता था । यह उस स्वप्न के समान था, जिसमें आप नीचे को गिरते हैं, गिरते चले जाते है और अंत में टकराकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं । लेकिन मैंने अनुभव किया कि ईश्वर मेरी भावनाओं को समझते हैं । ईश्वर ने ही मुझे यह रोग दिया था । ईश्वर मेरे साथ रो रहे थे । क्योंकि ईश्वर भी इस रोग से पीड़ित हैं । वे यहीं उसमें छिपे हैं ।

वह गुलाब के फूलों की तरह मुसकराता रहेगा

कोडी फेयर क्लाथ, ७० और उनकी पत्नी मार्था नेल ६७ खेती करते हैं, जानवर और मुरगी



ईश्वर मात्र एक बौद्धिक धारणा है, इसलिए उसकी भौतिक तसवीर बनाना मुश्किल है ।

पालते हैं और फ्लोरिडा स्थित अपने ३२० एकड़ फार्म में जौ और मक्का उगाते हैं । वे अपना अधिकांश काम स्वयं करते हैं ।

अगर कोई ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है उसे केवल अपने चारों ओर देखने की जरूरत है । ईश्वर सर्वत्र है । इसका अर्थ यह नहीं है कि जब आप कुछ सामान मांगे वह देने की तैयारी कर रहा है लेकिन वह हमें देखता है । वह हमें ४० पशुओं का झुंड रखने देता है । वह हमें सब्जी उगाने देता है । आप सब्जी की क्यारी में भगवान को देख सकते हैं ।

आपको यह समझना होगा कि ईश्वर कहां से आ रहा है । आप सूखे मौसम के लिए ईश्वर को दोष नहीं देते । मौसम के अनुसार व्यवस्था करते हैं । हम जानते हैं कि हमें भोजन के लिए इतने अनाज की जरूरत नहीं होगी इसलिए हम काफी अनाज बेच देते हैं । हमें कम दाम मिलते हैं । अगले वर्ष दाम अधिक होंगे । भगवान दयालु हैं । मैं नहीं सोचता कि स्वर्ग यहां है लेकिन मैं इतना अवश्य सोचता हूं कि हम यहां आनंद लेने के लिए हैं । हम हर क्षण आनंद लेते हैं ।

ईश्वर मेरे समीप है, मैं चाहे कुछ भी करूं । जब हम अनाज निकालते हैं, घास काटते हैं या फसल इकट्ठा करते हैं ईश्वर हमारे साथ होता है । यहां से मैं पुराने मकान को और अपनी मां की गुलाब की झाड़ियों को देख सकता हूं । मां नहीं है लेकिन गुलाब खिलते रहते हैं । ईश्वर के साथ भी ऐसा ही है । 'वह' अब यहां है और हमारे जाने के बाद भी यहां होगा । 'वह' गुलाब के फूलों की तरह मुसकराता रहेगा ।

पाप कर कोई बच नहीं सकता

बलदेव राम, चश्माधारी : अधेड़ भिखारी, वाराणसी में गंगा तट पर एक गाड़ी में बैठा रहता है । वह बदरंग पीला तहमद पहने है । उसके पैरों पर पट्टियां बंधी हैं । उसके हाथ-पैर की अंगुलियां कोढ़ से गल गयी हैं ।

मैं भगवान शंकर की पूजा करता हूं । मैं अपने मन में उनके उस रूप का ध्यान करता हूं जो मंदिर की मूर्ति में है । मैं प्रार्थना करता हूं ताकि मुझे इस भयंकर रोग से मुक्ति मिल जाए । मैं केवल यही चाहता हूं । मैंने इस जन्म में कोई पाप नहीं किये हैं । मैं एक साधारण मजदूर था । चार वर्ष पहले मैं कोढ़ का शिकार हो गया और मेरा जीवन बदल गया । ब्रह्मा ने मेरे भाग्य में यही लिख दिया है । मुझे अपने पूर्व जन्म के पाप की सजा मिल रही है । सच कहूं तो इसी सजा में ईश्वर है और वह बराबरी का भागीदार है । ●



वैद्य की सलाह

देवेन्द्र कुमार, आगरा

प्रश्न : उम्र सैंतीस साल । तीन साल से पक्षाघात से पीड़ित हूं ।

उत्तर : रसराज रस आधी-आधी वटी सुबह-शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पिएं । महायोगराज गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें । शीतलपेय, खटाई आदि का सेवन न कर एक वर्ष औषधि सेवन करें ।

एस चंद्र, लखनऊ

प्रश्न : उम्र पचपन साल । तीस साल से कोलाइटिस है । कब्जियत बनी रहती है । ब्लड प्रेशर भी हो जाता है ।

उत्तर :सूतशेखर रस (स्वर्णयुक्त) १० ग्राम प्रवाल पंचामृत दस ग्राम, इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक बड़ा चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

कु. सुमनलता, रुद्रपुर

प्रश्न : उम्र सत्ताइस वर्ष । अविवाहित हूं । मासिक अनियमित, स्मरण शक्ति क्षीण हो गयी है । शारीरिक रूप से कमजोर हूं । बाल सफेद हो गये हैं । नींद भी कम आती है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच बराबर भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद लें ।

पद्मिनी, बम्बई

प्रश्न : उम्र बीस साल । योनि मार्ग से हर समय श्वेत द्रव निकलता रहता है । शौच में चिकनाहट रहती है । कभी पेचिस भी हो जाती है ।

उत्तर :पुष्यानुग चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । अशोकारिष्ट एक चम्मच, कुटजारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पिएं । चित्रकादि वटी एक-एक वटी रात पानी से लें ।

अर्चना, पटना

प्रश्न : मां की उम्र तैंतीस साल है । वे गठिया रोग से बहुत परेशान हैं । विशेष दवा लिखें ।

उत्तर : महायोगराज गूगल एक-एक वटी, सिंह नाद गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से दें । हिगलेश्वर रस दो-दो वटी दोपहर-रात गरम पानी से दें ।

खेम चंद, अलवर

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष । ६ वर्ष से पैप्टीक अल्सर से पीड़ित हूं । कुछ समय के लिए लाभ होता है पुनः वही स्थिति बन जाती है ।

उत्तर : आंवलाचूर्ण आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें ।

अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें । दही-चावल तली वस्तुएं मिर्च-मसाले का सेवन न कर छह माह औषधियां सेवन करें ।

देवेश गुप्ता, बड़ौत

प्रश्न : गुदा द्वार पर तीन मस्से हैं । कब्ज बना रहता है । कभी-कभी खून आ जाता है । दर्द महसूस होता है ।

उत्तर : अर्शोघ्नी वटी दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । अभयारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन बाद पिएं ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

सांस्कृतिक समाचार



भारत भवन को स्थानीय साहित्यकारों को भी महत्त्व देना चाहिए—

भोपाल : कवि एवं सांसद श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने यहां कहा कि भारत भवन द्वारा देश विदेश के कलाकारों का सम्मान करना हर्ष का विषय है, परंतु स्थानीय साहित्यकारों को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए । उन्होंने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि भारत भवन द्वारा अपने कार्यक्रमों के निमंत्रण पत्र तक राजधानी भोपाल के कवि-लेखकों को प्रदान नहीं किये जाते हैं ।

श्री वाजपेयी म. प्र. राज्य सहकारी बैंक के सभाकक्ष में म. प्र. लेखक संघ के तत्वाधान में आयोजित लोकापर्ण-कार्यक्रम में साहित्य-प्रेमी श्रोताओं को संबोधित कर रहे थे । इस कार्यक्रम में भोपाल के चौंतीस कवियों की कृतियों के संकलन 'आईना' का लोकार्पण किया गया । इस कार्यक्रम में प्रदेश के सहकारिता मंत्री लक्ष्मीनारायण शर्मा भी थे ।

गुजरात की हिंदी कवयित्री का सम्मान

गुजरात रिफाइनरी द्वारा कौमी एकता सप्ताह के अंतर्गत गुजरात की सुप्रसिद्ध हिंदी कवयित्री सुश्री मधुमालती चौकसी का सम्मान किया गया । सुश्री चौकसी १४ वर्ष की अल्पायु में एक सड़क दुर्घटना में मानसिक रूप से रोगग्रस्त हो गयी थीं । तब से ये बिस्तर पर ही रह रही हैं— सुश्री चौकसी का गीत संकलन 'भाव निर्झर' काफी सराहा गया है ।

इस अवसर पर सुश्री चौकसी की अध्यक्षता में एक सर्वभाषी कवि सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें गुजराती के सुप्रसिद्ध कवि खलीलभाई धन तेजवी, रमेश पंड्या, राकेश त्रिवेदी, मराठी की सुश्री सुनंदा भावे, एवं हिंदी के कवि डॉ. विष्णु विराट व राजेंद्र गोस्वामी, प्रवीण बलिया, राजीव सक्सेना, श्रीमती पुष्पलता 'पुष्प' ने भाग लिया ।

'आला अफसर' का मंचन

देहरादून के कलामंच परिवार द्वारा दिवंगत युवा रंगकर्मी श्री अनिल कोठियाल की स्मृति में श्री [illegible] राक्षस के व्यंग्यात्मक नाटक 'आला अफसर' का मंचन किया गया ।— चित्र में राकेश गुजराल, कु. सुषमा शर्मा एवं कु. पूजा शांति इसी नाटक के एक दृश्य में ।

